प्राचीनपुस्तकोद्धार-फंड.

ग्रन्थांकः-३२

बृहत् स्तवनावलि.

कीमत रु. १-८

प्राचीन पुस्तकोद्धार फंड. ग्रंथांकः ३२

अर्हम्

बृहत्स्तवनावली।

जैनाचार्य—जं० यु० प्र० भ० श्रीमान् आगमोद्धारक श्रीजिनकृपाचंद्रसूरीश्वरजी महाराजसाहेबके सदुपदेशसे—

श्रीजिनदत्तसूरिज्ञान—भंडारसंरक्षक.

जव्हेरी पानाचंद—भगुभाई.

गोपीपुरा, सुरत.

मुम्बापुर्यां निर्णयसागरमुद्रणालये मुद्रिता.

वि. सं. १९८४ मूल्य रु. १।। द्वितीयावृत्ति २०००

Published by Javeri Panachand Bhagubhai,
Gopipura, Surat.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the 'Nirnaya Sagar'
Press, 26–28, Kolbhat Lane, Bombay.

॥ बृहत्स्तवनावलि अनुक्रमणिका ॥

॥ अर्हं ॥

॥ अर्हंतो ज्ञानभाजः सुरवरमहिताः सिद्धिसौधस्थसिद्धाः
ंचाचारप्रवीणाः प्रगुणगणधराः पाठकाश्चागमानां ॥ लोके लोके-
शवंद्याः सकलयतिवराः साधुधर्माभिलीनाः पंचाप्येते सदाप्ता
वेदधतु कुशलं विघ्ननाशं विधाय ॥१॥ श्रीमज्जिन–कृपाचन्द्रसूरे
जगति यशसा ते धवलिते, पयःपारावारं करिवरमभौमं कुलिश-
भृत् ॥ कपर्दी कैलासं सुरवरः सुधां च मृगयते, कलानाथं राहुः
कमलभवनो हंसमधुना ॥ २ ॥

सूक्ष्मसें सूक्ष्म जो गुणसंघात है उसके ग्रहणकरनेंमें विचक्षण
ौर रत्नोंकी खाण समान अहो सज्जनों सर्व आपलोक सावधान
ोकर श्रवणकरो, कि इस बृहत्स्तवनावलिनामक अत्युत्तम
न्थमें सर्वत्र पृथ्वीमंडलमें (याने) सर्वदुनियामें बहुत प्रति-
ाको प्राप्त करनेवाले, अत एव बहुत बडी है कीर्त्ति जिणोंकी,
ौर विद्वानोंमें शिरोमणि ऐसे अनेक गीतार्थोंके रचे हुवे,
ौर बहु बहुतर बोधके देनेवाले, और अत्यंत सुगम प्राचीन
याने) जूने जूने बडे बडे बहुत स्तवनोंका तथा सिज्झायोंका
ंग्रह इस ग्रंथमे है, इस सिवाय और भी बहुत संग्रह है, इसवास्ते
गुणरागिसज्जनो, आपलोक इस ग्रंथकुं पढके (याने) कंठस्थ
रके निर्मल ज्ञानके भजनेवाले होवो, और इस पुस्तककी
थमावृत्ति छपवानेंमें युगप्रवरागम श्री श्री १००८ श्री श्रीमज्जि-
कृपाचंद्रसूरीश्वरजीके स्वहस्तदीक्षिता शिष्या आर्या श्रीमती
ौभागश्रीकी शिष्या श्रीमती महिमाश्री तथा श्रीमती जवेरश्रीके

सद्उपदेशसें श्रेष्ठ है नाम जिसका, और सद्गुणोंकी रागवाली श्रीसुरतशहरमें रहनेवाली श्रीमती सुश्राविका श्रीकमलाबाईका दियाहुया आर्थिक सहायकरके औरभी जामनगरमें रहनेवाली दीक्षाग्रहणकरनेवाली श्रीमती जमावबाईका दियाहुवा आर्थिसहायकरके श्रीजैनप्राचीनपुस्तकोद्धारफंडके द्वारा छपवाइगइथी, परन्तु इस ग्रन्थकी प्रथमावृत्तिकी सर्व नकलों शीघ्रतापूर्वक निकलजानेसें और फिरभी विशेष इस ग्रंथकी मांगणी होनेसे, अत्यावश्यकता समजकर द्वितीयावृत्तिमें श्रीजैनप्राचीनपुस्तकोद्धार फंडके कार्यवाहकोंनें छपवायके प्रगट कियाहै, औरभी स्तवनादिक विशेषकरके वृद्धि इस ग्रंथमे किगइहै, इसलिये इस ग्रंथका महत् प्रमाण होनेसें द्रव्यव्यय जादा लगणेंसें किमतकरके इस ग्रंथकुं अलंकृत कियाहै,

और इस ग्रन्थके द्वितीयावृत्तिमें सहाय देकर ज्ञानभक्तिका लाभ लियाहै, उनोंके उपकारको हम अनुमोदन करतेहैं तथाहि—जं । यु । प्र । भ । श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजीके सद्उपदेशसें मरुधरदेशनिवासी श्रीबालोत्तरासहरके श्रीसंघके तर्फसें रुपिया ५०० दीयेहैं, सुंदरवाइ इंदोरभूतपूर्वनिवासिनीने रु. १५० और मुनिश्रीविवेकसागरजीके सद्उपदेशसें ७५ रुपिया श्रावकोने भेजेहैं, और इस ग्रंथकी मूलकाफी विक्रयके अंदाज रुपिया ५५० से हैं और इस बृहत्स्तवनावलिकी द्वितीयावृत्तिमें कुल खर्च रु० २७५० अंदाज लगणेंका संभव है शेष श्रीसंघसहायतार्थ ज्ञानभक्त्यर्थ अर्पणकर लाभ लेनेका संभवहै

औरभी सुणो इस ग्रन्थके अत्यन्त मनोहर होनेपरभी प्रमाद और विस्मृतिकरके जो प्रथमावृत्तिमें क्रम उल्लंघन हूवा था, वह भी इसद्वितीयावृत्तिमें सुधारा गयाहै, औरभी इसमे विशेष संग्रहकरके इस ग्रन्थको पहिली आवृत्तिसें विशेष रोचक बनाया गयाहै, और इस ग्रन्थके प्रुफादिकदेखनेका परिश्रम शास्त्रविशारदजैनाचार्यश्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजीमहाराज साहबने उठायाहै, सो उनोंका आभारीहैं, तथा इस बृहत्स्तवनावलीकी प्रथमावृत्तिको श्रीसंघने जेसा अपने पढनेकु ग्रहणकर दूसरी आवृत्ति छपानेका हमारा उत्साह वढाया सो हम श्रीसंघके भी आभारीहैं और आशा रखतेहैं कि जिस तोरसें प्रथमावृत्तिको अपनाया उसीतरह इस द्वितीयावृत्तिकोभी अपनाकर तृतीयावृत्ति छपानेका उत्साह वढावेगें और अपणे आत्माका कल्याण करेंगे और इस ग्रन्थकी पहिली आवृत्ति केवल ५०० छपीथी सो शीघ्र खलास होणेसें और कइ श्रावकोंकी जादा मांगणी होणेसें द्वितीयावृत्ति २ हजार नकल छपाणी पडीहै, औरभी इस ग्रन्थमें दृष्टिदोषसें विस्मृतिदोषसें मतिमोहसें छापा आदिकके दोषसें अक्षर पद कानो मात्रा वगेरा ओछा अधिका हूवा होय सो दीर्घ दर्शीयोंकुं शुद्ध करणा उचितहै, यह सज्जनोंसें नम्र प्रार्थना युग प्रवरागमश्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजीके शिष्य रत्न विद्वच्छिरोमणि ज्येष्ठान्तेवासी श्रीमान् आणंदमुनिजीकें लघुगुरु भ्राता उ. । जय सागरगणिकीहै सो श्रीमान् सज्जन पाठकवर्ग अवश्य सार्थक करेंगे, इति अभिलषामहे ॥ चिरं नन्दन्तु पाठकाः ॥ चिरं नन्दन्तु गच्छेश्वराः ॥ चिरं नन्दन्तु कौटिकगच्छेश्वराः ॥ चिरं न

न्दन्तु श्रीखरतरेश्वराः ॥ चिरं नन्दन्तु श्रीवीरशासनेश्वराः ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः ॥ श्रीसद्धर्माराधनं कृत्वा कल्याणभागस्तु ॥ स्वर्गापवर्गभागस्तु ॥ सत्सौख्यभागस्तु सज्जनः ॥ भद्रं भूयात् सत्स्वाध्यायकारकाणाम् ॥ पुस्तकमिदं बृहत्स्तवनावलिनामकं आचन्द्रार्कयोः वाच्यमानं चिरं नन्दतु श्रमणादिसंघैः ॥ विक्रमसंवत् १९८४, शाके १८४९, हिजरी-सन् १३४५, ईस्वीसन्–१९२८, नन्दीवर्द्धनसंवत्सर २४९६, श्रीवीरनिर्वाणात् २४५४ फाल्गुन शुक्ल तृतीयायां तारिख २४ फरवरी मास २ शुक्रे श्रीइन्दुरनगरे ल । श्रीजयसागरगणिना-ऽलेखि ॥ चिरं नन्दन्तु वर्त्तमानभट्टारकाः जं । यु । प्र । भ । श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वराः खरतरगणाधिपाः चिरं प्रतपन्तु ॥ शुभं भवतु ॥ अस्य वेतनम् रुप्यकद्वयम् ॥

॥ अर्हम् ॥

(ग्रन्थाङ्कः ११)

पूर्वाचार्यविरचिता

बृहत् स्तवनावली।

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ समवसरन विचार गर्भित स्तवनं लिख्यते ॥

॥ (दुहा) श्रीजिनसासनसेहरो । जगगुरु पासजिणंद । प्रणमी जेहना पायकमल । आवी चौसठइंद ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां । त्रिगडो करे तयार । समकितकरणीसाचवे । एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥ करे प्रसंसा समकिती । मिथ्यात्वी होवे मुंक । सूर्य देखे हरखे सहु, घणें अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल वीर वखाणी रांणी चेलना एचाल ॥

॥ आप अरिहंत जले आवियाजी । गावे अपछरह गंधर्व समवसरण रचे सुरवरा जी । संखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० जुवनपतिवीसइंदेंमिल्याजी सोलहव्यंतरसार । जोइ-सदुदश वेमाणिय जुड्याजी । चौसठ इंद्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवनसुर पुंज परमारजैजी । जूमि योजन सम जाव । मेघकुंमर रचे मेघने जी । करीय सुगंध छिडकाव ॥ ६ ॥

आ० । अगर कपूर सुज धूपणा जी । करेय श्री अगनि कुमार । वाणव्यंतर हिवे वेगसुंजी । रचे मणिपीठकासार ॥ ७ ॥ आ० । पुहुप पंच वरण ऊरध मुखे जी । वरषे जानुपरिमाण जवणवइ देव त्रिगमोजलोजी । करय ते सुंणोज सुजाण ॥ ८ ॥ आ० । रचयगढप्रथमरूपातणोजी । सोवन कांगरे सार । रविशशि रयण कोसीसको जी । कनक नो बीय प्राकार ॥ ९ ॥ आ० । रतन गढ रतननें कांगरे जी । रचय वेमाणीय सुरराज । जलो त्रीजो गढ जीतरे जी । जीहां विराजे जिन-राज ॥ १० ॥ आ० । जींत ऊंची धणु पांचसेजी । सवा तेत्रीस विस्तार । धनुपसे तेर गढ आंतरो जी । प्रौल पंचास धणु-च्यार ॥ ११ ॥ आ० । दश पंच पंच त्रिहुंगढतणी जी । पावमी वीस हजार । थाक श्रम नहीय चढतांथकांजी । एककर उच्च विस्तार ॥ १२ ॥ आ० । पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच्च रहै त्रिगढ आकाश । तेहतल सहु यथा स्थित वसे जी । नगर आराम आवास ॥ १३ ॥ आ० । तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी । नीलमणि मोर निरमाण । डुसयधणु मध्य मणीपी-ठिका जी उच्च जिणदेह परिमाण ॥ १४ ॥ आ० । च्यार आसण तिहां चिहुं दिसेंजी । मोतीयें फाक फमाल । सम विचकूण ईसांणमें जी । देवछंदो सुविसाल ॥ १५ ॥ आ० । देव डुंडुजि नाद उपदिसेजी । जिनगुणगावसीतेह । अल जिम आंइ शिरऊपरें जी । गाजसी तेहगुणगेह ॥ १६ ॥ आ० ।

॥ (ढाल) सफलसंसारनी ॥ ॥ पुबदिशि आसणें आइ

बेसे पहू । सुरकृत चौमुखरूप देखे सहू । दीपे अशोकतरु
बार गुण देहथी । देखि हरखे सहू मोरजिम मेहथी ॥ १७॥
मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसालए । रूप चिहुं चिहुं दिसें चा-
मरढालए । योजन गामनीवाणी श्रीजिनतणी । जगवंत उप-
दिशें बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा रूपथी अगनिकूणें-
करी । गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरी । ज्योतषी जुवणनी
विंतरी स्त्री पणें । नैरुत कूंण जिनवाणि ऊजी सुणें । त्रिहुंतणा
पति वायव कूंणमें जाणए । सुर वेमानीय नरनारी ईशाणए । बारह
परषदा मद मछर छोरूए । जूख त्रिष वीसरे सुणेंकरजोरूए
॥ १९ ॥ पूठ जामंरूल तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच
आकास ए । ऊलहले तेज धर्मचक्र गगनें सही । महकसहु
वारणें धूपधांणासही ॥ २० ॥ वाहण वहील सहुधरीय पहिले
गढें । होइ पग चारि नर नारि ऊंचा चढे । जिनतणी वाणी
सुणी जीव तिरजंच ए । वैर तजि बीय गढ रहे सुख संचए
॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरष ते परषद बारमें । सुणें जिन वाणि धन-
गणय अवतारमें । चौविह देव जिण देव सेवा रचै । मणिमयी
मांहिली प्रोलमांहे वसे ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावी चौ
जाणीयें । विदिसि चौकूण दोइ दोइ वखाणिये । आठ जिहां वावी
जलअमृत जेम ए । स्नान पानें वपु निरमल हेमए ॥ २३ ॥ जय
विजय जयंत अपराजिया । मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ।
तुंबरु पुरुष खट्टंग अर्चिमाल ए । रजत गढ प्रोलना एह रख-
वालए ॥ २४ ॥ पहिल त्रिगडो न हुवे जिण पुरग्राम ए । देव
महर्द्धिकरचे तिणठामए । करण वारवार नहीं कारण कोईए ।

आठ प्रातीहारज ते सही होइए ॥ २५ ॥ जिणसमवसरणनी रिद्धिदीठी जीये । तेह धनधन्य अवतार पायो तिये । पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो । हिव मुझ ताहरो सुद्धदरसण हुज्यो ॥ २६ ॥

(कलश) इम समवसरणें रिद्धिवरणें सहु जिनवर सारखी । सरदहै ते लहै सुद्ध समकित परम जिन धर्म पारखी । प्रकरण सिद्धांत गुरू परंपर सुणी सहु अधिकार ए । संस्तव्यो पासजिणंद पाठक धर्मवर्द्धनधारए ॥ २७ ॥ इतिश्री समवसरण विचार नाषा गर्भित स्तवनं ॥

अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनम् ॥

॥ ढाल बेकर जोडी तांम ए चाल ॥

रिषनानन वर्धमान । चंद्रानन जिन । वारिषेण नामे जिना ए ॥ १ ॥ तेहतणा प्रासाद त्रिनुवन सासता । प्रणमुं बिंब सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोडि लाख बहुतर । चेईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोडि । साठ लाख सुंदर । नुवनपती मांहि मन वसीए ॥ ४ ॥ बारे देव लोक प्रासाद चौरासी लाख । सहस छिन्नूनें सातसैए ॥ ५ ॥

(ढाल आव्यो तिहां नरहर ए चाल ॥)

हिवे नव ग्रीवेकै पंचानुत्तर सार । चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जांण । अरुत्रीस सहस सतसाठ अछे गुण खांण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंडल रुचक वखांण । चउ चउ चेईहर साठ सबे त्रिहु ठांण। इकसो चौवीसे गुण प्रतिमा चिहुं नाम । चारसे चालीसा सात सहस प्रण

माम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुलगिरि तीस । मेरूवन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस । मानुषोत्तर परबत च्यार च्यार इखुकार । ऐसो अतिसुंदर वक्षसकार मझार ॥ ८ ॥

॥ (ढाल ३) ॥

दिग्गजगिर चालीस । असीद्रह सुजगीस । कंचन गिर वरुए । एक सहस धरुए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य । वीस सत्तरसो आढ्य । सत्तर महा नदीए । पंच चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरूक्ख । इग्यारेसै सत्तर सुक्ख । कुंरू त्रण सय असी ए । वीस जमग वसी ए ॥ ११ ॥

॥ (ढाल ४) ॥

त्रिण सहस सो एक निवांणूंरे । जिनवर प्रासाद वखाणूंरे । वीससो ए अंक गुणीयेरे । तीर्थंकर प्रतिमा थुणीये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि त्र्यासीरे । प्रतिमा आठ सोने असी । सरवाले सब मेलीजेरे । जिनवर प्रसाद नमीजे ॥ १३ ॥ आठ-कोडि सत्तावन लक्खारे । दोयसे निव्यासी कयरुक्खा । हिव प्रतिमा ग्यान कहीजेरे । जिनवरनी आंण वही जे ॥ १४ ॥ पनरेसे वैतालीस कोडीरे । अरूवन्न लख अधिके जोडी । छत्तीस सहस अधिक कही रे । प्रतिमा सगली सरदहीयेरे ॥ १५ ॥

॥ (ढाल ५ मी) ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती । असंख्यात वलि जेहोजी । पाय कमल तेहना नित प्रणमीये । सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ बिनयकरी जिन प्रतिमा वंदीये । सुंदर सकल सरूपोजी । पूजे प्रतिमा चौविह देवता । वलिय विद्याधर भूपो जी ॥ २ ॥

जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी। हितसुख मोक्षनीदानं जी। भवियण नें भवसायर तारवा। प्रवहण जेम प्रधानं जी ॥ ३ ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखीयो। एस हु अरथ विचारोजी। सांभलतां भणता सुखसंपदा। हियके हरष अपारो जी ॥ ४ ॥ वि०

(कलश) ॥ इम सासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा। चिहुं नांम जिण चंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा वाचनाचारज समयसुंदर गुणभणें अभिरामए। त्रिहुंकाल त्रिकरण शुद्ध होयज्यो सदा मुक्त परणांमए ॥ ५ ॥

॥ इति श्री सास्वताजिनचैत्यबिंवसंख्या स्तवनं ॥



॥ अथ सास्वता असास्वता जिनबिंब नमस्कार स्तवनम् ।

॥ * ॥ (देशी सुरती) ॥

प्रहकठी प्रभु ध्यानधरुं नमुं सिद्धअनंत। त्रिभुवन मांहे नमणकरुं जे बिंब रहंत। भुवनपति व्यंतर जोतषि वैमानिक मांह। अद्भुत सास्वता बिंव नमुं मनधरि उछाह ॥ १ ॥ पंच मेरू वैताढ्य हिमाचल निषध प्रमांण। नीलवंत चित्रसेल कुंरूह गजदंत वखांण। रुचक नंदीसर मानुषोत्तर आदि सास्वता जांण। रिषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्धमान ॥ २ ॥ आठ कोरू अरूठप्पण लाख सत्ताणुं हजार। चउसै ठयासी चैत्यस स्वता मंगलकार। सहस अठावीस नवसै पचवीसकोम मिलाय। तेपन लख चउसै अठ्याशी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मतें आठकोरू सतावन लाख। दोयसै अठाणुं

त्रिभुवनमां सहु चैत्यनी साख । अठावनलख पनरेसे बयाली-सकोड । अडतीस सहस बिंब सहु सत असीकी जोड ॥ ४ ॥ मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुरु देस । सोरठ कछ विदेह जांगल कुसावर्त्त कदेस । भंग सोबीर वैराट मलय सांडिल सूरसेन । वरण पंचाल दशार्ण कुंणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट बिरद सिंधुदेससहु केकइ अर्ध जांण । साढां पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधान । दोय कोड अठावन लाख छयासी हजार । नवसै तिहुत्तर ग्रांम नगरमांहे बिंब अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सात साठ जंबुद्वीप सहु आर्य होय । धातकी खंड सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्द्ध पुष्करमांहें देस गिणाय । ग्रांम नगर मांहे बिंब अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धसेल उज्जिंत शिखरगिरि मोटा धांम । अष्टापद चंपा पावा-पुरि शिव सुख ठांम । तारंगा अर्बुद राजग्रही खेत्रप्रमाण। अंतरीक धूलेवा राणपुरो जग भांण ॥ ८ ॥ द्वीप असंख्या जल थल पर्वत शिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण सहु बिंब रहाय । इम त्रिहुं लोक असास्वती सास्वती थांपना देख । त्रिकरण सुद्धे नितप्रति प्रणमुं सहुगुण लेख ॥ ९ ॥ स्थापना भगवंते कही आगम मांहि प्रमाण । अंग उपांग देखी मननिश्चय राखो सुजाण । जे उत्सूत्र वचन के भाषक जासी निगोद । अनंत काल भमतां हणभरनहिं पामें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रभुनी देखी भविपामें बोध । आद्रकुमारकी रीते देखो आगम-सोध । द्रव्य भाव विधिसंयुत सुरनर पूजे जेय । गुण पिंडस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषभादिक चौवीस तिर्थं-

कर नमुं मन लाय। गणधर सहुसंग मंगलकारी नितप्रति थाय। जन्म मरण सहु दुःख दूरे करो दीनदयाल। गच्छ खरतर-गुरु लक्ष्मीप्रधानमोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥

॥ इति श्री त्रिभुवन मंडण सर्व जिन बिंब नमस्कार स्तवनम् ॥

॥ * ॥ अथ २४ जिन देह मान स्तवनं लिख्यते ॥

* ॥ * ॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसरपाय। धनुष पांच सै ऊंचीकाय। बीजो अजित जिन मुझ मन वसै। मान धनुष साढा च्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संभव सुखदातार। ऊंची काय धनुष सो च्यार। अभिनंदन जिनसुं मनलीन। देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ भगवान्। धनुष तीनसो देहीमान। पदम प्रभु पूरै मनआस। देह धनुष दोयसै पंचास ॥ ३॥ सामिसुपारस सत्तम होय। देह प्रमाण धनुषसोदोय। चंद्रा प्रभु जिन मुझ मन वसै। देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ नमियें सुवि-वेक। ऊंचप्रमाण धनुषसोएक। शीतलनाथनमें जगसवे। देह प्रमाण धनुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नमुं उल्लसी। ऊंच प्रमाण धनुष तनु असी। वास पूज्य बारम जिनचंद। मान धनुष सित्तर सुखकंद ॥६ ॥ विमल विमल गुण करि गंभीर। साठी धनुष जसु मान सरीर। अनंत ज्ञान अनंतप्रकास। देहप्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस। मान धनुष जसु पैंतालीस। शांति करण सोलम जिनशांति। देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार। मान धनुष पैंत्रीस उदार। अर अढारम दीन दयाल। त्रीस धनुष तनु अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लिनाथ जिन उगणीसमो। मान

पच्चीस धनुष पय नमो । वीसम मुनिसुव्रतअरिहंत । वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमि जिन राजान । धनुष पनरे तनु रूप निधान । बावीसम श्री नेमि जिणंद । दस धनु दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारस नाथ । नील वरन सोहै नवहाथ । चौवीसमा जिनवर श्रीवीर । सातहाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चौवीस । प्रणमें प्रहसम धरीय जगीस । तांघर रिद्धि सिद्धि उछरंग । रंगविनय प्रणमें मुनिरंग ॥ १३ ॥ * ॥

॥ इति श्री चोवीस जिनदेहमान स्तवनं ॥ * ॥

॥ अथ २४ जिन आउ प्रमाण स्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय । लाखचोराशी पूरव आय । बीजो अजित जसु सूत्रे साख । आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो । आउ लाख पूरव साठीरो । अभिनंदन पूरे मन आस । आउ लाख पूरव पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आउ लाख पूरब चालीस । श्री पदम प्रभुनी ए स्थिति जाण । लाख तीस पूरब परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब वीस । दस लाख पूरव चंद्रप्रभु ईस । सुविधिनाथ लाख पूरव दोय । इक लख पूरब शीतल थिति होय ॥ ४ ॥ आउ बरस चोरासी लाख । श्री श्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बहुत्तर वरसां तणो वासुपूज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आउ लाख साठि वरीस । वरस अनंत तणो लख तीस । लाख वरस दस धरम जिणंद । लाख

वरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पंचाणवे । श्रीकुंथुनाथ तणी संभवे । सहस चोरासी अरजिन तणी । मल्लि सहस पंचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । मुनिसुव्रत परमाउ उदार । बीस सहस नमि जिन थिति भणी । वरस सहस नेमीसर तणी ॥ ८ ॥ पास वरस एकसो सुख कंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । ऋषभतणा तेरे अवतार । सात चंद्र संतीसर बार ॥ ए ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस । पार्श्व वीर दश सत्तावीस । त्रिहुं त्रिहुं भव सतरे जगदीस । सगला भव एकसो अठतीस ॥ १० ॥ सिद्धि लही सहुनें धन धन्न । गणधर चवदेसे बावन्न । सहुनें मुनि लख अट्ठाविस । सहस ऊपरे अडतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयांल हजार । षडधिक सहु साधवी सोच्यार । श्रावक लाख पचावन धुरे अडतालीस सहस ऊपरे ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविका सुजगीस । लाख पांच सहस अडतीस । एसंघ चतुर्विध सहु जिन तणों । रंगविनें प्रणमें हितघणों ॥

॥ १३ ॥ * ॥ इति श्री चोवीस जिन आयुप्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ जीव विचार भाषा गर्भित स्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ (दुहा) भुवन प्रदीपक वीरनमि । किंचित जीव सरूप । कहिसुं पूर्वाचार्य जिम । बालबोध गुरु रूप ॥

॥ १ ॥ (देशी सूरती महीनानी) ॥

एग मुगति बीजा संसारी जीवदुभेद । सत्ताभिन्नै सिद्धअनंतै रूप अभेद । संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार । भू अप तेऊ बाऊ वणस्सई थावर धार ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि

विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल । मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीहाल । सेढी बन्नी अरणेटो पलेवो पाखाण । जोमल तुरी ओस जूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूंण जात ए पुढवी काय विभेद । जूमि आकास ओस हिम करग आजना भेद । हरित घास ऊपर जे जलकण धूंहर तेम । होय घणो दधि अप्प काय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा ऊाला जोजर तिम उलकापात । अशणि कणगविद्युतादिक अगनजीव विख्यात । उन्नामग उक्कलिका मंमल वलि मुहवात । शुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ज्ञात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वण-स्सइ जीव डुजेय । एग सरीर अनंतजीव साधारण नेय । कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि सेवाल । भुंफोमा अद्दत्तिय सरबे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वथवो थेग पालंको साग । गुपत सिरा सांधा गांठां जाजे सम जाग । काटी माल भुंमिमें रोप्यां पल्लव थाय । जाल पान इत्यादिक साधारणवण काय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एग जीव जे ते प्रत्येक । फूल ठाल फल मूल काठ बीजे जिय एक । वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवी काय । सयल लोगमें व्यापक अंतमुहूर्त्तं आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय । लोका लोक प्रकाश थकी वलि अलप न कोय । कवमी संख गंमोला लहिगा लटनी जात । चंदनका अलसी मेहर जोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय बाहा कृम पौरादिक बेइंडी होय । गोमी माकण जुआ कीमा कीमी दोय । दीपक ईली घीवेली गोगींमा जात । चरम जुका गादहिया गोबर कृम उतपात ॥ ए ॥ धान कीमा जिम चोरकीमा गोवाली

तेह । ईली कुंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह । वीछू ढंकन भमरा भमरी इंद्री च्यार । तीड़ा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥१०॥ कवरू डोला मांकड़िय पतंग इत्यादिक भेद । नारक तिरिमणु देव पंचेंद्री च्यार विभेद । घम्मा वंसा सेला अंजण रिष्टा ज्ञात । मघा माघवई नारग ए नामें सात ॥ ११ ॥ जलचारी थलचारी नभचारी तिरजंच । मछ कछ सुसुमार मगर गाहा जल अंच । चौपय उरपरि भुजपरि साप भूचारी तेय । तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रमे लेय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोमपंखी चमचेरू कपोत । मनुज लोकथी बाहिर समुग विगय पंख होत । सरबे जल थल खचर समुछिम गब्भय दोय । कम्म अकम्म भूमि अंतर दीवा मणुजोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ । जोइस पंच वेमाणिय दुविहा सुत्तें दिठ । पनरै भेदै सिद्धकह्या ए जीव प्रकार । तनुमानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आऊखो एक सरीरें थितनो मांण । प्राण जेहनें जेता तिम वलि योनि प्रमाण । अंगुल भाग असंख सहू एगिंदीकाय । जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय ॥ १५ ॥ बिति चौरिंद्री अनुक्रम उक्किठ देह ऊंचास । बारे जोयण तीन गाऊ इग जोयण भास । सत्तमना नेरइया धनु सय पंचप्रमाण । तेहथी अरध अरध ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस गब्भधर मछ उरगनो देह । गाऊ धणुहपहुत्त भूचारी पंखी जेह । खेचर नवधणु भुयंग उरग जोयण नव होय । नव गाऊ परिमाण समुछिम चौपय सोय

॥ १७ ॥ षट गाउ ऊंचास चउप्पय गब्भयमांण । तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण । भवण व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत । सातहाथ उक्कोसे ऊंचपणे तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंद्रे षट ब्रह्म लांतक पांच । शुक्र सहस्रारें उक्कोस च्यार कर वांच । आणतप्राणत आरण अच्युत हाथें तीन । नव ग्रैवेयक दोय पंचानुत्तर इगहीन ॥ १९ ॥ बाबीस सात तीन दशवरस सहस्सें आय । भूआउ वाउ वण ती दिन तेउ काय । बारवरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास । अनुक्रम बेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री रास ॥२०॥सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय । चौपय तिरिय मनुजनो तीन पल्योपम थाय । जलचर उरपर भुजपर उक्कोसें पुव्व कोड । पंखीनें इग भाग असंख पल्यनो जोड ॥ २१ ॥ सरब सूखम साधारण समुछिम मणु जेह । जहन्न उक्कोसे अंतमुहूत्त नियम थिति तेह । इम ओगाहण भाख्यो संखेपे अधिकार । जे वलि इत्थ विसेस विसेस सुत्रसूं धार ॥ २२ ॥ असंख उसप्पणि सहुएगिंदी आपणीकाय । उपजे चवे अनंत साधारणवणस्सईकाय । संख्याता संवछर विगल आपणी देह । सात आठ भव पंचिंद्री तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथकी उदवरती जीव नरक नवि जाय । देव चवीनें ते वलि देवपणें नवि थाय । इंद्रीय सासोसास आउ बल ए दस प्राण । च्यार छ सात आठ इग दुति चौरिंद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचिंदी दश नव अनुक्रम जोय । प्राणथकीजे विप्रयोग जिय मरणें होय । भीमसायर संसार अपार अनंतीवार । भमियों जीव धरम विण जोणि अशीनें च्यार

॥ २५ ॥ सग सग सग सग दश चवदे दो दो दो लाख। च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रे साख। जू अप तेऊ वाऊ वणपत्तेय साधार। बि ति चौ पण तिर नारग सुरनर अनुक्रम धार॥ २६ ॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नहीं जात। सादि अनंत नंग जिन आगम थिति विख्यात। रोग न सोग न नोग जोग नहीं नारि लिंग। नहीं य नपुंसक पुरष तणा नहीं अंग उपांग ॥ २७ ॥ नाण दंशण चारित्त वीरज ए च्यार अनंत। सिद्ध थया तेहथी सिद्धांते सिद्ध कहंत। इमए जीव विचार गाथाथी नाषा रूप। श्रावक आग्रहथी में कीनो सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ नट्टारक श्रीजिनलानसूरीस। रत्नराज गणिग्यान सार मुनिसीस जगीस। संवत शशि रस वारण ससिहर धर निरधार। माघ चौथ दिनकी नो जैपुर नगर मझार ॥ २९॥
इति श्रीजीवविचार प्रकरण नाषा गर्न्नित स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नवतत्व भाषा गर्भित स्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ दुहा ॥

नमस्कार अरिहंतनें। सिद्धसूरि उवझाय। साधु सकल-प्रणमीकरी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नवतत्वनी। गाथा नाषा रूप। मंदबुद्धि गुरु सानिधे। कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥ (सुरती महीनानी देशी) जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आसव सोय। संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत्व होय। चवद चवद बायाल बयासी वलि बायाल। सत्तावन बारे चौ नव क्रम नेद निहाल ॥ १ ॥ इग दुति चौविह पणविह छविह

जीव कह्या य । चेतन त्रस थावर वेदे गई करणें काय । एगिंदी सूखम बादर ए दो जिय ठाण । सन्निअ असन्नि पणिंदी बि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पजत्ता अपजत्ता चवदे होय । अनुक्रम जीवठाण ए सूत्र प्ररूप्यासोय । नाणदंसण चारित वीरज तप तिम उवयोग । ए षट्लक्षण लक्षित जीव द्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पजत्ती तीन । सासो सास जाषा मन षट्ए अनुक्रमलीन । च्यार एगिंदी पंचपजत्ती विगलें जोय । पंच असन्नि सन्नितें षट् पजत्ती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय पांच उसास आउ बल ए दस प्राण । च्यार ठ सात आठ एगिंदी विगले जाण । असन्नि सन्नि पंचिंदीने नव दस क्रम थाय । प्राणांथी जे विप्रयोग जिय मरण कह्या य ॥ ५ ॥ धम्मा धम्म आगास तीनूंना त्रिण त्रिण जेद । काल दशम इग आगास पुग्गल च्यार विठेद । खंधा देश पएस परमाणु चवद अजीव । धम्मा धम्म पुग्गल नज काल ए पांच न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्में । थिर संठाण अधम्म । अवगाहें पूरण गलणें नज पुग्गल धम्म । समया वलिय मुहुत्त दीह पख मासनें साल । पल्योपम सागर उस्सप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ षट् इग दो सग सग सग षट् इग अंक गिणाय । एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्रकहाय । तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण । केवल नाणी जणियो एह मुहुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्चगोय मणु सुर डुग पंचिंदी जाय । पांच शरीर आदिम तिसरीर उवंग कहाय । आदिसंघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय । परघ ऊसास तेम वलि आतपनें उज्जोय ॥ ए ॥ सुज-

खगई निम्माण तसादिदशुंनीमाल । सुरनर तिरिय आउ तित्थंकर पुण्य बायाल । तस वादर पजत्त पत्तेय थिरं सुभ सोय । सुभग सुसर आइज्ज जसें त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दसक नवबीजा नीच असाय । मिछ थावर दश नारग त्रिक पचवीस कसाय । तिरयंच दुग एकिंद्रीबिति चौरिंद्री तेय । कूखगई उपघा अपसत्थ वण चौभेय ॥ ११ ॥ पढम संघयण विना संघयण तेम संठाण । एम वयासी प्रकृति पापतत्वनी ए जाण । थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरे गेय । असुभ दुभग दूसर णाइज्ज अजस दसलेय ॥ १२ ॥ पण चौपण तिय इंदिकसाय अव्रय तिम जोग । बायालीस सेस पच्चीस क्रिया संयोग । काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप । प्राणातिपात आरंभकी परिगहियानो लाप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछा दंसणवत्ती तेम । अपच्चक्खाणकी दिठ पुठि पाडुच्चिय जेम सामंतोपनवणिय नेसत्थि साहत्थै जेह । आज्ञापनकी वेयारण अणभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणवकंख पच्चयना उवउंगी समुदाय । प्रेम द्वेष इरियावही किरिया ए कहिवाय । सुमति गुपति परिसह जइधम्म भावण चारित्त । पण तिग बावीस दस बारै पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इरिया-भाषा एषणा सुमतीना भेद होय । आदान भंरू उच्चार निक्खेवण पांचे जोय । मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण । हिव आगे बावीस परीसह कहुं हित आण ॥ १६ ॥ भूख पिपासा सीत ऊसन डांसा निरवत्थ । अरति जोषा चरिआ नैषिद्या सिज्झासत्त । अक्कोस वध जायण अलाभ रोग त्रणफास । मल सक्कार पन्ना अन्नाण

समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म । सत्यं सौच अकिंचन बंजचेर जईधम्म । पढमअनित्य अशरण संसार एग अनत्त । असुचि आश्रव संवर निज्जर नवि नावो नित्त ॥ १८ ॥ लोकसुनाव बोधज्जुरलज्ज इग्यारम गाव । धरमसाधक अरिहंत ए बारे नावननाव । सामायक छेदोप स्थापन बीजो सोय । परिहारविसुद्ध सूखमसंपराय चउत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम अहक्खायचरित्त सर्वजियलोग प्रसिद्ध । जेह सुविधिआचरणें केइजिय पाम्यासिद्ध । बारेविध निर्जर-तत्व बंधना च्यार प्रकार । प्रकृति ठिई अनुनाग प्रदेश नेदें निरधार ॥ २० ॥ अणसण ऊणोदर वृत्तिसंखेप रसनो त्याग । कायकलेस संलीनता बाहिरतपषट्नाग । पायछित विनय वेयावच्च तेम सज्झाय । ध्यान काउसग्ग अन्यंतर तप षरुविध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिस्वनाव कालअवधारण थिति निरबंच । अनुनागैरसतेमप्रदेसें दलनोंसंच । पट प्रतिहार धारतरवार मद्य वलितेम । निगरु चित्रकर कुंनकार नंरुारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठनानाम नाख्याजेजे नाव । तिम ज्ञानावरणादिक अरुना एहसनाव । इमसंखेपें विवरण कीना आठ तत्त । प्रस्तावे पाम्यो वरणवस्युं हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संतपदे परूवण ऊव्यनें क्षेत्रप्रमाण । फरसना काल पांचमों छठो अंतर जाण । नागसातमो नावआठ तिम अलपबहुत्त । ए नवनेदें नावन करस्युं नवमो तत्त ॥ २४॥ मोरु एक पदथी छे जे पदे अविनानाव । व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहींय अनाव । एहवो जे पद मोरु तेहनों

मग्गणद्वार । विवरणकर वरणवस्युं सुणज्यो सुहमविचार ॥ २५ ॥ गति नर इंदिय पंचेंद्री कायें त्रसकाय । नाणे जेहनें केवल संयमथी अहखाय । दंसणमें इक केवलदंसण अवरन होय । जव्य अजव्यें जव्यपणो परिपाके जोय ॥ २६ ॥ संमत्ते द्दायक सन्नी असन्नीयें सन्नि । अणहारी आहारी अणहारी उप्पन्न । द्रव्यप्रमाणें सिद्धजीवद्रव्यहोय अनंत । लोग असंखम जाग एगसिद्ध होय अणंत ॥ २७ ॥ फरसना खेत्रथि अधिक काल इगसिद्ध प्रतीत । सादिअनंतीथिति जिनआगमथी सुविदीत । प्रतिपाती जावे नहीं सिद्धां अंतर जोय । सरब जीवथी जाग अनंतम सहु सिद्धहोय ॥ २८ ॥ दंसण नाण जेहनें बे ते द्दायकजाव । जीवत जेहनें वलि परिणामिक जाव समाव । सहुथी थोमा बेद नपुंसकथी जे-सिद्ध, तेहथी थी नर अनुक्रम संखगुणा सुपसिद्ध ॥ २९ ॥ जे जाणें जीवादिक नवतत्त तस सम्मत्त । अण जाणंतानें हुय जे सरधानें रत्त । सरब—जिणेसर मुखथी जाख्या वयण जहत्थ । ए बुद्धीजेहनें मन सम्मत निच्चलतत्थ ॥ ३० ॥ अंतरमहुरत एगमात्र फरस्यों संमत्त । अर्द्धपुग्गलपरियट्ट नियम संसार निमत्त । उस्सप्पणीयअणंत एगपुग्गलपरि-यट्ट । अनंत अतीत अनागत तदगुणवयणप्रगट्ट ॥ ३१ ॥ इम नवतत्त जेद पमिजेदे विवरणकीध । श्रावकआग्रह कीन सहाय पूरण रसवीध । कोटिकगण सुजसदन प्रकास नदीउपमान । श्रीजिनलाज चंदकुल पूनमचंदसमान ॥ ३२ ॥ अग्यानादिक करिवरसिंहें वयरीसाख । रत्नराजमुनि ते

वरूसाखानी पमिसाख । ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखमसाख । ए नवपद नवरयण विनाणें गूंथीमाल ॥ ३३ ॥ संवछरनिश्चय नय विगई प्रवचनमाय । परम सिद्धपद वामगतें ए अंक गिणाय । माघकिसन ससिवार मेरुतिथिपूरनकीध । च्यार कथा तजि तत्वकथा जज नर फल लीध ॥ ३४ ॥

इति श्रीनवतत्वजाषागर्जित स्तवनं संपूर्ण ॥



॥ अथदंडक भाषागर्भित स्तवनं लिख्यते ॥

॥ * ॥ रुषजादिकचौवीसनमि । तेहनो सूत्रविचार । दंमक रचनाये स्तवुं । संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक पढम । असुरा नाग सुवन्न । विज्जु अगनि दीवोदही । दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आऊ तेऊ वलि । वाऊ वणस्सईकाय । बि ति चौरिंदी गप्रधर । तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया । ए दंमक चौवीस । एहना द्वार कहुं हिवे । गणनायें तेवीस ॥ ४ ॥ * ॥ वीरजिणेसरनी देशी ॥ * ॥ सरीर ओगाहण संघयणें सन्ना संठाण । कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण । दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उपयोग । उपपात वलिय चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ के दिसिनो आहार सन्नि गइ आगइ वेय । दार गाहा दुगनो ए अरथ कह्यो संखेव । हिव चोवीस दारनो रचिस समय अनुसार । अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलपविचार ॥ २ ॥ * ॥ सूरती महीनानी देशी ॥ * ॥ चौगब्भयतिरि वाऊकाये च्यार सरीर । मनुष्यमें पांच दंमक इकवीस रह्या ति सरीर ।

थावर च्यारनें जहन्न उक्कोसें देह प्रमाण । भागअसंख्यातम इगअंगुलनों परिमाण ॥ १ ॥ सरबनो जघन्य स्वाभाविक अंगुल भाग असंख्यात । उक्कोसें पणसेंधणु नारगमें विख्यात । सुरनो सात हात गब्भयतिरि वणस्सईकाय । जोयणसहस साधिक इकसहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाऊ बेइंदी जोयणबार । एगजोयण चौरिंदी देह ऊंचे आकार । आरंभकाले वैक्रियदेहनो ए परिमाण । भागएक इक अंगुलनो संख्यातम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इकलाख जोयण इगलाख । नवसेजोयण तिरजंचनें एसूत्रेसाख । स्वाभाविकथी दुगणो नारक वैक्रिय काय । एकमहूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पख्एग उक्कोस विउब्बण काल । विगर संघयणी थावर सुर नारकनी माल । गब्भय नर तिरिनें षट् विगलनें छेवठ एक । सरव जीवनें च्यार दसे सन्नायें लेख ॥५॥ नर तिरिनें षरु सुरनें समचौरस संठाण । हुंरुक इग नारग विगलेंदी सूत्र प्रमाण । नाणाविह धय सूइ मसूरनी. चंद्र आकार । वणस्सइ वाउ तेउ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कषाय गब्भय षरु नर तिरि दोय । वेमाणिय नारग तेउ वाउ विगल त्रिक होय । जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्यांने च्यार । दारइंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुदघात सग नरनें पण गब्भय तिरि देव । नारक वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव । दिठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात । सेसनें तीन दिठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर बि तिनें एक अचक्खूदंसण होय । चौरिंदी ते चक्खु

अचक्खूदंसण होय । मनुजनें च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन । नाण अनाण तीन सुर तिरि नारगनें तीन ॥ ए ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण । गब्भयमणुनें तीन अनाणनें पांचुं नाण । सुर नारग एकादश तिरनें तेरेजोग । मनुजनें पनरे च्यार विगलनें जोगप्रयोग ॥ १० ॥ वाऊका- यनें पांच तीन थावर संयोग । मनुजनें बार नरग तिरि देवनें नव उपयोग । विगल दुगे पण षट् चौरिंदी थावर तीन । उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमें संख्यात असंख्या चवणुपपात । गब्भयतिरि विगलेंदी नारय सुर विख्यात । मणुआ थावर वणस्सइ संख असंख अणंत । मणुजअसन्नि असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्स उक्किठ । वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊनें जिठ । नर तिरि तीनपल्य सुर नारग अयर तेतीस । व्यंतर पल्य अधिक लखवरस पल्य जोईस ॥ १३ ॥ असुरादिक दशनें इकसागर अधिकोआय । देसेंऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय । विगलनें बारबरस गुणचास दिवस छम्मास । अंतमहुत्त जहन्नें पुढवाई दसरास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दसवरसहजार । पल्य तेना अंस वेंमाणिय जोइस धार । सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार । विगलनें पंच पजत्ती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय छए दिसनो आहार । होय न होय पंचादिक दिस ए सूत्र मझार । दीह कालकी चौविह सुर नारग तिर- जंच । विगलनें हेउवएशा सन्निरहितथिरपंच ॥ १६ ॥

गब्भयमणुजनें दीहकालकीसन्नाहोय । केइक आचारज कहै दिट्ठिवायकी दोय । निश्चय पज्जत्तापंचिंदी तिर नर जेह । चौविह देवां मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ १७ ॥ संखाउ पजत्त पंचिंदी तिरि नर तेम । पजाता नू दग पत्तेय वणस्सई जेम । ए सर्वमें निश्चय सुरनी आगति हुंति । पजात्त संख गब्भय तिरि नर सग नरके जंति ॥ १८ ॥ नरक उदवरत्या नर तिरि उपजे नहुवे सेस । नू अप्प वणस्सईमें नारग विण उपजे असेस । पुढवाई दसपयमें नू आऊ वणजंति । पुढवाई दस पयसैं तेऊ वाऊ उपजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत । पुढवाई दस पदमें विगल जावंत आवंत । सहुमें तिरि गति आगति मणुआ सहुमें जाय । तेउ वाऊथी मरीनें जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थी पुरसे चौविह सुर तिरि नर तीनूं वेद । थावर विगल नारगनें एक नपुंसक भेद । पजात्त मणु वादर अगनि वेमाणिक तेम । भवण नारग व्यंतर जोईस चौ पण तिरि एम ॥२१॥ बेइंद्री तेइंद्री पृथवीनें अप्पकाय । वाऊ वणस्सई अधिक अनुक्रम करि कहिवाय । हे जिन ए सहु भव में पाम्या वारअनंत । तेहनो अनुक्रम गणितां किम ही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विण सहु दंडगमें ते गति संयोग । लाधो नहीं तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग । सुरमे पिण दंसण लहि विरति नपामी मूल । ते सुर जात सहावे देस विरति प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरज देस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेश । तेहथी तुह दंसणनो किंचित पाम्यो लेस । धारक तारक कारक वारक दंसण देव । आतम

गुण संभारक सम्मत्त कम्म सयमेव ॥२४॥ खरतरगछ भट्टारक श्रीजिनलाभसूरिंद । रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद । रजमकरंदें लीणो ग्यानसार तसुसीस । तेण स्तव्या चौवीसदार दंमक चौवीस ॥ २५ ॥ संवत शशिरसवारणतेम चंद निरधार । पोष मास पखऊजल सातमनें सोमवार । श्रावक आग्रहथी एकीनो अल्पविचार । अष्ठमचौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चतुर्विंशतिदंमकस्तवनं संपूर्णं ॥*॥

॥ * अथ श्री शीतलनाथ स्वामीनो स्तवनं लि० ॥

मोरा साहिबहो श्रीशीतलनाथ कि । वीनतीसुणो इक मोरमी । दुखभांजेहो जगदीनदयालकि । बातसुणी में तोरमी ॥ १ ॥ मो० ॥ तिण तोरे हो हुं आयो पास कि । मुझमन आस्या छे घणी करजोमीहो कहुं मननी बातकि । तुं सुणिजे त्रिभुवनधणी ॥ २ ॥ मो० ॥ हुं भमियो हो भवसमुद्रमझारकि । दुरकअनंता में सह्या । ते जाणो हो तुंहीज जिनराज कि । में किमजायें ते कह्या ॥ ३ ॥ मो० ॥ भागजोगे हो तोरो श्रीभगवंत कि । दरसन नयणें निरखियो । मन मान्यो हो मोरे तुं अरिहंत कि । हियमो हे जे हरखियो ॥ ४ ॥ मो० ॥ एकनिश्चे हो में कीधो आज कि । तुज विण देव बीजो नहीं । चिंतामणि हो जो पायो रतन्न कि । काच ग्रहै कहो कुण सही ॥ मो० ॥ ५ ॥ पंचामृत हो जिण भोजन कीध कि । खल खायवा मन किम थीये । कंठतांइ हो जो अमृत पीधतो । खारो जल कहो कुण

पिये ॥ ६ ॥ मो० ॥ मोतीकोहो जोपहख्यो हारकि । चिरमठि कुण पहिरे हीये । जसु गांठे हो लाख कोकि गरत्थ कि । व्याज काढी दाम कुण लीये ॥ ७ ॥ मो० ॥ घरमांहे हो जो प्रगव्यो निधान तो । देसदेसांतर कुणजमें । सोना नोहो जो पोरसो सीधतो । धातुरवादी कुण धमें ॥ ८ ॥ मो० ॥ जिण कीधो हो जवहरव्यापार कि । मणिहारी मन किम गमें । जिण कीधो हो सदा हाल हुकम्म कि । ते तूंकारो किम खमें ॥ ए ॥ मो० ॥ तूं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि । हुं सेवक प्रजु ताहरो । मुऊ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि । जव छुख जागो माहरो ॥ १० ॥ मो० ॥ तुऊ मूर्ति होदेखंता प्राय कि । समवसरण मुऊ संजरे । जिन प्रतिमा हो जिन सरिखी जाण कि । मूरख जे सांसो करे ॥ ११ ॥ मो० ॥ तुह्म दरसण हो मुऊ आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरमा, तुह्म नामें हो मोरा पाप पुला-यकी । जिम दिन जगे चोरमा ॥ १२ ॥ मो० ॥ तुह्म दरसण हो मुऊ मन जठरंग कि । मेह आगम जिम मोरमा । तुह्म नामें हो सुख संपत्ति थाय कि । मन वंछित फल मोरमा० ॥ १३ ॥ मो० ॥ हुं मांगुं हो हिव अविहरू प्रेम कि । नित नित करूं निहोरमा । मुऊ देज्यो हो स्वामी जव जव सेवकि । चरण न छोकुं तोरमा ॥ १४ ॥ मो० ॥ कलश ॥ इम अमरसरपुर संघसुखकर मातनंदा नंदनो । सकलाप शीतलनाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवछलंछन वरणकंचन रूपसुंदर सोह ए । एतवन कीधो समयसुंदर सुणितजनमनमोह ए ॥ १५ ॥ * ॥ इति श्री शीतलनाथजिनस्तवनम् ॥ * ॥

॥ अथ ८४ आसातनास्तवनं लि० ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धिनी ॥ जय जय जिणपास जगत्र धणी । सोजा ताहरी संसार सुणी । आयो हुं पिण धर आस घणी। करिवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन धन जे न पड़े जंजाले । उपयोग सुं बैसै जिन आले । आसातना चउरासी टाले । सास्वता सुख तेहीज संजाले ॥ २ ॥ जे नाखे श्लेखम जिनहरमें । कलहकरे गाली जूयरमें । धनुषादिकला सीखण ढूके । कुरलो तंबोल जखे थूके ॥ ३ ॥ सुरे वायवड़ी लघुनीत तणी । संज्ञा कुंगुलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया । चांदीनी नाखे चांवड़िया ॥ ४ ॥ दांतणनें वमन पीये कावो । खावे धाणी फुली खावो । सूवे वेसामण विसरावे । अज गज पशुनें दामण दावे ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दसन आखे । नख गाल वपुषना मल नाखे । मिलणो लेखो करे मंत्रणो । विहचण अपणो करि धन धरणो ॥ ६ ॥ वेसे पग ऊपरि पग चढियां । थापे छांणा छड़े ढूढणीयां । सूकवे कप्पड़ पप्पड़ वड़ियां। नासीय छिपे नृप जय पड़ियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथाज कहै। इहां संख्या बेतालीस लहै । हथियार घड़ेनें पशु बांधे । तापें नांणों परखे रांधे ॥८॥ जांजी निसही जिनगृहपेसे । धरे छत्रनें मंड़प में बेसे । पहिरे वस्त्र अनें पनही । चामर वीजें मनठाम नहीं ॥ ए ॥ तनु तेल सचित्त फल फूल लीये । जूषण तजि आप कुरूप थीये । दरसणथी सिर अंजलि न धरे । इगसाड़े उत्तरा संग न करे ॥ १० ॥ छोगोसिरपेचमोड़जोड़े । दड़ियेरमनें

बेसे होरू । सयणां सुं जुहार करे मुजरो । करे ञंरूचेष्टा कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरेधरणो ऊगरू ञद्वंठी । सिर गुंथे बांधे पालंठी । पसारे पग पहरेचाखरूीयां । पगऊटक दिरावे कुरवरूीयां ॥ १२ ॥ करदमलूहै मैथुनमंरू । जूआं वलि श्रैंठ तिहां ठंरू । ञघारू गुजाकरे वायदां । काढे व्यापार तणा कायदा ॥ १३ ॥ जिनहरपरनालनो नीरधरे । अंघोले पीवा ठामञरे । दूषण जिनञवनमें ए दाख्या । देववंदण ञाष्यमें जे ञाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानीश्रावक सगतिठतां । आसातनाटाले वारसतां । परमादवसे कोईथाये । आलोयां पापसहूजाये ॥ १५ ॥ तंबोलनें ञोजनपान जूआ । मल मूत्र सयन स्त्री ञोग हुआ । ञूषण पनही ए जघन्य दसे । वरज्या जिनमंदिर मांहि वसे ॥ १६ ॥ ऊव्यतनें ञावत दोय पूजा । एहना हिज ञेद कह्या दूजा । सेवा प्रञुनी मन सुद्धकरे । वंठितसुख लीला तेहवरे ॥ १७ ॥ * ॥ कलश ॥ * ॥ इम ञव्यप्राणी ञावआणी विवेकी शुञ वातना । जिनबिंब अरचे परीवरजे चोरासीआसातना । ते गोत्र तीर्थंकर ञपार्जे नमें जेहनें केवली । ञवज्झाय श्री धर्मसींह वंदे जैन सासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्रीचोरासी आसातनास्तवनम् ॥



॥ अथ ६३ सिलाकापुरुषस्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ (ढाल १) धरम महारथ सारथि सारं ए चाल ॥

सद्गुरुचरणकमलमनधारं । त्रेसठञत्तमनरअधिकारं ।

पन्नणिसु श्रुत अनुसारं । जेहनें नाम लिये निसतारं ।
आपण सफल हुवे अवतारं । पामी जे नव पारं ॥ १ ॥ रुषन्न
अजित संन्नव अन्निनंदन । सुमति पदमप्रन्नु नयना नंदन,
सत्तम तेम सुपास । चंद्र प्रन्नुनें सुविधि सीतल जिन । श्रेयांस
वासपूज्य जिन सुरमणि, विमलगुणेंकरिवास ॥ २ ॥
अनंतधर्म श्रीशांति जिनेसर, कुंथुनाथ अरमल्लि सुहंकर ।
मुनिसुव्रत नमि नेम । पार्श्व वीर ए जिन चोवीस । जगवल्लन्न
जगगुरु जगदीस । प्रणमी जे धर प्रेम ॥ ३ ॥

(ढाल २) प्रथम सुपन गज निरख्यो ए चाल ॥ * ॥

प्रथम न्नरत नर इंद । बीजो सगर सुरिंद । मघवा तीजो
उदार । चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांतिचक्कीस ।
छठो कुंथुगणीस । सातमो अरनरनाथ । आठम सुन्नुम-
सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदमनरेस । हरिषेण दसमकहेस ।
इग्यारम जयताम । बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्की
सर बार । खेत्र न्नरत सिणगार । मघवा सनतकुमार । पुहता
स्वरग मझार ॥ ७ ॥ सुन्नुम अनें ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय
निरत्त । आठ थया सिवगामी । ते प्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ (ढाल ३) ॥ * ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥*॥

पहिलो त्रिपृष्ट जाण । द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रन्नु
जाणीये ए । पुरुषोत्तम ए चोथो । पंचम परगमो । पुरुषसिंह
प्रमाणिये ए, ॥ ए ॥ छठो पुरुषपुंमरीक । दत्त तिम सातमो ।
लक्ष्मण नामें आठमो ए, नवमो कृष्ण नरेस । ए नव केसवा ।
प्रहऊठी एपिण नमुं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव ।

नारकी सातमी । आगला पांच छठी गया ए । सातमो पंचम नयर । चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीयें ए ॥ ११ ॥ अचल विजयनें जद्र । सुप्रज्ञु सुदर्शन । आनंद नंदन सुज्ञमती ए । रामचंद्र बलज्ञद्र । बलदेव ए नव । आठथया तिहां सिवगती ए ॥ १२ ॥ बलज्ञद्र ब्रह्मदेवलोक । काल उत्सर्पणी । जास्यें सिव कृष्ण सासणें ए । अथवा निपुलाक नाम । तीर्थंकर होस्ये । चवदमो इम बहु श्रुत ज्ञणें ए ॥ १३ ॥

(ढाल ४) कुमरपणें प्रभु रहतां काल सुखे गमें ए, ए चाल ॥ * ॥

अश्वग्रीवनें तारक मेरुक बली मधु तिसा ए । निशुंज्ञ वलय प्रह्लाद रावण जरासिंधु जिसा ए । ए नव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण ज्ञावि जिणेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥१४॥

(ढाल ५) सफल संसारनी ॥ * ॥

सांतिने कुंथु अर एह ज्ञव एकही । चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही । बीर वासुदेव अरिहंतज्ञव जूजूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नव एण लेखे उता । तीन चक्रधरतणा मिलिय बारे टल्या । एम त्रेसठ ना तात इकवनमिल्या ॥ १६ ॥ तीनचक्रधरतणी टालदीजे जिसे । माय सहुनी थई साठ लेखे इसे । एह नररयणनो ध्यान नित जे धरे । तेह सुर पद लही मोक्ष पदवी वरे ॥१७॥ (कलश) इम थुण्या तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव बलदेव ए । प्रतिवासुदेव सुंसेव जेहनी करे सुर नर सेव ए । त्रेसठ

सिलाका पुरुष उत्तम जगें जयवंतो सदा । प्रहसमें तेहना चरणपंकज नमें मुनि वसतो मुदा ॥ १० ॥ इति त्रेसठ सिलाका पुरुषस्तवनं ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं लिख्यते ॥ * ॥

॥ * ॥ ढाल कपूर हुवे अति ऊजलोरे ए चाल ॥ * ॥

वरधमान जिनवरतणाजी । चरण नमुं चित्तलाय । ग्यान क्रिया जिण उपदिसेजी । शिवसुखतणो उपाय ॥ १ ॥ (भविकजन धर श्रीजिन उपदेश । छूटे कर्म किलेस भ०) ॥ पडि लेहण मुहपति तणीजी । भाखीछे पचवीस । तिहां ए भाव विचारीयेजी । इम भाखे जगदीस ॥ २ ॥ भ० ॥ प्रथम बे पास विलोकियेजी । सूत्र अर्थनी दृष्टि । ए पडिलेहण दृष्टिनीजी । करे धर्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ भ० ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननोत्याग । कामराग स्नेहरागनें जी । तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ भ० ॥ सीषवधूटक गुरु थकी जी । वाम हाथ करनाउ । नव अखोडा आदरो जी । नव पखोडा गमाउ ॥ ५ ॥ भ० ॥ देवतत्व गुरुतत्व सुंजी । धर्मतत्व गृहसार । कुगुरु कुदेव कुधर्म नो जो । तीन तणो परिहार ॥ भ० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार । तजो विराधना तीनएजी । एह अर्थ अवधार ॥ भ० ॥ ७ ॥ मन वचन कायानी सदा जी । गुपति ग्रही जे सुद्ध । परिहरीये वलि जाणनें जी । तीने दंड विसुद्ध ॥ भ० ॥ ८ ॥ पडिलेहण पचवीसएजी । मुहपत्तीनी सार । हिव पडिलेहण अंगनीजी । ते पिण चतुर

विचार ॥ ज० ॥ ए ॥ हास्य अरति रति तीननें जी । सुद्ध करो वाम बांह । तजि जय शोक डुगंछना जी । दक्षिण पिण करे साह ॥ ज० ॥ १० ॥ धुरली लेश्या तीन ए जी । ते शिरथी-करि दूर । रिद्धि रस शाता गारवो जी । करि मुख थी चकचूर ॥ ज० ॥ ११ ॥ काढसल्य तीन उरथकी जी । माया नियाण मिथ्यात । च्यार कसाय बे बगलथी जी । क्रोधादिक करि घात ॥ ज० ॥ १२॥ तज षट् काय विराधना जी । चरण बेहुं शुद्ध होय । ए पडि लेहण अंगनी जी । पचवीसे तुं जोय ॥ ज० ॥ १३॥ इम पडिलेहण जे करे जी । धर मन ज्ञान विवेक । सकल कर्म दूरे करे जी । पामें सुक्ख अनेक ॥ ज० ॥ १४ ॥ कलश । इम वीरजिणवर तणा मुख थी अर्थ गणधर सांजली । कहे सूत्रवाणी मन सुहाणी सुणो जवियण मनरली । उवज्झाय वर सिरिलछिकीरति मुख थकी ए संग्रही । मुहपत्ती पडिलेहण तणी विधि लछिवल्लज गणि कहि ॥ १५ ॥ इति श्री मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ श्री महावीर वीनती लिख्यते ॥

॥ * ॥ वीर सुणो मोरी बीनती । कर जोडी हो कहुं मन निवात । बालकनी परै वीनवुं । मोरासामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरसणविण हुं जम्यो । जवमाहें हो सामी समुद्र मझार । डुक्ख अनंता में सह्या । ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तुं प्रजु । डुख जांजे हो जगदीनदयाल । तिण तोरे चरणें हुं आवीयो । सामी मुझनें हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी

पिण ऊधस्या । तें कीधी हो करूणा मोरासाम । हुतो परम भगत ताहरो । तिण तारो हो नहिं ढीलनो काम ॥ वी० ॥४॥ शूलपाणि प्रतिबूझव्यो । जिण कीधा हो तुझनें उपसर्ग । डंक दीयो चंडकोसीये । तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशालो गुनही घणुं । जिण बोल्या हो तोरा अवरण वाद । ते बलतो तें राखीयो । सीतल लेश्या हो मूकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुणछे इंद्र जालीयो । इम कहितां हो आयो तुम तीर । ते गोतमनें तें कीयो । पोतानो हो प्रभुता नो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा । जे झगड्यो हो तुझ साथ जमाल । तेहनें पिण पनरे भवे । सिवगामी हो तें कीध कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ अैमत्तो रिषि जे रम्यो । जलमांहें हो बांधी माटीनी पाल । तिरती मूकी काचली । तें तार्‍यो हो तेहनें तत्काल ॥ वी० ॥९॥ मेघकुमर रिषि दूहव्यो । चित्त चूको हो चारित्रथी अपार । एकावतारी तेहनें । तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बारे वरस वेश्या घरे । रह्यो मूकी हो संयमनो भार । नंदीषेण पिण ऊधर्‍यो । सुरपदवी हो दीधी अतिसार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी । गृहि वासे हो वसियो वरस चौवीस । ते पिण आद्र कुमारनें । तें तार्‍यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ ॥ १२ ॥ राय श्रेणिक राणीचेलणा । रूपदेखी हो चित्त चूका जेह । समवसरण साधु साधवी तें कीधा हो आराधक तेह ॥ वी० ॥१३॥ विरति नहीं नहीं आंखडी । नहीं पोहोसो नहीं आदरी दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधो हो

स्वामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उधर्या । कहुं तोरा हो केता अवदात । सारकरो हिव माहरी । मन-माहें हो आणो मोरझी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले । नहीं तेहवो हो मुझ दरसण नाण । पिण आधार छे एतलो । इक तोरोहो धरुं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥ १६ ॥ मेह महीतल वरसतो । नवि जोवे हो समविषमी ठाम । गिरुआ सहि जे गुण करे । स्वामी सारो हो मोरा वंछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामें सुख संपदा । तुम नामें हो दुःख जाये दूर । तुम नामें वंछित फले । तुम नामें हो मुझ आणंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलश ॥ * ॥ इम नगर जेशलमेरु मंझण तीर्थंकर चौवीसमो । सासना धीसर सिंह लंछन सेवतां । सुर तरु समो । जिनचंद त्रिशला मात नंदन सकलचंद कलानिलो वाचना चारिज समयसुंदर संथुण्यो त्रिभुवनतिलो ॥ १९ ॥ इति श्री महावीर स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ चौवीस दंडकस्तवनं लिख्यते ॥

॥ ढाल आदर जीव क्षमा गुण आदर ए चाल ॥

॥ पूर मनोरथ पासजिनेसर । एह करुं अरदास जी । तारण तरण विरुद तुझ सांजलि । आयो हुं धरि आस जी ॥ १ ॥ पू० ॥ इण संसार समुद्र अथागे, जमियो जवजल मांहि जी । गिलगिचिया जिम आयो गिरुतो । साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तुं ज्ञानी तो पिण तुझ आगे । बीतक कहिये बातजी । चौवीसेदंडक हुं जमियो । वरणुं तेह विख्यातजी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इकदंडक,

असुरादिकदसजाण जी । पांचथावरनें तीनविकलेंद्री । भगणि-सगिणतीआणजी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्रीतिर्यंचनें मानव । एहथया इकबीसजी । व्यंतर ज्योतिषीनें वैमानिक । इमदंडकचौवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्रीतिर्यंच अनेंनर । पर्याप्ता जे होय जी । ए चौविहदेवां मे उपजे । इमदेवां गतिदोयजी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्याते आउखे नरतिरि, निश्चे देवजथायजी । निजआ-उखे समके ओछे । पिण अधिके नवि जायजी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपतीके व्यंतरतांई । समूर्छिमतिर्यंचजी । सरगआठमे तांई पुहचे । गरभज सुकृतसंचजी ॥ पू० ॥ ८ ॥ आउ सं-ख्याते जे गरभज । नर तिर्यंचविवेकजी । बादरपृथवीनें वलि पाणी । वनस्पतीप्रत्येकजी ॥ पू० ॥ ९ ॥ परियाप्ता इण पांचें ठामें । आवी उपजे देवजी । इणपांचेमाहें पिण आगे । अधि-काईकहुं हेवजी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजासरगथकी मांभीसुर । एकेंद्री नवि थायजी । अठमथीऊपरलासगला । मानवमाहें जायजी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ * ॥ ढाल २ आज निहेज्योरे दीसेनाहलो ए चाल ॥

॥ नरकतणीगतिआगति इणपरें । जीवभमें संसार । दोय-गतिनें दोयआगतिजाणीयें । वलीयविशेषविचार ॥ १२ ॥ नरक० ॥ संख्याते आउ परयाप्ता । पंचेंद्रीतिर्यंच । तिमहीज मनुष्य एहिजबेनरकमें । जायेपाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरकलगि जाय असन्नियो । गोहनकुलतिमबीय, गृध्रप्रमुख पंखीत्रीजीलगे । सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी

नरके सीमा सापनी । छठीलगि स्त्रीजाय । सातमीये मांणस के माछलो । ऊपजे गरज्जजआय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंरुके । तिरयंच के नरथाय ॥ तेपिणगरज्जजनें परयापता । संख्याती जसुआय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियांनें नरकथीनीसर्यां । जे फलप्राप्तिहोय । उत्कृष्टेत्रांगे करि ते कहुं । पिण निश्चेनहींकोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथमनरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे । बीजी हरि बलदेव । तीजी लगि तीर्थंकरपद लहै । चोथी केवल हेव ॥ न० ॥ १८ ॥ पंचमीनरकनो सरब बिरति लहै । छठी देसविरत्त । सातमी नरक नो समकितही- जलहै । न हुवे अधिकनिमित्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ * ॥ ढाल ३ करमपरीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥

मानवगतिविण मुगतिहुवे नहींरे । एहनो इम अधिकार । आऊसंख्याते नर सहुदंरुकेरे । आवीलहै अवतार । मानव० ॥ २० ॥ तेऊ वाऊ दंरुक बेतजीरे । बीजा जेबावीस । तिहां थीआयाथाये मानवीरे । सुख–दुःखकर्मसरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखीआऊखेरे । सातमीनरकना तेम । तिहांथीमरिने मनुष्यहुवेनहींरे । अरिहंतत्राख्योएम ॥ मा० ॥ ॥ २२ ॥ वासुदेवबलदेव तथा वलीरे । चक्रवर्तिनें अरिहंत । सरण नगरना आया एहुवेरे । नरतिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चौविहदेवथकी चवि ऊपजेरे । चक्र- वर्त्ति बलदेव । वासुदेव तीर्थंकर ए बे हुवेरे । वैमानिकथकी बेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ * ॥ ढाल ४ नाभि अने मरुदेवा ए चाल ॥

॥ हिव तिरयंचतणी गति आगति कहीयेअशेष । जीव-
नमें इणपरनवमांहें करमविशेष । आउसंख्याती जे नर
तिर्यंच विचार । ते सगला तिरयंचांमाहें लहै अवतार ॥ २५ ॥
जिण तिरयंचांमाहें आवे नारक देव । तेकह्या पहिली तिण
कारण न कहुं हेव । पंचेंद्रीतिरयंचसंख्यातेआउखे जेह ।
ते मरी चिहुंगतिमांजावे इहां नहींसंदेह ॥ २६ ॥ थावर
पांच तीने विकलेंद्री आठेकहावे । तिहांथी आउसंख्याता
नर तिरयंचमें आवे । विकलचवी लहै सर्वविरतिपिण मुग
ति न पावे । तेउ वाउथी आयो तेहनें समकितनावे ॥२७॥
नारक वरजीनें सगलाही जीवसंसार । पृथवी आउ वनस्पती
माहें लहै अवतार । ए तीनें इहांथीचविआवे दसेठामें
थावर विकल तिरीनरमाहें उत्पत्ति पामें ॥ २८ ॥ पृथवी
कायआदिदेई दसदंडके एह । तेउ वाउ माहेंआवी उपजे
तेह । मनुष्य विना नवमाहें तेउ वाउवें जावे । विकलेंद्री ते
दसमाहिंजावे पूठाहीआवे ॥ २९ ॥ एमअनादि तणोमिथ्याती
जीवएकंत । वनस्पतीमाहें तिहांरहीयो कालअनंत । पुढवी
पाणी अग्नि अनें चोथोवलिवाय । कालचक्र असंख्याता तांइ
जीवरहाय ॥३०॥ बेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री मझारे । संख्याता-
वरसांलगे भमियो कर्मप्रकारे । सात आठ भव लगतां नर तिर-
यंचमें रहियो । हिवमानव भव लहिनें साधुने वेषमें रहियो ॥३१॥
रागद्वेष छूटे नहीं किम होवे छूटकवार । पिणछे माहरे मन सुधता

हरो एकआधार । तारणतरण में त्रिकरणसुद्धे अरिहंत लाधो । हिव संसार घणोजमिवो तो पुद्गलआधो ॥ ३२ ॥ तूं मनवंछितपूरण आपदचूरणसामी । ताहरी सेवलहीतो में नवनिध सिधपामी । अवर न कांइच्छुं इणजव तुहीजदेव । सूधे मन एक होयजो जव जव ताहरीसेव ॥३३॥ कलश । इम सकलसुखकर नगरजेशलमेर महिमादिनदिनें । संवत्तसतरेछगणतीसे दिवसदीवालीतणें । गुणविमलचंद्रसमान वाचक विजयहरष सुसीसए । श्रीपासना गुण एमगावे धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्रीचौवीसदंडकस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री इरियावही मिच्छामिदुक्कड संख्या-
स्तवनं लिख्यते ॥

॥ * प्रभु प्रणमुंरेपासजिणेसरथंभणो ए देशी ॥

पदपंकजरे प्रणमी वीरजिनंदना । त्रिकरणसुधरे करि मुनिवरपयवंदना । अैमत्तेरे पडिकमी जिमइरियावही । श्रीवीरनी रे वाणी तहत्तकरि सरदही । उल्लालो । सरदहीवाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मिछामिडुक्कडतणी संख्या कहि सुं जिमकही केवली । जूदगजलण तिम वाउ वणसई विगल पणइन्द्री तणी । करतांविराहण करमबंध्या दूर ते करिवाजणी ॥ १ ॥ ढाल ॥ पुढवीदगरे तेऊ वाऊ वणस्सई । पणथावर रे वादरसुहमदसेंथई । प्रत्येकजरे वणस्सईइग्यारेंथया । वावीसरे पजत्तग अपजत्तया ॥ उल्लालो ॥ पजत्त अपजत्तग वखाणया विगलतिय छह जाणए । जलथलखचरउरभुयंग

छइ पणिंद्रिय तिरि अरूयालए। घम्मादिसातेनरकपुढवी नारकी तिहां सातए। तेचवदभेदेकरीजाणो पज्जत्तय अपज्जत्तए ॥ २ ॥ ढाल ॥ पनरहविधरे सुरगणपरमाहम्मिया। किलविषियारेत्रिविधकरम ते निम्मिया। जंभियदसरे नवलो-कांतिकजाणिये। सोलह विधरे व्यंतरदेव वखाणिये ॥ उल्लालो ॥ वखाणिये दसविध भुवनपतिना तार रवि शशि रिषिगाहा। चर थिरदसेविध जोइसीसुर वखाणया जिणवरजिहां। बारह वैमानिक पणअणुत्तर नवग्रैवेके नवभणया। पज्जत्त अपज्जत्तग अठाणुंअधिकसतसंख्यागिणया ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मेघ आगम सही ए देशी ॥

॥ पंचभरत वलि ऐरवतपंचए पंचविदेहवरभूमिका ए। खेत्र ए पनरह करमभूमिजाणीये असिकसिमसिहि आजीविकाए। हेमवतखेत्र वलि हरिवर्ष, रम्यक, ऐर-एयवतसहीए। मेरु पिणपाखती चारि चारि खेत्रए दस कुरु अकरमकभूमि कहीए ॥ ४ ॥ हिमगिरि सिमरीय दाढ चिहुंआरिअ लवणसमुद्रमांहिविस्तरीए। सात सात अंतर दोयपासे दीपउप्पन्न अंतरधरीए। दोइसेभेद छइ आगला जांणिये मणुय पज्जत्त अपज्जत्तयाए। एकसो एक समुर्छिम भेद ए। तीनसेतीन मणुआ थया ए ॥ ५ ॥

॥ढाल३॥ हिव जनम्याजगगुरु जगत्र हुवो जयकार ए चाल ॥

॥ पणसय तेसठविध जीवसहू छे एह, अभिहयआदिक

दस गुणितकरीजे तेह । पणसहसछसे वलि तीसअधिकते जाण । ते रागे दोसे डुगुणा करीवखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इग्यारह डुइसयसाठप्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हित उर आण । मनवच काया करि त्रिगुणा करि ते अंक । तेतीस सहस सतसात असी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणाकिद्ध । इकलक्ख सहसइग तिसयचालीस प्रसिद्ध । अतीत अनागत वर्त्तमान वलि काल । जे अड्य विराधना तिणि त्रिगुणा संजाल ॥ ८ ॥ तीनलाख सहस च्यार बीसअधिक ते थाय । अरिहंत प्रमुख छहसाखे छ गुणा जाय । इम लाखअढारह वलि सहसचउवीस । इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ ॥ चोपईनी ॥

॥ इणपणि मिछामिडुक्कड देई । जविकतस्या जवजलनिधि केई । तरे अछे वलि आगलतरसी । निरमलकेवललखमी-वरसी ॥ १० ॥ इरियावही धरमगंगाजल । स्नानकरि आतम-करे निरमल । संमुखजाषे वीरजिनेसर । सूत्रकरिगूंथे ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इमपडिक्कमी मुनिवरऐइमतो । वीरसीस केवलपदपत्तो । त्रिकरणसुध तसु पयप्रणमीजे । मानवजमन सफल इमकीजे ॥ १२ ॥ कलश ॥ इम वीरजिणवर ज्ञानदि-णयर सयललोयसुहंकरो । तियलोयसामी सिद्धिगामी सुद्धधरम धुरंधरो । उवज्झाय लक्ष्मीकीर्त्ति सीसे जैनवाणी मनधरी । गणि लब्धिवल्लज स्तवनजाण इम संथुएयो जावे करी ॥ १३ ॥ इति श्रीइरियावहीस्तवनं संपूर्णं ॥

॥ * ॥ चवद्गुणठाणा स्तवनं लिख्यते ॥
॥ थंभणपुर श्रीपासजिणंदो ॥ ए चाल ॥

॥ सुमतिजिणंद सुमतिदातार । वंदुं मनसुधवारंवार । आणीभावअपार । चवदे गुणस्थानकसुविचार । कहिस्युं सूत्र अरथ मनधार । पामें जिम भवपार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो । बीजो सास्वादनमनआणो । तीजो मिश्र वखाणुं । चोथो अविरतिनाम कहाणो । देशविरति पंचम परमाणो । छठो प्रमत्तपिछाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सद्दहीजे । अष्टम अपूरबकरणकहीजे । अनिवृत्ति नाम नवम्म । सूखमलोभ दसम सुविचार । उपशांतमोह नाम इग्यार । खीणमोहबारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगीगुणधाम । चउदम थयो अयोगीनाम । वरणुं प्रथमबिचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणें । एहलक्षण मिथ्यागुणठाणें । तेहनां पंचप्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी चाल ॥

॥ जेह एकांतनयपक्ष थापी रहै, प्रथमएकांतमिथ्यामति ते कहे । ग्रंथ उत्थापि थापे कुमतिआपणी । कहे विपरीत मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥ जैन शिवदेवगुरु सहुनमें सारिखा । तृतीय ते विनयमिथ्यामतिपारिखा । सूत्र नवि सरदहे रहे विकल्पघणें । संसयीनाम मिथ्यातचोथोभणें ॥ ६ ॥ समझनहींकाई निजधंध रातोरहे । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै । एह अनादि अनंत अभव्यनें । करिय अनादिथिति अंत सुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीरघृतखंडजीमनें वमें ।

सरसरसपाय वळि स्वादकेहवोगमें। चौथ पंचम छठे ठाण चढिनेंपडे। किणहिकषायवसि आय पहिले अडे॥ ८ ॥ रहे विच एकसमयादि षट् आवली। सहीय सासादनें स्थिति इसी सांजली। हिव इहां मिश्र गुणठाण त्रीजोकहे। जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरतलहे॥ ए॥

॥ ढाल ३ ॥ बेकर जोडीताम एहनी ॥

॥ पहिलाचारकषाय। शमकरिसमकिती। केतो सादि मिथ्यामतीए। एबेहिजलहे मिश्र। सत्यअसत्य जिहां। सरदहणाबेउंछतीए ॥ १० ॥ मिश्रगुणालयमांहि। मरणलहे नहीं। आउबंध न पडे नवो ए। केतो लहे मिथ्यात। के समकित लहे। मति सरखी गतिपरजवे ए॥ ११ ॥ च्यारअप्रत्याख्यान। उदयकरी लहे। मतिविण किहां समकितपणो ए। ते अविरतगुणठाण। तेतीससागर। साधिकथिति एहनी जणो ए॥ १२ ॥ दया उपशमसंवेग। निर्वेदआसता। समकितगुणपांचेधरेए। सहुजिन वचनप्रमाण। जिन शासनतणी। अधिकअधिक उन्नति करे ए॥ १३ ॥ केईक समकितपाय। पुद्गलअरधतां। उत्कृष्टाजवमेरहेए। केईकज्नेदीगंठि। अंतरमहुरतें। चढतें गुण सिवपदलहे ए॥ १४ ॥ च्यारकषाय प्रथम्म। त्रिण वळि मोहनी। मिथ्यामिश्रसम्यक्तनी ए, सातेप्रकृति, जास। परही उपसमें। ते उपसमसमकितधणी ए॥ १५ ॥ जिण साते क्षयकीध। तेनर क्षायकी। तिणहीज-

नव सिव अनुसरे ए। आगलबांध्यो आउ। तातें तिहांथ-
की। तीजे चौथेनवतरेए ॥ १६ ॥

॥ ढाल ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ए चाल ॥

॥ पंचम देसविरतिगुण ठाण। प्रगटे चउकरी प्रत्याख्यान।
जेण तजे बावीस अनक्ष। पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥
गुण इकवीस तिके पिण धारे। साचा बारे व्रत संनारे। पूजा-
दिक षट्कारज साधे। इग्यारे प्रतिमाआराधे ॥ १८ ॥ आरत
रौद्र ध्यान हुवे मंद। आयो मध्य धरमआनंद। आठ वरस
ऊणी पुवकोरू, पंचमगुणठाणें थितिजोरू ॥ १९ ॥ हिव आगे
साते गुणठाण। इकइक अंतरमहुरतमान। पंच प्रमाद वसे
जिण ठाम। तेण प्रमत्तछठोगुणधाम ॥ २० ॥ थिवर कलप
जिनकलपआचार। साधे षट्आवस्यकसार। उद्यतचोथा
च्यारकषाय। तेण प्रमत्तगुणठाणकहाय ॥ २१ ॥ सूधो राखे
चित्तसमाधे। धरमध्यान एकांतआराधे। जिहां प्रमाद क्रिया-
विध नासे। अपरमत्त सत्तमगुणनासे ॥ २२ ॥

॥ ढाल ५ ॥ मी नदी यमुनाके तीर उडे दोय
पंखीया ए चाल ॥

॥ पहिलेअंसे अष्टमगुणठाणातणें। आरंने दोयश्रेणि
संखेपे ते गिणें। उपशमश्रेणिचढे जे नरहुवे उपसमी। क्षपक-
श्रेणि क्षायकप्रकृतिदश क्षयगमी ॥ २३ ॥ तिहां चढतापरि-
णाम अपूरबगुण लहे। अष्टम नाम अपूरबकरण तिणें कहे।
सुकलध्याननो पहिलो पायो आदरे। निरमल मनपरिणाम
अभिगध्यानें धरे ॥ २४ ॥ हिवअनिवृत्तिकरणनवमो गुण

जाणिये । जिहां जावथिररूप निवृत्ति न आणिये । क्रोध मानने माया संजलणाहणें । उदेनहीं जिहां वेद अवेदपणों तिणें ॥ २५ ॥ जिहांरहे सुखमलोज काइंकशिवअजिलखे । ते सूखमसंपरायदशम पंकित दखे । संतमोह इण नाम इग्यारम गुणकहे । मोहप्रकृति जिणठाम सहु उपसमलहे ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो कालकरे किणहीपरे । तो थाये अहमिंद्र अवर गतिनादरे । च्यारवारसमश्रेणि लहे संसारमें । एकजवे दोयश्रेणि अधिक न हुये किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समी पहिले पडे । मोहउदे उत्कृष्ट अरधपुद्गल रडे । क्षपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नहीं । दशम थकी बारम्मचढे ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ६ ॥ एकदिन कोई मागधआयो पुरंदर पास ए चाल ॥

॥ खीणमोहनामें गुणठाणो बारमजाण । मोहखपायो नेडो आयो केवलनाण । प्रगटपणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिवआगे तेरमगुणठाणतणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चौकडी क्षयगई रहीय अघातीय एम । प्रकृतिपच्यासी जेहनें जूनाकापड जेम । दरसणज्ञानवीरजसुखचारित पंचअनंत । केवलज्ञानप्रगटथयो विचरे श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनीठानी परगट वात । महिमावंतअढारे दूषण रहितविख्यात । आठवरसे ऊणीकही इकपूरबकोडि । उत्कृष्टी तेरमगुणठाणें ए थितिजोडि ॥ ३१ ॥ करशैलेसीकरण निरूध्या मनवचकाय । तेण अयोगी अंतसमे सहु प्रकृतिख-

पाय । पांचे लघुअक्षरऊचरतां जेहनोमान । पंचमगति पामें सिवपद चउदमगुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें माहें न मरे कोय । पहिलो बीजो चोथो परन्नव साथेहोय । नारक देवनी गति माहें लाजे पहिलाच्यार । धुरला पांच तिरि माहिं मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥ कलश ॥ इम नगरबाहरू- मेरुमंरून सुमतिजिनसुपसाउले । गुणठाणचवदविचार वरण्यो नेद आगमनेबले । संवत्तसतरेसे ठत्तीसे श्रावणवदि एकादसी । वाचक विजय श्रीहरष सानिध कहे मुनि इम धर्म्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्रीचतुर्द्दशगुणस्थान विचार स्तवनं संपूर्णम् ॥ ॥ * ॥

॥ अथ अढाईद्वीप २० विहरमान स्तवनं लिख्यते ॥

॥ वंदुं मनसुध विहरमाण जिणेसरवीस । दीपअढीमें दीपे जयवंताजगदीस । केवलज्ञाननें धारे तारे करि उपगार । किण किणठामें कुणकुणजिन कहि स्युं सुविचार ॥ १ ॥ ए पेंतालीस लक्ष्योजन मानुषक्षेत्रप्रमाण । वलया कारे आधे पुष्कर सीमा- जाण । दोयसमुद्र सोहे द्विपअढाई सार । तिणमें पनरे करम- नूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूदीप समे त्रिचथाल आकार । लांबो पिहुलो इकलखजोयणनें विसतार । मोटो तेहनें मध्य सुदरशणनामें मेर । तिणथी दिसा विदिसानी गिणती च्यारें फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह नरत सुनक्षेत्र । पांचसेठवीस जोयण ठकला तेहनो वेत्र । उत्तरखं- रूमें एहवो ऐरवतक्षेत्रकहाय । इण बिहुं करमांनूमी आरा ठई फिरताजाय ॥ ४ ॥ तेत्रीससहस ठसे चौरासी जोयण

जाण । च्यारकला ए महाविदेह विखंज्ञवखाण । बावीससे तेरे जोयण एक विजय पहुलाण । एहवि बत्तीसविजयविराजे जेहनें ठाण ॥ ५ ॥ मेरुविचेकर पूरब पछिम दोयविज्ञाग । सोले सोले विजय तिहां विचरे श्रीवीतराग । सासते चोथे श्रारे तारे श्रीश्ररिहंत । एहवो महाविदेह करमज्नूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजयपुष्कलावतिश्राठमीठाम । पुंरुरीकणीनगरी तिहां श्रीसीमंधरस्वाम । वप्रविजयपचवीसमी विजयापुरनोनाम । पछिमविदेह बीजा युगमंधर कीजे प्रणा-म ॥ ७ ॥ तिमहीज नवमीवछविजय वलि पूरबविदेह । नयरि सुसीमा त्रीजाबाहु नमुं धरिनेह । नलिनावर्त्त चौवीसमी पछिमविदेह वखाण । वीतशोकानगरी तिहां चौश्रा सुबाहु जाण ॥ ८ ॥ एच्यारेईजिणवर जंबुद्दीपमझार । महाविदेह सुदरशण मेरु तणें परकार । एहवो जंबुद्दीप महा गढ जेम गिरिंद । खाई रूपे दोयलखजोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल दीवाली दिन आवीयो ए चाल ॥

॥ दीपे बीजो द्दीप ए । धनधनधातकीखंरु । पिहुलो चिहुंलखजोयणे । मंरुलरूपेमंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय ज्नरत दोयऐरवत, दोय वलि महाविदेह । करमज्नूमी षट् छे जिहां । तणहीज नामेंएह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पछिम धातकी । खंरुगिणीजे दोय । विजयमेरूपूरबदिसे । पछिम श्रचल जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक इक मेरुनें श्रांतरे । करम ज्नूमि तीन तीन । निजनिज मेरुथी मांझिनें । लेखो चिहुं दिसलीन

॥ १३ ॥ श्रीसुजातजिनपांचमो । बठो स्वयंप्रजूईस । रिषत्ता-ननजिन सातमो । समरीजे निसदीश ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंत वीरजजिन आठमो । ए च्यारे जिनराय । पूरब धातकीखंरूमें । महाविदेह रहाय ॥ १५ ॥ दी० ॥ पहिली चिहुं जिननी परे । विजय नगर दिशि ठाण । तिण हीज नामें अनुक्रमें । विजय मेरु अहिनाण ॥ १६ ॥ दी० ॥ नवमो सूरप्रजु नमुं । दशमो देवविशाल । इम वज्रधर इग्यारमो । त्रिकरणनमुं त्रिहुंकाल ॥ १७ ॥ दी० ॥ बारमो चंद्राननजिन । पच्छिमधातकी मांहि । विचरे च्यारे जिणवरा । अचलमेरु उत्साहि ॥ १८ ॥ दी० ॥ एहवो धातकी खंरूए । परदक्षणा परकार । अठलखजोयणविंटीयो, समुद्र कालोदधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ३ ॥ पहिलि प्रतिमा एकणमासनी० ए चाल ॥

॥ कालोदधिनें पेलेपारए । वींट्यो चूरूी जेम विचालए । सोलहलख जोयण विसतारए । दीपपुष्करवर अतिसुखकार ए ॥ उल्लालो ॥ सुखकार पुष्करदीपत्रीजो तेहनें आधेपगे । विचपड्यो परवत मानुषोत्तर मनुष्यक्षेत्रतहांलगे । तिण अधिकार आठ लाख । जोयण अरधपुष्कर एमए । तिहां करमजूमी उए कहीजे धातकीखंरू जेमए ॥ २० ॥ ॥ ढाल ॥ आधेपुष्करनें पूरबदिसे । मंदरनामें मेरु तिहांवसे । पच्छिम विद्युमाली मेरु ए । इहां किण इतरो नामें फेर ए ॥ उल्लालो ॥ फेर ए इतरो इहां नामें अवरठामें कोनहीं । एक एक मेरे तीन तीने करमजूमी तिहां कही । इम जरत ऐरवत महावि-

देहे नाम सरिखो एह ए। तिणहीज नामें विजयसगली सास-ता धर्मक्षेत्र ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकीखंडे तिम पुष्कर सही। इहां खेत्रांनी रचनाविधकही। वारवारकहतां विस-तार ए। पहिलां पर लेज्यो सुविचार ए ॥ ॥ उल्लालो ॥

सुविचार बाकी तेह सगलो नगर तिमहीज मनगमें। पूरबे पछिम जेह नीते तेह तिमहीज अनुक्रमें। श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा। पूरबे पुष्कर अरधमांहे सरब जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदु जिन सतरमो, श्रीमहा-भद्र अठारमनितनमो देवजसा उगणीसमजिनदेवए। अजितवीर्य वीसम जिणदेवए ॥ उल्लालो ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध मांहि कह्या पछिमभागए। तिहां मेरु विद्युन्मालि चिहुंदिसि विचरता वीतराग ए। चौरासीपूरबलाख वरसां आउ इक इक जिनतणो। पांचसेधनुषसरीर सोहे सोवनवरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ कालजघन्यै ए जिणवीसए। हिव उत्कृष्टे भेदकहीसए। एकसोसत्तरि तिहां जिणवर कहे। पांचे भरते जिम पांचे लहे ॥ उल्लालो ॥ जिणलहे पांचे तेम पांचे ऐरवत मिल दशहुवा। इक इक विदेह बत्तीस विजयां तिहां पिण छे जूजूआं। एकसोसत्तरि एम जिनवर कोडिनवसय वलि केवली। नवसहसकोडी अवर मुनिवर वंदीये नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरतें ऐरवतें आज ए, पांचमें आरे नहीं जिनराजए। धनधन पांचे महाविदेह ए। विचरे वीसजिनगुणगेहए ॥ उल्लालो ॥ गुणगेह दोष

अढारवरजित अतिशया चौतीसए। चोसठिइंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीस ए। तिहां आज तारण तरण विचरे केवली दोयकोम ए। दोईसहसकोमि सुसाधु बीजा नमुं बेकरजोम ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इमअढीदीपे पनरकरमाजूमिखेत्रप्रमाण ए। सिद्धांतप्रकरणमांहिजाष्या वीसविहरमाणए । श्रीनगर जेशलमेरु संवत सतर गुणतीसे समे। सुखविजयहरष जिणंद सांनिध नेहधरि धर्मसींह नमें ॥२६॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मजूम्यादि विचार गर्जितं विंशति विहरमाण जिनानां वृद्धि स्तवनं ॥

जंबुद्वीप, धातकी खंम, २ आधो पुष्कर द्वीप, ३ एवं २ ॥ द्वीपमें ५ जरत, ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्म जूमीमें विचरता सास्वता २० विहर मानकों मेरा नमस्कार होवो ॥

॥ अथ श्रीशीतल जिनचैत्यप्रतिष्ठा स्तवनं लिख्यते ॥

॥ जविजनपूजोरे शीतलजिनपतीरे। नयनानंदन चंद। प्रजुजी विराजे रे सूरतबिंदरे। नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥ जगहितकारीरे जिनजी अवतस्यारे। श्रीदृढरथ नृपगेह। श्रीवत्सोहेरे लांछनसूंदरूरे। कनकवर्ण प्रजुदेह ॥ २ ॥ ज० ॥ विषयनिवारी रे संयमसंग्रह्यो रे। लाधुं केवल नाण। सघनघनाघनजिमधर्म वरसतारे। विचस्या त्रिजुवन जाण ॥ ३ ॥ जवि० ॥ वेदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुतारे। च्यार अघाती कर्म, दूर निवास्या रे अनुक्रम तेहनें रे। पाम्युं शिव पदसर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥ संप्रतिकालेरे श्रीजिनराजनोरे। पूजीजेरे प्रतिबिंब। प्रतिदिनलहीयेरे प्रजुसुप्रसादथीरे वांछित

फल अविलंब ॥ ५ ॥ भ० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब विलोकतां रे । दुकृतदूरपुलाय । इंद्रीयनिग्रह सुग्रहसंपजेरे । समकित पिण दृढथाय ॥ ६ ॥ भ० ॥ श्रीसद्गुरुनामुखथी सांभल्यारे । एहवा वचनविलास । ते बहुमानें रे निजचित्तमें धस्यारे । नेमी सुत भाईदास ॥ ७ ॥ भ० ॥ चैत्यकराव्युंरे सुंदरसोभतोरे । मनधरिअधिकउल्लास । शीतलप्रभुनोरे बिंबभरावियोरे । सहसफणा वलिपास ॥ ८ ॥ भ० ॥ वरस अढारह सत्तावीसमें रे । माधवमास मझार । उज्जलद्वादसी दिवसे थापीयारे । बिंब अनेकउदार ॥ ९ ॥ भ० ॥ एकसोइक्यासीसहु मेले थया रे । बिंबादिकसुविचार । कीध प्रतिष्ठा तेदिनतेहनीरे । विधि पूर्वकमनधार ॥ १० ॥ भ० ॥ श्रीजिनलाभसूरीश्वरदीपतारे । श्रीखरतरगछभांण । तासपसायमें शीतलजिनथुण्यारे । विबुध क्षमाकल्याण ॥ ११ ॥ भवि० ॥ इति श्री १० शीतल जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ बयालीस दोस वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सासनपतिचौवीसमो । महावीरभगवंत । दोष बयांलीस दाखीया । टाले ते मतिमंत ॥ १ ॥ धारक दसविध धरमना । चाले जे इणचाल । निरदूषणआहारल्ये । ते विरला इणकाल ॥ २ ॥ सोले श्रावकथी टले । सोले साधु सरीर । बली दस फीरतां गोचरी । समजे तिके सधीर ॥ ३ ॥ मांड-लना दूषण कह्या । पणधारीनें पंच । माहें ते पिण मेलतां । सेंतालीसनो संच ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हूवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उदगम नाम संज्ञाइसीरे । श्रावकथीजेसोल । पहिली ते परिकासीयेरे । विवरोकरीयविरोल । मुनीसर समजीट्यो आहार । नालिकवचननिहालज्यो रे । आहारजिस्यो उदगार ॥ मुनी० ॥ ६ ॥ मुनिनेंकाजेजेकरेरे । आधाकर्मी अबुद्ध । कीधोमो ऊनोकरीरे । द्येतेपूर्वविसूद्ध ॥ मुनी० ॥ ७ ॥ एदोनुंमेलीदीयेरे । तेत्रिजोपूतिकर्म । अन्यमतिनें आपतांरे । द्येते मिश्रितमर्म ॥ मुनी० ॥ ८ ॥ थाप्यो दूजे गाममें रे । थापनादूषणजाण । प्राभृतिकादूषणछठो रे । अठीयउठीसुंद्ये आंण । मुनी० ॥ ९ ॥ जालीगोखजोई दीयेरे । प्राडुःकरण ते प्राय । मोललेइद्यें मुतिप्रतेंरे । क्रीततीको कहिवाय ॥ मुनी० ॥ १० ॥ ऊधारोलेइ आपतां रे । नवमो प्रामित्यनेम । असनसटेलेइ असनद्येरे । ते परवर्तनप्रेम ॥ मुनी० ॥ ११ ॥ अन्याहृतइग्यारमोरे । जेदे थानकआय । उद्भिन्ननांमे बारमोरे । आपे जे उघराय ॥ मुनी० ॥ १२ ॥ ऊपरथीउतारीद्येरे । मालाहृततेमोस । बालकना करथी ग्रहिरे । देतेआछिद्यदोस ॥ मुनी० ॥ १३ ॥ पाकादिकपंचांतणोरे । अनपृष्ट दे जो एक । अधिकेरो ऊरे वलीरे । देखी साधुअनेक ॥ मुनी० ॥ १४ ॥ अध्यवपूरक ते सोलमो रे । लेतांलागे पाप । सुविवेकी श्रावकहूवे रे । तो सहिजेटले संताप ॥ मुनी० ॥१५॥ दुहा ॥ उतपादनसंज्ञातणा । दाखूं सोले दोष । जयणाकरी टालीसजो । तो मुनिवरपामीसमोख ॥ १६ ॥

॥ ढाल २ ॥ सुगुण सोभागी हो साहिब माहारा एदेशी ॥

॥ प्रथमखेलावे बालकबहूपरे । ते धाईदूषणतंत । चतुरनर, दाखे संदेसा दूतितणा । ते दूतिदोषकहंत ॥ चतु० ॥ १७ ॥ जिनवरनेंवचनें चालेजिके । तेराखे एकतार ॥ चतु० ॥ असनादिकलेतांअणसूझतां । आगेदोष अपार ॥ चतु० ॥ १८ ॥ जिन० ॥ निमित्तप्रकाशकरे नितनितनवो । निमितदूषण तेह नेम ॥ चतु० ॥ जातवतांयां आपणीजनप्रते । आजीविकदोषएम ॥ चतु० ॥ १९ ॥ जिन० ॥ शिवशासननीवातसुणावतां । वनीगमदोषविचार ॥ चतु० ॥ विविधआहारकरीद्यैं वैद्यगी । तेह चिकित्सानीतार ॥ चतु० ॥ २० ॥ जिन० ॥ असनादिक जे क्रोधेआचरे । क्रोध दूषण कहिवाय ॥ चतु० ॥ मानतणें बस जेहग्रहें मुनि । ने मानपिंड कहिवाय ॥ चतु० ॥ ॥ २१ ॥ जिन० ॥ केलवणा जे कपटतणीमिलें । तेतोमायाविनाम ॥ चतु० ॥ लालसा दूषणरसलुब्धो लीयें । ते समजुनो नहिं कांम ॥ चतु० ॥ २२ ॥ जिन० ॥ परसंसी दातव्यगुणपूछला । लेतांसंस्तवनो लाग ॥ चतु० ॥ लेइने परसंसें लोकनें । ते परसंसा पिण त्याग ॥ चतु० ॥ २३ ॥ मंत्रतणी लाघवतायें मिले । तो मंत्रदूषणतास ॥ चतु० ॥ वसीकरणकरदेई वहिरतां, चूरणपिंडसरास ॥ चतु० ॥ २४ ॥ अंजनादिकजोगे अदृसीकरे । योगापिंडदूषणजाण, मूलकरमपिंडदूषणसोलमो, पातन गर्भप्रमाण ॥ चतु० ॥ २५ ॥ जिन० ॥ दुहा ॥ गोच-

रीयें जातां गुरें । दाख्या दूषणदस्स । ते टाली ध्यावे तिके संयम गुणें सरस्स ॥ २६ ॥

॥ ढाल श्रीसंखेसरपासजिणेसरभेटिये एदेशी ॥

आधाकरमीआदिक सोलह जे कह्या, संकाकरतां संकित पिंडवसेफह्या । सचित्तजलादिकलागां मृक्षितपिंडए । प्रथवी प्रमुखमुकाणो निक्षितपिंडए ॥ २७ ॥ सचितप्रमुख फलस्पर्शे असनग्रह्यां सदा । चोथोपिधितदोष हूवो परगट तदा । संहृत-दोष मोटाथी लघुमे मूकतां । दायकनांमे दोष देवालअसूजतां ॥ २८ ॥ उनमिश्रलागे जोग्य अजोग्य अजाणतां । अपरणि-तइणनांम असीनो आणतां । कररेखाविणसूकां लिप्तदूषण-लीयो । छर्हितदूषणजे लेतां धरति नांखीयो ॥ २९ ॥ ए दसदूषण एहनें संज्ञाएषणा, साधुजिकेसुविहांण चलंति गवे-षणा । जिनवरनेंवचनेंएहबेतालीस जो टले, तोइणपंचमेंआरे साधुपणोपले ॥ ३० ॥ मुनिवरनें वली पांचदूषण मांडल तणा । जे ज्ञाख्याजिनराज सुणो ज्ञवियणजणा । खीरखांडघृतमेल्यां संजोजनसुणो । अपरिमाण आहार लेतां दूजो गिणो ॥ ३१ ॥ धूम दूषण इण नाम तेहिजकुवखाणतां । ईंगालनांमे दूषणस-खरवखांणतां । ग्लानिविनारसलेतां अनिमित्त आंणीयें । मांडलना ए दोष । सुगुरु मुखजाणीयें ॥ ३२ ॥ पिण हूं संय-मपाय नको टाली सक्यो । तिणकारण हिव स्वामि सरणता-हरोतक्यो । मोटांनें उलाजअछे मिटवातणी । कारजपडियां काजसुधारे ते धणी ॥ ३३ ॥ आगेपिणअपराधिताख्याछे इता ।

सहूजाणे संसारकविदाखेकिता । इमजाणी मुजऊपरमहिर करी जीये । बांहग्रह्यांकीलाजनिवाजसदिजिये ॥ ३४ ॥ तारण तरणजिहाज विरुद छे ताहरो । तो मानवनोअवतारसफल करमाहरो । नवनव ताहरीसेव चरणसेवकरहूं । तिम करज्यो जगवंत किसुवलिवलिकहूं ॥ ३५ ॥ (कलश) इमनगरदेसलसरनिरंतर विंबजेट्यासुजमनें । जिनवचने संजमशुद्धपाले दोषटाले दिनदिने । सुविवेकविध पुहिवीराज श्रावक तासुआग्रहवहूपरे । रुघनाथमुनिये । कीधरचना अठारे अठोत्तरे ॥३६॥ इति श्रीबैंयालीस दोष विवरण स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ दश पच्चक्खाण वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथनंदननमूं । महावीर जगवंत । त्रिगडे बेठा जिनवरू । परषदबारमिलंत ॥ १ ॥ गणधरगौतम तिण समें । पूछे श्रीजिनराय । दश पच्चक्खाण किसाकह्या । कीयां कवणफलथाय ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥ सीमंधरकरज्यो मया एदेशी ॥

॥ श्रीजिनवर इमउपदिशे । सांजल गोयमस्वाम । दश पच्चक्खाणकियां थकां । लहिये अविचलठाम ॥ ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी । साढपोरसी पुरिमड्ढ । एकासण नीवी कही । एकलठाण देवड्ढि ॥ ४ ॥ श्री० ॥ दात आंबिल उपवासही । एहीज दश पच्चक्खाण । एहना फलसुण गोयमा । जूजूवाकरूं वखाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥ रतनप्रजा शरकरप्रजा । वालुकातीजीजांण । पंकप्रजातिमधूमप्रजा । तमप्रजा तमतम

ठाम ॥ श्री० ॥ ६ ॥ नरक सात कही ए सही । करम कठिन कर जोर । जीवकरमवस ते सही । ऊपजे तिणहीज ठोर ॥ श्री० ॥ ७ ॥ छेदनभेदनताड़ना । भूखत्रिषा वलि त्रास । रोमरोम पीड़ाकरे । परमाहम्मीतास ॥ श्री० ॥ ८ ॥ रात दिवश खेत्रवेदना । तिलभरनहीं जिहांसुक्ख । किया करम जे भोगवे । पामें जीव बहु दुक्ख ॥ श्री० ॥ ए ॥ इक दिनरी नवकारसी । जे करे भाव विशुद्ध । सो वरस नरक नो आऊखो । दूर करे ज्ञान बुद्धि ॥ श्री० ॥ १० ॥ नित्य करे नवकारसी । ते नर नरक न जाय । न रहे पाप वलि पाछला । निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ श्रीविमला चल सिरतिलो एदेशी ॥

सुण गोतम पोरसी कियां महामोटोफलहोय, भावसुं जे पोरसीकरे । दुरगति छेदे सोय । सु० ॥ १२ ॥ नरक मांहें जे नारकी । वरषें एक हजार । करमखपावे नरकमें । करता बहुत पुकार । सु० ॥ १३ ॥ एकदिवशनीपोरसी । जीवकरे कइ तार । करमहणें सहसएकना । निहचेसुं गणधार ॥ सु० ॥ १४॥ दुरगतिमांहें नारकी । दसहजारप्रमाण। नरक आयुखिणएकमें। साढपोरसीकरेहांण ॥ सु० ॥ १५ ॥ पुरमड्डकरे नित जीव जे । नरके ते नविजाय । लाखवरष करमनेंदहे । पुरमड्डकरमखपाय ॥ सु० ॥ १६ ॥ लाखवरषदशनारकी । पामें दुःखअनंत, इतरा करमएकासणें । दूरकरे मनखंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ एककोड़ीवरसांलगे । करमखपावे जीव । नीवीयकरतांभावसुं । दुरगति

हणें सदीव ॥ सु० ॥ १८ ॥ दशकोमी जीव नरकमें । जितरो करे कर्मदूर । तितरोएकलगणही । करेसहीचकचूर ॥ सु० ॥ १ए ॥ दातकरंतांप्राणीयो । सोकोमीपरमांण । इतरा वरष डुरगतितणा । बेदे चतुरसुजांण ॥ सु० ॥ २० ॥ आंबिल नो फल बहुकह्यो । कोमीएक हजार, करम खपावे इणपरे । नाव-आंबिलअधिकार ॥ सु० ॥ २१ ॥ कोमिसहसदशबरसही । सहे-डुःखनरकमझार । उपवासकरे इकनावसुं । तो पामें मुगति-मझार ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ३ ॥ केकेइ वरलाधो एदेशी ॥

॥ लाखकोमीवरसांलगे । नरकेकरतांरीवरे । गौतम गण-धारी । बहतपकरतांथकां । सहीनरकनिवारे जीवरे ॥ गौ० ॥ ॥ २३ ॥ नरके वरसकोमलाखही, जीवलहें तिहांडुःखरे । तेडुख अहमतपहुंती । दूरकरी पामेंसुखरे ॥ गौ० ॥ २४ ॥ बेदन नेदन नारकी । कोमाकोमिवरसांइ रे । कुगतिकुमतिनें परहरो । दशमें एतो फलहोइरे ॥ गौ० ॥२५॥ नितफासू जल पीवतां । कोमाकोमी वरसनो पापरे । दूरकरे खिण एकमें । निश्चें होय निःपापरे ॥ गौ० ॥ २६ ॥ वलिय विशेषे फलकह्यो। पांचमकरे उपवासरे । पामें ज्ञान पांचेनला । करता त्रिजुवन परकासरे ॥ गौ० ॥ २७ ॥ चवदश तप विधिसुंकरे चवदह पूरब होय धाररे । इम अनेक फल तप तणा । कहितां वलि नावे पाररे ॥ गौ० ॥ २८ ॥ मन वचने कायाकरी । तप करे जे नर नार रे । इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहे नवपार रे ॥ गौ० ॥ २ए ॥ आठमतप आराधतां । जीव न फिरे

संसार रे । अनंतनवानां पापथी । छूटे जीवनिरधाररे ॥ गौ० ॥ ३० ॥ तपहुंती पापीतस्या । निसतरीयो अरजुनमाल रे ॥ गौ० ॥ ३१ ॥ तपनाफल सूत्रेकह्या । पच्चक्खाण तणा दश-नेदरे । अवरनेद पिण छे घणा । करतां छेदे त्रयवेद रे ॥ गौ० ॥ ३२ ॥ (कलश) पच्चक्खाणदशविधफलप्ररूप्या महा-वीरजिणदेवए । जे करे नवियणतपअखंमित तासु सुरपयसे-वए । संवत्तनिधिगुणअश्वशशि वलि पोश सुददशमीदिनें, पदमरंगवाचकसीसगणिवर रामचंद्र तप विधिनणें ॥ गौ० ॥ ॥ ३३ ॥ इतिदशपच्चक्खाणफलगर्भित वृद्ध स्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीऋषभजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरपाटीये पधारो एदेशी ॥

सुणसुण सेत्रुंजगिरिस्वामी । जगजीवनअंतरजामी । हुंतो अरजकरुं सिरनामी । कृपानिधि वीनती अवधारो ॥ १ ॥ नवसायरपारउतारो । निजसेवकवानवधारो । कृपानिधि विनतीअवधारो । प्रनुमूरतिमोहनगारी । निरख्यां हरखे नर-नारी । जाउं वारीहुंवारहजारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ हिवकिसियवि-मासणकीजे । मुझपरमहिरधरीजे । दिलरंजनदरसनदीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आजसयलमनोरथ फलिया । नवनवना पाति-कटलिया । प्रनु जो मुझसैंमुखमिलिया ॥ कृ० ॥ ४ ॥ समस्यां संकटटलिजाये । नवनवनितमंगलथाये । मुझआतमपुण्यनरायें ॥ कृ० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनतिकीजे । केसरचंदनचरचीजे । दिन धन धन तेह गिणीजे ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रनु दरससरसलहि-

तोरो । अतिहरखितहुवोचित्तमोरो । जिमदीठां चंदचकोरो ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिखप्रभु पंचमे आरे। विषमहाभयसंकटबारे । सहुसेवककाजसुधारे ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवोस्वामिसदा सुखदाई । कमणा न रहे घरकाई । बाधे संपतिसोभसवाई ॥ कृ० ॥ ए ॥ नाभिरायकुलांबरचंदा । भविजनमननयणआणंदा । उलगे सुरअसुरसुरिंदा ॥ कृ० ॥ १० ॥ जयकारी रिषभजिनंदा । प्रहसमधरपरमआणंदा । वंदे श्रीजिनभक्तिसूरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ इति श्रीऋषभदेवजी स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीअजितशांतिस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मंगलकमलाकंदए । सुखसागरपूनिमचंदए । जगगुरु अजियजिणंदए । शांतीसरनयणानंदए ॥१॥ बिहुं जिनवर प्रणमेवए । बिहुं गुणगाइससंखेवए । पुण्यभंमारभरेसए । मानभभवसफलकरेसए ॥ २ ॥ कोरूहिलाखपचासए । सागर जिणसासणभास ए । रिषहजिणेसरबंसए । उवज्झायसरोवरहंसए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजीयोए । राजा जितशत्रु जगगाजीयो ए । बिजयातसु घर नार ए । बिहुं रमयति पासासारए ॥ ४ ॥ कूखहिजिनअवतारए । तिणरायमनाव्यो हारए । उयरवस्यो दसमास ए । प्रभुपूरी जणणीआसए ॥ ५ ॥ बिहुं जण मन आणंदीयोए । सुत नाम अजियजिण तो दीयो ए । तिहुअणसयल उछाह ए । क्रम क्रमवधे जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारसतणी ए । गति सुललितनिजगतिनिरंजणी ए । मलपतिचालेगेलए । जाणें नयणअमीरसरेल ए ॥ ७ ॥ अवरन-

समो संसार ए । बलि ज्ञानविवेक विचारए । गुणदेखी गजग-
हगह्योए । लंछनमिसि पगलागीरह्योए ॥ ८ ॥ जोवनवय जब
आवीयो ए । तब वररमणीपरिणावियो ए । पीयसाधे सब
काजए । प्रभुपालेपहुवीराज ए ॥९॥ हिव हत्थणाउर ठामए ।
विश्वसेणनरेसर नाम ए । राणीअचिरादेवए । मनहरसुखमाणें
बेवए ॥ १० ॥ चवदहस्वप्नेंपरिवस्योए । अचिराउयरे सुतअव-
तस्योए । मानवदेव वखाणीयोए । चक्कीसर जिनवर जाणीयो
ए ॥ ११ ॥ देसनयरहुइसंतए । तिण नामदीयो सिरिशांतए ।
जिणगुणकुणजाणेंकही ए । तिहुं भुवणे तसु उपमा नहीं ए
॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलोए । वनसिंघे वीहे एकलोए ।
नयणसमाधिनिरोधए । इणनयणे नारिनिरोध ए ॥ १३ ॥
गीतहीरागसुरंगए । पिण पभणे लोक कुरंगए । तो उग्यो-
शशिसंकए । तिण पाम्यो नाम कलंकए ॥ १४ ॥ इणपरमृग-
अतिखलभल्यो ए । भयभंजणस्वामीसांभल्योए । आणंदीयो
मनआपणो ए । पायसेवे मिस लांछणतणोए ॥ १५ ॥ लीला-
वति परणें घणीए । नवनवीय कुमरी रायांतणी ए । बलछल
अरियणजोगवे ए । पीयरायभलीपरभोगवेए ॥ १६ ॥ कुमर-
तणेंमंरूलसमें ए । पंचाससहसवरसां गमें ए । तोतेजे दिण-
यरजिसोए । ऊपन्नो चक्करयणतिसोए ॥ १७ ॥ साधीभरह-
छहखंरू ए । वरतावीआणाअखंरूए । चवदरयण नवनिहि-
सही ए । वसु सोलसहस जक्खे अहीए ॥ १८ ॥ सहसबहुत्त-
रपुरवराए । बत्तीस मौरूबद्धनरवराए । पायकगामे कोरूए ।

नवे नमें बेकरजोडए ॥ १९ ॥ हयगयरहवर जूजुवाए ।
लचौरासीमंदिरहुवाए । लाखत्रि वाजित्र घमघमेए । बत्तीस-
हसनाटकरमेए ॥ २० ॥ रूपजिसीसुरसुंदरीए । लक्षणला-
ण्य लीलाजरीए । जंगम सोहगदेहमीए । इसीचौसठसहस
तेजरीए ॥ २१ ॥ अवरजरिद्धिप्रकारए । मणिकंचणरयण-
नारए । ते कहिवा कुणजाणए । वपुवपुरे पुण्यप्रमाणए
२२ ॥ इम चक्कीसरपंचमोए । चौथो दूसमसुषमसमोए ।
ससहस पचवीसए । सबपूरीमनह जगीसए ॥ २३ ॥ इण-
रे बिहुं तीर्थंकराए । चिरपालीराज विविहपराए । जाणी-
वसरसारए । बिहुंलीधो संजमजारए ॥ २४ ॥ बिहुं खम-
र धीरमधीरए । बिहुं मोहमयणमदपरिहरीए । बिहुं जिण-
णसमाणए । बिहुंपाम्यो केवलनाणए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि-
रूहिमहिय । बिहुं चौतीसेअतिसयसहिय । समवसरणबिहुं
णए । बिहुं जोयणवाणीवखाणए ॥ २६ ॥ नाचतरणकतने-
रीए । बिहुं आगलि इंद्रअंतेजरीए । टिगमिग जोवे जग
हुए । रंगहि गुणगावे सुरवहुए ॥ २७ ॥ बिहुंसिरछत्रचमर-
मल । बिहुं पगतल नवसोवनकमल । बिहुं जिनतणें विहा-
: । नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं जवयारजु-
णजरीए । बिहुं सिद्धिरमणिसयंवरीए । बिहुंजंजी जवकंदए ।
हुं उदयो परमाणंदए ॥ २९ ॥ इम बीजोनें सोलमो ए,
णें चिंतामणि सुरतरुसमोए । थुणिअ तिसंज्झविहाणए ।
हां इहपरजव नवि हाणए ॥ ३० ॥ बिहुं उच्छवमंगलक-

रण । बिहुं संघसयलदुरियहरण, बिहुं वरकमलवयणनयण । बिहुं श्रीजिनरायजुवनरयण ॥ ३१ ॥ इमजगते जोलिमतणीए । श्रीअजियशांतिथुइ जणीए । सरण बिहुं जिणपायए । सिरिमेरुनंदनजवज्जायए ॥ ३२ ॥ इति श्रीअजितशांति जिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरि स्तवनं लिख्यते ॥

॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो । आदीसरअरिहंत । जुगला धरमनिवारणो । जयजंजणजगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुजमन कलट अतिघणो रे । सोदिनसफलगिणेस । स्वामीश्रीरिहेसरू । जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगमतीरथविहरता । साधुतणें परिवार । आदिजिणंदसमोसस्या । पूरब निवाणुंवार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचरा विजयानंदनें । जगबंधव जगतात । इणगिरिचजमासे रह्या । थिवरकहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें शिवसुखसासता, गणधरश्रीपुंमरीक । पुंमरगिरितिणकारणें । जगति करो निरजीक ॥ श्री० ॥५॥ नमिनें विनमि सहोदरू । विद्याधरबलवंत । सेत्रुंजयशिखरसमोसस्या । जेगिरवागुणवंत ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावच्चामुनिवरशुक, सहस्रसहसपरिवार । पंथगवयणेंजागीयो । सो सेलगअणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमवपांचमहाव्रती । सुणी जादवनिरवाण । ते सीधा सिद्धा चले । सुरनरकरे वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इमसीधा इणडुंगरे । मुनिवरकोमाकोमि । पाजचढंतां सांजरे । ते प्रणमुंकरजोमि ॥ श्री० ॥ ए ॥ जेवाघणी प्रतिबूजवी । ते दरवाजे-

जोय । गोमुखयक्षकवरूमिली । सानिधकारीहोय ॥ १० ॥ श्री० ॥ जेविधिसुं यात्राकरे । सुरनर सेवक तास । राजसमुद्र गुणगावतां, अविचललीलविलास ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति सीसेत्रुंजय स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीआदिजिनवीनती (आलीयण) स्तवनं ॥

॥ सुणजिनवर सेत्रुंजाधणीजी । दासतणी अरदास । तुज आगल बालकपरेजी, हुंतो करुं वेखासरे जिनजी मुजपापीनें तार । तुंतो करुणारसभर्योजी । तुं सहुनोहितकाररे जिन जी ॥ मुज० ॥ १ ॥ हुं अवगुणनोओरडोजी । गुण तो नहीं लव-लेश । परगुणपेखी नवि शकुंजी । केमसंसारतरेसरे जिनजी । मुज० ॥ २ ॥ जीवतणावधमें कर्याजी । बोल्या मृषावाद । कपटकरी परधनहर्याजी । सेव्या विषयसवादरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं लंपट हुं लालचीजी । कर्मकीधां केई कोड । त्रणभुवनमां कोनहींजी । जे आवे मुजजोडरे जिन जी ॥ मुज० ॥ ४ ॥ छिद्रपरायां अहनिशेजी । जोतोरहुं जगनाथ । कुगति-तणी करणीकरीजी । जोड्यो तेहशुं साथरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ५ ॥ कुमतिकुटिल कदाग्रहीजी । वांकी गतिमतिमुज्झ । वांकीकरणी माहरीजी । शीसंभलावुं तुज्झरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ पुन्यविना मुजप्राणिओजी । जाणे मेलुंरेआथ । उचां तरुवरमोरीयांजी । त्यांहीपसारे हाथरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ७ ॥ विणखाधां विणभोगव्यां जी । फोगटकर्मबंधाय । आर्त्तध्यान मिटे नहींजी । कीजे कवणउपायरेजिनजी ॥ मुज० ॥ ८ ॥

काजलथीपण शामलाजी । मारा मनपरणाम । सोणामांहीं ताहरुंजी । संजारुं नहींनामरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ए ॥ मुग्ध-लोक ठगवाजणी जी । करुं अनेकप्रपंच । कुमकपट बहु केल-वीजी । पापतणो करुं संचरे जिनजी ॥ मुज०॥१०॥ मनचंचलनर-हेकिमे जी । राचे रमणीरेरूप । कामविटंबणशीकहुंजी । पमीश हुं मुरगतिकूपरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ११ ॥ किश्याकहुं गुण महा-राजी । किश्याकहुं अपवाद । जेमजेमसंजारुं हीयेजी । तेमते-मवधे विखवादरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १२ ॥ गिरुआते नवि-लेखवेजी । निगुणसेवकनीवात । नीचतणे पण मंदिरेजी । चंडनटालेजोतरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १३ ॥ निगुणो तो पण ताहरोजी । नामधरावुंरे दास । कृपाकरी संजारजोजी । पूरजो मुजमनआसरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १४ ॥ पापीजाणी मुजज-णीजी । मत मूको विसार । विष हलाहल आदरयोजी । ईश्वर न तजे तासरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १५ ॥ उत्तमगुणकारीहु-वेजी । स्वार्थविनासुजाण । करसण चिंते सरजरेजी । मेह नमांगेदाणरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १६ ॥ तुं उपगारी गुणनि-लोजी । तुं सेवकप्रतिपाल । तुं समरथसुखपूरवाजी । कर माह-रीसंजालरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १७ ॥ तुजने शुं कहीये घणो-जी । तुं सहुवाते जाण, मुजने थाजो साहिवाजी । जवजवता-हरी आणरे जिनजी । मुज० ॥ १८ ॥ नाभिराया कुलचंद-लोजी । मारुदेवीनोनंद । कहे जिनहर्ष निवाजज्यो जी । देजो परमानंदरे जिनजी । मुजपापीने तार ॥ १९ ॥ इति श्रीआलोयण आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ सुरमणीसम सहु मंत्रमां । नवपद अभिरामीरेलो ॥ अहो नव० । करुणासागर गुणनिधी । जगअंतरजामीरे लो ॥ अहो जग० ॥१॥ त्रिभुवनजनपूजितसदा। लोकालोक प्रकासीरे लो ॥ अहो लोका० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी । नमुं चित्तउल्लासीरे लो ॥ अहो नमुं० ॥ २ ॥ अष्टकरमदलक्षयकरी । थयासिद्धसरूपीरे लो । अहो थया० । सिद्धनमो भविभावथी । जे अगमअरूपीरे लो ॥ अहोजे० ॥ ३ ॥ गुणछत्तीसे सोभता । सुंदरसुखकारीरेलो ॥ अहो सुं० ॥ आचारज तीजेपदे, वंदुंअविकारीरेलो ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी। तप दुविध अराधीरेलो ॥ अहोत० ॥ चोथे पद पाठक नमो । संवेग समाधीरे लो ॥ अहोसं० ॥ ५ ॥ पंचाचारपालणपरा पंचाश्रवत्यागीरे लो ॥ अहो पं० ॥ गुणरागीमुनि पांचमें । प्रणमुं वरूभागीरे लो ॥ अहो प्र० ॥६॥ निजपरगुणनें उलखे । श्रुतश्रद्धाआवेरे लो ॥ अहो श्रु० ॥ छठेगुण दरशणनमो । आतम शुभभावेरे लो ॥ अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण सातमें । जे पंचप्रकारेरेलो ॥ अहो जे० स्वपर प्रकाशक दिनमणि । अज्ञाननिवारेरेलो ॥ अहो अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपदनमो । परभावनिवारीरेलो ॥ अहो प० ॥ खांत्यादिकदसधर्मनो । जेह अछे अधिकारीरेलो ॥ अहो जे० ॥९॥ नवमेंवलितपपदनमो । बाह्याभ्यंतर भेदेरे लो ॥ अहो बा० ॥ बांध्याकालअनंतना । जे कर्मउछेदेरे लो ॥ अहो जे० ॥१०॥ ए नवपदबहुमानथी । ध्यावे शुभभावेरे लो ॥ अहो ध्या० ॥

नृपश्रीपालतणीपरे । मनवंछितपावेरे लो ॥ अहो म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक मासमां, नवआंबिलकरियेरे लो ॥ अहो नव० ॥ नवउेली विधियुतकरी । शिवकमलावरियेरे लो ॥ अहो शि० ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहुपरे । वरमहिमाकीजेरे लो ॥ अहो व० ॥ श्रीजिनलाजकहे सदा । अनुपमजशलीजेरे लो ॥ अहो अ० ॥ १३ ॥ इति श्रीनवपदजीका वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ चैत्री पूनम वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ पयप्रणमीरे जिनवरना सुपसाउले । पुंमरगिरिरे गाइस हुं सुजजाउले । मतिसुरगुरुरे सहसजीज जो मुखहुवे । किमते नररे विमलाचलना गुणस्तवे । उल्लालो । किमस्तवे गुणगणएहगिरिना जिहां मुनिसीधाबहु । गिरि रायना गुणछै अनंता कहै जिनवर मुखसहु, निज जनम सकली करण कारण केटला गुणजाषिये । तिरयंच नारक तणीगतिना दुःखदूरेराखिये ॥ १ ॥ चाल ॥ जिनराजारे पहिलो आदिजिनेसरू । तसु नंदनरे चक्रवर्तिजरतेसरू । तसुअंगजरे पुंमरीकगुणगणनिलो । शमदमरसरे विनयविवेक गुणेजलो । उल्लालो । गुणजलो अनुक्रम आदिजिनवरपास संयमसिवपुरी । पुंमरीकगणधरप्रथमविहरे सुमतिगुपतेसंचरी । पणकोमि साथे विमलगिरवर मुगतिपदवी पावए । सुदिचैत्रपूनिम तेण एगिरि पुंमरीककहावए ॥ २ ॥ चाल ॥ हिवचैत्रीरे पूनिमपर्वसुहामणो । सेत्रुंजेरे आराध्यां फलहुवेघणो । मनसुद्धेरे आपणपे थानकरही । आराध्यांरे यात्रपुन्यपामेसही । उल्लालो ते पुन्यपामें दानतपजप धर्मध्यानमनेधरे । बहु जावजत्तें त्रिविधपूजा आदिजिनवरनी-

करे । ज्ञावनाज्ञावे तेणदिवसे पंचकोमि गुणोफले । अनुक्रमे ते नर मुगतिपामी सिद्धिसुंदरीनें मिले ॥ ३ ॥ चाल ॥ दश वीशरे तीश चालीश पूजाकही । पन्नासारे श्रावक निरती सरदही । चजथबठेरे अठम दशम डुवालसे । पूजाफलरे अनुक्रम ए मुऊमन वसें । जल्लालो । मनवसे पूज कपूरधूपे मासखमणफलेवली । सामन्नधूवे पक्खनोफल जेकरेमननीरली । द्विवपूजाविधि जेम गुरुमुखसुणीअछे परंपरा । तेमोहमाया कपटछंमी सुणो ज्ञवियण सादरा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ तंडुलराशि विमलगिरिथापी । तसुऊपरि पट्टादिकआपी । प्रतिमाआदि जिणेसरकेरी । पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिनें मनचिंती जे । करमतणामलदूरकरीजे । मोती तंडुलकरीयवधावो । तीन प्रदक्षिणा पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंगलीकपहिलातिहां आठ । करमबंधदूरेकरिआठ । प्रतिमामूल सनात्रकरेवाजिनवरनागुणहीयमेधरेवा ॥ ७ ॥ कज्ञाथई नवकारगुणंता । दश दश जेती तिलककरंता । माला पुष्प पुंगीफलढोवो मेरु ज्ञरण वरधूपजखेवो ८॥ढाल॥शक्रस्तवपांचे देववांदे । जघन्यनां वंदण पापछेदे । दशे नमस्कारकरंतजेती । राखी करीदृष्टिजिनेंडसेती ॥ ए ॥ आराधिवाकीजेकाउसग्ग । जिणें कीये ज्ञाजेकर्मवग्ग । लोगस्सउज्जोयदसे वखाणुं । वेलाप्रमाणें अहिं एगआणुं ॥ १० ॥ इणेंप्रकारे धुरपूज एह । इसीपरे बीजी च्यार तेह । दशांतणीवृद्धि तिहां गिणी जे । एकचित्तसूधे सुज्ञपुन्यकीजे॥ ११॥ धजातणोरोप तिहां करीजे । एकेकपुठे अथवा गिणीजे । सद्गुत्तरेआरति

मंगलेवो । पछे प्रभु आगलितेकरेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करियपूजा यथायोगे संघपूजाआदरो । साहमीवछलकरो भवि-का भवसमुद्र लीलातरो । संपदासोहगतेहमानव रिद्धि वृद्धि-बहुलहे । श्रीअमरमाणिकसीसमुपरे साधुकीरति इम कहे॥१३॥
॥ इति श्रीचैत्रीपूनिमवृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नंदीसरद्वीपस्तवनं लिख्यते ॥

॥ नंदीसरबावन्नजिनालय । शाश्वताचौमुखसोहेरे । ऋषभा-नन चंद्राननवारिषेण । वरधमानमनमोहेरे ॥ नंदी० ॥ १ ॥ आठमोद्वीपनंदीसरअदभुत । वलयाकारविराजेरे । तेहनें मध्ये चिहुंदिशिशोभित । अंजनगिरिवरछाजेरे ॥ २ ॥ नंदी० जोयणसहसचउरासीऊंचा । ऊंचपणें अभिरामारे । मूले पृथुल सहसदशजोयण । उवरिसहसइकश्यामारे ॥ ३ ॥ नंदी० ॥ ते उपर प्रासादप्रभुना । अतिउत्तंग उदारारे । साधु-जंघा विद्याचारण, वांदे विविधप्रकारारे ॥ ४॥ नंदी० ॥ चैत्ये-चैत्ये एकसोचोवीस । बिंबसंख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवोभ-विजनभक्तें । सुधआगमकरि साखीरे ॥ ५ ॥ नंदी० ॥ ऊंच-पणें सहु जोयणबहुत्तर । सोजोयण आयामारे । पिहुलपणें पंचासजोयणना । प्रभुप्रासाद सुठामा रे ॥ ६ ॥ नंदी० ॥ धनु-षपांचसे आयतप्रभुनी । विविधरतनमयकायारे । जिनकल्या-णकउछवकरवा; सुरपति भगतें आयारे ॥ ७ ॥ नंदी० ॥ अंज-नअंजनचिहुंगिरी उवरे । चौमुखवाविशालारे । वाविवाविवच इकइक पर्वत । राजतरंगरसालारे ॥ ८ ॥ नंदी० ॥ चौसठस-हस जोयणउत्तंगे । दशसहस सम पिहुलारे । चिहुदिशि सोल-

सोहे दधिमुखगिरि । तिहां प्रासादसुविमलारे ॥ ए ॥ नंदी० ॥ वाविवाविनें अंतर विदिशें । रतिकरपर्वतरूमारे । दोयदोयसंख्याजगदीसे । कह्यानहींएकूमारे ॥ १० ॥ नंदी० ॥ जोयणसहसमानदशऊंचा । दशदशसहस विस्तारारे । ऊषरिसमसंगाणजगतगुरु । ए निश्चयनिरधारारे ॥ ११ ॥ नंदी० ॥ ते ऊपर प्रासादसतोरण । अंजनगिरिपरिमाणेरे । जिनप्रतिमानीसंख्यातेहिज । श्रीजिनराजवखाणेंरे ॥ १२ ॥ नंदी० ॥ इमप्रासादप्रजूनबावन । नंदीसरवरद्वीपेरे । द्रव्य जाव विधिपूजकरंतां । मोहमहाजरूजीपेरे ॥ १३ ॥ नंदी० ॥ प्रवचनसारउद्धारप्रकरणें । जीवाजिगमें जाणोरे । इमअधिकारछे ग्रंथअनेके । इहांसंका मतआणोरे ॥ १४ ॥ नंदी० ॥ जिमसुरपतिविरचेतिहां पूजां । ते अनुजव इहांल्यावोरे । ध्यावोजिमपावो परमातम । जैनचंद्रगुणगावोरे ॥ १५ ॥ इतिश्रीनंदीसरद्वीपस्तवनं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणकस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मारगदेशकमोहृनोरे । केवलज्ञाननिधान । जावदयासागर प्रजूरे । परउपगारीप्रधानोरे ॥ १ ॥ वीरप्रजु सिद्धथया । संघसकलआधारोरे । हिवइणजरतमां । कुणकरस्ये उपगारोरे ॥ २ ॥ वीर० ॥ नाथविहूणी सेन्यजूंरे । वीरविहूणोरे संघ । साधेकुण आधारथीरे । परमानंद अजंगोरे ॥ ३ ॥ वी० ॥ मातविहुणा बालज्युंरे । अरहोपरोअथमाय । वीरविहूणाजीवमारे । आकुलव्याकुलथायेरे ॥ ४ ॥ वी० ॥ संशयछेदकवीरनोरे । विरहतेकेमखमाय । जेदीठेंसुखऊपजेरे । ते विण किमरहिवायोरे ॥५॥ वी० ॥ निर्यामक जवसमुद्रनोरे । जवअटवीस-

त्थवाह । ते परमेशर विन मिह्यांरे, किमवाधेतञ्चाहोरे ॥ ६ ॥ वी० ॥ वीरथकांथिण श्रुततणोरे, हुंतोपरमआधार । हिवणां श्रुतआधारछेरे । एह जिनआगमसारोरे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इण कालेसहुजीवनेंरे । आगमथीआनंद । ध्यावोसेवोजविजनारे । जिनपडिमासुखकंदोरे ॥ ८ ॥ वी० ॥ गणधरआचारजमुनिरे । सहुने इणपरिसीध । जवजव आगम संगथीरे । देवचंदपदलीधरे ॥ ए ॥ वी० इति श्रीनिर्वाणकल्याणकस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धक्षेत्रपुंडरीकगिरिवृद्धस्तवनं लिख्यते श्रीचंद्राप्रभूप्राहूणोरे एदेशी ॥

॥ नमोरेनमोशेत्रुंजगिरीरे । त्रिकरणशुद्धत्रिकालरे । पापपडलदूरेटलेरे । तूटे करमजंजालरे । नमो० ॥ १ ॥ पूरव निनाणुं समवसर्यारे । प्रथमजिनंदजगदीशरे । बावीसम जिनवरविनारे । समोसर्यात्रेवीसरे ॥ नमो० ॥२॥ साधु अनंता अणशणग्रहीरे । सीधाएहीजठोडरे । कालआगामी वलिसीझस्येरे । साधु अनंतीकोडिरे॥नमो०॥३॥ अनंत कल्याणकजूमिकारे । महिमावंतमहंतरे । सासतोतीरथ ए सहीरे । अतिशयजासअनंतरे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ कोडिजवंतरे जेकियारे । पातिकविविधउपायरे । सेत्रुंजे सनमुखचालतांरे । पग पग ते सहूजायरे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ धनदिनतेहीजजाणसुंरे । वहिस्युंसेत्रुंजकेरीवाटरे । छहरीयआविधिपालस्यूंरे । संघसहितगहगाटरे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ पगपगउछवअतिघणारे । पगपगजाचकदानरे । प्रेमजगतिसाहमीतणीरे । जीर्णोद्धारप्रधानरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ धन ते गिरिरायनिरखसुंरे । वढतीमंगलमालरे । मणिमोतीयडे वधावस्युंरे ।

रजतसोवनजरस्राखरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ धनदिन ते गिरिफ-रसस्यूंरे । करस्युंपावन मोरीकायरे । जगतिजुगतिजुहारसुंरे । नाजिनंदनजिनरायरे ॥ नमो० ॥ ए ॥ द्रव्यजावकरसुंमुदारे । पूजाविविधप्रकाररे । जावेजावनाजावसुंरे । करसुंसफलअवता-ररे ॥ नमो० ॥ १० ॥ रतनत्रयीजमतीजलीतरे । देसुं ते धरिबुद्धिरे । जवजवभ्रमणनिवारसुंरे । लहिसुंआतमसुद्धिरे ॥ नमो० ॥ ११ ॥ विधिफरसणमनमाहरोरे । मोहिरह्यो दिनरा-तरे । पुन्यप्रबलथीपामियोरे । उजलगिरीकेरीजातरे ॥ नमो० ॥ १२ ॥ नाथधूलेवा सुपसायथीरे । कारजसगलासिद्धरे । कहे-जिनहरखसूरि सदारे । होय जो मंगलवृद्धरे ॥ नमो० ॥ १३ ॥ इति श्रीसिद्धाचलवृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वनाथवृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ वाणी ब्राह्मावादनी । जागे जन विख्यात । पास-तणागुणगावतां । मुफमुखवसज्यो मात ॥१॥ नारंगे अणहिल-पुरे । अहमदावादेपास । गौमीनोधणीजागतो । सहूनीपुरेआस ॥ २ ॥ शुजवेला शुजदिनघमी । महुरत एकमंमाण । प्रतिमा ते इह पासनी । थई प्रतिष्टाजाण ॥ ३ ॥ ढाल ॥ १ ॥ गुणहिवि-शाला मंगलीकमाला । वामानोसुतसाचोजी । धणकणंकंचणम-णिमाणकदे । गौमीनोधणीजाचोजी ॥४॥ गुण० ॥अणहिलपुर-पाटणमाहेंप्रतिमा । तुरकतणें घरहूंतीजी । अश्वनीजूमि अश्व-नीपीमा । अश्वनी वालविगुतीजी ॥ ५ ॥ गुण० ॥ जागंतोजक्ष जेहनें कहिये । सुहणो तुरकनें आपेजी । पासजिनेसरकेरीप्र-तिमा । सेवक तुफसंतापेजी ॥ ६ ॥ गुण० ॥ प्रहऊठीनें परग-

टकरजे । मेघागोठीनें देजेजी । अधिकोमलेजे ठंगोमलेजे । टक्का पांचसेंलेजेजी ॥ ७ ॥ गुण० ॥ नहिंआपिसतो मारीस मुरमीस । मोरबंध बंधास्येजी । पुत्रकलत्रधनहयहाथी तुऊ । लाठघणी घरजास्येजी ॥ ८ ॥ गुण० ॥ मारग पहिलो तुऊनें-मिलस्ये । सारथवाह जे गोठीजी । निलवटटीलो चोखाचेढ्या । वस्तुवहे तसु पोठीजी ॥ ए ॥ गुण० ॥ डुहा ॥ मनसुंवीहनो तुरकमो । मानें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणातणो । संजलावे सहिनाण ॥ १० ॥ बीबीबोले तुरकनें वमादेवहे कोय । अब-सताबपरगटकरो, नहींतर मारे सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परों-मीये । पहिलीबंधेपाज । सुहणामाहें सेठनें । संजलावेयक्षराज ॥ १२ ॥ ढाल ॥ एमकही यक्ष आयोराते । सारथबाहनें सुह-णेंजी । पासतणीप्रतिमा तुं लेजे । लेतो शिरमतधुणेजी ॥ १३ ॥ एम० ॥ पांचसेंटक्का तेहनेंआपे । अधिकोमआपिसवारोजी । जतनकरी पुहचामे थानक । प्रतिमागुणसंजारोजी ॥ १४ ॥ एम० ॥ तुजनेंहोसी बहुफलदायक । जाई गोठी सुणजेजी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । प्रहऊठीनें थुणजेजी ॥ १५ ॥ एम० ॥ सुहणो देईनें सुरचाल्यो । अपने थानक पहुतोजी । पाटणमाहें सारथबाहू । हींमेतुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ एम० ॥ तुरके जातां दीठोगोठी । चोखातिलक लिलामेजी । संकेतप-हुतो साचोजाणी । बोलावेबहुलामेजी ॥ १७ ॥ एम० ॥ मुज-घरप्रतिमा तुंऊनेंआपुं । पासजिणेसरकेरीजी । पांचसेंटक्का जोमुऊआपे । मोलनमांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ एम० ॥ नांणोदेई प्रतिमालेई । थानकपहुतो रंगेजी । केशरचंदनमृगमदघोली,

विधिसुंपूजारंगेजी ॥ १९ ॥ एम० ॥ गादीरूमीरूनीकीधी । ते मांहि प्रतिमाराखेजी । अनुक्रमआव्या परिकरमांहे । श्रीसंघनें सुरसाखेजी ॥ २० ॥ एम० ॥ उछवदिनदिन अधिका आयें । सत्तरभेदसनात्रोजी । गामगामना दरशणकरवा । आवे लोकप्रजातोजी ॥ २१ ॥ एम० ॥ दुहा ॥ इकदिनदेखेअवधिसुं । परिकर पुरनो भंग । जतनकरुं प्रतिमातणो । तीरथअछेअभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठनें । थलअटवीउजारु । महिमा थास्ये अतिघणी । प्रतिमातिहांपुहचारु ॥ २३ ॥ कुशलखेमतिहांअछे । तुझनें मुझनें जाणि । संकाछोरुीकामकर । करतो मकरिसंकाणि ॥ २४ ॥ ढाल ॥ पासमनोरथपूरणकरे । वाहणएक वृषभजोतरे । परिकरथीपरियाणोकरे । इकथलचढबीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारकोसआव्या जेतले । प्रतिमा नविचाले तेतले । गोठीमनह विमासणथई । पासभुवनमंभावूंसही ॥ २६ ॥ आअटवी किमकरुंप्रयाण । कुटकोकोई नदीसेपाहाण । देवलपासजिनसरतणो, मंभावुं किमगरथेविणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंरहस्ये किहां । सिलावटो किमआवेइहां । चिंतातुरथयो निद्रालहे । यक्षराजआविनेंकहे ॥ २८ ॥ गुंहलीऊपरनांणो जिहां । गरथघणो जाणिजे तिहां । स्वस्तिक सोपारीनें ठाण । पाहणतणी उछटस्येखाण ॥ २९ ॥ श्रीफलसजलतिहांकिवजुउ । अमृतजलनीसरसीकूउ । खाराकूआतणो इहसैनांण । भूमिपड्योछे नीलोछाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोहीवसे । कोढपराभवियो किसमिसे । तिहांथकी तूं इहांआणजे । सत्यवचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनोमनथिरथापियो ।

सिलावटेनें सुहणोदियो । रोगगमीनें पूरुंआस । पासतणो मंडे-आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहे मान्यो ते वैण । हेमवरण देखा-ड्यो नैण । गोठीमनहमनोरथहुवा । सिल्लावटेनें गयातेडवा ॥ ३३ ॥ सिल्लावटो आवे सूरमो । जीमें खीरखांडघृतचूरमो । घडेघाट करेकोरणी लगनजले पायारोपणी ॥ ३४ ॥ थंजथंज कीधीपूतली । नाटककौतिककरतीरली । रंगमंडपरलियामणोरसे । जोतां मानवनों मनवसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरोप्रासाद । स्वर्ग समो मंडे आवास । दिवसविचारी ईंडो घड्यो । ततखिण देव-लऊपरचड्यो ॥ ३६ ॥ शुजलगन शुजवेलावास । पबासण-वेठा श्रीपास । महिमामोटी मेरुसमान । एकलमिल वगडेरहे-वान ॥ ३७ ॥ वातपुराणीमें सांजली । तवन माहिं सूधी सां-कली । गोठीतणागोतरियाअछे । यात्र करीनें परणेंपछे ॥ ३८॥ ॥ दुहा ॥ विघनविडारणयहजगि, तेहनो अकलसरूप । प्रीत-करे श्रीसंघनें । देखाडे निजरूप ॥ ३ए ॥ गिरुउ गौडीपास-जिन । आपे अरथजंडार । सांनिधकरे श्रीसंघनें । आस्यापू-रणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणें नीलहय । नीलोथईअसवार । मारगचूकामानवी । बाटदिखावणहार ॥ ४१ ॥ ढाल ॥ वरण-अढारतणोलहे जोग । विघननिवारे टालेरोग, पवित्रथई समरे-जेजाप । टाले सगला पापसंताप ॥ ४२ ॥ निरधननेंघरि धन-नोसूत । आपे अपुत्रीयानें पुत्र, कायरनें सूरापणधरे । पारउतारे लछीवरे ॥ ४३ ॥ दोजागीनें दे सोजाग । पगविहूणानें आपे-पग । गामनहीं तेहनें धेगाम । मनवंछितपूरे अजिराम ॥ ४४ ॥ निरधारयानें धे आधार । जवसायरऊतारेपार । आरतीयानी

आरतजंग । धरेध्यानतेलहेसुरंग ॥ ४५ ॥ समरथांसाददीयेयहराज । तेहना मोटाअछे दिवाज । बुद्धिहीणनें बुद्धिप्रकास । गूंगानेंद्ये वचनविलास ॥ ४६ ॥ दुखियांनें सुखनोदातार । जयजंजणरंजणअवतार । बंधनतूटे वेरीतणा । श्रीपार्श्वनाम अहरसमरणा ॥ ४७ ॥ दूहा ॥ श्रीपार्श्वनाम अहरजपे । विश्वानरविकराल । हस्तियूथदूरेटले । दुध्दरसींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा जयचूकवे । विष अमृत जरुकार । विषधरनो विषउतरे । संग्रामें जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोगसोगदालिदडुख । दोहग दूरपुलाय । परमेशरश्रीपासनो । महिमामंत्रजपाय॥५०॥

॥ कडखानी चाल ५ ॥

उँजितुं उँजितुं उँजि उपशम धरी । उँह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अहर जपंते । जूतनें प्रेत जोटिंगव्यंतरसुरा, उपसमे वारइकवीश गुणंते ॥ ५१ ॥ उँ० ॥ दुध्दरा रोगसोगजराजंतनें । ताव एकांतरा डुत्तपंते । गर्जबंधनब्रणं सर्प विछुविषं । चालिका बालमेवाऊखंते ॥ ५२ ॥ उँ० ॥ साइणीमाइणी रोहिणी रंकणी । फोटका मोटका दोष हुंतें । दाढकंदरतणी कोल नोलातणी । स्वानसीयालविकरालदंते ॥ ५३ ॥ उँ० ॥ धरणेंद पदमावती समरसोजावती । वाटआघाट अटवी अटंते । लखमीलोडुंमिले सुजशवेलावले । सयलआस्या फले मनहसंते ॥ ५४ ॥ उँ० ॥ अष्टमहाजयहरे कानपीमाटले । उतरे सूल सीसगजणंते । वदतवरप्रीतसुं प्रीति विमलप्रजू । श्रीपार्श्वजिननामअजिराममंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगौमीपार्श्वनाथजी वृध्दस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ यह स्तवन ॥

संध्यासमय निरंतर पवित्रहोकर गुणे या सुणे सुद्धअक्षरसे तो सर्वउपद्रवमिटे महामंगलहोवे ॥

॥ अथ अट्ठाईसलब्धितपस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथमजिनेसरु । शुद्धमनें सुखकार । लबधिअठावीसजिनकही । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणेंप्रगट, भगवतीसूत्रमझार । पन्नवणा आवस्यके । बारू लबधिविचार ॥ २ ॥ आंबिलतपकरऊपजे । लबध्यां अठावीस । तेहिव परगटअरथसुं । सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ ढाल १ सफलसंसारनी ॥ अनुक्रमे हेव अधिकारगाथातणें । लबधिना नाम परिणामसरिखाभणें । रोगसहुजाय जसु अंगफरस्यां-सही । प्रथम ते लबधिछे नाम आमोसही ॥४॥ जासु मलमूत्र उषधसमाजाणीये । बीयविप्पोसहीलबधिवखाणीये । श्लेषमउषधिसारिखो जेहनो । तीजीखेलोसही नामछे तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढदूरेहुवे । चोथीजल्लोसहीनामतेहनोठवे । केशनखरोमसहुअंगफरसेसही । रहेनहींरोग सब्बोसहीतेकही॥६॥ एकइंद्रियकरी पांचइंद्रियतणा । भेदजाणें तिका नामसंभिन्नणा बस्तुरूपी-सहूजाणियें जिणकरी । सातमीलबधि ते अवधि ज्ञानेंकरी ॥७॥

॥ ढाल २ आव्यो तिहांनरहर एचाल ॥

॥ हिव आंगुलअढीये ऊणो मानुषक्षेत्र । संज्ञीपंचेंद्री तिहां जेवसयविचित्र । तसुमनननो चिंतितजाणेंथूल प्रकार । ते ऋजुमतिनांमें आठमीलबधिविचार ॥ ८ ॥ संपूरणमानुषक्षेत्रे संज्ञावंत । पंचेंद्रियजेछे तसुमनवातां तंत । सूखमपरजायें जाणें सहु-

परिणाम । एनवमीकहीये विपुलमती सुजनाम ॥ ए ॥ जिणल-
बधिप्रजावे उमीजायआकाश । ते जंघा विद्याचारणलबधि-
प्रकाश । जसुवचनसरापे खिणमेंखेरुथाय । ए लब्धिइग्यारमी
आसीविषयकहाय ॥ १० ॥ सहुसूखमवादर देखे लोकालोक ।
ते केवललबधि बारमिये सहुथोक । गणधरपद लहिये तेरमी-
लबधिप्रमाण । चवदमलबधेकरी चवदेपूरबजाण ॥ ११ ॥
तीर्थंकरपदवीपामें पनरमीलबधि । सोलमसुखदाई चक्रवर्त्ति
पदरिद्धि । बलदेवतणोपदलहिये सतरमीसार । अढारमी आखी
वासुदेवविस्तार ॥ १२ ॥ मिसरीघृतखीरमेहयां जेहसवाद ।
एहवीलहे वाणी उगणीसमीपरसाद । जणीयो नविजूले सूत्र-
अरथसुविचार । ते कुष्टिकबुद्धिवीशमी लबधिविचार ॥ १३ ॥
एकेपदजणातां आवे पद लखकोम । इकवीशमीलबधिपायाणु-
सारणीजोम । एकेअरथेकरी उपजे अरथअनेक । बावीसमीक-
हीये बीजबुद्धिसुविवेक ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूरहुवे अतिऊजलोरे एचाल ॥

॥ सोलहदेशतणी सही रे । दाहकसगतिवखाण । तेह लबधि
तेवीसमी रे । तेजोलेश्याजाण ॥ १५ ॥ चतुरनर सुणज्यो एसु-
विचार । आगमनें अधिकार । वारूलबधि विचार ॥ चतु० ॥
चवदहपूरबधरमुनिवरू रे । उपजंतां संदेह । रूपनवोरचिमो-
कलेरे । लबधिआहारकएह ॥ चतु० ॥ १६ ॥ तेजोलेश्या अ-
ग्निनेंरे । उपशमवाजलधार । मोटीलबधिपचवीशमीरे । शीतो-
लेश्याजांण । चतु० ॥ १७ ॥ जेणसगतिसुंविकुरवेंरे । विविधप्र-
काररूप । सद्गुरुकहे छावीसमी रे । वेक्रियलबधिअनूप ॥ चतु०

॥ १८ ॥ एकणपात्रेआदमीरे । जीमावे केईलाख । तेह अक्षी-णमहाणसीरे । सत्तावीसमीसाख ॥ चतु० ॥ १९ ॥ चूरेसेना चक्रीसनीरे । संघादिकनेंकाज । तेहपुलाक लबधिकहीरे । अठावीशमीसाज ॥ चतु० ॥ २० ॥ तेजशीतलेश्याविहुंरे । तेम पुलाकविचार । भगवतीसूत्रमें भाखियोरे । एत्रिहुंनो अधि-कार ॥ चतु० ॥ २१ ॥ चक्रवर्त्ती बलदेवनीरे । वासुदेवत्रणएह । आवश्यकसूत्रेअछे रे । नहिंइहांसंदेह ॥ चतु० ॥२२॥ पन्नवणा आहारनी रे । कल्पसूत्रगणधार । तीनतीन इकइक मिलीरे, वारूआठविचार ॥ चतु० ॥२३॥ प्रश्णव्याकरणें कहीरे । वाकी-लबध्यांबीश । सांभलतां सुखऊपजेरे । दोलतहुवे निशिदीश ॥ चतु० ॥२४॥ (कलश) संवत्त सतरेसेंछवीशे मेरुतेरसदिनभले । श्रीनगरसुखकरलूंणकरणसर आदिजिनसुपसावले । वाचना-चारज सुगुरु सांनिध विजयहरखविलासए। श्रीधर्मवर्द्धनस्तवन-भणतां प्रगटज्ञानप्रकाशए ॥२५॥ इति श्री २८ लब्धिस्तवनं ॥

॥ अथ १४ पूर्वस्तवनं लिख्यते ॥

॥ ढाल * बेकर जोडीताम ए चाल ॥

॥ जिनवरश्रीवर्द्धमान । चरमतीर्थंकर । प्रहऊठीप्रणमुं मु-दाए । श्रुतधरश्रीगणधार । सूरिशिरोमणी । नमतां नवविधि-संपदाए ॥ १ ॥ चवदेपूरवनाम । सूत्रे जूजूवा । वीरजिणंदे-भाखीयाए । तेहिव सुगुरुपसाय । वरणवस्युंइहां । आगममें-जिम ऊपदिश्याए ॥ २ ॥ पहिलोपूरबऊत्पाद । दूजो आग्रा-यणी । वीर्यप्रवाद तीजोनमुंए । अस्तिनास्तिप्रवाद सत्ता जाणीये । नाप्रवादण पंचम गिणुंए ॥ ३ ॥ छठो सत्य

प्रवाद । सत्तमआतम । कर्मप्रवाद अष्ठमगिणोए । प्रत्याख्यान प्रवाद । नामें नवम । विद्याप्रवाददशमो कह्योए ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण । प्राणायाम बारमो । क्रियाविशाल तेरमज्ञणोए । बिंदुसारइणनाम । चवदे ए कह्या, साल्लग्रथकी में संग्रह्याए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ श्रीविमलाचलसिरतिलो एदेशी ॥

उत्पादपूर्वसोहामणो । कोटीपदपरिमांण । षट्भाव प्रगटछे तेजिहां । त्रिपदीभावविखाण ॥ १ ॥ सर्वद्रव्यपर्यायतणो । जीवविशेषप्रमाण । दूजोपूर्वआग्रायणी । छिन्नूलखपदजाण॥२॥ पदलखसित्तरजेहनी । संख्या परगटएह । वीर्यप्रबलताजीवनी । भाखीतीजेतेह ॥ ३ ॥ चोथेपूर्वे जेकह्यो । अस्तिनास्तिप्रवाद । पदसंख्या साठ लाखनी । सप्तभंगीस्याद्वाद ॥ ४ ॥ ज्ञानप्रवादपदपंचमो । सूत्रे आएयोजोरू । मत्यादिकपणभेदसुं । पदसंख्या इक कोरू ॥ ५ ॥ सत्यप्रवादछठो कहुं । भाखुं सत्यस्वरूप । संख्यापदइगकोरूनी । भाखी अगमअनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणोइहां । आतमद्रव्यसुभाव । छवीसपदकोरू जेहना । सूत्रेआख्यांभाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवादतणो हिवे । प्रगटपणें अधिकार । लाखअसीपदजेहना । कोरूीइग निरधार ॥ ८ ॥ नवमोपूर्व कहुंहिवे । नामें प्रत्याख्यान । लाखचौरासीजेहना । पदसंख्या चित्तआन ॥ ए ॥ अतिसयगुणसंयुतभणी । साधनसाध्यनिदांन । विद्याअनुपम सातसें । कोरूीदसलखजांन ॥ १० ॥ कल्याणनामइग्यारमो । छवीसकोरूप्रमांण । ज्योतिषशास्त्रविचारणा । चौविहदेवकल्यांण ॥ ११ ॥ प्राणायुपदबारमो ।

उप्पन्नलख इगकोड़ । प्राणनिरोधनजेक्रिया । शास्त्रेआण्यो जोड़ ॥ १२ ॥ कायिक्यादिकजेक्रिया । छंदक्रियासुविसाल । पदसंख्यानवकोड़नी । तेरमो किरियाविशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदुचवदमो । नामें अरथनिहाल । पदसंख्या इगकोड़नी । लाखपच्चवीशसंजाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्ययदेखणभणी । संख्या गजपरिमाण । सोलसहस अरुतीनशें । ऊंर तेंयांसीजांण ॥१५॥ पूरबसंख्याएकही । गुणमालाथीदेख । आगे बुधजनसोधज्यो । बाकीदेश विशेष ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वीरजीनेसर इम उपदिशे ए चाल ॥

सूत्रेगूंथे गणधरा । अरथे श्रीअरिहंतभाखेरे । ते श्रुत ज्ञाननमुंसदा । पापतिमिरजिमनासेरे ॥ १ ॥ वाणीरे वीरजिनंदनी । सुणज्यो चितहितआणीरे । तत्वरमणता अनुसरे । संपूरणगुणखाणीरे ॥ वा० ॥ २ ॥ विषयकषायतजीकरी । ज्ञानभगति उरधारीरे । विधिसंयुत जिनमंदिरे । प्रभुमुखपासजुहारीरे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तपजपसंयमआदरी । श्रीश्रुतज्ञाननिधानोरे । सदगुरुचरण नमीकरी । संबरजोगप्रधानोरे ॥वा० ॥ ४ ॥ अक्षतलेई ऊजला । गुंहली सुंदरकीजेरे । नांणदंसणचारित्रनी । ढिगली तीनधरीजेरे ॥ वा० ॥ ५ ॥ चवदपूर्व भणपरे । सुगुरुसंजोगेलेईरे । विधिसुंपुस्तकपूजीये । चितअति आदरदेईरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इम तपसंपूरणथयां । ऊजमणो हिवकीजेरे । घरसारूधनखरचनें । नरभव लाहोलीजेरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा । पूरबनामप्रमाणोरे । नवकरवाली कोथली । लेखणठवणीजाणोरे ॥ ८ ॥ देहरे देवजुहारनें ।

आरतीमंगलकीजेरे । सनात्रपूजा वलि साचवी । तत्वसुधारस-पीजेरे ॥ वा० ॥ ए ॥ इणपरतपआराधतां । दुरगतिकारणछे-देरे । चवदहरकुसिरोमणि । जीवअक्षयगतिवेदेरे ॥ १० ॥वा०॥ तपआराधनविधजाणी । आगमवचनेजोईरे । जवियणपिण तुमे आदरो । ज्युं जवभ्रमण न होईरे ॥ ११ ॥ वा० ॥ (कलश) इम सयलसुखकर गछखरतर तपे रविजिमकांतए । सोजाग्यसूरिमुणिंद इणपर कह्यो पूर्ववृत्तांतए । संवतअठारे वरशठिमें नयरश्रीबालूचरे । एस्तवनजणतां श्रवण सुणतां सयलमनवंछितफले ॥ १२ ॥ इति चवदेपूर्वस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ तिलकतपस्तवनं लिख्यते ॥

दूहा * सासणदेवीसारदा । वाणीसुधारसवेल । बालक हितजाणीवगसिये । सुबुद्धिसुरंगीरेल ॥ १ ॥ नवअंगे जिनपूजतां । मनलहि सुजपरिणाम । तपतिलके फल पामियें । दवदंतीगुणधाम ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीरजिणेसरउपदिसे एदेशी ॥

॥ कमलाजिमकुंरूणपुरे । जुजबलनरपतिजीमोरे । पदमनीपदमसुवासना । श्वेतगजस्वप्नेंनीमोरे ॥ पदम० ॥ १ ॥ परतख्यफल एपुन्यना । प्रसवीसुता पूरेमासेरे । दवदंतीनामदीपतो । गुणमणीबुद्धिप्रकाशेरे ॥ पदम० ॥ २ ॥ चौसठकलाविचक्षणा । रूपगुणेंकरीरंजारे । देवगुरु धर्मदीपावती । व्रतधारी दृढबंजारे ॥ पदम० ॥ ३ ॥ प्रतिमापूजे श्रीसांतीनी, देवेदीधी त्रिकालोरे । मातपिता प्रमोदसुं ॥ स्वयंबर वरमालो रे ॥ पदम० ॥ ४ ॥ अउज्फाधिपश्रीनिषदनो । नलछिखीयो निखारूरे । आनंदसुं

पंथ आवतां । पूरवपुन्यउघाभेरे ॥ पदम० ॥ ५ ॥ मज्झम रय-
णीतमज्जरी । मधुरवकुंत इहां वनमेंरे । मणिज्ञाले तेज दिन-
मणी । जाग्रतदेखी अहोमनमेंरे ॥ पदम० ॥ ६ ॥ ज्ञानधारी
गुरुकोईमिले । पूछीये एहप्रसन्नोरे । कर्मबले मुनि आवीया ।
परीसहजीतमदन्नोरे ॥ पदम० ॥ ७ ॥ पंचजीत पंचपालता ।
टालता दुस्सहसबलारे । संजमशुद्ध संज्ञालता । उद्यमशिवसु-
खकमलारे ॥ पदम० ॥ ८ ॥ (दुहा) मणितेजें मुनि तरुठये,
रयथकी स्त्रीजरतार, देवेतीनप्रदक्षिणा, विधिसुं चरणजुहार
॥ ९ ॥ देशनासुनपावनथया, ज्ञानसुधारसपाय, कोतपपरज्जव-
तिलकहै कहियै श्रीमुनिराय ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ भरतनृपभावसुं ए एचाल ॥

॥ मधुरस्वरे मुनिवरकहेए, नाणीगुरु सुपसाय । दीपक सहू-
लोकनाए । कर्मसुज्ञासुज्ञपरज्जवेए । इहज्जवफलनिपजाय ।
करमगतिवांकमीए ॥ ११ ॥ उंहिनांणज्जव प्रागनोए । नृपसुणें
निरमलज्ञाव । समकितसाहीयोए । धर्मवती को नृपवधुए ।
जांएयोहैं तत्वप्रस्ताव । साचीजिनवाचनाए ॥ १२ ॥ चौअप्र-
मुख नृप चुंपसुंए । किरिया शुद्धकरीएह । ज्ञले चित्तज्ञावसुंए ।
नवअंगपूजे तिलकसुंए । चाढेजिनचौवीश । रयणकंचणज-
ड्याए ॥ १३ ॥ तिलक तिलकसें पामियोए । समकितएहस-
तीस । जनम सफलोगिणेंए । ज्ञगवन तपविधिज्ञाखीयेए ।
नलकहे बोधवरीस । पीहरषटकायनाए ॥ १४ ॥ आदिनाथ
अरिहंतनाए । षट्उपवासकहीस । त्रिचौबीहारस्सुंए । चौथदोय
जिनवीरनाए । अजितादिकबावीस । आणा गुरुशिरवहीए

॥ १५ ॥ पौषधत्रीश त्रीनेंअयाण । पूजनतिलक चढाय । तारक-जगदीसनेंए । उद्यापन संघजक्तिसुंए । जन्मसफलनलराय । सुधेमनसाधीये ए ॥ १६ ॥ सुणवाणी समकितगहेए । पयप्र-णमी गुरुवीर । चित्तउमाहीयोए । इणपरजेजविआदरेए । थाये चरमशरीर, मूलसुखशासतोए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशां-तिदाता त्रिजगत्राता जविक ध्याता सुखकरा । इमसतीयसाध्यो तपआराध्यो सुजसबांध्यो शिवघरां । आगमेआखे सुरीय-साखे सुगुरुजाखेसुणयथा । सुध्ध्यावे जविकजावे विजयविम-लजिनवरकथा ॥ १८ ॥ इति तिलक तपस्यास्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ शोलीयेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ वीरजिनेसरजाखीयोरे लाल । सहुव्रतमेंसिरताज । जवि-प्राणीरे । कषायगंजनतपआदरोरे लाल । इणथी पातिकजाय जविप्राणीरे ॥ वी० ॥ १ ॥ कोरूवरष तपआदरेरे लाल । क्रोधगमावे फलतास जविप्राणीरे । मानकरे जे प्राणियारे लाल । ते जगमेंनसुहाय ॥ ज० ॥ वी० ॥ २ ॥ व्रतमें माया-आदरीरे लाल । स्त्रीपणोपायोमल्लिनाथ ॥ ज० ॥ रूपपरावर्त्त-कीयाघणारे लाल । आषाढजूतिगणिकासाथ ॥ ज० ॥ ३ ॥ च्यारकषायछे मूलगारे लाल, उत्तमसोलेजेद ॥ ज० ॥ इमज-वजवजमतोअकोरे लाल । जीवपामेंबहुखेद ॥ ज० ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकाशणव्रत जेकरेरे लाल । लाखवरषदुखहांण ॥ ज०॥ नीवीव्रत दूजो कह्योरे लाल । एधारो जिनवरवांण ॥ ज० ॥ वी० ॥ ५ ॥ आंबिलनोफलबहुकह्योरे लाल । उपजे लबधि-अपार ॥ ज० ॥ उपवासकरतां जावसुंरे लाल । पामेंजवनो-

पार ॥ ज० ॥ वी० ॥६॥ इमदिनशोळे तपकरेरे लाल । पूरण एव्रतथाय ॥ ज० ॥ देवगुरुपूजाकरेरे लाल । तिणथीपातिकजाय ॥ ज० ॥ वी० ॥ ७ ॥ एतप आदरथीकरेरे लाल । मनवंछितफलथाय ॥ ज० ॥ नरसुर रिद्धिपिणजोगवेरे लाल । निश्चैमुगति जाय ॥ ज० ॥ वी० ॥ ८ ॥ इति १६ कषाय गंजन तप स्तवनं ॥

॥ अथ ९६ भगवानकास्तवनं लिख्यते ॥

॥ वरतमानचोवीसी वंदुं । मनसूधेनितमेवरीमाई । रुषज १ अजित २ संजव ३ अजिनंदन ४ सुमति ५ पदमप्रजु ६ सेवरी माई ॥१॥ वर० ॥ श्रीसुपार्श्व ७ चंद्रप्रजु ८ प्रणमुं । सुविधि ए शीतल १० श्रेयांसरी ११ माई । वासपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धरम १५ जिन, शांति १६ कुंथु १७ परसंसरी माई ॥ वर० ॥ २ ॥ अरजिन १८ मल्लि १९ अनें मुनिसुव्रत २० । नमि २१ नेमि २२ पास २३ जिणंदरी माई । चोवीसमा श्रीवीरजिणेसर २४, प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ वर० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ प्रहशम सूधा साधु नमुं नित एदेशी ॥

नितनितअतीतचोवीशीनमीये । जेहना नामप्रगट ए जाण । केवलज्ञानीनें १ निरवाणी २ । सागर ३ महाजश ४ विमल ५ बखाण ॥ नि० ॥ ४ ॥ सर्वानुजूति ६ श्रीधर ७ दत्त ८ जिनवर । दामोदर ए सुतेजा १० श्रीस्वामि ११ । मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति १४ जिन । श्रीअस्ताग १५ नेमीसर १६ नाम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल १७ यशोधर १८ ॥ तेम कृतारथ १ए । श्रीजिनेसर २० सुधमति २१ सुजगीस । शिवकर २२ स्यंदन २३ संप्रतिनामें २४ । वंदीजे जिनवरचौवीश ॥६॥ नि०

॥ ढाल ३ सफल संसारनी देशी ॥

॥ जे ज्ञविस्संति अनागएकालए । तेहचौवीशप्रणमीस त्रिहुंकालए प्रथममहाराजश्रेणिकतणोजीवए । श्रीपदमनाज्ञ प्रणमीससदीवए ॥ १ ॥ वीरनो पितरीयो नाम सुपासए । हुसीजिनबीय सूरदेव सुप्रकास ए । कोणिकसुतउदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सिष्यश्रीवीरनो पोट्टलोसाधए । चोथोस्वयंप्रज्ञुनामआराध ए । दृढायुषजीवसिद्धांतमेंजाणीये । पंचमसर्वानुज्ञूतिप्रमाणीये ॥ ३ ॥ कीर्त्तइणनामकजीवकहीजीये । देवश्रुत ते छठो स्वामि सद्दहीजीये । शंखश्रावकहुस्ये उदयजिणसातमो आणंदनोजीव पेढालजिणआठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनोजीवते नवम पोट्टलजिणं । शतकश्रावक शतकीर्त्तिंदशमोज्ञणं देवकीजीवमुनिसुब्रतइग्यारमो । सत्यकीजीवते अममजिणबारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषायजिनतेरमो । बलदेवजीव निपुलाक चवदमनमो । पनरमो निरममदेव सुलसा कही । रोहिणीजीव चित्रगुप्तसोलमसही॥६॥समाधि जिन सतरमो श्राविकारेवती । अढारमो शह्ालजीव संबर जिनपति । दीपायनजीव यशोधरउगणीसमो । कृष्णकोई जीव ते विजयजिनवीशमो ॥ ७ ॥ मल्लिइकवीशमो जीवनारदतणो । देव बावीशमो अंबरूश्रावकज्ञणो । तेवीशमो अमरजीव अनंतबीरजनमो । स्वातिबुधजीवते ज्ञद्रचौवीशमो ॥ ८ ॥ एहआगामीचौवीशजिणजाणीया । प्रवचनसार उद्धारथीआणीया । केई परसिद्धनें केई अप्रसिद्धकह्या । शास्त्रअनुसारथी साचकरसरदह्या ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ आजनिहेजोरेदीसे नाहलो० एदेशी ॥

विहरमानजिणवीशेवंदीये । महाविदेहविख्यात । सीमंधर १ युगमंधर २ बाहुजी ३ श्रीसुबाहु ४ सुजात ५ ॥ ६ ॥ वि० ॥ स्वयंप्रनु ६ रिषजानन ७ अनंतवीरजी ८ । सूरप्रनु ए तेम विशाल १० । वज्रधर ११ चंद्रानन १२ चंद्रबाहुजी १३ । नुजंग १४ ईसर १५ नेम १६ नाल ॥ ७ ॥ वि० ॥ वैरसेन १७ महाजद्र १८ नमुंवली । देवयशा १ए यसोरिद्ध २० । अढी दीपमें विचरेआजए । नामलीयेनवनिद्ध ॥ ८ ॥ वि० ॥

॥ ढाल ५ रेजीव जिनधर्मकीजीये० ए देशी ॥

च्यारतीर्थंकरशाश्वता । इणहीजअनिधान । रुषजानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ ए ॥ च्या० ॥ अठकोमिछप्पन लाखसुं । सत्ताणुंहजार । चउसेठयासीदेहरा । त्रिहुंलोकमकार ॥ २० ॥ च्यार० ॥ नवसेपणवीसकोमीया । विंब त्रेपनलाख । सहसअठावीश च्यारसे । अठ्यासीनाख ॥ २१ ॥ च्यार० ॥ त्रिभूंजिणवरनामए । समरयांसुखदाय । प्रणम्यां पापमिटेपरा । समकितसुद्धथाय ॥ २२ ॥ च्यार० ॥ (कलश) इमत्रिणचौबीशीवीशविहरमांनचौजिण शाशता । संथुण्यां सतरेसे त्रयांले अधिकआंणीआसता । जिनरतनचिंतामणितणीपरि प्रघलवंछितपूरए । प्रहसमे त्रिकरणसुद्धप्रणमें सदाजिनचंदसूरए ॥ २३ ॥ इति श्रीत्रिभूंनगवानका स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीउपधानतप बृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ श्रीमहाबीरधरमपरकासे । बेठी परषदबारजी । अमृतवचनसुणी अतिमीठा । पामें हरषअपारजी ॥ १ ॥ सुणो सुणो

रे श्रावक उपधानवह्यांविन । किमसूझे नवकारजी । उत्तराध्ययनबहुश्रुतअध्ययनें। एहजणयो अधिकारजी ॥२॥ सुणो०॥ महानिशीथसिद्धांत मांहेपिण । उपधान तपविस्तारजी । अनुक्रमसुद्धपरंपरदीसे । सुविहितगच्छ आचारजी ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ तपउधानवह्यांविनकिरिया । तुछअलपफल जाणजी । जे उपधानवह्या नरनारी । तेहनो जनमप्रमाणजी ॥ ४ ॥ सुणो०॥ तपउपधानकह्यो सिद्धांते । जो नविमानेंजेहजी । अरिहंत देवनीआणविराधे जमस्ये जवजवतेहजी ॥ ५ ॥ सुणो० ॥ अघव्याघाटसमां नरनारी । विणउपधाने होयजी । किरियाकरतां आदेश निरदेश । कामसरे नहीं कोइजी ॥ ६ ॥ सुणो० ॥ इकघेवरनें खांडेजरियो । अतिघणोमीठोथायजी । एकश्रावक उपधानवहेतो, धनधनते कहवायजी ॥ ७ ॥ सुणो० ॥ ढाल २ ॥ नवकार तणो तप पहिलो वीसदजाण । इरियावही नो तप बीजोवीसद आण । इण बिहुं उपधाने निश्चे नांणमंडाण । बारेउपवासे गुरुमुख वेवेवांणि ॥ ८ ॥ पेंत्रीसदत्रीजो णमोत्थुणं उपधांन । त्रिणवायण उगणीसतपउपवास प्रधांन । अरिहंतचेईतप चोथो चोकदएह । उपवास अढाई वायण एकगुणगेह ॥ ए ॥ पांचमो लोगस्सतप अठावीसदनाम । साढापनरहउपवासे वायणत्रिणठाम । पुरकरवरदीतप छठो छक्कदसार । साढात्रणउपवासे वायणएकसुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधानमाल । उपवासकरेइक चौविहारततकाल । एकवायण करे बलि गुरुमुख सरसरसाल । गछनायकपाशे पहरे मालविशाल ॥ ११ ॥ मालपहरणअवशर आणी-

मनउछरंग । घरसारूवारू खरचे धनबहुरंग । अतिउछवकीजे रातीजोगोदिलखोल । गीतगान गवावे पावेअतिरंगरोल ॥ १२ ॥ ढाल ॥ ३ ॥ एसातेउपधान । विधिसे जे वहे । ते सूधीकिरियाकरेए । खिणनकरे परमाद । जीवजतनकरे । पुंजि पुंजि पगलाजरेए ॥ १३ ॥ नकरे क्रोधकषाय । हरू हरू हसे-नहीं । मरम केहनो नविकहेए । नाणें घरनोमोह । उत्कृष्टीक-रणीकरे । साधुतणीरहणीरहेए ॥ १४ ॥ पहुरसीमसिफाय । करपोरसीजणी । उंचेस्वरबोलेनहींए । मनमांहेंजावेएम । धनधनएदिन । नरजव मांहिं सफलसहीए ॥ १५ ॥ जे साते उपधान । विधसेतीवहे । पहिरेमालसोहावणींए । तेहनी कि-रियाशुद्ध । बहुफलदायक । करम निरजरा अतिघणीए ॥१६॥ परजव पामे रिद्ध । देवतणासुख । बत्रीस बद्धनाटक परूए । लाजे लीलविलास । अनुक्रमशिवसुख । चढती पदवी जे चढे ए ॥ १७ ॥ (कलश) इमवीरजिणवरजुवण दिणयर मातत्रि-शलानंदणो । उपधाननाफल कहे उत्तम जवियजण आणं-दणो । जिणचंदजुगपरधानसदगुरु सकलचंद मुनीसरो । तसु शीश वाचक समयसुंदर जणें वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति श्रीसातउपधानगर्झितश्रीमहावीरस्वामी वृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ पक्खवासे तपका वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ सीमंधरकरजोमया एदेशी ॥

॥ जंबुद्वीपसोहामणो । दक्षिणजरतउदार । राजग्रही नग-रीजली । अलिकापुरअवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामीजी॥ समरंता सुखथाय । मनवंछितफलपामीये । दोहगदूरपुलाय

॥ २ ॥ श्री० ॥ राजकरे तिहां राजियो । सुमित्रनरेसरनाम । पटराणीपद्मावती । शीलगुणें अभिराम ॥ श्री० ॥ ३ ॥ श्रावणऊजलपूनमें । श्रीजिनवरहरिवंश । माताकुक्षिसरोवरे । अवतरीयोरायहंस ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जेठपढमपक्षअष्टमी । जायो श्रीजिनराय । जनममहोछव सुरकरे । त्रिभुवनहरखनमाय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ शामलवरण सोहामणो । निरुपमरूपनिधान । जिनवर लंछनकाछबो । वीशधनुष तनुमान ॥ श्री० ॥ ६ ॥ परणीनार प्रभावती । भोगपुरंदरसाम । राजलीलासुख भोगवे पूरे वंछितकाम ॥ श्री० ॥ ७ ॥ तब लोकांतिकदेवता । आविजंपे जयकार । प्रभु फागुणवदिबारसे लीधोसंयमभार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवदिबारसे । मनधर निरमलध्यान । च्यारकरम प्रभु चूरिया । पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ॥ ९ ॥

॥ ढाल २ सुखकारण भवियण समरो श्रीनवकार एदेशी ॥

॥ ततखिणतिहांमिलिया चलिया सुरनरकोड़ि । प्रभुना पदपंकज प्रणमे बेकरजोड़ि । बेकरजोड़ी मछरछोड़ी समवसरणविरतंत । माणकहेम रूपमयत्रिगड़ो छत्रत्रयझलकंत । सिंहासनबेठा तिहांस्वामी चोविहधर्मप्रकासे । बारेपरखदाबेठी आगलि सुणे मनउल्हासे ॥ १० ॥ तपनें अधिकारे पखवासोतपसार । पड़िवाथीकीजे पनरहतिथि ऊदार । पनरहतिथि कीजे गुरुमुखलीजे । जिसदिन हुवे उपवास । श्रीमुनिसुब्रतनामजपीजे वांदी देवउल्लास । तपऊजमणे रजतपालणो सोवनपूतलीचंग । मोदकथाल देहरे मूंकी जिनवरस्नात्रसुरंग ॥ ११ ॥ तपकरिये निरंतरअदुरव दरशनीजेम । मनवंछितकेरा सुखपा-

मीजेतेम, सुखपामीजे कारजसीजे तपकरतां सुखकार, पुत्र मित्रपरिवार परंपर अतिवल्लभभरतार।जसकीरतसोभागवडाई महियल महिमाजांण । परभव मुगतिफल लहीये एतपनेंप्रमाण ॥ १२ ॥ थिरथापी चतुर्विधसंघतणो अधिकार । भरुवछप्रमुखनगरादिककरियविहार । विहारकरी प्रतिबोधे खंदक पंचसयांपरिवार । कार्त्तिकसेठ जितशत्रुतुरंगम सुव्रतनामकुमार । तीशसहसवरसआऊखो पाले जगदयासार । श्रीसम्मेतसिखरपरमेसर पोहतामुगति मझार ॥ १३ ॥ इमपंच कल्याणक थुणियात्रिभुवनताय । मुनिसुव्रतस्वामीवीशमो जिनवरराय । वीशमोजिनवर राय जगगुरु भयभंजणभगवंत । निराकार निरंजननिरुपमअजरामरअरिहंत । श्रीजिनचंदविनेयशिरोमणि सकलचंद गणिसीस । वाचक समयसुंदर इमपभणे पूरो मनहजगीस ॥ १४ ॥ इति श्रीपक्खवासातप वृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ बारेमासीतपस्तवनं लिख्यते ॥

दानउल्लटधरीदीजीयै । (एदेशी) त्रिभुवननायक तुं धणी, आदिजिणेसरदेवरे । चौसठइंद्रकरेसदा । तुझपदपंकजसेवरे (त्रिभु०) ॥ १ ॥ प्रथमभूपालप्रभु तुं थयो । इणअवसरपणीकालरे । तुजसमअवरनको प्रभु । तुं प्रभु दीनदयालरे(त्रि०) ॥ २ ॥ प्रथमतीर्थंकर तुं सही । केवलग्यानदिनंदरे । धर्मप्रज्ञापकप्रथमतुं । तूंही है प्रथमजिनंदरे । (त्रि०) अंतरअरि जे आतमतणा । कालअनादिथिति जेहरे । ते तपशक्तिये तैहण्या । आतमबीरजगुणगेहरे (त्रि०) ॥ ४ ॥ ताहरीशक्ति कुणकह शकै । जेहनो अंतनपाररे । द्वादश-

माशनो तपकर्यो । तेह अपानकसाररे (त्रि०) ॥ ५ ॥ एहउत्कृष्टतपवरणव्यो । आगममे जिनराजरे । ते करवुं अतिआकरूं । तपविना किमसरे काजरे (त्रि०) ॥ ६ ॥ तीनशेसाठउपवासते । जेइनपंचमकालरे । अवसरआदरै क्रमविना । ते पिण जवि सुविलासरे (त्रि०) ॥ ७ ॥ एतप गुरूमुखआदरै । शास्त्र तणे अनुसाररे । पमिक्कमणादिकजावथी । सुध्धक्रिया मन धाररे (त्रि०) ॥ ८ ॥ चित्तसमाधि सुजजावथी । धरे ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तमफललहे । वलि लहे उत्तमज्ञानरे (त्रि०) ॥ ए ॥ कालअनादिसंसारमें । जन्ममरणतणा दुःख रे । ते लह्या धर्मपायांविनां, तपबिना किमहुवे सुक्खरे (त्रि०)॥१०॥ हिवलह्यो नरजवपुन्यथी । वलि लह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्वनीरुचिथईहैं मुऊे । हिवमिट्यो मन तणोजर्मरे (त्रि०)॥११॥ जवजव एकजिनराजनो । सरणहोज्यो सुखकाररे. कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । में कीधो हिवे परिहाररे (त्रि०) ॥ १२ ॥ दर्शनज्ञानचारित्रए । मोहमारगसुविसालरे । जवजवजे मुऊसंपजे । तोफलेमंगलमालरे ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ श्रीजिनशासनतपकह्यो । ते तप सुरतरुकंदरे । धनधन जेनरआदरे । काटेते करमनो फंदरे ॥ त्रि० ॥ १४ ॥ कलश ॥ इम नाजिनंदन जगतवंदनसकलजनआनंदनो । में थुणयो धनदिनआजनोमुऊ मात मरुदेवीनंदनो । संवत सुनेत्राकाशनिधिशशि (१ए०२) नयर श्रीवालूचरे । श्रीजिनसौजाग्यसूरिंदके सुपशाय विजयविमलवरे ॥ १५ ॥ इति श्रीबारमाशीतपवृध्धस्तवनम् ॥

॥ अथ छम्मासीतपस्तवनं लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय, महावीरस्वामी जे जे तपकिया । तेहनोकहिसुंविचार । वलिव-लिवांडु वीरजीसुहामणा ॥ १ ॥ जावठजंजण सेव्यां सुखकरे । गातां नवनिधिथाय । वारेवरसां वीरजी तपकियो । दूरकरे सहुअपाय ॥ व० ॥ २ ॥ बेकरजोमी एहूं वीनवूं । श्रीजिनशा-सनराय । नामलियांथी नवनिधि संपजे । दरिशणडुरितपुलाय ॥ व० ॥ ३ ॥ नवचौमासा जिनजीरा जाणिये । एककीयो ठम्मास । पांचेकणा ठ वलि जाणिये । बारेकेकोजीमाश ॥ व० ॥ ४ ॥ बहुत्तर माशखमण जगदीपता । ठ दोमासीरे-जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशीवखाण ॥ व० ॥ ५ ॥ जड महाजड शिवगतिजाणियें । उत्तमएहनाप्र-कार । विचमें पारणो स्वामी नहिंकियो । नहिंकीयो चोथोआ-हार ॥ व० ॥ ६ ॥ तिहुंउपवासे प्रतिमाबारमी । कीधाबारेजी-माश । दोयसें बेला जिनजीराजाणिये । इणगुणतीसविलास ॥ व० ॥ ७ ॥ तीनसेपारणा जिनजीराजाणियें । तीन गुणतीसप-चास । एहमें स्वामीकेवलपामिया । पाम्यामुगतिआवास ॥ व० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इमवीरजिनवर सयलसुखकर अतिहि डुक्करतपकरी । संयमसुपाली कर्मटाली स्वामी शिवरमणीवरी । सेवकपजणें वीरजिनवर चरणवंदिततुमतणा । संसारकूपपमंत-राखो । आपो स्वामी सुखघणा ॥ ९ ॥ इति ठम्मासीतपस्तवनं ॥

॥ अथ रोहिणीतपवृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ शाशणदेवतासामिणीए मुफ सांनिधकीजे । जूलो अक्षर

जगतजणी समझाईदीजे । मोटोतप रोहणीतणोए जिणरागुण-
गाउं । जिम सुखसोहग संपदाए वंछितफलपाउं ॥ १ ॥ दक्षि-
णजरते अंगदेसछे चंपानयरी । मघवाराजा राज्यकरेतिणजी-
त्यावयरी । पाटतणीराणी रूवमीए लखमीइणनामें । आठपूत्र
जायाजिणेंए मनमें सुखपामें ॥ २ ॥ रोहणीनामे कन्यकाए
सबकुं सुखकारी । आठां पुत्रां ऊपराए तिणलागेप्यारी । वाधे-
चंद्रतणीकलाए । जिम पखऊजवाले । तिमतेकुमरी धायमाय-
पांचेप्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरीरूपे रूवमीए घरअंगणवैठी । दीठी
राजा खेलतीए तिण चिंतापैठी । तीनजुवनविचएहवीए नहिं
दूजीनारी, रंजा पऊमा गवर गंग इणआगलहारी ॥ ४ ॥
पुरुष न दीसे कोइइसो जिणनेंपरणाउं । आंख्याआगल साल
वधे तिण चयननपाउं । देशदेशना राजवीए ततखिण ते
मया । सबलसजाई साथकरी नरपतिपिणआया ॥ ५ ॥ वीत-
शोकराजातणोए छे कुमरसोजागी । कन्याकेरी आंखमीए
तिणसेतीलागी । ऊजादेखे सकललोक चढिया केइपाला ।
चित्रसेनरेकंठेठवी कुमरीवरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगनाए
जपेजयजयकार । रलियायतथयो देखने ए सारोसंसार । कर-
जोमीकहे लोकवखतकन्यारोजामो । वीतशोकनो कुमरथयो
सिरऊपरलामो ॥७॥ इमविवाह थयोजलोए । दीयादानअपार ।
घरआयापरणीकरीए हरख्योपरिवार । वीतशोकनिज पूत्रजणी
अपणोपाटदीधो । आपणसंजमआदरीए जगमें जसलीधो ॥८॥

॥ ढाल २ प्रभुप्रणमुंरे पासजिणेसरथंभणो एदेशी ॥

तिणनगरीरे चित्रसेन राजाथयो । सुखमाहींरे केटलो काल-

वहीगयो । इणअवसररे आठपूत्रहुवाजवा । चढते पखरे चंद्र-
जिसीचढतीकवा ॥ उल्लालो ॥ चढतीकवा हिव रायवेठो
पासबेठीरोहणी । सातमीजूमी कंतसेती करेक्रीमा अतिघणी ।
आठमो बालकगोदऊपररंगसूं राणीलियो । पूत्रने प्रीतम
आंखआगलदेखतां हरखेहियो ॥ ए ॥ ढाल ॥ इककामणीरे
गोखचढी दृष्टेपमी । शिर पीटेरे दीनस्वरे रोवेखमी । बूढापणेरे
मनगमतो बालक मूउ । हुंतो एकजरे तिणअधिकेरो डुखहुउ ॥
उल्लालो ॥ डुखहुवोदेखीरोहिणीकहेइमप्रीतमजणी । एनार
नाचे अनेकूदे कहो किम मोटाधणी । एहवोनाटक आजताइं
मेंकदे देख्योनहीं । मुफनेतमासो अनेहासो देखतां आवेसही
॥ १० ॥ ढाल ॥ इणवचनेरे रीसाणो राजाकहै । तूं पापणीरे
परतणीपीमा नविलहै । एडुखणीरे पूत्रमुए तम फमकरे । जव-
वीतेरे वेदना जाणीजेतरे ॥ उल्लालो ॥ जाणीजेतरेतूं वातडु-
खनीगरवगहिलीकामीनी । इमकही राजा हाथफाल्यो तेहना-
बालकजणी । सातमीजूंमीथी तले नाख्यो तिसेहाहारवथयो ।
रोहिणीहसती कहैप्रीतम पूत्र नीचेकिमगयो ॥ ११ ॥ ढाल ॥
हिव राजारे पूत्रतणे शोके करी । थयोमुरछितरे रोवे अति-
आंख्यांजरी । पमतोसुतरे सासणदेवतजाणियो । कंचनमयरे
सिंहासणबेसाणियो ॥ ढाल ॥ वेसाणियोकरजोमीआगे करेना-
टकदेवता । गोदी खिलावे केइहसावे पायपंकजसेवता । ऊपनो
जूपतिने अचंजो देखि ए कारणकिसो । जो कोइज्ञानीगुरुप-
धारे पूछियेसांसो इसो ॥ १२ ॥ ढाल ॥ चिंतवतांरे चारित्रि-
याआया जिसे । राजापिणरे पुहतो वंदणनेतिसे । मुणिदेश-

नारे पूछे प्रश्न सोहामणो । कहोस्वामीरे पूरबजव बालकतणो॥ उल्लालो ॥ बालकतणोजव जूपपूछे कहै इणपरिकेवली । रोहिणीराणीनो जवांतर अने राजानोवली । श्रीसुगुरुपासे पाछले-जवे रोहिणीतपआदस्यो । तपतणेसगते साधुजगते तुम्हजवसायरतस्यो ॥ १३ ॥ ढाल ॥ कहैराजारे किम रोहिणी तप कीजिये। विधिजाखोरे जिमतुमपासे लीजीये ॥ तब मुनिवररे विधि रोहिणीरातपतणी । इमजंपेरे चित्रसेन राजाजणी ॥ उल्लालो ॥ राजाजणी विधि एहजंपे चंद्र रोहणीजबआविये। उपवासकीजे लाजलीजे जलीजावना जाविये । बारमाजिनवरतणीप्रतिमा पूजिये मनरंगसु । इम सातवरसांलगेकीजे तजी आलसअंगसुं ॥१४॥

॥ ढाल ॥ वीरसुणोमोरीवीनती एदेशी ॥

॥ तपकरिये रोहिणीतणो । वलिकरियेहो ऊजमणो एम । तपकरतां पातिकटले । तिण कीजेहो तपसेतीप्रेम ॥ १५ ॥ तप० ॥ देवजुहारीदेहरे । तिणआगेहो कीजे वृक्षअशोक । गुणनो बारमजिनतणो । जलानेवजहो धरिये सहुथोक ॥ तप० ॥ केशर चंदनचरचिये, कीजे आगे हो आठेमंगलीक । विधिसुं पुस्तकपूजिये । ते पामेहो शिवपुरतहतीक ॥ तप० ॥ ॥ १७ ॥ सेवाकीजेसाधूनी । वलिदीजे हो मुंहमाग्यादान । संतोषीजेसाहमी मनरंगे हो करकर पकवान ॥ तप० ॥ १७ ॥ पाटीपोथीपूंछना । मिसलेखण हो फिलमिलसुजगीस । नवकरवाली वींटणा । गुरुआगे हो धरोसत्तावीस ॥ तप० ॥ १ए ॥ चोथोव्रत पिण तिणदिने, इमपालेहो मनआणविवेक। इणविध रोहिणीआदरे । तेपामेहो आनंदअनेक ॥ तप० ॥ २० ॥

॥ ढाल ४ धर्मंकरो जिनवरतणो ए देशी ॥

इम महिमा रोहणीतणी । श्रीज्ञानीगुरुपरकाशेरे । चित्रसेननेरोहिणी । वासुपूज्य तीर्थंकरपासेरे ॥ इम० ॥ २१ ॥ इणपरि रोहिणी आदरी । ऊपरऊजमणोकीधोरे । चित्रसेननने रोहणी । मनसूधे संजमलीधो रे ॥ इम० ॥ २२ ॥ आठेपूत्रे आदरी । दीक्षा बारमजिनआगेरे । वलि नाना विध तपतपे । धरमतणी मतिजागेरे ॥ इम० ॥ २३ ॥ करि अणसणआराधना । लहिकेवल शिवपदपायारे । जिन वाणीआणीहिये । प्रभुचरणां चितलायारे ॥ इम० ॥ २४ ॥ मनमोहन महिमानीलो । में स्तव्यो शिवपुरगामीरे । मन मान्या साहिबतणी । हिव पुन्ये सेवापामीरे ॥ इम० ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम गगनजुगमुनि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण शुदिभली ॥ में कही रोहिणीतणीमहिमा सुगुरुमुख जिम सांभली । वासुपूज्य अमने थया सुप्रशन चितनीचिंताटली । श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकलमनआस्याफली ॥ २६ ॥ इति श्रीरोहिणीतप वृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥ पैंतालीसआगमवृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति । नमूं देवअरिहंत ॥ अर्थप्रकाशेगणपपुर । द्वादशअंगमहंत ॥१॥ त्रिपदी लहि गणपतिरचे । सूत्रअर्थसंजोग । अक्षररूपे सारदा । प्रणमूं त्रिकरणयोग ॥ २ ॥ टीकाकर्त्ता जगतगुरु । सूत्रकरे गणधार ॥ पंचांगी युतविस्तरे । नयनिक्षेपविचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्भिक्षसें । भूले बारम अंग ॥ कंठ पाठसें लिखतकर । रचनारचीअभंग ॥ ४ ॥

ादिल्ल अरु देवर्द्धिगणि । आचारज सयपंच ॥ चौरासीआ-
मलिखे । कोटिग्रंथ तजखंच ॥ ५ ॥ कालदोषसें अबमिले ।
ागमपैंतालीस ॥ ताको मुनिविवरणकरे । मानेविसवावीस
६ ॥ ढाल ॥ जगत गुरु त्रिशलानंदनजी एदेशी ॥ आचा-
ांगपहिलोकह्यो जी । मुनिआचारविचार ॥ सुयगडांगदूजोअ-
जी । पाषंडीनिरधार ॥ जगतगुरु जाखे वीरजिनंद ॥ १ ॥
स ठाणाठाणांगमेंजी । समवायांगसंख्यात ॥ सहसछत्तीस
ला प्रश्ननोजी । जगवईअंगविख्यात ॥ जग० ॥ २ ॥ धर्म
था ज्ञाताजणीजी । दसश्रावकव्रतधार ॥ दसा उपासक सात-
ोजी । अंगकह्योनिरधार ॥ जग० ॥ ३ ॥ अंतगड केवलीजे-
याजी । वरणनअष्टमअंग ॥ पंचानुत्तरजे गयाजी । अणुत्तरो-
ाईचंग ॥ जग० ॥ ४ ॥ अंगुष्टादिक प्रश्ननोजी । प्रश्नव्याकरण-
ाम ॥ सुखदुखना फलजाषिया जी । सूत्रविपाकेताम ॥ जग०
५ ॥ अढारसहस आचारांगमेंजी । पदसंख्यापरिमाण ॥
र्संसंख्यातेपदहुवेजी । ठाणदुगुण सवजाण ॥ जग० ॥ ६ ॥
ववाईउपांगमेंजी । कोणिक अंबडरूप ॥ वर्णन नगरी आदि-
जी । सांजल जविजनचूंप ॥ जग० ॥ ७ ॥ सूरियाजपूजाक-
जी । जिन प्रतिमानवरंग ॥ द्रव्यजावबिहुंजेदसूंजी । राय-
श्री चितचंग ॥ ज० ॥ ८ ॥ जीवतणो अजिगमसहीजी ।
ंजय देवप्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजोकह्योजी सुरकृतबहुविध-
ाव ॥ जग० ॥ ए ॥ पन्नवणामें जाणज्योजी । जीवाजीव
ंचार ॥ जंबुद्दीपनीवर्णनाजी । नामथकी गुणधार ॥ जग०
१० ॥ सूरचंद्रविग्रहगतीजी । पन्नत्ती विहुंजाण ॥ कप्पिय-

कप्पवर्मिसियाजी । पुप्फिया नामेवखाण ॥ जग० ॥ ११ ॥ पुप्फचुलिया जाणीयेजी । वन्हिदशा इणनाम ॥ नामथीअर्थ- पिछाणज्यो जी । सांजलता सुखधाम ॥ जग० ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ख्यालीलाल अणवटरंगलागो ए देशी ॥

छेदतणा प्रायश्चित्तनाजी । छेदछए एजाण ॥ वृहत्कल्प व- वहारमेंजी । जाख्यो जगवंतज्ञान ॥ सुज्ञानीलालइणसुं नित- राचो ॥ राचोराचोरे जविक दिलधार । इणसुंनितराचो । सुज्ञा० ॥ १३ ॥ महानिशीथे जाखियोजी । जिनपूजा विहुं- नेद ॥ श्रावक इव्यजावसुंजी । मुनिवरजाव उमेद ॥ सु० ॥ ॥ १४ ॥ जीतकल्प वलि निसीथछेजी । उंर दशाश्रुतस्कंध ॥ दशपयन्नाजाणियेजी । चौसरण संथार प्रबंध ॥ १५ ॥ सु० ॥ तंडुलवयाली चंदाविजयाजी । गणिविजा अजिधान । देववि- जया वीरथुवोजी । गछाचारनिधान ॥ सु० ॥ १६ ॥ ज्योति- षकरंम महापच्चरकाणजी । च्यारसूत्र छे मूल ॥ आवश्यक दश- वैकालिकजी । उत्तराध्ययनअमूल ॥ सु० ॥ १७ ॥ च्यारे अनुयोगे करीजी । रचना सूत्रे जाण । तेह नय निक्षेपथी- जी । अनुयोगद्वारप्रधान ॥ सु० ॥ १० ॥ इव्यानुयोग छए इव्यनीजी । चर्चाविधिविस्तार ॥ चरण करण अनुयोगमेंजी । मुनि श्रावकआचार ॥ सु० ॥ १ए ॥ गणितानुयोगगणनाकरी जी । पृथ्वीनगविमाण ॥ वर्ग मूल घनमूलथीजी । जाणो चतु- रसुजाण ॥ सु० ॥ २० ॥ धर्मकथा अनुयोगमेंजी । धर्मकथा दृष्टांत ॥ ए चारों विस्तारियाजी । पेंतालीससिद्धांत॥सु०॥२१॥

॥ ढाल ३ सांगानेरविराजे एदेशी ॥

॥ सुण सुण गौतमवाणी । इम वीरवदेगुणखाणीरे । ज्ञवियां आगमसुं मनलावो ॥ मनकल्पितवातमागावोरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २२ ॥ नंदीसूत्र चिरनंदो । यामें पंचज्ञाननेवंदोरे ॥ ज्ञाननाज्ञेदवखाण्या । मतिअठावीसे आण्यारे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २३ ॥ श्रुतचवदेवीसांज्ञेदे । एमिथ्यामतने छेदेरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ अवधि छ असंख्यप्रकारे । मनपर्यवड्डयज्ञेदधारेरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २४ ॥ केवलएक प्रकासे । ए सबविधिनंदीज्ञासेरे ॥ एतो सहुआगमनी नूद । स्याद्वादगंगनीबूंदरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २५ ॥ अंग उपांगनीटीका । कर्त्तानेनमूंनिरज्ञीकारे ॥ प्रथम हरिज्ञद्र शीलांगाचारी । श्रीअज्ञयदेवबलिहारीरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २६ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी । इत्यादिकने सिरनामीरे ॥ सामान्य विशेषेज्ञाख्यी । निश्चय व्यवहारछे साखीरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २७ ॥ उत्सर्गवचनछेकेइ । अपवाद वचननेलेइरे ॥ ज्ञ० ॥ इकमनसुंआराधो । मनवंछित सगला-साधोरे ॥ ज्ञ० ॥ आ० ॥ २८ ॥

॥ ढाल ४ मंगलकमलाकंदए एदेशी ॥

पैंतालीसआगमतणीए । हिव तपविधि सुणज्यो हित ज्ञ-णीए । दूजपांचमएकादशीए । ज्ञानतिथितपथीकर्म जायख-सीए ॥ २९ ॥ शक्तिछतेउपवासए । आंबिलनिवीथी उल्लासए। एकासण अथवा करेए । इम पैंतालीस दिन आचरेए ॥ ३० ॥ जापकरे दोहजारए । देववंदनपूजनसारए । प्रतिक्रमणकरे दोनुंटंकए । आगमसुणे अर्थनिसंकए ॥ ३१ ॥ ऊजमणो हित

चितकरेए । गुरुज्नक्ति चित्तसुंआदरेए । ज्नक्ति करेसाहमीतणीए । जेपढेपढावे तेज्नणीए ॥ ३२ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तककरे दानए । तिणमनुष्यजनमपरिमाणए । ते पामे श्रुतज्ञानए । क्रमथीलहैपदनिर्वाणए ॥ ३३ ॥ (कलश) शुज्न नंद शर निधि चंद्र वरषे माघसुदिपंचमीदिने । वर नयरवीकानेरसुंदर बृहत्खरतरगणघणे । गणधारकीर्ति सुरिंदपाठक रामगणि ऋद्धिसारए । इमकरियस्तवना सुय महोदय सदाजयजयकारए॥३४॥ इति श्रीपैंतालीस आगमतपवृक्षस्तवनं ॥

॥ अथ पंचसमवायस्तवनं लिख्यते ॥

॥ सिद्धारथसुतवंदिये । जगदीपक जिनराज । वस्तुज्नाव सब जाणिये । जिनआगमथी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथीसंप जे । सकलवस्तुविख्यात । सप्तज्नंगीरचनाविना । बंध न बेसे बात ॥ २ ॥ वादवदे नय जूजुवा । आपआपणेंठाम । पूरणवस्तुविचारतां । कोई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंधप्ररूपे एकगज । ग्रहीअवयवएकेक । दृष्टिवंतलहे पूर्णगज । अवयवमिलीअनेक ॥ ४ ॥ संयुतसकलनयेकरी । जुगत जुगत सुधबोध । धन जिन सासन जगजयो । तिहां नहीं कोईविरोध ॥ ५ ॥ ढाल १ आसाउरीराग ॥ श्रीजिनसासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धस्वरूपरे । नयएकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकलअज्नंगअनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ कोईकहे एकालतणेंवस । सकलजगतगतहोयरे । काले उपजे विणसेकाले । अवर न कारनकोयरे ॥ ७ ॥ श्री०॥ कालेगर्ज्नधरे जगवनिता । काले जनमे पूतरे । कालेबोले काले चाले । कालेफाले घरसूतरे ॥ ८ ॥ श्री० ॥ काले दूधथकी

दहीथाये । काले फलपरिपाकरे ॥ विविधपदारथकालऊपाये । थंतकरे बेवाकरे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बारेचक्कि । वासुदेवबलदेवरे । काले कवलित कोईनदीसे । जसुकरतासुरसेव रे ॥ १० ॥ श्री० ॥ उत्सर्पणि अवसर्पणिथ्यारा । ठठ जूजूय ज्ञांतरे । षट्रितुकाल विशेषविचारो । ज्ञिन्नज्ञिन्नदिनरातरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले वालविलासमनोहर ॥ यौवनकालाकेश रे । बुढापणें हुयवलिवलिडुर्बल । सक्तिनहीं लवलेसरे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ गिरुआगुणश्रीवीरजीएचाल ॥

॥ तब स्वज्ञाववादिवदेजी । कालकिसुंकरेरंक । वस्तु स्वज्ञावे नीपजेजी । विणसे तेमज निस्संक ॥ १३ ॥ विवेकी जुउंजुउं वस्तुस्वज्ञाव । ठतेयोग जोवनवतीजी । वांऊणी न जणेंबाल । मूंठनहीं महिलामुखेजी । करतल ऊगेनवाल ॥ १४ ॥ वि० ॥ विणस्वज्ञाव नविसंपजेजी । किमह पदारथकोय ॥ थंबनलागे नींबरूेजी । वागवसंते जोय ॥ १५ ॥ वि० ॥ मोरपींठकुणची-तरेजी । कुणकरे संध्यारंग । थंगविविध सविजीवनाजी । सुंद-रनयनकुरंग ॥ १६ ॥ वि० ॥ कांटाबोर बंबूलनाजी । कुणें थणियाला कीध । रूपरंगगुण जूजूथ्याजी । तस फलफूलप्र-सिद्ध ॥ १७ ॥ वि० ॥ विसहरमस्तके नितवसेजी । मणिहरे विस ततकाल । परबतथिर चलवायरोजी । उरध थ्यगननी-ऊाल ॥ १८ ॥ वि० ॥ मठतुंब जलमांतरेजी । बूरूे काग पाहाण । पंखजातिगयणें फिरेजी । इणपरेसहिज विनाण ॥ १ए ॥ वि० ॥ वाय सूंठथी उपसमेंजी । हररूे करे विरेच । सीजे-

नहि कणकोरडुजी । सकलस्वभावअनेक ॥ २० ॥ वि० ॥ देशविशेषे काठनोजी । जुयमां थाये पाखाण । संखअस्थिनो नीपजेजी । क्षेत्रस्वभावप्रमाण ॥ २१ ॥ वि० ॥ रबितातो शशिसीयलोजी । भव्यादिकबहुभाव । षट्द्रव्य आप आपणाजी । नतजे कोइस्वभाव ॥ २२ ॥ वि० ॥

॥ ढाल ३ कपूरहुवे अतिऊजलोरे ए चाल ॥

॥ काल किसुंकरे बापडोरे । वस्तुस्वभावअकज्ज । जो न होइ भवतव्यताजी । तोकिमसीझेकज्जरे ॥ २३ ॥ प्राणी मकरो मनजंजाल । एतो भावीभावनिहालरे ॥ प्रा० ॥ जलधितरे जंगलफिरेजी । कोडियतनकरेकोय । अण भावीहोवे नहींजी । भावीहोयते होयरे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबे मोर वसंतमांजी । डाले कोइ लाख । कस्या केई खांखटी जी । केईआंबा केईसाखरे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ वांछलजिमभवतव्यताजी । जिण जिण दिशेछजाय । परवसमनमाणस तणोजी । तृणजिम पूठेधायरे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियतवसे विण चिंतव्यूंजी । आवीमिले ततकाल । वरसां सोनुं चिंतव्योजी । नियमकरेविसरालरे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो चक्रि सुभूम ते जी । समुद्रपड्योविकराल । ब्रह्मदत्तचक्री तणाजी । नयनहरे गोवालरे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयलकरेजी । किम राखीसरेप्राण । आहेडी शरताकीयोजी । ऊपरभमेंसींचाणरे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ आहेडीनागेंडस्योजी । बाणलग्योसींचाण । कोकूहोऊडीगयोजी । जोउंनियतपरमाणरे ॥३०॥ प्रा० ॥ सबहण्यासंग्राममां जी। रानपड्यांजीवंत । मंदिरमांहे मानवीजी । राख्याही न रहंतरे ॥ ३१ ॥ प्रा० ॥

॥ ढाल ४ राग मारुणीमनोहरणी ए चाल ॥

॥ कालस्वज्ञावनियतमतिकूमी । करमकरे तेथाय । करमें नरय तिरिय नर सुरगति । जीवज्ञवंतरेजाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्योरे करमनछुटेकोय । करमें रामवस्या वनवासे । सीता-पामीआल । कर्में लंकापतिरावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चेत० ॥ कर्में कीमी कर्में कुंजर । कर्में नर गुणवंत । कर्में रोगसोगडुखपीमित । जनमजाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चेत०॥ कर्मेंवरसलगेरिसहेसर । जदकनपामें अन्न । कर्में जिननें जोउ-गिमारे । खीलारोंप्याकन्न ॥ ३५ ॥ चेत० ॥ कर्में एकसुखपाल-बेसे । सेवकसेवेपाय । एक हयगयचढ्या चतुरनर । एकआग-लरूजाय ॥३६॥ चेत० ॥ उद्यममानी अंधतणीपरि । जगहींमे हाहूतो । कर्म वली तेलहे सकलफल । सुखज्ञर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चेत० ॥ उंदरएके कीधोउद्यम । करंमीयोकरकोले । मांहे घणा दिवसनो ज्रूखो । नागरह्योमममोले ॥३८॥ चेत० ॥ विवर करी मूषक तसुमुखमां । दीयेआपणुंदेह । मार्गलहि वन नागपधास्या, कर्ममर्मजोवोएह ॥ ३९ ॥ चेत० ॥

॥ ढाल ५ मी तोचढियोघणमाणगजे ए चाल ॥

॥ हिव उद्यमवादीज्ञणेंए । एच्यारे असमत्थतो । सकल पदारथसाधवाए । उद्यमएकसमरत्थतो ॥ ४० ॥ उद्यमकर-तांमानवीए । स्युंनविसीजेकाजतो । रामें रयणायर तणीए । लीयो लंकाराजतो ॥ ४१ ॥ करमनियतिनें अनुसरए । जेहमां सत्व न होयतो । देवलवाघसुखपंखियाए । पिजपैसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विणउद्यम किम नींकलेए । तिलमाहेंथी तेलतो

उद्यमथी ऊंचीचढेए। जोवो एकेंद्रियवेलतो ॥ ४३ ॥ उद्यमकरतां इकसमेंए। जेह न सीफे काजतो। तेफिर उद्यमथीहुवेए। जोनविश्रावेवाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि कस्यांविनाए। नविरंधाये अन्नतो। आवी न पफे कोलीयोए। मुखमांखेपेजतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्मपूत उद्यमपिताए। उद्यमकीधा कर्म्मतो। उद्यमथी दूरेटलेए। जोर्उकर्मनोमर्मतो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहारी हत्या करीए। कीधापाप अनंततो। उद्यमथी षट्मासमांए। आपथया अरिहंततो ॥ ४७ ॥ टीपेटीपे सरवरजरेए। काकरे काकरे पालतो। गिरिजेहवा गढनीपजे ए। उद्यम सक्तिनिहालतो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउए। करे पाहाणमांगामतो। उद्यमथीविद्याजणेंए। उद्यमजोफे दामतो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एछिंडीकिहांराखी ए देशी ॥

॥ एपांचेही वादकरंता। श्रीजिनचरणेआवे। अमीयरसे जिनवयणसुणीनें। आणंद अंगनमावेरे ॥ ५० ॥ प्राणी ॥ समकितमति मनआणो रे। नय एकांत मताणोरे। ते मिथ्या मतजाणोरे। आंकणी ॥ एपांचे समुदायमिल्यांविण। कोईकारज नसीफे। अंगुलीजोगे कवलतणीपर। जेबूफे तेरींफेरे ॥ ५१ ॥ प्राणी० ॥ आग्रहआणीकोईएकनें एहमां दियेबफाई। पिणसेनमिल सकलरणांगण। जींते सुजटलफाईरे ॥ ५२ ॥ प्रा० ॥ तंतुसजावे पटउपजावे। कालक्रमें वणाई। जवितव्यता होय ते नीपजे। नहींतो विघनघणाई रे ॥ ५३ ॥ प्राणीस० ॥ तंतुवाय उद्यमजोक्तादिक। जाग्य सबल सहकारी। एपांचे मिलसकलपदारथ। उतपत् जोवोविचारीरे ॥ ५४ ॥ प्रा० ॥ निय-

तिवसें हलुकर्मथईने । निगोदथकी नीकलियो । पुण्यें मनुजभवादिकपामी । सदगुरुनें जईमिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ भवथितिनो परिपाक थयोतब । पंमितवीर्यउल्लसियो । भव्यस्वभावे शिवगतिगामी । शिवपुरजईनेंवसियोरे ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमानजिन इणपरिवीनवे । सासननायकगावो । संघसकलसुखदाई जेहथी । स्यादवादरसपावो रे ॥ ५७ ॥ प्रा० ॥ (कलश) इम धर्म नायक मुगतिदायक वीरजिनवरसंथुण्यो । सयसतरसंवत बन्हिलोचन वर्षहर्षधरीघणो । श्रीविजयदेवसूरींद पटधर विजयप्रभु मुणिंदए । कीर्त्तिविजयवाचकसीसइणपरिविनयकहैआणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्रीपंचसमवायवृद्ध स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ वैरागनी स्तवनं ॥

॥ मोक्षनगरमारुंसासरुं अविचलसदासुखवासरे । आपणाजिनवरनेभेटिये, त्यां करो लीलवीलासरे मो० ॥ १ ॥ ज्ञानदर्शनआंणे आविया । करोकरो भक्तिअपाररे ॥ शीलशिणगार पहेरो पदमणी, उठीउठी जिनसमरो साररे मो० ॥ २ ॥ विवेकसोवनटीलुं तपतपे, साचोसाचो वचनतंबोलरे ॥ संतोषकाजलनयणे भर्यां, जीवदया कुंकुमघोलरे मो० ॥ ३ ॥ समकीतवाटसोहामणी, संजमवहेलजमाल रे ॥ तपजप बलदीया जोतर्या, भावना रासरसाल रे मो० ॥ ४ ॥ कारमो सासरोपरीहरो, चेतोचेतो चतुरसुजाणरे ॥ समयसुंदरमुनि एमभणे, त्यांछे भविनिर्वानरे, मो० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ आंपरवारिहोजिनजी श्रीसिद्धाचलशिखरे ऋषभजभे

भेटियाहो राज रु० ज० जे० थां० पूर्वसंचितअशुभकरम सहु मेटियाहो राज० थां० सोरठदेशमे शोभताहो राज थां० दोय तीरथमनुहार भव्यजन तारताहो राज० ज० था० ॥ १ ॥ प्रथम शेत्रुंजयगिरिजयोहो राज थां० तीनभुवनशिरताज आजदरशणलह्योहो राज० आ० थां० ॥ २ ॥ नेमिजिनेसर-राजियोहो राज० थां० श्यामसलूणोदीदार रेवतगिरिगाजि-योहो राज० ॥ ३ ॥ पांचकोरूमुनिपरिवर्याहो राज० थां० पुंरूरीकगणधार, चैत्री शिवसुखवर्या हो राज० थां० ॥ ४ ॥ आदीश्वरअलवेसरुहो राज० थां० पूर्वनिवाणुवार रायणपग-लाठव्याहो राज रा० थां ॥ ५ ॥ कातिपूनम दशाकोरूसुंहो राज० थां० शिवसुखपाम्यासार, द्राविरूवारिखिल्लजीहो राज द्रा० ॥ ६ ॥ इनअनेकमुनि इहांहो राज० थां० सिद्धिवधुभर-तार, थयागिरिफरशतांहो राज० थां० ॥ ७ ॥ पूरवपुन्यपसा-उलेहो राज थां० सफलफलीसहु आस, जात्राविधिसुकरीहो राज जा० थां० ॥ ८ ॥ रतनपुरीथीआवीयाहो राज० थां० आनंदकुंवरशुभभाव लाभलिधोघणोहो राज० ला० थां० ॥ए॥ चतुराचोमासो रह्याहो राज० थां० भगवतिसुण्यो भलेभाव, उपधांनतप आदर्यो हो राज ज० थां० ॥ १० ॥ उब्लव-रंगवधामणांहो राज थां० वरत्याजयजयकार, सुगुरुसुपसाय-थीहो राज० सु० थां० ॥ ११ ॥ खरतरवसी छिंपावसीहो राज थां० साकरउजूम हेम, प्रेम वालावसीहो राज प्रे० थां०॥१२॥ मोती विमलवसीआवीयाहो राज थां० उलकाझोल सिद्ध सिला, सिद्धवरूफरसीया हो राज० सि० थां ॥ १३ ॥ सुभउ-

गणीसे सित्तरेहो राज थां० पोसदशमीसुविदीत, आनंद सुख-पामीयाहो राज० आं थां० १४॥ ज्ञवज्ञवचाहुं चाकरीहो राज थां० प्रज्ञुचरणांरीनित्त, कृपाचंद्रवीनवेहो राज० कृ० थां० श्रीसिद्धाचलशिखरे ऋषज्ञजले ज्ञेटियाहो राज ॥ १५ ॥ इति सिद्धाचलस्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ वीशस्थानकतप बृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ श्री सिद्धाचलभेटीये ए देशी ॥

॥ वीशथांनकतपसेवीए । धरकरि सुज्ञपरिणांम लालरे । तीजेज्ञवसेव्योथको । बांधेतीर्थंकरनाम लालरे ॥ वी० ॥ १ ॥ तपरचनाअधकीकही । ज्ञाताअंगमझार लालरे । सुणजो ज्ञवि तुमे ज्ञावसुं । चितसेंकरिएउच्चार लालरे ॥ २ ॥ सुविहितगुरुपासेग्रहे । वीशथांनकतप एह लालरे । निरदूषण सुज्ञमहुरते । उचरीजे समनेह लालरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमुं ॥ सूरि ४ थिवर ५ उवज्झाय ६ । लालरे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ए अरु ॥ विनय १० नमुं उलसाय लालरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ चारित्र ११ बंज्ञ १२ क्रियापदे १३ ॥ तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लालरे ॥ चारित्र १७ ॥ ज्ञाननें १८ श्रुत १ए ज्ञणी नमुं तीर्थ २० पद वीश लालरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीशदिवशमेंएककही । पदगुणनो करमेव लालरे । अथवा दिन वीशांलगे । वीशेपद गुणमेव लालरे ॥ वी० ॥६॥ एक उंलीषट्-माशमें । पूरीजो नविहोय लालरे । फेरनवी करणीपरे । पिछली निष्फलजोय लालरे ॥ ७ ॥ वी० ॥ छठ अठम उपवाससुं । अथवा देखीशक्ति लालरे । पोसहकरआराधिये । देववांदेनि-

जन्नक्ति लालरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ संपूरणपदसेवतां, पोसहरो नहींजोग लालरे । तोहीसातपदेसही । पोसहकरिएसंजोग लालरे ॥ वी० ॥ ए ॥ सूरि थिवर पाठक पदे । साधु चारित्र सुजांण लालरे । गौतम तीर्थ पदे सही । सातथांनक-मनमान लालरे ॥ वी० ॥ १० ॥ पदपददीठ करेसदा । दोयदो-यजापहजार लालरे ॥ पम्किमणो दोयटंकही । करिएपूजासार लालरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ शक्तिमुजबतपकीजीए । एकउंलीक-रोवीश लालरे । वीशावीशीच्यारसे । तपसंख्याएमकहीस । लालरे ॥ वी० ॥ १२ ॥ जिसदिन जोपदतपकरे । तिसके गुण चितधार लालरे । काउसग्ग परदक्षणा । मुखन्नणियेनवकार लालरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ जिसपदकी स्तवनासुणे । कीजे जिन-पदन्नक्ति, लालरे । पूजन शुन्नमनसाचवे । दिन दिनवधती-शक्ति लालरे ॥ १४ ॥ मृतकजननऋतुकालमें । कबिधास्यो उपवास ला० सो लेखे नाहिं लेखवो । निकेवलतपजास लालरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ सावज्जत्यागपणो करे। सोकनधारेचित्त लालरे। शीलआन्नूषणआदरे । मुखसुंबोलेसत्य लालरे ॥ वी० ॥ १६ ॥ जेठआसाढ वैशाखमें । मिगसर फागुणमाघ लालरे ॥ एषट्र मास मांहिनें । व्रतग्रहिए वमन्नाग लालरे ॥ वी० ॥ १७ ॥ तपपूरणहुवां थकां । ऊजमणो निरधार लालरे । कीजेशक्ति-विचारीनें । उच्छवविविधप्रकार लालरे ॥ वी० ॥ १७ ॥ वीस-वीसगिणती तणा । पुस्तकपूठाआदि लालरे । ज्ञानतणीपूजाकरे । मुंकीजे हठवाद लालरे ॥ वी० ॥ १ए ॥ फलवर्द्धिनगरनी श्रा-विका, कीधीविधि चितलाय लालरे । जनमसफलकरवा न्नणी

उंहिज मोक्षउपाय लालरे ॥ वी० ॥ २० ॥ (कलश) इम वीरजिनवरतणीआज्ञा धार चित्तमझार । सद्गुदेख आगमतणी-रचना रची तपविधिसारए । वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसे चैत्र-माससुहंकरू । मुनिकेशरीशशि गछखरतर जणीस्तवनामनहरू ॥ २१ ॥ इति वीस स्थानक तप वृद्धस्तवनं ॥

॥ श्रीशांतिनाथजी भगवाननुं स्तवन ॥

सेवा शांतिजिणंदकी । कीजे अतिसारीरे । अहोकीजे सारीरेलो । पदपंकजपूजेसदा । जेहना नरनारीरेलो ॥ अहो० ॥ १ ॥ एकवारसुरलोकमें । मेघरथराजारीरेलो ॥ अहो० ॥ इंद्रे कीधीप्रसंसा । मोटोउपगारीरेलो ॥ अहो० ॥ २ ॥ जीणवेला सुरबोलीयो । मिथ्यामतिधारीरेलो ॥ अहो० ॥ धानतणो एकीरुखो । मलमूत्रजंझारीरेलो ॥ अहो० ॥ ३ ॥ तीणमांहे कहो क्यांथकी । एहवी इकतारीरेलो ॥ अहो० ॥ उत्तरवैक्रीयरूपें-करी । चाल्यो तिणवारीरेलो ॥ अहो० ॥ ४ ॥ कीधादोय पंखीतणा । रूपबुद्धिविचारीरेलो ॥ अहो० ॥ ध्यानधरी बेठांतिहां । नरपतिनिरधारीरेलो ॥ अहो० ॥ ५ ॥ राख-राख करतोपड्यो । पारेवो तिण वारीरेलो ॥ अहो० ॥ राजारूडीरीतसुं । लीधो बुचकारीरेलो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ जय-मतकररेबापडा । कोय न शके मारीरेलो ॥ अहो० ॥ पापीपुंठे आवीयो । दुलवोहीलकारीरेलो ॥ अहो० ॥७॥ जहदीजे नृपमाहरो । तिमखाउं मारीरेलो ॥ अहो० ॥ जोजनआपुं तोजणी । मीठांसुखकारीरेलो ॥ अहो० ॥ ८ ॥ मांसविना खाउंनहि । नृपजात हमारीरेलो ॥ अहो० ॥ जदनहिंयोमा-

हरो । तो हत्या हमारीरेलो ॥ अहो० ॥ ए ॥ दयापिण तुज-नेहोसी । हत्या परिवारीरेलो ॥ अहो० ॥ राजा० ॥ राजाआपे तेहने । निजअंगविदारीरेलो ॥ अहो० ॥ १० ॥ तोपण ना-एयोचित्तमे । रायदुःख वीगारीरेलो ॥ अहो० ॥ तिणवेला सुर बोलीयो । सुरवाणी सारीरेलो ॥ अहो० ॥ ११ ॥ परिक्षाका रणआवीयो । हुंबुं आशासारीरेलो ॥ अहो० ॥ इंद्रवखाण्यो तोहवो । जेहवो उपगारीरेलो ॥ अहो० ॥ १२ ॥ जीवदया-प्रतिपालने । निजकाजसुधारीरेलो ॥ अहो० ॥ राजापहोतो-मंदिरे । निज पोषोपारिरेलो ॥ अहो० ॥ १३ ॥ तेरमेजवलाधी जली । दोयपदवीसारीरेलो ॥ अहो० ॥ तीर्थंकरथयासोलमा । पंचमचक्रधारीरेलो ॥ अहो० ॥ १४ ॥ शांतिजिनेसरवीनति, चित्तमें अवधारीरेलो ॥ अहो० ॥ जावसागरकहे थाय जो, संघमंगलकारीरेलो० ॥ अहो० ॥ १५ ॥ इति श्रीसांतिस्तवनं०॥

॥ अथ पंचकल्याणकस्तवनम् ॥ १३०

॥ नमियपदकमल शुजजावसविजिनतणा, पंचकल्याण दिन-जणिसुं जिनवरतणा । कसिणकत्तितणैं परकपंचमिदिणैं, नाणसं-जवतणैं खयकरमतणैं ॥ १ ॥ नेमिजिणचवनसुरजवनथीबारसै, पउमपहजम्मवलिदिरकतसुतेरसै । वीरसिवमांवसैपरिकहिवउ-जलै, बाणसिरिसुविधिअरतीजबारसिमिलै ॥ २ ॥ ढाल ॥ मिगसरवदिरेसुविधि पंचमीजनमियो, सोइछठैरै संयमधरसुरप-णमियो, दशमीदिनरेवीरेसंयमआदर्यौ, इग्यारसिरे पउमप्पह-सिवसिरि वर्यौ ॥ सिववर्यौ मिगरससुदिदशमी दिणरयणि अर जिनजामीयो, वलि मुगतिपिण तिणदिवसपोतो व्रतइग्यार-

सिपांमीयो । इग्यारसैं वलिमल्लिजिणने जम्मदिरकसुनाणीया, वलि मल्लिदिरकाजाण छठैअंगपोसिवखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारणरे लिखितदोषसंज्ञाविये, कहैकोइरे अवरहेतुपिणज्ञा- वियै ॥ तेपरिसवीरे गीतारथसदगुरुलहै, श्रुतकेवलीरे वचन सहुसमसद्दहे ॥ सदहै सहूयै ते प्रमाणज वलि इग्यारसि न- मितणौ श्रीनाणकल्याणक चउदसि जनमसंज्ञवनों पुणौ । पूनिमेंसंज्ञवदिरकपामी दयाधरि जगजीवनी, हिवपोसवदिद- समीइग्यारस जनमदिरका पासनी ॥ ४ ॥ बारसतिथिरे चंद- प्पहजिणजाइयौ, वलि तेरसिरे संजमरंग सुणाइयौ । चउदस- दिनरे श्रीशीतलथयो केवली, पोससुदिरेछठ विमलनाणी वली, नाणीवलि थयो नवमिसंती अजितनाथ इग्यारसें, चउदसेंअ- ज्ञिनंदनें केवल पूनिमैंधम्मैंवसें माहाइछठे पउम चवियो बारसैं शीतल थयौ, वलि तासुसंजमकसिणतेरसि रिसहजिणशिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसिरे दिवसैं नाणइग्यारमें, जिनपामीरे माहसुदें हिव अनुक्रमें ॥ सितवीजेरे अज्ञिनंदन वासुपूजनों, कल्याणकरे जनमठांण अनुक्रममनों ॥ अनुक्रमें मांनों त्रिहू त्रीजे विमलधर्मसुजामीया, श्रीविमलदिरका चउथिअठमि अजितउत्पत्ति पामिया ॥ नवमियेंदिरकाअजितपामी बारसें अज्ञिनंदनें, श्रीधर्मनाथें सारसंयमसिरिवरितेरसिदिनें ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फागुणवदिछठें सुपासकेवलसिरिपत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंद्रप्रज्ञु नाणेंजुत्तो ॥ नवमिसुविहजिनचवण रिसहइ- ग्यारसि केवल, बारससुव्रय नाण जन्म सेयंसहनिम्मल ॥ ७ ॥ तेरसिव्रत सिज्जंसतणो चउदसवसुपुज्ज, जम्म हुउं अम्मावसें ए

तसु संजम रङ्ग ॥ सुकलबीज चउथि अठमियें अर मल्लि सं-
भव, चवणसुबारसि मल्लिमुगतिसुव्रयवयछठ्ठव ॥ ८ ॥ (ढाल
फागणी) ॥ चैत्रपढमपक्खिचउथि नाण चवणं पासस्स पंचमि
ससि पह चवण जम्म अठमि रिसहेस ॥ वलि संजमपिणरिस-
हसांमिअष्ठमिआदरियो, धवलतीज हिव कुंथुनाथनें केवलफु-
रियो ॥ ९ ॥ पंचमिअजित अनंत संभवने मुगति, नवमि
इग्यारस मुगतिनांण वलिपांम्यो सुमति ॥ त्रिसलादेवे वीरनाह
तेरसनिसिजायो, पूनिमदिन श्रीपदमनाह केवलसिरिपायो
॥ १० ॥ भास ॥ हिव वैशाखवदिपक्खिवादिन कुंथुसिद्ध,
शीतलबीजे दिनपंचमीकुंथु चरित्र ॥ छठे श्रीशीतलअवतरियो
दशमैंनमिजिण सिवसिरिवरियो तेरसिजनमअनंत ॥ ११ ॥
चवदसदिक्खा नाण अणंतह जनम हुउं श्रीकुंथुजिणंदह वंदह
सिवपुर सत्थ ॥ सेतचउथ अभिनंदनउत्तम धरमनाथचवियो
वलि सत्तमि अठमिसिद्धचउथ ॥ १२ ॥ सुमतिनाथअष्ठमिये
जायो नवमेंसंयमसांमे पायो गायोधरिआणंद, दशमेंनाण वीर-
जिणपामी बारसिचव्यो विमलजगस्वामी तेरसिअजित जिणंद
॥ १३ ॥ (ढाल) ॥ जेठकसिण पक्खिछठीचवियो सेयंस अष्ठ-
मीसुव्रयजनमियोए ॥ नवमिमुगति संपत तेरस चवदसिसन्ति-
जम्म सिववयहुओए ॥ धरमनाथसिवपत्त धवलीपंचमें नवमें-
वसुपुज्जअवतरियोए ॥ श्रीसुपासजिण जम्मबारसि तेरसिजग-
गुरुसंयमसिरिवरयोए ॥ १४ ॥ भास ॥ हिवै आसढवदिचउथि
रिसहेसचवण सत्तमिहि सिरिविमल ॥ मुक्खनवमिनमि वयग-
हण सेयछठैचवण ॥ वीरनो अष्ठमिनेमिमुक्ख चवदसें श्रीवसु-

पुज्जजिणंद ठसय वरसाधुकरपरवस्योए ॥ बहुतरवरसलख पुरिचंपापुरें कर्महणि मुगतिरमणीवस्योए ॥ १५ ॥ (ढाल) ॥ श्रावण वदि हिव तीज मुगति सेयंसहपामिय सत्तमि चविउं-अणंत नाह अठमी नमिजामिय ॥ नवमिकुंथुजिणचवणहुउं अह निम्मलवीजै, सुमतिचवण पंचमिहनेमि जिणजम्म नणीजै ॥ १६ ॥ ठठेमुनिवरनेमि हुय अठमिसीधोपास ॥ मुनिसुव्वयपुनिम रयणिचविउं गुणमणिवास ॥ १७ ॥ नाद्रववदि सत्तमें संति ससिचवणनवरकय अष्ठमिचविय सुपास नवमिसुदि सुवि-धसिवंगय ॥ हिव आसु वदि तेरसि ए श्रीवीरजिणेसर गर्नह-रण अम्मावसीए नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पूनिमनमिजिणवर-चविय इणपरबारह मासि ॥ श्रीआवस्यकदाखवी जिणकल्या-णक रासी ॥ १९ ॥ जिणचवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिने अरिहंतनत्ते सुद्धचित्ते तपकरे जेइकमनें ॥कल्यांणनी ते कोमी पांमी अनुक्रमें सिवसुखलहे, एहेतुजांणी सुगुरुवाणी एह कल्याणक कहे ॥ २० ॥ इन पांचनरते ऐरवतकरि एकादि-जिनवरतणा, दसकल्याणकहुवे इणदिन सुरकरे उठवघणा ॥ जिमहूआ ते तिम वलि होस्ये पंचकल्याणकसदा, श्रीपुन्यसा-गरकहे खरतर एह आराहोमुदा ॥ २१ ॥ इति पंचकल्याण स्तवनं ॥

॥ नेमनाथ लावणी ॥

नेमकीजान बणीनारी देखनकुं आवै नरनारी ॥ (ए आंकमी) अनंता घोमा रथहाथी । मनखकीगिणती नही आती ॥ ऊंठ-पर धजा जो फररातीं, धमकसेंफरती पररातीं (दोहा-)

समुद्रविजयकालाफला, नेमजनोंका नाम ॥ राजुलदेकुं आया-
परणवा, जग्रसेनघरठाम ॥ प्रसनन्नइ नगरीसबसारी ॥
नेमकी० ॥ १ ॥ कसुंबलवागाअतिन्नारी, काने कुंमलछवि है-
न्यारी ॥ किलंगीतुररा सुखकारी मालगले मोतियनकीफारी ॥
(दुहा-) कानेकुंमलफगमगे, शीशमुगटफलकार ॥ कोमीन्ना-
नुकी करुउपमा, शोन्ना अधिक अपार ॥ वाजरह्या वाजाटंक
सारी ॥ नेमकी० ॥ २ ॥ छूटरही जनकी उरराइ, व्याहमेंआ-
येवमेन्नाई ॥ फरोखे राजुलदे आई जानकुं देखी सुखपाइ ॥
(दुहा-साखी) ॥ जग्रसेनजीदेखके, मनमेंकरेविचार ॥ बहोत
जीवकरिएकठा वामोन्नरयोअपार ॥ करीसबन्नोजनकीत्यारी ॥
नेमकी० ॥ ३ ॥ नेमजीतोरणपरआये, पशुजीव सबहीकुरलाये ॥
नेमजी वचनफुरमाये, पशुजीव काहेकुंलाये ॥ (दुहा-साखी)
याकोभोजनहोयसी जानवासतेएह ॥ एहवचनसुणी नेमजी,
थरथरकांपेदेह ॥ न्नावसें चढगयेगिरनारि ॥ नेमकी० ॥ ४ ॥
पीछेसें राजुलदेआइ, हाथ जब पकड्यो छिन मांही ॥ कहांतुं
जावै मेरीजाई उरवरहेरुं मुकताइ ॥ (दुहा-साखी) मेरेतो
वरएकही, होगयानेमकुमार ॥ उर न्नुवनमें वरनही, कोटीकरो
विचार ॥ दीक्षाजदराजुलने धारि ॥ नेमकी० ॥ ५ ॥ सहेल्यां
सबहीसमफावे, हियै राजुलके नहिआवै ॥ जगतसब
झूठोदरसावै, मेरेमन नेमकुमर न्नावे ॥ (दुहा-साखी) ॥
तोमयाकांकणदोरमा, तोड्यानवसरहार ॥ काजलटीकी पान-
सुपारी, त्यागयो सबसिणगार साहेल्यां सबविलखाणी ॥
नेमकी० ॥ ६ ॥ तज्यासब शोले सिणगारा । आन्नूषणरलज-

रितसारा ॥ लगे मोहे सबहीसुख खारा छोरुकरचालिनिरधारा ॥ (दुहा–साखी) ॥ मात पितापरिवारकुं तजतां न लागी-वार ॥ वियोगकर चली आपसुं जायचढिगिरनार ॥ तुरति-छोरि माप्यारी ॥ नेमकी० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकिआइ-त्यागजबकीनो छिनमांहि ॥ नेमिजिन गिरनारेजाइ, पशुवनके-बंधनछुरुवाइ ॥ (दुहा–साखी) ॥ नेमराजुल गिरनारपें, लीनोसंजम दान, ॥ नवलरामकरिलावणी उपज्योकेवलग्यान ॥ जिनोकी किरियाबुधसारी ॥ नेमकी० ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पारणामहावीरस्वामीका ॥

॥ दोहा ॥ श्रीअरिहंतअनंतगुण । अतिसयपूरणगात्र ॥ मुनिजे ज्ञानीसंजमी । ते कहिये उत्तमपात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमोदना । करतोजीरणसेठ । श्रावक अच्युयगतिलेह । नवग्रेवैकाहेठ ॥ २ ॥ दसचउमासी वीरजी, विचरतसंजम। वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमीचउमास ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ एकघर घोराहाथियाजी (देशी) चोमासीइग्यारमीजी, विचरतसाहस धीर ॥ वेसालापुरबाहिरेजी आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगत गुरुत्रिशलानंदनजी भलेमें भेट्यां श्रीजिनराय ॥ सखीरीचोक पूरावोआय, मेरेभाग्यअनोपममाय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरोजी, तिहां प्रभुकाउसग्गलीध ॥ पच्चरकाणचो-मासनो जी, स्वामीएतपकीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठतिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिणउलख्याजी, जाणेश्री जिनधर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आजअछे उपवासीयाजी, स्वामी श्री-वर्द्धमान ॥ कालेसही प्रभुजीमस्येजी, सेहथदेस्युंदान ॥ ज० ॥

॥ ५ ॥ सदासेठइमचिंतवेजी होसीसफलमुफ आस ॥ पडमासगिणतांथकांजी, पूरीथइचोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्रीआहारनीजी, जीरणकीध तइयार ॥ प्रभुनो मारगदेखतोजी, बेठो घरनेबार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घरआवेछे पाहुणोजी, निहुत्यो एकणबार ॥ प्रभुजी कां न पधारसीजी, में निहुत्यावारंवार ॥ ८ ॥ पीछे करस्युं पारणोजी, हुं प्रभूने पडिलाभ ॥ होय मनोरथ एहवोजी, तोयविनवरसे आभ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवसरछठ्यागोचरीजी, श्रीसिद्धारथपूत ॥ वेसालापुरआवतांजी, पूरणघरेपहुत्त ॥ १० ॥ मिथ्यात्वीजाणेनहीजी, जंगमतीरथएह ॥ चेटीप्रते इम कहेजी कांइकभिक्षादेह ॥ ज० ॥११॥ चाटूभरनेबाकलाजी, प्रभुने आंणीदीध ॥ नीरागी तेहीलियाजी, तिहांप्रभू पारणोकीध ॥ ज० ॥१२॥ देववजावे डुंडुभिजी, जैबोले करजोडि ॥ हेमवृष्टिहुइ तिहांजी, साढीबारेकोडि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहोसेठतुमे स्युंदियोजी, कियोपारणोवीर ॥ लोकांप्रते इमकहेजी, में वहिराइखीर ॥ १४ ॥ राजादिक सहुइमकहेजी, धनधन पूरणसेठ ॥ ऊंचीकरणी तेंकरी जी, अवरसहू तुफहेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठसुणे तबेजी, वाजित्रडुंडुभिनाद ॥ अन्यत्रकियो प्रभूपारणोजी, मनमें थयोविषवाद ॥ १६ ॥ हूंजगमें अभागियोजी, मेरे न आयासाम ॥ कल्पवृक्षकिमपांमीयेजी, मारुमंडलगांम ॥ ज० ॥१७॥ जेता मनोरथमें कियाजी, तेता रह्या मन मांहि ॥ निरधन जिमजिमचिंतवेजी तिमतिम निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वामीतिहांकियो पारणोजी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आयापाससंतानियाजी, तिहां मुनीकेवल धार ॥ ज०

॥ १ए ॥ वेशालापुरराजियोजी, लोकास्युं आणंद ॥ रायप्रश्न-पूछेइस्योजी, सुगुरुचरणअरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरेनगरमे को-अछेजी, जीवपुन्यजसवंत ॥ कहे केवली आजतोजी, जीरण-सेठमहंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहेकिणकारणेजी, जीरणसेठ-महंत ॥ दांनदियो जिन वीरनेजी, पूरणसेठमहंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ रायप्रतेकहे केवलीजी, पूरणदीनो दान ॥ हेमवृष्टि-फल तेहनेजी, अवर न कोइप्रमाण ॥ ज०॥२३॥ देवलोकतिणबा-रमेंजी, जीरणघाल्योबंध ॥ विनादानदियां लह्योजी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडीएकसुरदुंदुभिजी, जो न सु-णंतो कान ॥ लहितोजीरण तोसहीजी केवलअविचलठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजाजीरणनेदियोजी, अधिकमानसनमान ॥ मुख्यनगरमेथापियोजी, जोवोपुन्यप्रमांण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दांन-दियो सुपात्रनेजी, तेनिष्फलनविजाय ॥ पात्रदानअनुंमोदता-जी, जीरणजिम फलथाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इमजांणीअनुमो-दनाजी, दानसुपात्ररसाल ॥ दांनदेवे सुपात्रनेजी, तेहनेनमे-मुनीमाल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीरप्रभुपारणोसंपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजीनो वृद्धस्तवनं लि० ॥

मारीबीनतडी अवधारो साहिबसीमंधरमाहाराज । त्रिभुवन साहिब अरजसुणीजो अरजसुणीजो महिरकरीजो दरसणदी-जोराज मारिवी० ॥ १ ॥ आपवस्या महाविदेह खेतरमे । डुंइ-भरत मझार । ओमेलोकिमहोवे साहिब । एहीसबल विचार मा० वी० ॥ २ ॥ भरत विचाले परवत आडो । नामें वैताढ्य-सार । पचीशजोजनको उंचोछेप्रभु । पचाशजोजन विस्तार

मा० वी० ॥ ३ ॥ गंगासिंधुदोनुंनदीयां । आमीछे किरतार । सहसअठावीसवीजी नदीयां । एवेकं नो विस्तार मा०वी०॥४॥ इणी आगलपरवत आमो । नानोहिमवंत नाम । एकसहस-वलिबावन जोजन बारकला अभिराम मा० वी० ॥५॥ खेत-रहेमवंतवलि प्रभुआमो । जुगल्यांकेरोवास । इकवीससैवलि-पांच योजन । पांचकलासुविलास मा० वी० ॥ ६ ॥ रोहितारो-हितांसानाम । नदियाछे असराल । छप्पन्नसहसवलिबीजीन-दियां । आवुंकेम दयाल मा०वी०॥७॥महाहिमवंत परवत आमो । मोटो अतिविसतार । च्यारसहसदोयसैदसजोजन । दसकला मनुहार मा०वी० ॥८॥ आठ सहस सतच्यारअनोपम । इकवीस-जोजनतास । एककला बलिरूपअनोपम । खेतरछे हरीवास ॥९॥ मारीवीन० ॥ हरिकंतानेहरिसलीला नदीयाछे परतक्ख । बीजी-नदीयां आमीछे प्रभु । सहसबार एकलक्ख ॥ १० ॥ मारी-वीन० ॥ परबतनिषधछे बलि आमो । जोयणबलिविसतार । सोलसहस सतआठबयांलीस । दोयकलामनुहार ॥ ११ ॥ मारीवीन० ॥ खेतरछे वलि जुगल्यांकेरो । देवकुरु इणनाम । ते पिण जोयणबहुविस्तारे । पोखोछे सुणोस्वाम ॥ १२ ॥ मारी-वीन० ॥ सीतानामे नदीवमेरी । सबनदीयांसीरदार । पांच-लाख वलि बीजीनदीयां । अने बत्तीसहजार ॥ १३ ॥ मारी० ॥ लाखजोजनको मेरूपरबत । नाम सुदरसणसार । गजदंता वलि च्यारवीचमे । आऊं केम कृपाल ॥ १४ ॥ मारी० ॥ वनगिरीने परबतबहुला । नदीयां ओघटघाट । किण विधि आवुंसुगुणासाहिब । मारग विषमीवाट ॥ १५ ॥ मारी० ॥ कं-

चन गिरी वखारापरबत, गजदंतागिरिराय ! जद्रसालबन मारग विचमे । लागेकेमउपाय ॥ १६ ॥ मारी० क्यांमुज देश छे जरतखेतर । क्यां पुखलावतीजिनराज । ओमेलोकिम होसीसाहिब । तारणतरणजिहाज ॥ १७ ॥ मारी० ॥ निसदिनमारे तुंही आलंबन । वसीयोहृदयमझार । जवदुख जंजन तुंहीनिरंजण । करुणाकलाजंमार ॥ १८ ॥ मारी० ॥ मनवंछित सुखसंपतिदाता, प्रजु शाहेवछो खास । मुजने सेवक साचो जाणी, पुरोमननीआस मा०वी ॥१९॥ खरतर हरखगुरुसुपसाये । रूपचंद गुणगाय । अगरचंदको श्रीजिनबरजी। तारो दीन दयालाय॥२०॥ मारी० ॥ संवत् अढारसे इकवीसे । पोसवदी सुज मास । बीज जद्र बुधवार अनोपम, जिनपदवंदनजास ॥ २१ ॥ मारी बीन० ॥ इति श्रीसीमंधरस्वामीवृद्धस्तवनं संपूर्णम्

॥ अथ श्रीनवपदजीकी लावणी लिख्यते ॥

जगतमें नवपदजयकारी । पूजतां रोगटलेजारी । प्रथमपदतीरथपतिराजे । दोषअष्टादशकूंत्याजे । आठप्रातिहारजछाजे । जगतप्रजु गुणबारेसाजै ॥ दोहा ॥ साखी ॥ अष्टकरमदलजीतके । सकलसिद्धते थाय । सिद्धअनंता जजो बीजेपद, एकसमयशिवजाय । प्रगटजयो निजस्वरूपजारी ॥ जग० ॥ १ ॥ सूरिपदमें गौतमकेशी । उपमा चंद्रसूरजजेशी ॥ उधार्यो राजापरदेशी । एकजवमांहे शिवलेशी ॥ दोहा ॥ साखी ॥ चोथेपदपाठकनमूं । श्रुतधारीउवझाय सर्बसाहुपंचमपदे । धनधन्नोमुनिराय । वखाण्योवीरजिणंदजारी ॥ जग० ॥ २ ॥ द्रव्यषट्की श्रद्धाआवे । समसंवेगादिकपावे । विनायहग्याननही

किरिया । जैनदरशनसें सबतिरिया ॥ दोहा ॥ साखी ॥ ज्ञान-पदारथसातमें । पदमें आतमराम । रमतारम्यअध्यातमें । निजपदसाधेकाम । देखतावस्तुजगतसारी ॥ जग० ॥ ३ ॥ जोगकीमहिमाबहुजाणी । चक्रधरळोमी सबराणी । यतिदशधरमकरी सोहे । मुनि श्रावक सब मनमोहे ॥ दुहा ॥ साखी ॥ करमनिकाचितकापवा । तपकुठारकरध्याय । क्षमायुतनवमापदधरे । कर्ममूलकटजाय । जजोतुम नवपदसुखकारी ॥ जग० ॥ ४ ॥ श्रीसिद्धचक्रजजोभाई । आचामलतपविधिसेंथाई । पापत्रिहुं-जोगेपरिहरजो । भावश्रीपालपरे करजो ॥ दुहा ॥ साखी ॥ संवतउगणीस सतरसमें । जेपुर श्रीजिनपास । चैत्रधवलपूनिमदिने । सफलफली मुझआस । बालकहे नवपदळविप्यारी ॥ जग० ॥ ५ ॥ इतिश्रीनवपदजीनी लावणी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीकी चतुरमासक लावणी लिख्यते ॥

॥ ळाईघटागगनमेंकारि राजुलकुं विरहदुःखभारी ॥ ळा० ॥

चौमासालग्या रसभीना । अलि अषाढरंगमहीना । च्यारुंतरफसें वादलपीना । विजलिने चमकणाकीना । दिल होत धरूकतासीना । में अबलासखीपतिहीना । उझावनी ॥ सररररर-चलतसमीर । थररररर करतसरीर । मररररर मरतसमीर । अलि केसीकरुं तदबीर बुरीतकदीर । पीया विनप्यारी ॥ राजलकूं० ॥ १ ॥ श्रावणमें श्यामघनघोर । भरजोरबोलते-मोर । दादुरमिल करतेदोर, पिउपिउ पपइयासोर । झझलग्यो-बूंदझमझोर । बिचचमके दामनी कोर ॥ उझावनी ॥ खझझझ-झझ रवघनमाला । तझझझझ जलपरनाला । अझझझझ

नालाखाला । में दुखीहुइ बेहाल हीयेमेंसालहुइजलधारी ॥ राजु० ॥ २ ॥ जादवमें पवन प्राचीना । बादलमें धनुषरंगीना । जंगलमें नदीस्वरझीणा । ज्युं बाजे मनोहरबीणा । अब एसें कहो क्याजीना । प्रीतमनें मुझे दुखदीना ॥ उझावनी ॥ युं-विलपतमुखमुरझाई । सखियनमिल दौरूजगाई । यूंविलखतब-चनसुनाई । सखि देखो पीयाकीरीत । तोरूकेप्रीत । गयेगिर-नारी ॥ राजुं० ॥ ३ ॥ आश्विनमेंजरानहींधीर । यदुचंदजये वेपीर । ऊठचली नेमकेतीर । काटनकूं कर्मजंजीर । प्रीतमसें लियो अकसीर, व्रतसंजमसमकितहीर ॥ उझावनी ॥ शिवरा-जुल नेमसिधाए । इंद्रादिकजसुगुणगाये । जविजनमिल शीश नमाए । मुनिकहे कपूराचंद । प्रेमसेंछंद । जाउंबलिहारि ॥ राजुल० ॥ ४ ॥ इति श्रीनेमनाथजीकी लावणी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीकेसरियानाथजीकी महातम लावणी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ आदिकरण आदिमजगत । आदिजिनंद जिन-राज । धूलेवानाथजाचोधणी । वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ चाल लावणी ॥ कास्यपगोत्रइक्ष्वाकुवंशमें मरुदेवाजननी जायो,नाभि-नरेसरवंशउजालन । आदिधर्म जस प्रगटायो ॥ २ ॥ चौसठ-सुरपति देवदेवीमिल । मंदिरगिरपे न्हवरायो । इसोरिषभ निधि प्रगटकल्पतरु । सुरनरमुनिजननितध्यायो ॥ ३ ॥ मेवाड़-देशमेंनगरधुलेवे । जास ददामाघुरताहे । जाकीमहिमा अपरं-पारा । कविजनकीरत करताहे ॥ ४ ॥ आदौ मूरत कालअसं-ख्यकी । पूजीसुरगण असुरिंदा । सुरपति नरपति वंदितपदयुग । बलि पूजतसूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाखइग्यार हजारपंचासी । वर-

सपांचसें पचासा। इतनेवरसपर लंकागढमें । पूजितरावण गुण-
रासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरुलछमन । ए मूरतपूजनलाए।
नयरी अयोध्या जाते अधविच । नयरउजेणीठहराए ॥ ७ ॥
प्रजापालनरपतिकी तनया। सुंदरिमयणा धरमनकी । पापक-
रम अरु आपकरमकी । जईझगडाईमरमनकी ॥ ८ ॥ आपक
रमके ऊपरनृपनें, कुष्टीवरपें परणाई ॥ मयणाचिंतेकांइ
नवाई। करमलिखीसो वनआई ॥ ९ ॥ इकदिन जिनपूजन
गुरुवंदन । आई श्रीजिनमंदिरपें । वंदनपूजनकरके इकचित ।
ध्यानधरे मन कंदरपे ॥ १० ॥ मोतीदाम छंद ॥ तूंहि अरि-
हंत तूंहि जगवंत । तूंहि जिनराज तूंहि जगसंत । तूंहि जग-
नाथ तूंहि प्रतिपाल । तूंहि मनमोहन तूंही दयाल ॥ ११ ॥
तूंहि भवभंजन भावसरूप । तूंहि अरिगंजन रंजनभूप, तूंहि
अविनासी तूंहि वीतराग । तूंहि माहाराज तूंहि वरुभाग।१२।
तूंहि गुणधाम तूंहि विसराम । तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरुनाम
तूंही अघनाश तूंहि अविनाश। तूंही मतिवंत तूंही मतिवास॥
॥ १३ ॥ तूंही गुणकेवलरूपअनंत । तूंही जगतरणतारण संत ।
तूंही जगध्येय तूंही जगध्यान । तूंही चिदरूप तूंही भगवान
॥ १४ ॥ तूंही ममतात तूंही ममभात तूंही मम भ्रात तूंही
ममछात ॥ तूंही सरणागतराखणहार । तूंही दुख दोहगटाल-
णहार ॥ १५ ॥ चाल लावणी ॥ करूं अरजएक तोपें जिनप-
ति । कंतकुष्टसें नहीफरते । पूरबकरमके लिखित लेखजे । कि-
सकेटारेनहींटरते ॥ १६ ॥ पणतुफ़सासन जगतदेखना । जगत-
ढंढेरावाजतहे । आपकर्म अरु जैन धर्मके । फलपाई यों

लाजतहे ॥ १७ ॥ योदुख मोसें सह्यो जातनाही । आ-
दिनाथ जगरखपाला करुणाकरके रोग निवारण । गुणकीजे
जगप्रतिपाला ॥ १८ ॥ यद्दप्रसन्न हुय फलबीजोरो । हाथतणो
फल तबदीनो । मयणा तब उल्लासज्जई । मनचिंते सबकारज-
सीनो ॥ १९ ॥ नौदिन नमणनीर तनुफरसें ॥ कुष्टरोगसबना-
सतहे, कामदेव अरु अमरसमोवरू । नृपश्रीपालसोहावतहे
॥ २० ॥ या कीरत प्रभु तिहारीजूतल । प्रगटप्रबलहे जसतेरो
। आसुचैत्र मासमें महिमा । देशदेशमेंप्रभुतेरो ॥ २१ ॥ फिर-
वागरू देशवरूोदनगरमें । जगपर प्रभुकरुणाकीनी । कितनेवरस
लगमहिमेंमहिमा । अविचलजूतलऋद्धिदीनी ॥ २२ ॥ दिल्ली-
पर तुरकान जयोतब । पातस्याह लरूवाआयो । छूत जूतप-
त्थरकीमूरत जरूमुलांसेंउखरायो ॥ २३ ॥ बहुत दिनांलग
कीविलरूाइ । थाकोयों वाचाबोले । देवहिंदको वरूोजागतो ।
यूं बोलतफिरफिररूोले ॥ २४ ॥ सुनोवात काजी मुल्लां तुम ।
एकवातसेंत्रासेगा । गौब्राह्मणप्रतिपाल कहाई । गोवधसें ये
नासेगा ॥ २५ ॥ गोवध करण लगे जबनिजरे । देखसके
क्यो प्रतिपाला । करणयुद्धजबजये महाबल । शस्त्र रूरूोरूरू-
विकराला ॥ २६ ॥ दुहो ॥ महायुद्ध करणे लगे । घाव चौरा-
सीअंग । करी मखोला गारूली । आये धूलेवसुरंग ॥ २७ ॥
चाल लावणी ॥ गांवधूलेवा वंशजालमें । गुप्तरहे हें प्रभुधरती
गायएककोई वनियनकी । आइ वाहां चरती चरती, स्रवे
तिहां पयधारा शिरपर सांज्झ समे फिर नहि दुजे ॥ रीसकरी
तब गोपालन पर । गोपाल थरहर धूजे । दूजे दिन गौलारे

आयो । लह्यो भेद कह्यो वनियनपें । शेठ आय जब नजरे देख्यो । चकित भयो हे तन मनपें ॥ २८ ॥ मध्यरातमे सुपनोदीनो । ऋषभनाथकी मूरतहे । बहिरनिकासो करोलापसी । भीतर मूरतपूरतहे ॥ २९ ॥ नवदिनमें सबघावमिलासी । मतकाढे तूं नवदिनमें । कियो शेठने हुकमप्रमाणे । आये संघबहुदिनमें ॥ ३० ॥ केइउपवासी केइव्रतधारी केइअलुआणे पांवचले । केइ लोककूं दुकरबाधा । कब प्रभुकोदरशनमिले ॥ ३१ ॥ यू सब लोकां दरसतरसकी । कहे लोकमूरति काढो । लाओ लाओ महाराजकीमूरत । संघसबे लीनोआडो ॥ ३२ ॥ जवर दस्तसें दिवससातमें । लापसीबाहिर तबकीने । अंसअंस भर व्रणरहाए । संघ लोकदर्शनदीने ॥ ३३ ॥ फिर सुपनेमें दव्यदिखायो । संघे मिलदेवलकीनो । मध्येविराजे ऋषभतखतपर । कलियुगमें यो जसलीनो ॥ ३४ ॥ दुहा ॥ संवतअढारेतेसठे । भाउ सदाशिवराय । कियोधगानो दुष्टने, भाखूंवरणवनाय ॥ ३५ ॥ मोतीदाम छंद ॥ सदा शिवराय चिंतेमनएह, लूंटे बहुधाम जमीपरजेह । भिल्लांपति नाथ धूलेवकहाय, लखोलगद्रव्य भंमारसुणाय ॥ ३६ ॥ जावांअबलूंटण गामधूलेव । प्रहुंसबमाल जईततखेव । आया निजफोजलेई दलगाज तोपांदोयसाथ लियां बहुसाज ॥ ३७ ॥ तंबुदोयलार लियेफिरंगाण । छंगाभर साथ लियाकोकवाण ॥ तवां बहुलोककहेमहाराज । नही इहकारण कृत्यअकाज ॥ ३८ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय । रहेनहींलाज तिहारियकाय । तवांफिरबोले सदाशिवभूप । महांसबमाल अबां चढीचूप ॥ ३९ ॥ इसोकहिआ-

वत दुष्टकरूर । कीयो नजराणहनाथ हजूर । राख्यो नही नाथ तबेनजराण । भयोमन चकितमानगिलाण ॥ ४० ॥ तवां मनाचिंतभंभारीबुलाय । मीठेवचनबोलसबेललचाय । लईसंगआयमुकाममभार । कियो तब कूचलइसबलार ॥ ४१ ॥ करे तब गामपुकारपुकार । भंभारीसबेइपुकार पुकार । करो अब बाहर नाथदयाल । गयोकिहांआज गरीब निवाज । चढोअ-बबाहर राखणलाज ॥ ४२ ॥ दुहा ॥ तण समें कोतसेठको, वाहणतारणकाज । गये अधिष्टायक नाथजी । भेरुंगये वहां-गाज ॥ ४३ ॥ सुणोअरजपृथ्वीनाथजी, सहेरधूलेवमभार । कियोअकारजदुष्टने । शीघ्र चले जनतार ॥ ४४ ॥ आये तु-रत महाराजजी । करवाजनसंभाल । दो घोरू दोतंचढे । भेरुं-अरुप्रतिपाल ॥ ४५ ॥ जिहकोप आपेकियो । दशदिशि फौज-हजार । मारमारचोतरफते । भई लराईत्यार ॥ ४६ ॥ भुजंग-प्रयातछंद कूकूकुकूकुकू वहे कोकवाणं, सणणणं सणणणं तीरतर-कस्स वाणं । धुंवाके धराके वहे नालगोला । जिसा कर्कसाजम्मरा नयनरोला ॥ ४७ ॥ किते अंगपें शस्त्राघावलागे । कितेमा-रतेंकंपते दूरभागे, किते दंतपेंतिरणलेवेवराका । कितें अरथरे-त्रास होवेतिराका ॥ ४८ ॥ किते रसुल्लाइलल्लापुकारे । किते दीन होकेखुदापेंसंभारे । कितें नाथपेंकेसरा खूनमाणे । किते नाथकूं जागतीज्योतजाणे ॥ ४९ ॥ सदाशिवनें घावलागो अटारो । पुनी भाखजसवंत दोनुंसंहारो । वरोकोपजाणी सबे फोज भाजी । हुई केशरीयानाथकीजीतबाजी ॥ ५० ॥ सदा-शिवनें आंखरी अटकलीनो । सवापांचसें, रुकमरोखून दीनो ।

इसोधूलेवरोमहंगाजी । सदा केशरानाथरीजीतवाजी ॥ ५१ ॥
दुहा ॥ याविधकलियुगजगजणा । ताय्याकेइ जिनराज । दीप
विजयकविराजकूं । महेरकरोमहाराज ॥ ५२ ॥ मोतीदाम छंद
॥ तूंही नवनिद्ध तूंही अरुसिद्ध तूंही मनवांछित वंछितऋद्ध॥ तूंही
सिरदार तूंही किरतार । तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ ५३ ॥
तूंही कामकुंज तूंही कामधेनु । तूंही सुरवृक्ष तूंही ममसेन ।
तूंही दक्षणावर्त्तदायक देव । तूंही विसराम तूंही वरुसेव
॥५४॥ तूंही ममप्राण आधारजरूर । तूंही ममइछितदायकनूर ।
तूंही ममरूप तूंही पतसाह तूंही मम ऋद्धभंडारअ-
गाह ॥ ५५ ॥ तूंही ममभंत्र तूंही ममयंत्र तूंही ममसत्य तूंही
ममतंत्र । तूंही गछनायक तूंही श्रीपूज्य । तूंही ममपूज्य तूंही
जगपूज्य ॥ ५६ ॥ चाल लावणी ॥ नाथधूलेवाकीरतसुणके ।
देशदेशनृप आवतहे । केशरमें गरकाबरहतेहे । केशरनाथकहा-
वतहे ॥ ५७ ॥ सहर परगणे देशदिशावर । फिरेदुहाई नाथ-
नकी हिंदुमूसलवरुराणाहाजर । पूरेइछितसबमनकी ॥ ५८ ॥
जलवटथलवटवाटघाटमें । रणरावलदुखदूरहरे । इक चित-
ध्याने जे नितसमरे । अखयखजानाभंडारभरे ॥ ५९ ॥ धिधि-
मप धिधिमप धपमप धपमप । तालपखावतराजत हे । गरुग-
रुगरु दौंगरुगरुदौंगरु धोंधों नोवत वाजतहे ॥ ६० ॥ हिंदुप-
तिपतसाहऊदेपुर । भीमसिंहकेराजनमें एहलावणी खूबवणाई ।
सकलसंघकेसागनमें ॥ ६१ ॥ संवत अढारपच्चोत्तरवरषे । फा-
गुणसुदितेरशदिवसे । मंगलकेदिन दीपविजयकूं दरशन परशनु
दोलसे ॥ ६२ ॥ कलश ॥ छप्पय छंद ॥ समवशरण जगगुरु

रन । तीनलोक कलिमलहरन । धुनि वरसत जलधरन । जर-णपौषपावन करन ॥ जुगलधर्मनीतिहरन । सब करमजंघघन-जरन । मोहमल्ल अरिदरन । सुकनुवरन शुद्धचरन । इंद्रचंद्र पद जुगलसेवन । जगतविरुद तारनतरन । दीपविजयकविराजबाहा-दुर । ऋषभनाथअसरनशरन ॥ ६३ ॥ रिषभनाथ महाराज सबे दुखदालिद्रभंजन । रिषभनाथमहाराज । सबे भूपमनरंजन । रिषभनाथपृथ्वीनाथ । मंगलनामगवाये॥ दीप विजयकविराजबा-हदुर ॥ खलकमुलकहाजरहे ॥ कलिजुगजयो देवतुं । सुरनर-सब कीरतकहै ॥ ६४ ॥ इति श्री केसरयाजीकी लावणी संपूर्णा ॥

॥ अथ वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथजीकी लावणी लिख्यते ॥

अगरुडु अगरुडु वाजे चोघडा । सवाइफकासाहेवका ॥ ननन ननन अवाजहोता । महेलबनायागगनोका ॥ कल्याण पार्श्वनाथनामका । नितनितवाजेचोघडा ॥ तीनलोकमें सच्चा-साहिब । पार्श्वनाथअवतारवडा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा-जनमहे । मातावामाकेनंदा ॥ अश्वसेनकेकुलमें शोभे । जेसा सरदपूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमेंहुवाआनंदा । इंद्राणीमंगलगावे । तेत्रीसकोडदेवतामिलकर । ओछव करणेकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ-आवता कोइगावता । कोइनाम लेतादेवा ॥ चोसठइंद्र अरज-करंता । चंद्रसूरजकरता सेवा । केइसुरनर साहेबके आगे । अरजकरंता खडाखडा ॥ जिनकेसरूपको पारनपावे । जिनका-गुणहे सबसेंबडा ॥ ३ ॥ दूरदेससें आयाजोगी । वडेजोरतप-स्याकरता । नीचेलगाता ज्वालाजोगी । वडेवडे ओकेखाता ।

बारे वरसकी उमरप्रभुकी । ठोटेपनमें बहोतकला ॥ बरोबरीके लियेसोबती । तपशीकूं देखणचला ॥ ४ ॥ ज्ञानदेखकेबोले जोगीसें । एसी तपस्याकूं करता, ओ जोगी तेरेवमेलकमेमें बमा नागइक अधजलता ॥ पारसनाथजोगीसुं कहता । तोबी-जोगीनहिंसुणता । लकमेदिये फेंकजंगलमें लोकतमासादेखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगीतुमने । बमानागकूंजला दिया । दियासार नवकारनागकूं । धरणीधरपदवीपाया । वमीउमेदसें आयासाहिब । संवत्सरीका दानदिया । मातपिताकीआज्ञा-लेकर । महाराजनेजोगलिया ॥ ६ ॥ राज ठोमके चलेजंगलमें । जुगतीसें काउसग्गकिया । वमेधीर गंभीरप्रभूनें । तीन लोकमें नामकिया । उष्णकालकीवमी धूपमें नीरंजननिराकाराखमा । कमठासुरने कियाकमाका । नजमंमलवादलचमा ॥ ७ ॥ उसी दिनको कमठासुरने । पिठलादावाजगवाया । मेघमालीकी सेनालेकर । जलकूं जलदीबुलवाया । वमाकिया घनघोरजोरसें । पवनचलाया मतवाला । कमुकमु कर हुआकमाका । चमक बीजका उजवाला ॥ ७ ॥ मूसलधारा मेघवरसता । गगनगा-जता चौताला । सातखूंटकी वमीजमीमें । प्रभु खमा हे मत-वाला ॥ नाकबरोबरआयापाणी । नाथनिरंजनधीरवमा । पराजय नहिं होय जिनूंका । एसाप्रभुका ध्यानचढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासणमोला । हुवा घंटकाआवाजा । अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाउ धाउ धरणीराजा ॥ धरणीधरजलदीसेंआया । पदमावतीकूं संगलिया । पदमावतीने लियेशीसपर । शेषना-गनेछत्रकिया ॥ १० ॥ कोमउपायतो कियाकमठने । कुठबी

इखाजनहिंचलता । तरणेवालासाहिबतनकूं । ढलणेवाला क्याकरता । जीतेश्रीजिनराजहारके कमठ हाथदोजोड़खड़ा ॥ धरणीधरसाहिबकेआगे । अरजी करताखड़ाखड़ा ॥ ११ ॥ केवलपाय शिवपदकूंपहुंचे । पार्श्वनाथ शुभ मतवाला । लगी ज्योतमेंज्योतिदीपकी तपे तेजकाअजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका । देवलबनाया तेंताला ॥ वड़े देवलमें इंदरसोहे । घंटावाजताचोताला ॥ १२ ॥ वड़ीजुगतसें सिंहासणकर । कोट बनायादेवलका ॥ जगों जगोंपर शिखरचढाया । दरवाजाशुभ केवलका । नामंडलकेआगेशोभता । मूलगुंभाराआरसका ॥ पीछे पच्चीसदेरियांसोभित । सिरेकामासिंघासणका ॥ १३ ॥ मूल नायकके ऊपरसोहै । सहसफणा प्रभुपारसका । चौमुखकी चतुराईवणीहै । बहूकामहै सारसका । अढारसेंपैंसठ सवाई । मुहुर्त्त फागण मासभला । सुदीतीजकूं तखतेबेठे । जगोजगो- पर नामचला ॥ १४॥ देश देशके संघ बहु मिलकर । तेरेदर्श- नकुंआया । जगतगुरु जिनराजजगतमें । वड़ी तेरी अकल- माया ॥ धर्मचंदजोड़तासवाईने । वड़ासाहमीवात्सल्यकिया । सकलसंघकीआज्ञालेकर । वड़ाशिखर निशानदीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने खेमचंद ने खुबकिया ॥ पारसनाथकूं तखतबैठाकर । जगोजगो पर नामकिया ॥ कीर्त्तिविजयगुरुरा- जकूंप्रणमूं । पायगुरुका राजवड़ा ॥ गुलावचंद साहेब केआगे ॥ जिनसासनका कामवड़ा ॥ १६ ॥ तेजागाता चंगरंगमें । ज्ञान- ध्यानसेंखड़ाखड़ा हाथजोड़के अरजीकरता । पारसनाथ- जीतूंहीवड़ा । वड़ा काम तेरे है साहिब । मुखसेंनहिं कहणे-

आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी । जविजनकुं सुखके-
दाता ॥१७॥ इति श्रीकल्याणपार्श्वनाथजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ श्रीनेमिराजीमतिनो बारमासो लि० ॥

सीयालैखाढुजलीरे लाल एदेशी ॥ तोरणथी रथफेरीयोरे
लाल निवुर नेमकुमार । प्रेमविलूधी पदमणीरे ला० वीनवेरा
जुलनारहोरंगीला नेमसुणमाहरी अरदाश १ ॥ सहेल्यासुंरा
जुलकहेरे ला० ॥ मगसिरनाव्योपीव । प्रीतमविनहिव
माहरोरे ला० धीरजनधरे जीव हो०२॥ पोसमहीनो आविवो-
हो ला० आयोमो दुखदैण । तो सुरतने सांवलां हो० ला०
देखण तरसैनेण हो० ३ ॥ माहमहीनेसीपमेहो ला० पीउसंग
पोढेनारी । प्रीतमविणहूं एकलीरे ला० केमरहूं निरधारी
हो० ४॥ होलीखेले हेतसुंहो ला० फागुणमें नरनार । हुं किण
सुं खेलुं हिवेहो ला० पासनहींजरतार हो० ५ ॥ चेतमहीने
चांदणीरे ला० संजोगण सुखदैण । विरहणने वालमविनारे
ला० रोवत जावैरेण हो०६॥ वनहरिया वैशाखमेंरे ला० मांज-
ररहीमहकाय । अरजसुणी अवलातणीहो ला० तपतमिटावो
आय हो० ७॥ जेठतपेलू आकरोहो ला० दाझे कोमल गात ।
ससनेहीसाहिवविनाहो ला० कुणपूछे मुझवात हो०८॥ आषाढे
काली घटाहो ला० ऊनमि आयोमेह । कंतमिल्या निजनार-
सुंरे ला०धरती मिलिया मेह हो० ए॥ श्रावण चमके दामनीहो
ला० घनवरसै झरूखाइ । इणरुतुसूतांएकलीहो लाल । क्यूं-
कररैणविहाई ॥ हो० १० ॥ कालीकलायणमिलिहो लाल ।
जाद्रवरू वर खंत । अरजसुणीनेंसाहिबाहो लाल । पूरोमोमन-

खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आंसूझरेहो लाल । नाहविना निस दीस । सारनपूछीसाहिबेहो लाल । राखिरह्योमनरीस ॥ हो० ॥ १२ ॥ कातीदृढछातीकरीहो लाल ॥ जायमिली गिरनार । देखीमुखनिजनाहनोहो लाल । सफलगिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयमले पिउसेंहथेहो लाल । पामेभवनोपार । इणपरपाले प्रीतडीहो लाल । धनधन ते नरनारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जेकीधी पशुऊपरे हो लाल । मोपरकरज्योदेव चंदभणीद्यो करिदयाहो लाल । प्रभुचरणारीसेवहो ॥ १५ ॥ इतिश्रीनेमराजीमतीनो बारमास संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीकी घग्घरनीसाणी लिख्यते ॥

॥ सुखसंपतिदायक सुरनरनायक । परतिख पासजिनंदा हे । जाकीछविकांति अनोपमऊपित । दीपत जाण दिणंदा हे । मुखज्योतिझिगामिग झिग मिग २ । पूरण पूनमचंदा हे । सबरूपसरूप वखाणहिभूपत । तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोकसबेमिल । जाकाजस्सथुणंदाहे । तेरी खिजमत्तकरे इकचित्तसुं तो सेवकधरणिंदाहे । तेंजलता आग निकाल्या नाग । किया वरूभाग सुरिंदाहे । तो चरणां आय रह्या लपटाय । कलाअतिकेलिकरंदाहे ॥ २ ॥ इक दिन्न महारन्नवनपंचागनि । तापसतापतपंदाहे । फल फूल आहारी छुध्याधारी । अल्पआहारलियंदाहे । सबभेष सन्यासी रहेउदासी । अविनासीध्यावंदाहे । दिसीच्यारां दिठी बलेअंगीठी । सूरजतापतपंदाहे ॥३॥ महिमा बहुभारी सबनरनारी । जाकूं आयनमंदाहे । एसी सुणवत्तां धरिय उकत्तां । पुत्तां पासजिनंदा हे । वामादे

अरके कुणतोपरके । मेरा हूंसपूरंदाहे । तिहांचालोपुत्तां जिहां अवधुत्तां । जोगारंजजगंदाहे ॥ ४ ॥ जननीमनआसापूरण-पासा । ऐरापत्तिसझंदाहे । गलघूग्घरमाला जाणहेमाला । दंत्ताला उंपंदाहे । वरवीरघंटाला मदमतवाला । झोलाली-झलकंदा हे । पंचरंगीपरकर सझीसखर । ढालांसुं ढलकंदा हे ॥ ५ ॥ धतकारेधत्तामत्ताअंकुस । मावतशीसदियंदाहे । गंगातटआये खमेरहाए । प्रजुज्ञानीआखंदा हे । रे रे अजिमानी तपअज्ञानी । पावकजीवजलंदा हे । तिहां फाम्ह डुफाम्हदि-खालेलक्रू । वरूफणधरनागंदाहे ॥ ६ ॥ नवकार सुणाया सुरपदपाया । तापसजसघटंदाहे । तिणकिया नियाणा तपख-जाणा । कोमीसहेवेचिंदाहे । हुयके क्रोधातुरआतुरसो कमठा-सुरधुरउपजंदा हे । अश्वसेन सुतन महाराजविषयडुख । जाणत आपतजंदा हे ॥ ७ ॥ पंचमुष्टी लोचकिया आलोच । मनसुं सोच अफंदा हे । प्रजु अप्रतिबंध विहारकियो तब । रनबन वासवसंदाहे । उपशम अणगारे काउसग्ग मझारे कमठा सुरदावलहंदाहे । वमा असुराणा वली हेराणा पिठाणवि लोकधुखंदाहे ॥ ८ ॥ करिआतसक्रोध विचारविरोध । महा अजिमानधरंदाहे । वाउलमतवाली नीलीकाली । वायुमहा-वाजिंदाहे । रविकिरणा कोट रही रजउंट । दिवाकर तेज छिपंदाहे । करघोरघटाचिकटाउमटी । अरुबीजूगाजंदाहे ॥ ९ ॥ गरमाटा वाटा सुणियाथाटा । ऐरापतिलाजंदा हे । हुआअ-काला धुरवरसाला । बीजलियां खिवंदाहे । मोटीधारांसुं आरा-बांसु । यों अंबु वरसंदा हे । चल्ले जलखाला नदियांनाला ।

हेमाखाहालंदा हे ॥ १० ॥ दरियावउलट्टां केतोफुटा । पाणीन हिमावंदाहे। दिगपालदहल्लांधरियउत्थल्लां । खोणीपतिखिसंदाहे। थरूपाहारूां ऊंगीफारूां । सफारूांढाहंदाहे । समदाहंदी रेलवहंदी । जाणकजगरेलंदा हे ॥ ११ ॥ बहुवासरबूठा जाण किरुठा । जूठामनअसुरेंदाहे । तेवीशमराया वनमें पाया । काउसग्गकहाकरंदा हे । उवसग्गाहंदी कोलकरंदी । पाठान- हिंमुरूदाहे । धरिमनमेंध्यानाक्रोधनमाना । निश्चलध्यानधरं- दाहे ॥ १२॥ प्रभु नासां ताइं नदीआई तोही नांहि खुनंदाहे। देवाचलजेसा धीरपएसा पावसपीरूसहंदाहे। तिणअवसरवरदां धरणीधरदां । आसणवेग चलंदाहे । तिण अवधिप्रयुंजी दीठेप्रभुजी । तनमनअति उलसंदाहे ॥ १३ ॥ तिहां पदमा- वती देव सकत्ती सुमिल वेगवहंदा हे । पयकेहेराना वैठवि माना । पावां आयलगंदाहे फणनागहजारां करविसतारा । बगत्तर ज्यूंठावंदाहे । ले आपणखंधे प्रेमनिबंधे । पूरवप्रीत सुखंदाहे॥१४॥ इंद्राणीनारी सवसिणगारी । जोबनअंग झिल- कंदाहे । राकापति वयणी मिरगानयणी । सुंदररूपसोहंदा हे। अणियाला कजाल झलकेविजाल । खूबवणावबणंदाहे । नकवे- सरनत्थां लालमुकत्थां । विच मोतीझलकंदाहे । उढणपाटंबर ॥ १५ ॥ झीणीअंबर । आभूषणझलकंदा हे उर कंचुकसिया तनउल्लसिया । कामघटा गहरंदाहे । पहिरणतनखूवा हरिया दूवा । सोहेहीसोहंदाहे । कटिमेखल कड़ियां सोनेजड़ियां । हीरावीचहलकंदाहे ॥ १६ ॥ घमके घूघ- रियां पाए धरियां । पगनेवररणकंदाहे । लोकांझरतालातालकं-

साला । पखावज वाजंदाहे । कुहके करनाला वीचरसाला । जंगी ढोल घुरंदाहे । वाजे सरणाई सखरीधाई । नगारा रोरू-दाहे ॥ १७ ॥ पञमा वैरूट्टा आण उलट्टां । नाटिक मिलना-चंदाहे । तता थइ तत्ताथइ तानतरूरा । रसजेदरमंदाहे । दिनतीन वितीता तोहि न वीता । पावसजलपसरंदा हे । धरणी धरजाण्या ग्यानपिछाण्या । कमठासुरकोपंदाहे ॥ १८ ॥ नागाधिपति आंख्यांरत्ती । कित्ती रीसआवंदा हे । रे मूढाधिष्ठ चित्तवि-णद्ध । कथूं नांहि समऊंदाहे । साहिबवलवंता जोर अनंता । तूंतो नहि जाणंदाहे । ए क्षमासागर गुणके आगर । तीनूं लोकनमंदाहे ॥१९॥ असमांनखमाई रीसजराई । हिकाई बज-रंदा हे । कित्ती बहुगल्लां परूे दहल्लां धरूहरूदेह धूजंदा हे । धरणेंद्र रूराया तब ते आया । पावां आयलगंदा हे । करजो-रिखमाया सीसनमाया । जगनायक जिनचंदाहे ॥ २० ॥ तूं साहिबसच्चा तोगुण रच्चा । मेरादिल खुलंदा हे । तें रीसनध-रियां छिणहीविरियां । तूं ही अचल गिरंदा हे । कमठासुर-कित्तीं बहुविनत्ती । निजअपराध खमंदाहे सुरपतिसिधाये निजघरआये । प्रञुके गुणसमरंदाहे ॥ २१ ॥ सुधसंजमपाले दोष निहाले । तब केवल उपजंदा हे । सम्मेतशिखरपर चढके ऊपर । सिद्धपुरीपोहचंदा हे । तेरीकीरत्ती जग ऊपत्ती । पार न को पावंदा हे । तूं सच्चारखे जेदपरखे । गुमानी मोरूंदाहे ॥ २२ ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी । सुरनरसेवकरंदा हे । तूं दीवाणा तूं खूमाणा । तूं मोजी मकरंदा हे । तूं अल्लापीर फकीर मुसाफर । तूं जोगी तूं जिंदाहे । तूं काजीमुल्लां

मरदअटल्लां। तूं ही शेष फरींदाहे ॥ २३ ॥ तें ऊपाया धंदेलाया। मायामें मुलकंदाहे । तूं बूढाबाला मदमतवाला । तूं पक्कावा-जंदा हे । तूं कच्चा कवला सबतेंसबला । सच्चामऊरहंदा हे । बाबा गोसांई जेद न पाई । जीरूपदयां आवंदाहे ॥ २४ ॥ तूं नारायण जोगपरायण । माधव तूं ही मुकंदाहे । तूं कवला-धारी तूं अवतारी । तूं देवांदेवंदाहे । तूं एकांथप्पे एकउथप्पे । थिति निज सुधथापंदा हे । तोदेवलमऊां लोक तिसंऊां । सीरणियां वाटंदाहे ॥ २५ ॥ गुणगीतपयासे कीरतजासे । ऊीणे स्वरगा-वंदाहे । काला गुरुअगरसुंमलयागर । धूपेंमा धुखंदाहे । कुंकुमकसतूरी केसरपूरी । चंदनसुंचरचंदाहे । मरुआ-मचकुंदा फूलाहंदा । टोरूरकंठवंदाहे ॥ २६ ॥ चंपागुलाबां जरीयठाबां । परमल तिहां वासंदाहे । कसवोई चंगी । रचीये अंगी फूलां वीचफावंदा हे । आजूषण धरियां तन ऊपरियां । कुंरूलकानऊिगंदाहे । सूरतसोहंदी मूरतहंदी । दीठां नेणठ-रंदाहे ॥२७॥ तेरी बलि जाउं मोजांपाउं । वीनती तूं हि सुणं दाहे । क्याकत्थूंगल्लां हुकम अदल्लां । समकितमन उल-संदाहे । सिद्धांदावासा तिहांरहासा । तुऊसेवकविलसंदा हे । घग्घरनीसांणी पासवखाणी गुणजिनहर्षकहंदा हे ॥ २८ ॥ इतिश्रीपार्श्वजिनघग्घर निसाणी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवनं लिख्यते ॥

तूंमेरेमनमें प्रजु तूं मेरेदिलमें ध्यानधरूं पलपलमें । पासजि-नेसरअंतरजामी । सेवाकरूं ठिनठिनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहू-कोमन तरुणीसेंराच्यो । काहूकोचित्तधनमें । मेरो मन प्रजुतु-

महीसें राच्यो । ज्युं चात्रकचित्तघनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगी सरतेरी गतिजांणे । अलखनिरंजनछिनमें । कनककीरति-सुखसागर तूंही । साहिबतीनभुवनमें । तूं मेरे मनमे तूं मेरे दिलमे० ॥ ३ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथजीरो स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथजीका लघुस्तवनं लिख्यते ॥

॥ जिनजी महिरकरीने राज । दरसणवहिलोदीजे । दीजे दीजे जी माहाराज । कारजसगलासीझे । ए आंकणी । मुझ मनभमरतणीपरमोह्यो । छोड़ायोनविछूटे । प्रेमरागबंधाणो पूरण, तेतो कदियनखूटे ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभुतुमने । नहियविसारुं दिलसुं । रातदिवस एहवी मनवरते । जाणुं जइमिलुंतुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरवपुन्यथकी मेंपायो । ए अवसरआजूणो । मिलियोतूं प्रभुपासचिंतामण । साहिब-सहजसलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारेतो सेवकछे बहुला । मो सरिखा लखग्याने । माहरेतो इण जगमे जोतां । थारे नहीं कोइटाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आसहीये इक ताहरीराखुं । बीजो-मुखनहीभाखूं ॥ अमृतजेमलही तुझ गुणरस, खारोजलकिम-चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुद्रानी महिमा । कहतां पार-नआवे ॥ सायरलहरमालानेंगिणतां, कहोकुणमतिउपजावे ॥ जि० ॥६॥ भगतपणे किंचित गुणभाखूं, हूं म्हारी मतिसारू ॥ निरुपमअनुपमप तुझगुण लायक, त्रिभुवनजीवनसारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरसअढारवली इकताले, मिगसरपखउजवाले ॥ इग्या-रसदिन अधिक सनेहे, यात्रकरीसुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरिश्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंडायो ॥ लाभउदय-

जिनचंदनेप्रनुजी, वाध्योप्रेमसवायो ॥ जि० ॥ ए ॥ इतिश्रीपार्श्वजिन स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

आजआपें चालोसहीयां सिद्धाचलगिरिजइये ॥ सिद्धाचलगिरिजइये बहेनी विमलाचलगिरिजइयेरे ॥ आ० ॥ सुणबहेनी ए गिरिनीमहिमा । आदिजिनंदइमनाखी ॥ नरतादिकनरपतिनेआगल इंद्रादिकसहुसाखीरे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणगिरिवरिये कालअनंते । साधुअनंतासीधा ॥ जन्ममरणनां दुःखबोमीने । अमलअखयगुणलीधारे ॥ आ० ॥ २ ॥ इणगिरिसन्मुखपगलानरतां । आतमशुद्धसुनावे ॥ कोमिनवांरां पातककीधा । एकपलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए सेत्रुंजो । जोतां लागेमीगे ॥ तीननुवनमें इणगिरितोले । बीजोकोइनदीगेरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेहधरीने । आगे उंलगकरस्यां ॥ अद्भुत आदिजिनेसरनिरखी । प्रेमसुधारसपीस्यांरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुष्पसुगंधालेइपंचरंगा । हारसुगंधागूंथी ॥ पंहिरावी प्रनुकंठेंलहिस्यां । शिवमारगनीसूथीरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिरस्वरे जिनवरगुणगातां । जात्र नवाणूं करिये ॥ मनगमती नमतीविचनमतां । नवसायरनिसतरियेंरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरवनवाणूं वारप्रथमजिन, रायणरूंखेआया ॥ एतीरथ शुननावेंफरसी । करियेनिरमलकायारे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लानलदेएगिरिवरलहिये । कहेइमकेवलनाणी ॥ श्रीजिनचंद सदाहितवत्सल, प्रेमघणे चित्तआणीरे ॥ आ० ॥ ए ॥ इतिसिद्धाचलस्तवंन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री तीरथमालास्तवनं लिख्यते ॥

शत्रुंजय ऋषन्न समोसरथा न्नला गुणन्नरथारे सीधासाधु अनंत । तीरथते नमुंरे ॥ तीनकल्याणक तिहांथयां । मुगतें गयारे ॥ नेमीसरगिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरिसेहरोरे ॥ न्नरतेन्नराव्याबिंब ॥ ती० ॥ आबुचौमुख अतिन्नलो । त्रिन्नुवनतिलोरे ॥ विमलवसइवस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखरसोहामणो । रलियामणोरे ॥ सिद्धा तीर्थंकरवीश ॥ ती० ॥ नयरीचंपा निरखीये । हीये हरखीयेरे ॥ सीधाश्रीवासुपुज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशेंपावापुरी ऋद्धे न्नरीरे ॥ मुक्तिगयामहावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेरजुहारीये । दुःखवारीयेरे ॥ अरिहंतबिंबअनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरजवंदीये । चिरनंदीयेरे ॥ अरिहंतदेहराआठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो । पंचासरोरे ॥ फलोधी थंन्नणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिकअजावरो, अमीझरो,रे ॥ जीरावलोजगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्यदीपकदेहरो, जात्राकरोरे ॥ राणपुरेंरिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाईजादवो, गोमीस्तवो रे ॥ श्रीवरकांणोपास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनांदेहरां, बावन न्नलारे ॥ रुचक कुंमल चारचार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमाछतीरे ॥ स्वर्ग मृत्युपाताल ॥ ती० ॥ तीरथजात्रा फलतिहां, होजो मुऊ इहांरे । समयसुंदर कहेएम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति तीरथमाला स्तवनं सपूर्णम् ॥

॥ अथ नवकारतप स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवरनमी । पंचपरमेष्टिसार ॥ परम

मंत्रनवकारनी महिमाजणूउदार ॥ १ ॥ ढाल १ ली ॥ मुनिवर आर्यसुहस्ति ॥ ए देशी ॥ समरोश्रीनवकार । सार पूरवतणो । नवविधिसिद्धि आपेसदाए ॥ महिमामोटी जास । संकट सबटले । मिले मनोरथसंपदाए ॥ १ ॥ अरुसठ वरणविख्यात । सातगुरुअक्षर । नवपदआठेसंपदाए ॥ सातसागरनांपाप । जायेअक्षरे । संपूरणपांचसयमुदाए ॥ २ ॥ पुष्करवरद्वीपार्द्ध । सिद्धावटगाम । पासेपरबत कंदराए ॥ चोमासीपच्चरकाण । करनेतिहांरह्या । दमसार नामे मुनीसराए ॥ ३ ॥ जीलजीलणीबेश्र । मनसुधजावसुं । नवकार मुनिपासेजणीए । बीजेजवराजसिंह । रतनवतीरांणी । शिवसुखपांम्याकर्महणीए ॥ ४ ॥ रतनपुरीवसोजद्र । सेठतणोसुत । शिवनामा विसनीघणूंए ॥ अति आदरसुंतात । नवकारसीखव्यो । महामंत्रगुण बहुजणूए ॥ ५ ॥ एकदा योगीएक । समसानेलेगयो । शिव कुमार मनमेंधस्योए ॥ नवकारने परजाव, सबलसंकटटल्यो । सोनापुरसो तिणकस्योए ॥ ६ ॥ ढाल २ जी ॥ चरणकरणधर मुनिवरवंदिये ॥ ए देशी ॥ श्रीनवकारतणी महिमासुणो । पोतनपुरसुजगामो जी ॥ सेठ सुजद्रतणी सुताश्रीमति । श्राविका धर्मनोकामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामतेकिणएकविवहारिये । परणी मनधररागोजी ॥ धरमनमूंके हियेमनधरी । कलशमें मूंक्यो नागोजी ॥ श्री० ॥ २ ॥ सापफीटीने फूलमालाथई । मह्यिलमहिमाएहोजी ॥ पिउने कुटुंबसहूप्रतिबूझव्यो । साचोधर्मसनेहोजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्ठितबसराजातिहां । इकदिनबूठो मेहोजी ॥ नदीपूरबीजोरोआवि-

थो ॥ नृपने दीधोतेहोजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वादलहीचिठी राजाकरी । बीजोराने कामोजी ॥ व्यंतरज्ञक्षकरे नरनेतिहां द्येबीजोरोतामोजी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठीआवी जिनदाससेठनी । श्रावकशुद्धविवेकोजी ॥ नमस्कारज्ञणबीजोरो ग्रह्यो । बूझव्यो व्यंतरछेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ जी ॥ नमणीखमणीने मनगमणी ॥ ए देशी ॥ श्रीवसंतपुरजितशत्रुराया ॥ जद्रानामें नारिसुहाया ॥ चंद्रपिंगल चोरथोनृपहारा । गणिकाने दीधोमनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरथोहारते जाणी । सूलीदीधोचोरतेआणी ॥ निजप्रमादगणिकापछतावे । चोरसमीपेछानी आवे ॥२॥ नमस्कारपिंगलनेदीधो । तास प्रज्ञावे वंछितसीधो नृपनेघरजइ अवतरियो । पापीचोर एणेजधरियो ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदास सेठ । तिहां किण हुंमक पापनीठेठ । एकदा चोरी करतां झाल्यो । राजा हुकमें सूलीघाल्यो ॥ ४ ॥ हुंमकचोरते प्यासेगाढो । सेठकने जलमांग्यो गाढो ॥ नवकारदीधो उपगारआंणी । सुरथयो ततखिण धर्मसहिनाणी ॥ ५ ॥ चंपानगरीमेंकीधुं ॥ सुज्ञद्रासती निकलंकप्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसादतेजांणो । मनमेंएहनीआसतिआणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ थी ॥ ज्ञरतनृप ज्ञावसुंए ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिमकरीए । बीजलीवांधी आकास । नमुंनवकारने ए ॥ १ ॥ वृद्धउपाधी- चलावियोए ॥ अनुपममहिमाजास ॥ न० ॥ २ ॥ वाछरूवा एकचारतोए । नदियप्रवाह्योबाल । नमस्कारमनचिंतव्योए । जलफाटोततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चारकरीहवेए । वली कस्यापापअनेक । छुटकवारो एहथीए ॥ आवेचित्तविवके

॥ न० ॥ ४ ॥ मंत्रमांहेमोटो कह्योए । लाखगुणेमनरंग । तीर्थंकरपदतेलहेए ॥ श्रीनवकारनेंसंग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिनदिन अधिकीसंपदाए । मनवंछितसुखथाय ॥ दयाकुशलवाचकवरूए । धर्ममंदिरगुणगाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इतिश्रीनवकारतपाधिकारे ४ ढाल नो वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥ १

२ ॥ अथ श्रीनवकार छंद लिख्यते ॥

सुखकारणभवियणसमरोनितनवकार ॥ जिनशासन आगम चवदेपूरबसार ॥ इणमंत्रनीमहिमा कहितांनलहुंपार, सुरतरु जिमचिंतित वंछितफलदातार ॥ १ ॥ सुरदानव मानव सेवकरे करजोरु । भूमंडलविचरे तारे भवियणकोरु ॥ सुरछंदे विलसे अतिसय जासअनंत । पहिलेपदनमिये अरिगंजन अरिहंत ॥२॥ जेपनरेभेदेसिद्धथयाभगवंत । पंचमि गति पुहता अष्टकर्म करि-अंत ॥ कलअकलसरूपी पंचानंतक जेह । सिद्धनापायप्रणमुं वीजे पदवलिएह ॥ ३ ॥ गछभार धुरंधर सुंदर शशिहरसोम । करशारणवारना गुणछत्तीसे थोभ ॥ श्रुतजाण शिरोमण साग-रजेमगंभीर । तीजेपदनमिये आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुत-धर गुण आगम सूत्रभणावे सार । तपविधिसंयोगे भाखेअरथ-विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ताते कहियेउवज्झाय । चोथेपदनमिये अहनिशतेहनापाय॥५॥पंचाश्रवटालेपाले पंचाचार । तपसीगुण-धारी वारी विषयविकार ॥ त्रसथावरपीहरलोकमांहि ते साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथजिणलाध ॥ ६॥ अरिहरिकरिसाइण डाइण भूतवेताल । सबपापपणासे विलसेमंगलमाल ॥ इण समर्यां

संकट दूरटलेततकाल । जंपे जिणगुणइम सुरवरसीसरसाल ॥७॥
इति श्रीनवकारनो छंद संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीबृहत् नमस्कार स्तवनं लिख्यते ॥

किंकप्पत्तरु रे अयाण चिंतउमणभिंतरि । किंचिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काजकिसे देसांतर लंघउ । रयणरासि कारणकिसे सायरउल्लंघउ ॥ चवदे पूरवसार युगे लद्धउएनवकार । सयलकाज महियलसरे दुत्तरतरेसंसार ॥१॥ केवलीभासिय रीतिजिके नवकार आराहै । भोगविसुखअनंत अंत परम पय साहै ॥ इणझाणे सुररिद्धि पुत्तसुहविलसेबहुपरि । इणझाणे देवलोक इंदपयपामेसुंदरि ॥ एहमंत्रसास्वतोजपे अचिंतचिंतामणि एह । समरणपापसबेटले रिद्धिसिद्धिनियगेह ॥ २ ॥ निय सिरऊपरझाण मज्झचिंतवेकमलनर । कंचनमयअठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहांबेठा अरिहंतदेव पउमासणफिटकमणि । सेयवत्थपहरेवि पढमपयचिंतेनियमणि ॥ निव्वारय चउगइगमण पामियसासयसुरक । अरिहंतझाणे तुमलहो जिम अजरामरमुरक ॥ ३ ॥ पनरभेय तिहां सिद्ध बीयपद जे आराहे । रातेविद्रुमतणेवन्न नियसोहगसाहे ॥ रातीधोतीपहरजपे सिद्धांहिं पुव्वदिसि । सयललोय तिहां नरहहोइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्रवशीकरणअवरसहू जगधंध । मणिमूली औषधकरे बुद्धि हीण जाचंध ॥ ४ ॥ दक्खिणदिसिपंखडी जपे नमोआयरिआणं । सोवन वन्नहसीससहितउवएसहनाणं ॥ रिद्धिसिद्धिकारणे लाभ ऊपर जेध्यावे । पहरिपीलावत्थ तेह मनवंछियपावे ॥ इण झाणे नवनिधिहुंवे रोगकदे नविहोइ ।

गजरथहयवर पालखी चामरछत्त सिरजोइ ॥ ५ ॥ नीलवन्न-
उवज्झायसीस पाढंतापछिम। आराहिज्जे अंगपुवधारंतमणोरम॥
पछिम दिसिपंखरूी कमलऊपर सुहझाणं । जोवोपरमानंदतासु
गयदेवविमाणं ॥ गुरुलघुजेलखे विदुर तिहां नरबहुफल होइ।
मनसूधेविणजेजपेतिहां फलसिद्धि नहोइ ॥ ६ ॥ सर्वसाधु
उत्तरविभाग सामलावइछा । जिणधम्म लोय पयासंत चारित-
गुणजिछा । मणवयण काएहिंजपे जेएके झाणे । पंचवन्नतिहां-
नाणझाण गुण एहपमाणे ॥ अनंत चोवीसीजगहुइएहोसी
अवरअनंत । आदिकोइजाणेनहीं इणनवकारहमंत ॥ ७ ॥
एसोपंचनमोक्कारो पददिसिअगनिहिं । सवपावप्पणासणो पद-
जपैनेरोहिं ॥ वायवदिसिझाएह मंगलाणंचसव्वेसिं । पढमंहवइ-
मंगलं ईसाणपएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुंविदिसेमिलिय अठदल-
कमलठवेइ । जो गुरु लघु जाणीजपे सोघणपापखवेइ ॥ ८ ॥
इणप्रभावधराणिंदहुउ पायालहसामी । समलीकुंवर उपन्नभिव-
सुरलोयहनामी ॥ संबलकम्बलबेबलद पहुता देवांकप्पे । सूली
दीधोचोरदेवथयो नवकारहिजप्पे ॥ शिवकुंमार मनवंछिय
करे जोगीलियोमसाण । सोनापुरसोसीधलो इणनवकार
प्रमाण ॥ ए ॥ छींकेबेठोचोरएक आकासेगामी । अहि फिटि-
हुई फूलमाल नवकारहनामी ॥ वाठरूआ चारंत बाल जलन-
दीप्रवाहे । बींध्योकंटही उयरमंत जपियोमनमांहे ॥ चिंत्या-
काजसबेसरे इरतपरतविमास ॥ पालितसूरितणी परे विद्यासिद्ध-
आकास ॥ १० ॥ चौर धाड़ संकटटले राजा वसिहोवे ।
तित्थंकरसोहोइ लाखगुणै विधिसुंजोवे ॥ साइणझाइणभूतप्रेत-

वेताढ्य न पुहवइ । आधिव्याधि ग्रहतणी पीरुते किमहिन- होवे । कुष्टजलोदर रोगसबे नासेएणही मंत ॥ मयणासुंदरित- णीपरे नवपयझाणकरंत ॥ ११ ॥ एकजीह इणमंत्रतणा गुण- कितावखाणुं । नाणहीण छउमत्थएहगुण पार नजाणूं ॥ जिम- सत्तुंजयतित्थराउ महिमाउदयवंतो ॥ सयलमंत्रधुरि एह मंत्र- राजाजयवंतो । तित्थंकरगणहरभणिय चवदहपूरबसार । इण- गुणअंत नकोलहे गुणगिरउनवकार ॥ १२ ॥ अरूसंपय नव- पय सहित इगसठ लहुअक्खर । गुरुअक्खरसत्तेव इह जाणो परमाक्खर, गुरुजिणवल्लहसूरिभणे सिवसुरकहकारण, नरय तिरियगइ रोगसोग बहुदुरकनिवारण । जलथलमहियल वनग- हण स्मरणहुवे इकचित्त, पंचपरमेष्ठिमंत्रतणीसेवा देज्यो- नित्त ॥ १३ ॥ इतिपंचपरमेष्ठीमहिमास्तवनं संपूर्णम्

॥ अथ सत्तरसोजिनको स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्तिश्रीदायकसदा त्रैसलेयजिनचंद ॥ तत्पद नामीकंधरा, कारणसिवसुखकंद ॥ १ ॥ वाच्चर्यंका सारदा तणो, उरधरिसमरणशक्ति । सप्तत्युत्तरसतजिनतणी, रचस्युं- नुतिसुचिभक्ति ॥ २ ॥ छेजेद्वीपसमस्तनै, मध्यमेरू कनकाभ । पूर्वापरभवितेहने, विजयनामकोलाभ ॥ ३ ॥ मूलविजयवसु- प्रतिदिशा, कथनामेंयुगतीस । शीतोदा तरणीतणो, कारणवि- श्वावीस ॥ ४ ॥ अंकधातकीदूसरो, द्वीपमनोहरतेह । कंचन- गिरियुगछे तिहां, मनधारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतमपुष्करजां- णिये, द्वीपसकलगुणखांण । अर्धभागजसुउत्तमें, गिरियुग जथदसमांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्याविजयनी, प्रतिमेरौबत्तीस ।

धारो गणित अनुक्रमें, षष्ट्युत्तरशतहींस ॥ ७ ॥ एहआढाइ-द्वीपना विजयतणोपरिमांण । कालचतुर्थ तिहांसदा, ज्ञाष्यो-श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिणतीर्थंकरवारके, विचर्याजेजिनराय । तेहूं प्रति विजयेज्ञणूं, आगमसुं चितलाय ॥ ए ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिणकाले ने तिणसमेजी, तीर्थंकरमहाराज । अजित-जिनेसरराजताजी, तारणतरणजिहाज । ज्ञविकजन धारज्योधर्म-सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशयचौतीस संजुआजी, वांणीगुणपैं-तीस ॥ लोकालोकप्रकाशताजी, प्रणमतनरसुरईस ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवाश्रीजिनवारकेजी, एकसोसाठजिनंद । विचर्या महियल बोधताजी विजय मझार सज्ञंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥ पंच पंचज्ञरतैरवतैंजी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरैंजगजनतारताजी, समर्यासंपति-थाय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ एसत्तरसोजिनवरुजी, अतुलसकलगुण खांण । श्यामवरणसोलेकह्याजी, अकलकलाद्युतिवांन ॥ज्ञ०॥ ५॥ रक्ताकृति त्रिंशतकह्याजी, नीलवरणवसुतीस, रविजिमझलह-लज्ञाधरुजी कनकवरणछत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजतमुक्तवय जलकणाजी, समसितविमलप्रकाश । ज्ञविक चकोरप्रमोदताजी, शशिजिमजिनपञ्चास ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रतिजिन व्रत उपवासथीजी, वीसप्रमितजपमाल । त्यक्त कषाय शुज्ञातमांजी, धरिये ज्ञाव-विशाल ॥ ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम एतप पूरणहुयांजी, उजमणे निज-शक्ति । कीजे श्रीजिन शाशनेजी, संघसहूनीज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ए ॥ एतपविधि ज्ञवि जे करेजी, प्रेमसहितजिनधर्म । साधनगुण-अनुमोदताजी, तेलहे दिव शिवशर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥ संवत मुनिसर लोक नारद चंद्र ज्येष्ट (१ए३७) पफुरए,

वदिसप्तमी रविदिने हितवल्लनकथनधरजूरए । गुरु खरतरांबर तरणि सन्निन जैनचंद्रसनुरए, एतवनकीधोजीमगंजे श्रमण चंदकपूरए ॥ ११ ॥ इतिश्रीसत्तरसोजिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ कम्मपयडीस्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ सेनामाता जितारिसुत, श्रीसंनवजिनराज ॥ मूलकरम उत्तरपगइ, हणीचढेसिवपाज ॥ १ ॥ अष्टकरमकुं क्षयकरी, गुणअष्टकनिष्पन्न ॥ सादिअनंत स्थिति लही, चिदानंदचिदघन्न ॥ २ ॥ तासुचरणप्रणमीकरी कम्म पयडिविस्तार ॥ वरणूं नविजनहितनणी, प्रवचननेअनुसार ॥ ३ ॥ ढाल रामचंद्रकेबाग ए देशी ॥ अष्टकर्म तीर्थेश, नांमे जिन्नकह्यारी ॥ हेयवस्तुपरित्यज्य, आतमगुणग्रह्यारी ॥ १ ॥ नाणदंशणआवर्ण वेदनीमोहवूरोरी । आउखो नाम गोत्र, कर्मांतरायचूरोरी ॥ २ ॥ ज्ञानावरणीकर्म, दर्शना वर्णतणोरी । वेदनीय अंतराय, तीसकोमाकोमी नणोरी ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म वीशकोमाकोमीहवेरी । आयु सागरतेतीस हिव मोहनीयथुवेरी ॥ ४ ॥ सत्तीरी कोमाकोमी, सागर माननणयोरी ॥ ए उत्कृष्टस्थितिजोम, केवलीकाल गणयोरी ॥ ५ ॥ जघन्यस्थितिपंचकर्म, अंतरमुहुर्त्तपणोरी ॥ नामगोत्रदोयकर्म आठमुहुर्त्तगणोरी ॥ ६ ॥ अकषायवेदनीवर्ज्य, वेदनीकर्मवदेरी । बारेमुहुर्त्त मांन, शास्त्रानुसारमुदेरी ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंचपंचनेदजुदारी । वेदनीयगोत्रकर्मदोदोनेदउदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नवनेद, आयुच्यारविधेरी । मोहकर्म अमवीस, सौत्रिकनामसधेरी ॥ ए ॥ एकसो अमावेन

उत्तर प्रकृतिकहीरी ॥ अष्टकर्मनाजांण, सर्वविकल्प सहीरी ॥ १० ॥ ढाल ॥ नणदलचुरूले जोवनझिलरह्यो ए देशी ॥ पाटेसम ज्ञानावरणछे, दर्शनावरणप्रतीहार ञविया कर्मविवेचन कीजिये । मधुलिप्ताअसिधारानीपरे, वेदनीकर्ममुदार । ञविय० ॥ १ ॥ मदिराछाक समानछे, मोहसुञटमहराण ॥ ञवि० ॥ खोरूबंधीखानेसारखो, आयुकर्मप्रमाण ॥ ञ० क० ॥ २ ॥ चीतारेसम नामकहीजे, गोत्रकुंञारसमान ॥ ञ० ॥ श्रीधरञंरुारीसम दाख्यो, अंतरायकुध्यान ॥ ञ० क० ॥ ३ ॥ अष्टकर्म ए ञावना, वीरवदे व्याख्यान ॥ ञ० ॥ कर्मसंसार-स्वरूपछै, अकरमसिद्धिसुथान ॥ ञ० क० ॥ ४ ॥ मिछसासा-दनमिश्राविरति, देसविरतिप्रमत्त ॥ ञ० अप्रमत्त गुण अंतस-वीमे, करमवंध अठसत्त ञ० क० ॥ ५ ॥ अपूरब अनुवृत्ति गुणमें, आयुवरजसप्तबंध ॥ ञ० ॥ सुहुमसंपरायदशमठाणें-विनमोहायु षट्बंध ॥ ञ० क० ॥ ६ ॥ उपसम खीण सजो। गमें, वेदनीबंधउदार ॥ ञ० ॥ अयोगीगुण चउदमें, नहीबंधत कर्मद्वार ॥ ञ० क० ॥ ७ ॥ कर्मबंधहेतुकह्या, मिथ्यातअविरत-जोय ञ० ॥ क्रोध प्रमुखकषायथी, योगयुगतच्यारहोय ॥ ञ० क० ॥ ८ ॥ पन्नवणाउपांगमें, कर्मस्थितिपदलेय ॥ ञ० ॥ कर्मवेद पणवीसमें, कर्मप्रकृतिवेदज्ञेय ॥ ञ० क० ॥ ९ ॥ कम्म पयमीकर्मग्रंथमें, कर्मतणोनिरधार ॥ ञ० ॥ बंध सत्ता उदी-रणा, उदयप्रमुखपरकार ॥ ञ० क० ॥ १० ॥ एकसो अठ्ठवन-श्रया, चउत्थञत्ततप सार ॥ ञ० ॥ तप उद्यापन इमकरो, पूजअष्टप्रकार ॥ ञ० क० ॥ ११ ॥ अष्टज्ञानो पगरणञला,

अष्टमंगल वृषथाल ॥ ज० ॥ वात्सल्यचौविह संघनी, यथाशक्तिसुविलास ॥ ज० क० ॥ १२ ॥ इमआरोधन तपकरे, कर्म प्रकृतिनोसार ॥ ज० ॥ सुरनरसुखअनुक्रमलही, शिवरमणीजरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिनचंदसूरिमुणिंदखरतरगण खशशिसमयुगवरा, तासुवचने स्तवनकीधो नयर श्रीबालूचरा । चंद्रानुयोगनिध्येकवरषे विशदफालगुनद्वादशी उवझायतत्वप्रधानगणिने अमृतगतिचित नितवशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयडी स्तवनं संपूर्णम् ॥

अथ श्रीशांतिनाथजीनो वृद्धस्तवन लिख्यते ॥

श्रीसारदमातनमुं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनकेस्वामी । संतहिसंतजपे सबकोई । जांघरशांति सदासुखहोई ॥ १ ॥ सांतिजपीने कीजे कामा । सोईकामहुवै अभिरामा । सांतिजपी परदेशसिधावे । तेकुशले कमलालेआवे ॥ २ ॥ गर्भथकीप्रभु मारिनिवारी । शांतिहि नाम दियोमहतारी । जे नर शांतितणागुणगावे । ऋद्धिअचिंति ते नर पावे ॥ ३ ॥ जानरकुं प्रभु शांतिसहाई । तानरकुं कुणआरतिनांहि । जो कलुवंछे सोही, पूरे । दारिद्रदोष मिथ्यामतचूरे ॥ ४ ॥ अलखनिरंजन ज्योतिप्रकासी । घटघटके भीतरप्रभुवासी । स्वामिसरूपकह्यो नविजावे । कहितां मोमनअचरिजआवे ॥ ५ ॥ डारदिया सबहीहथियारा । जीतामोहतणादलसारा । नारितजीसिवसुं रंगराचौ । राजतज्योपिण साहिबसाचो ॥ ६ ॥ महाबलवंतकहीजे देवा, कुंजरकुंथु न एकहणेवा । ऋद्धिसहू प्रभुपासलहिजे, भिक्षाहारी नामकहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे समभावक, पिणसेवगकुं

सदासुखदायक । तजीपरिग्रह ज्ञएजगनायक, नामअतीतसर्वे-विधलायक ॥ ८ ॥ शत्रुमित्रसमचित्तगुणिजे, नामदेव अरिहंत ज्ञणीजे । सयलजीव हितवंतकहीजे, सेवक जांण महापद-दीजे ॥ ए ॥ सायरजेसा होय गंज्ञीरा, दूषणनहिं इकमाहिं सरीरा, मेरुअचलजिम अंतरजामी, पिणनरहे प्रज्ञुएकण-ठांमी ॥ १० ॥ लोककहे प्रज्ञुजी सबदेखे, पिणसुपनोकवहु नविपेखे । रीसविना बावीसपरीसह, सैन्याजीतीतें जगदीसह ॥११॥ मानविनाजग आंणमनावे, मायाविनासबसुं मनलावे । लोज्ञविना गुणरासग्रहीजे, ज्ञिक्षुज्ञये त्रिगरूोसेविजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणेसिरछत्रधरावे, नामजतिपिणचमरढुलावे । अज्ञयदान दातासुखकारण, आगेचक्रचले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिन-राजदयालज्ञणीजे, कर्म सबीको मूलखणीजे । चौविहसंघ जे तीरथथापे, लछीघणीदेखी नविआपे ॥ १४ ॥ विनयवंत-ज्ञगवंतकहावे, नाकिसहीकूं सीसनमावे । अकिंचनकोबिरुद-धरावे, पिण सोवन पंकजपगठावे ॥ १५ ॥ तजिआरंज्ञ निज-आतमध्यावे, शिवरमणीकुं साथचलावे, रागनहीं सेवगपिण-तारे, द्वेषनहीं निगुणासंगवारे ॥ १६ ॥ तेरीमहिमाअदज्ञुत कहिये, तेरेगुणांको पारनलहिये । तुंप्रज्ञुसमरथसाहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवकतोरा ॥ १७ ॥ तूंत्रिहुंलोकतणो प्रतिपाला । मेहूंअनाथ तूं दीनदयाला । तुं सरणागतराखणधीरा, तुंप्रज्ञु तारक छे वरुवीरा ॥ तुमजेसें वरुज्ञागजपायो । तोमेरोकारज चढ्योसवायो । करजोमीप्रज्ञु वीनवुं तोसुं । करोकृपा जिनव-रजीमोसुं ॥ १ए ॥ जनममरणनिवारोतारो । ज्ञवसागरथी

पारउतारो । श्रीहथणापुरमंकणसोहे । तिहां जिनशांतिसदा मनमोहे ॥ २० ॥ पद्मसुरिगुरूराजपसाये, श्रीगुणसागरकेमनभाये । जेनरनारि इकचितगावे, मनवंछितफल निश्चैपावे॥२१॥ इति श्रीशांतिजिनवृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री १२ मा वासुपूज्य भगवाननो स्तवनं लिख्यते ॥

॥ वीरजीआयारे चंपावनकेमेदान ॥ ए देशी ॥ भवियण ध्यावोरे । वासुपूज्य गुणखाण, वंछितपावोरे । जिनवरचतुरसुजाण ॥ भ० ॥ ए आंकणी ॥ अंगदेशचंपानयरिसोहंत । जयदेवीनाजातकहंत, वसुपुज्यराजाकुलदीवंत । चउदेसुपनारे देखेमातसुजाण । गर्भमांइंद्रेरेपूज्या जिनवरभाण ॥ भ० ॥ ॥ १ ॥ एहथी वासुपूज्यदियोनाम । मातापितानावंछितकाम, सहुजनगावेगुणअभिराम । योवनवयमांरे संयमलीनोसुजाण । चारित्रपालिरे पाम्योकेवलनाण ॥ भवि० ॥ २ ॥ संघचतुरविधथाप्यो मुनीश, भविजनतार्या विचरिजगीश । बोधबीजविस्तारिईश । चंपापुरिआव्यारे । कीधोअणशणजाण । मुक्तिपदपायारे । सासनकेसुखतान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ देरासरत्रण भूमि मनुहार । भुंयरेमांआदिनाथजुहार । मध्यमांबारमजिनसुखकार । ऊपरमजलेरे शीतलजिनवरजाण । नमिजिनस्वामीरे पारसनाथकहाण ॥ भवि० ॥ ४ ॥ मूलनायकबारमजिनचंद । बिंबावलीसोहेअतिचंग । बुहारि नगरमा अतिउछरंग, कृपाचंद्रसूरिरे । चउमासोकीनोजाण । उगणीसे चमोत्तरेरे ।

गायाजिनगुणगान ॥ ज्ञवि० ॥ ५ ॥ इति श्री १२ मा वासुपूज्य ज्ञगवाननो स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ बीजनोवृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वर्द्धमानजिनवंदिये त्रिशलानंदनदेव । सिंह लंछनसेवितसदा । सुरपतिसारेसेव ॥ १ ॥ जन्मसमेथीजगगुरु । अतुलबलीवरुवीर । तपउत्तमविधियुतकह्यो जलनिधिजिमगंज्जीर ॥ २ ॥ ढाल १ ली ॥ कृपानाथ मुजवीनतिअवधार ॥ ए देशी ॥ धर्मकरो जिनराजनोजी । आणी उल्लटज्जाव, दोयज्जेदे आराधतांजी ।पामो आतम स्वज्जाव । ज्जविकजन सेवो श्रीजिनवाणि निजगुणमणिनीखाण ॥ ज्ज० ॥ १ ॥ तिथीआराधनफलतणोजी । शास्त्रमांहे अधिकार, बीजआराधोज्जविजनाजी । तपकरिया विधिसार ॥ ज्ज० ॥ २ ॥ दोयमासलघुदूजनेजी । जावजीवउत्कृष्ट, दोपवरस दोयमासमांजी । करोबीजसुज्जदृष्ट ज्ज० ॥३॥ पडिकमणादोय टंकनाजी । देववंदननिरधार, विधिसेतीफलनीपजेजी । पामेज्जवनो पार ॥ ज्ज० ॥ ४ ॥ बीजदिवसनो सहुजुवेजी । चंद्रोदयसुप्रसिद्ध । वधतिकलातिमजाणजोजी । धर्मथी वंछितसिद्ध ॥ ज्ज० ॥ ५ ॥ डुविधधर्म जिनवरकह्योजी । देशने सर्वविरत्त । धर्मशुक्ल दोयध्यानमांजी । होवेसदा निरत्त ॥ ज्ज० ॥ ६ ॥ अर्थप्रकाशे जिनवरूजी । सूत्ररचे गणधार । बिहूं सेवे वाचंयमीजी । द्वादसअंगविचार ॥ ज्ज० ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ नमोरे नमो सेत्रुंज गिरिरे ॥ एदेशी ॥

बीजदिवसमां आणीयेरे । कल्याणक सुविशालरे । आवण

सुदिबीजेचव्यारे । सुमतिनाथदयालरे । नमोरेनमो जिनचंद्र-नेरे ॥ १ ॥ माघमासनीउजलीरे । बीजदिवसमांजाणरे । अभिनंदनजनम्याप्रभूरे । त्रिहुंजगनामहिराणरे ॥ नमो० ॥२॥ एहिजतिथीवासपूज्यजीरे । पाम्योकेवलज्ञानरे । फागुणसुदि-बीज जाणीयेजी । अरनाथ चवणसुजाणरे ॥ नमो० ॥ ३ ॥ समेतशिखरपरसिववस्यारे । शीतलजिनवरनाणरे । चेतवदि-बीज सुंदरुरे । अविचलसुख मनआणरे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ इमकल्याणक इणतिथीरे ।कालअनंतेहोयरे । अनंतकल्याणक जाणजोरे । एह आगमविधिजोयरे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ तपपूरण हूवां थकांरे । उजमणोसुविवेकरे । रत्नत्रयी आराधवारे । धनखरचो बहुछेकरे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ सीमंधरादि जिनवरारे विहरमाणजिनवीसरे । मनमंदिरमांआवजोरे । कृपाचंद्र सूरी-शरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ इतिबीजनो वृध्दस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ आठमनो वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

दुहा ॥ वर्द्धमानजिनवरनमुं । समरिसारदमाय । अष्टमी तपविधिवरणवुं । आगमयुतसंप्रदाय ॥ १ ॥ आठमतिथी अराधवा । भाखेत्रिजगत्राण ॥ विधिसेतितपकीजिये । पामे उत्तमनाण ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ली शंभवजिनवरवीनती ॥ एदेशी ॥

आठमतप आराधिये । अष्टमीगतिदातारोरे ॥ प्रवचनमाता-आठने । पालो निसदिनसारोरे ॥ आठम० ॥ १ ॥ अष्टसिद्धि-कारक सदा । आठमतपउजमंतारे ॥ सामायक पोसहकरि । पर्वतिथीसेवंतारे ॥ आ० ॥ २ ॥ पर्वतिथीमां बंधायछे । प्रायें-

परजवआयुरे ॥ तिणकारणतिथीतपकरो । आगममांहि गवा-युंरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ बृहदावश्यकवृत्तिमां । हरिजद्रसूरिबोलेरे॥ तिमचूर्णिलघुवृत्तिमां । योगशास्त्रमांखोलेरे ॥ ४ ॥ नवपद-प्रकरणवृत्तिमां । दिनकृत्यदेवेंद्रसूरिरे ॥ विधिप्रपा पंचाशकवलि । इम अधिकारछेजूरिरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ सामायक पहिलाकह्यो । पाछल इरियानो पाठरे ॥ जाणेपण मानेनहिं । एहकर्मनो गाठरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ विधिथी सामायककरो । जिमपामो जवपारोरे ॥ अविधिथीकिरियाकरि । नविछूटे जवनो खारोरे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ यतनी ॥

परवतिथीये पोषधकरिये । शुद्धआगमनेअनुसरिये । वली आठकर्मनेहरिये । सलूणा जावजलेआराधो । एतो आराधि सिवसुखसाधो । सलूणा आठमतिथी आराधो ॥ १ ॥ आठम दोय चउदसकहिये । अमावस पूनिमलहिये । एह छतिथी-चारित्रवहिये ॥ स० ॥जा०॥ ॥२॥ वली कल्याणकतिथीजाणो । पजुषणमनमांआणो । इत्यादिकपर्वपिछाणो ॥ स० ॥ जा० ॥ ॥ ३ ॥ बीजेअंगे पांचमेअंगे । उपाशकदशासुखसंगे । आव-श्यकटीकाउमंगे ॥ स० ॥ जा० ॥ ४ ॥ इत्यादिकआगमसाखे । परवतिथीये पोषधजाखे । विधियुतकरतां फलचाखे ॥ स० ॥ जा० ॥ ५ ॥ जे नित्यपोषधने ताणे । आगमविधि ते नवि-जाणे । हरिजद्र वचनपरमाणे ॥ स० ॥ जा० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ जइने कहेजो माराबालाजीरे ॥ एदेशी ॥

आठम परवतिथीकही । माराबालाजीरे । आराधो गुण

गेह । जगगुरुवंदिये । मारावाल्लाजीरे । एहतिथी कल्याणक-
घणा । मारावाल्लाजीरे, त्रिहुंकालनागिणोतेह । जगगुरु वं० ॥
मारावाल्लाजीरे ॥ १ ॥ आचारंगमांज्ञाखिया ॥ मा० ॥ वा० ॥
ज्ञावनाअध्ययनसार ॥ ज० ॥ मा० ॥ ठाणांगठाणेपांचमे ॥
मा० ॥ वा० ॥ कल्पसूत्र मनुहार ॥ ज० ॥ वं० ॥ २ ॥ आ-
गम प्रकरणचरित्रघणा ॥ मा० ॥ वा० ॥ एमांप्रकटपणेतूंजोय ॥
ज० ॥ वं० ॥ ठकल्याणक वीरना ॥ मा० ॥ वा० ॥ आगम-
मांहेहोय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ३ ॥ पजूसणकल्पेकह्यो ॥ मा० ॥
वा० ॥ पचासदिवसप्रमाण । तेह नवि मानेमानथी ॥ मा० ॥
वा० ॥ जिनआज्ञा सुखखाण ॥ ज० ॥ वं० ॥ ४ ॥ इमअनेक-
कल्पनाकरि ॥ मा० ॥ वा० ॥ मनमान्योमानेतेह ॥ ज० ॥
वं० ॥ तुजआगममुजमनवस्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ एहज ज्ञव-
ज्ञवहोय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ५ ॥ विसंवादघणोपड्यो ॥ मा० ॥
वा० ॥ केहनेकहियेजाय ॥ ज० ॥ वं० ॥ अतिशयज्ञानीतणो-
पड्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ विरहते केमखमाय ॥ ज० ॥ वं०
॥ ६ ॥ दुःखम कालमांजपनो ॥ मा० ॥ वा० ॥ दक्षिणज्ञरत-
मझार ॥ ज० ॥ वं ॥ प्रज्जूनोसरणो मेग्रह्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥
प्रज्जुजो प्राणआधार ॥ ज० ॥ वं० ॥ ७ ॥ तारकतारोतातजी ॥
मा० ॥ वा० ॥ हुंतुंसेवकतुज्झ ॥ ज० ॥ वं० ॥ अपराधिघणा-
तारिया ॥ मा० ॥ वा० ॥ केमविसारसोमुज्ज ॥ ज० ॥ वं०
॥ ८ ॥ कलस श्रीवीरजिनवरज्ञविकसुखकर मात त्रिशला-
नंदनो । मेंथुण्यो आगमज्ञक्तिसंयुत दुरितकर्मनिकंदनो ।
शुजवरसठगणीसेचमोत्तर ज्ञाद्रवसुदिआठमसमें, कृपाचंद्रसूरि-

स्तवनकीधो अनुनवज्ञानप्रकाशमें ॥ ए ॥ इति अष्टमीवृद्ध स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ इग्यारसनो वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

समवसरणबेठा नगवंत । धरमप्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदावेठीजुम्नी । मिगशिरशुदि इग्यारसवम्नी ॥ १ ॥ मल्लिनाथनातीनकल्याण । जनमदीक्षाने केवलज्ञान ॥ अरदीक्षालीधी रूवम्नी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवलज्ञान । पांचकल्याणकअतिपरधान ॥ एतिथीनी महिमाएवम्नी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांचनरत ऐरवतइमहीज । पांचकल्याणकहुवेतिमहीज ॥ पचासनीसंख्यापरगम्नी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गिणताएम । दोढसेकल्याणक थायेतेम ॥ कुणतिथीछे एतिथीजेवम्नी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंतचोवीशी इणपरगिणो । लानअनंत उपवासांतणो ॥ एतिथी सहुतिथी शिरराखम्नी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ । एकदिवस संयमव्रतसाथ, मौनतणीपरिव्रतइमपम्नी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसोलीजियें । चोविहारविधिशुं कीजियें ॥ पणपरमादनकीजेंघम्नी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यारे कीजेंउपवास । जावजीवपण अधिकउल्हास ॥ ए तिथी मोक्षतणी पावम्नी ॥ मि० ॥ ए ॥ उजमणुं कीजें श्रीकार । ज्ञाननाउपगरण इग्यारेइग्यार ॥ करोकाउसग्ग गुरुपायेपम्नी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरेस्नात्रकरीजेंवली । पोथीपूजीजें मनरली ॥ मुगतिपुरी कीजेंढूकम्नी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारसमहोटुंपर्व । आराध्यांसुखलहियें सर्व ॥ व्रतपच्चरकाणकरोआंखम्नी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेशलसोलइक्या-

खीसमें । कीधुंस्तवनसहूमनगमे ॥ समयसुंदर कहेकरोध्यावली॥ मि० ॥ १३॥ इति एकादशीवृद्ध स्तवनंसंपूर्णम् ॥

॥ अथ पंचमी वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निर्मलज्ञानउपाय ॥ पंचमीतपजणुंए । जन्मसफलगिणुंए ॥ १ ॥ चोवीसमोजिनचंद । केवलज्ञानदिणंद ॥ त्रिगडे गहगह्योए । जवियणने कह्योए ॥ २ ॥ ज्ञानवडो संसार । ज्ञानमुगतिदातार ॥ ज्ञानदीवोकह्योए साचो सर्दह्योए ॥ ३ ॥ ज्ञानलोचनसुविलास । लोकालोकप्रकाश ॥ ज्ञानविना पशुए । नरजाणेकिशुंए ॥ ४ ॥ अधिक आराधकजाण । जगवतीसूत्र प्रमाण ॥ ज्ञानीसर्वतुए । किरियादेशतुए॥ ॥ ५ ॥ ज्ञानीश्वासोश्वास । करमकरेजेनास ॥ नारकीनेसहीए। कोडवरसकहीए ॥ ६ ॥ ज्ञानतणो अधिकार । बोल्यासूत्रमझार ॥ किरियाछेसहीए ॥ ७ ॥ पण पाछेकहीए ॥ किरियासहित जो ज्ञान । हुवे तोअति परधान ॥ सोनोने सूरोए । शंखदूधेंजस्योए ॥ ८ ॥ महानिशीथमझार । पंचमीअक्षरसार॥ जगवंतजाखीयोए गणधरसाखियोए ॥ ए ॥

॥ ढाल २ जी ॥ कालहरानी एदेशी ॥

पंचमीतपविधिसांजलो । जिमपामो जवपारोरे । श्रीअरिहंतइमउपदिशे । जवियणने हितकारोरे ॥ पंच० ॥ १ ॥ मिगसरमाहफागुणजला । जेठ आषाढवैशाखोरे ॥ इण षटमासेंलीजियें । शुजदिन सद्गुरुसाखोरे ॥ पंच० ॥ २ ॥ देवजुहारीदेहरें । गीतार्थगुरुवंदीरे ॥ पोथीपूजोज्ञाननी, सगतिहुवेतोनंदीरे ॥ पंच० ॥ ३ ॥ बेकरजोमीजावशुं । गुरुमुखकरो

उपवासोरे ॥ पंचमीपडिक्कमणोकरो । पढोपंडितगुरुपासोरे॥४॥ जिणदिन पंचमीतपकरो । तिणदिन आरंजटालोरे ॥ पंचमी स्तवनथुईकहो । ब्रह्मचारिज पिणपालोरे ॥ ५ ॥ पंचमास लघुपंचमी । जावजीव उत्कृष्टीरे ॥ पांचवरसपंचमासनी । पंचमी करो शुजदृष्टिरे ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

हिव जवियणरे पंचमीऊजमणोसुणो । घरसारूरे वारूधन-खरचोघणो ॥ एअवसररे आवंतांवलि दोहिलो । पुण्यजोगेरे धनपामंतांसोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धनपामंतां पण धर्मकाजकिहांवली । पंचमीदिन गुरुपास आवी कीजियें काउसग्गरली ॥ त्रणज्ञान दरसन चरणटीकीदेइ पुस्तकपूजियें । आपनापहिलीपूजकेशरसुगुरुसेवा कीजियें ॥१॥ढाल॥सिद्धांतनी रेपांचपरतवीटांगणा । पांचपूठारे मुखमल सूत्र प्रमुखतणा ॥ पांच-डोरारे लेखण पांचमजीसणा । वासकूंपारे कांबीवारू वरतणा॥ उल्लालो ॥ वरतणावारू वलीय कमली पांचझिलमिल अति-जली । स्थापनाचारिज पांचठवणी मुहपत्तीपरूपाटली ॥ पट-सूत्रपाटी पंचकोथल पंचनवकरवालियां । इणपरेंश्रावककरे पांच-मीऊजमणुंउजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलिदेहरेरे स्नात्रमहो-त्सवकीजियें ॥ घरसारूरे दान वलितिहांदीजियें ॥ प्रतिमाजी-नेरे आगलढोवणुंढोइयें । पूजानारेजेजेउपगरणजोइयें॥उल्लालो॥ जोइयेंउपगरण देवपूजा काचकलश भृंगारए । आरतिमंगल थालदीवो धूपधाणुंसारए ॥ घनसार केशर अगर सूकड अंगलूहणादीसए । पंचपंचसघली वस्तुढोवो सगतिशुंपचवी-

शए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमीतारे साहम्मीसर्वजिमाम्रियें । रात्रिजोगेंरेगीतरसालगवाम्रियें ॥ इणकरणीरे करतां ज्ञानआराधियें । ज्ञानदरिसणरे उत्तम मारगसाधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियेंमारग एहकरणीज्ञानलहियें निरमलो । सुरलोकनें नरलोकमांहिज्ञानवंतते आगलो ॥ अनुक्रमेंकेवलज्ञानपामी सासतासुख जेलहे । जेकरे पंचमीतपअखंमित वीरजिनवरइमकहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ इम पंचमीतपफलप्ररूपक वर्द्धमानजिनेसरो ॥ में थूएयो श्रीअरिहंतजगवंत । अतुलबलअलवेसरो ॥ जयवंतश्रीजिनचंदसूरिज सकलचंदनमंसियो ॥ वाचनाचारिजसमयसुंदर जक्ति जावप्रशंसियो ।वारि जक्तिजाव प्रशंसियो ॥ २४ ॥ इतिपंचमीवृध्दस्तवनं संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टकं लिख्यते ॥

श्रीइंद्रजूतिं वसुजूतिपुत्रं । पृथ्वीजवं गौतमगोत्ररत्नं ॥ स्तुवंति देवासुरमानवेंद्राः । स गौतमो यछतु वांछितंमे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य । मुहूर्त्तमात्रेण कृतानि येन ॥ अंगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥२॥ श्रीवीरनाथेन पुराप्रणीतं । मंत्रं महानंदसुखाय यस्य ॥ ध्यायंत्यमी सूरिवराः समग्राः । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ ३ ॥ यस्याजिधानं मुनयोपि सर्वे । गृण्हंति जिक्षाज्रमणस्य काले ॥ मिष्टान्नपानांबरपूर्णकामाः । स गौतमो यछतु वांछित मे ॥ ४ ॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या । ययौ जिनानां पदवंदनाय ॥ निशम्य तीर्थातिशयं सुरेज्यः । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ ५ ॥ त्रिपंचसंख्याशततापसानां । तपःकृपानामपुनर्जवाय ॥

अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥६॥ सदक्षणं भोजनमेव देयं । साधर्मिकं संघसपर्ययेव ॥ केवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां । सगौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ ७ ॥ शिवंगते भर्त्तरिवीरनाथे । युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा ॥ पट्टाभिषेको- विदधे सुरेंद्रैः । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥८॥ श्रीगौतमस्या- ष्टकमादरेण प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये ॥ पठंति ते सूरिपदं सदै- वानंदं लभंते नितरां क्रमेण ॥ ९ ॥ इतिश्रीगौतमस्याष्टकम् ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिंतामणीयते ॐ ह्रीँ धर णेंद्रवैरोव्या पद्मादेवीयुतायते ॥ १ ॥ शांतितुष्टि महापुष्टि, धृतिकीर्तिविधायिने, ॐ ह्रीँ दुष्टव्यालवेत्तालसर्वाधिव्याधि- नाशने ॥२॥जयाजिताख्या विजयाख्या पराजितयान्विते, दिक्- पालैः ग्रहैर्यक्षै, विंद्यादेवीभिरन्विते ॥ ३ ॥ ॐ असि आउसाय, नमः त्रैलोक्यनाथतां, चतुषष्टि सुरेंद्रास्ते, भासंते छत्रचामरैः ॥ ४ ॥ श्रीसंखेश्वरमंरून पार्श्वजिनप्रणत कल्पतरु कल्पः, चूरयविघ्नव्रातं, पूरय मे वांछितं नाथ ॥ ५ ॥ इति त्रयोविंश- तिजिनस्तोत्रम् ॥

॥ अथ पंचषष्टियंत्रगर्भित श्रीचतुर्विंशति जिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ आदौ नेमिजिनं स्तौमि । संभवं सुविधिंस्तथा ॥ धर्मनाथं महादेवं । शांतिं शांतिकरं सदा ॥ १॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या ने- मिनाथं जिनोत्तमं ॥ अजितं जितकंदर्प्प । चंद्रं चंद्रसमप्रभं ॥ २ ॥ आदिनाथं महादेवं । सुपार्श्वं विमलं जिनं ॥ मल्लिनाथं गुणोपेतं धनुषां पंचविंशति ॥ ३ ॥ अरनाथं महावीरं । सुमतिं

चजगद्गुरुं ॥ श्रीपद्मप्रजनामानं । वासुपूज्यं सुरैर्नतं ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके । श्रेयांसं श्रेयसे सदा ॥ कुंथुनाथं च वामेयं । श्रीअजिनंदनं विजुं ॥ ५ ॥ जिनानां नामजिर्बद्धः पंचषष्टिसमुद्भवः ॥ यंत्रोयं राजते यत्र । तत्र सौख्यं निरंतरं ॥६॥ यस्मिन् गृहे महाजक्त्या । यंत्रोयं पूज्यते बुधैः ॥ जूतप्रेतपि- शाचादि । जयं तत्र नविद्यते ॥ ७ ॥ सकलगुणनिधानं यंत्रमेनं विशुद्धं ॥ हृदयकमलकोशे धीमतां ध्येयरूपं । जय तिलकगुरोः श्रीसूरिराजस्य शिष्यो, वदति सुखनिदानं मोहलक्ष्मीनिवासं ॥ ८ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनानां अष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ अथ आत्मरक्षास्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ परमेष्ठिनमस्कारं । सारं नवपदात्मकं ॥ आत्मरक्षाकरं वज्र । पंजराजं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐनमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसि स्थितं । ॐनमो सबसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐनमो आयरिआणं । अंगरक्षातिशायिनी ॥ ॐनमो उवज्झायाणं । आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐनमो लोएसब- साहूणं । मोचके पादयोः शुजे ॥ एसोपंचनमुक्कारो शिलावज्र- मही तले ॥ ४ ॥ सबपावप्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहि ॥ मंगलाणंचसबेसिं । खादिरंगारखातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं । पढमंहवइमंगलं ॥ वप्रोपरिवज्रमयं पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रजावारक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशनी ॥ परमेष्ठि- पदोद्भूता, कथितापूर्वसूरिजिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्ठिपदैःसदा ॥ तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षास्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्री थंभणापार्श्वनाथजीनो स्त० लि० ॥ ढाल ॥

प्रभु प्रणमुंरे पासजिनेसरथंभणो । गुणगाइवारे मुझमन-
कलट अतिघणो । ज्ञानिविणरे एहनी आदिनकोलहै । तोहि-
पिणरे गीतारथगुरु इमकहै । त्रूटक ॥ इमकहे शास्त्रतणे
प्रमाणे रामदशरथनंदनें । बांधवापाजे सीतकाजे समुद्रतट एकण-
वने । तिहांरह्या बांधव रामलछमणसाथिसेना अतिघणी । प्रासाद
एक उत्तम तोरण थापना जिनवरतणी । ढाल तिहांमूरतिरे मूल-
गुंभारेपासनी । मनवंछितरे आसापूरे आसनी रामराजारे दिन
प्रतिपूजासाचवे । करजोडिरे बे बांधव इमवीनवे ऋ०वीनवेस्वामी
तुह्म प्रसादे जलथि जलथंभेकिमें । तोपाजबांधुं लंकसाधुं इमकही
प्रभु पायनामें । बहुपूज करतां ध्यान धरतां सातमासगया जिसे ।
नव दिवसअधिकाथया ऊपरिजललिजलथंभ्यो तिसे २॥ ढाल॥

ए अतिशयरे अचरिजपेख्यो प्रभुतणो । तिणकारणरे नाम-
दीयो तसुथंभणो । जलऊपरिरे पाजकरीपत्थरतणी, गढलंकारे
साधेवा सीताभणी ॥ त्रूटक गढलंकसाधी सीतआणी तेण
वनआव्यावली । दिनआठअठाइमहोछवकीया मनपूगी रली ।
श्रीरामराजा शुद्धश्रावक विनीतानगरीवसे । वीशमाजिनवर
तणेंवारे इमथया गुरूउपदिसे ॥ ३ ॥ ढाल ॥ इणअनुक्रमरे
केतलोकालगयोवही । ते प्रतिमारे तिणवनमें निश्चलरही ।
इणअवसररे इंद्रतणेंआएसकरी । सायरतटरे सोवनमेद्वारापुरी ।
त्रुटक द्वारिकानगरी कृष्णराजा अर्द्धभरततणोधणी । तिहांवसै
यादवकोडिछप्पन वहै आग्या जिणतणी । तिण काल तिणवन
तेह तीरथतेहनीमहिमासुणी । सारंगपाणी भावआणी आव्या-

तिहां यात्राजणी ॥ ४ ॥ ढाल २ जी ॥ आव्योतिहां नरहरि जिणहरमनउल्लास । मनमेंआणंदे वंदे थंभणपास । पेखेअतिनव-लीपूजाप्रभुजीनेंदेह । एकेणेंकीधी इममनथयो संदेह । संदेहथयो अटवीचिहुंपासे नहीं मानवसंचार । केणकरी विद्याधर सुर-वर पूजासतर प्रकार । इसोविमासी मंडपअंतर रह्याजुं गुपतेठाम । मध्यरातपातालेआवीवासग विसहरसाम ॥५॥ तिहांआवी प्रणमें वैनाटिकआदेस । मिलिनागकुंमारी विरचेअदभुतवेस । शक्रस्तवपभणें जाण्याश्रावकएह । हरिप्रगव्यो ततखिण साहमीतणेससनेह ॥ ससनेहवासग कृष्णनरेसर बेठा बिंबवखाणे । ए श्रीजिणवरपासजिणेसरआदि न कोई जाणे । असीसहसवरससो मेपूज्या जेहुंतापायाले । धरण एक प्रासाद-कराव्यौ आप्याएहजिनालै ॥ ६ ॥ सहुवातकहीनें वासगग-योपायाले । श्रीकृष्णनरेसरमनचिंते ततकालै ॥ जो एहवो तीरथ हुवेद्वारिकामझार । तोजाणुं नरभवसफलथयोअवतार । सफलजनमकरिवानेंकाजे तेह बिंब तिहांआणे । श्रीद्वारिका-हेममें जिणवरआप्याप्रगट प्रमाणे । घणे कालपूजा तिहांपामी करमनिकाचितजाणी । श्रावकनेंसुपनांतरआवी देववदेइमवाणी ॥ ७ ॥ प्रभु प्रतिमा वाहणलेइ समुद्रमझारि । मुंके ज्योनगरी आस्ये अवरप्रकार । तिणसागर अंतर कालगयो बहुजाम । दक्खिण दिसिउत्तम कुंतीनगरीठाम । कुंतीनगरीजैनवसै जिहां श्रावकसागरदत्त । वाहणसातवहैव्यापारे पोते परबलवित्त । अन्यदिवससायरविचवहतां । जिहां छे थंभणपाश । ऊपरि आव्या थंन्याबाहण ते सविथयाउदास ॥ ८ ॥ ढाल ३ जी ॥

मासदिवसवाणीथई अंबरसुरराय । प्रतिमायंजणपासनी सायर-
जलमांय । सुरप्रगव्यो जिणसासणें ॥ सुरकहेवाणी एहप्रतिमा
जावसुं प्रगटकरो । जई जैनकुंतीनगरीजिणहर मूलनायक-
एहधरो । तेबिंबकुंतीमांहिंथाप्यो कहैवहु श्रावकतिहां । ए
सकलतीरथनाथ समरथ पुन्यजोगमिल्यो इहां ॥ ए ॥ इणिअ-
वसर दसजरपुरे पालित्तइसूर । विद्यावल अंबर जमें अतिसब-
जरपूर । तीरथजायजिणहरनमें । ते नमें सेत्रुंजप्रमुखगिरिवर
सदा पाखीपारणें, पालीयतांणें रह्यां थाणें नागारजुनजोगीपणें
ते धातुसोवनकाजधमतां मासछे रसकरे । करिकोप जैरववीर
नाखे रूपपंखीनो घरे ॥ १० ॥ तिण पालत्ते सूरिनें जाण्यो
एहमहंत । पूछे को सुरदाखवो अतिसयगुणवंत । कृपाकरी मुज
जाखवो। गुरु तेह जाखेजेह, थंजे जपद्रव सुरनरतणों। तिण कह्यो
कुंतीनें प्रसादें पासछे प्रजुथंजणों । कुणयद्द वीरवेताल्यंतर
सहू तसु सेवाकरे । तेहनीदृष्टे साधविद्या जेमतुमबंछित सरे
॥ ११ ॥ विद्यापिणआकर्षणी । हुंती जोगीनेंपास । ते प्रतिमा
आणीतिहां थापी निजआवास । सोवनरससीधो जिहां
रस तिहां सीधो सुजस लीधो नदी सेढीनें तटे। गुरुनें जणाव्यो
तिणाकहाव्यो बिंबजंरूाख्योघटे । इणकाल धरमसुथानथोरु
हुसीमलेछाइणइहां । खाखरातले सेढिकातीरे । बिंबजंरूाख्यो
तिहां ॥ १२ ॥ ढाल ४ थी ॥ मेघआगमसही नदीकलटिवहे
वेलुकाबिंबऊपरवलैए । तेणजुंइधणचरे खीर सुरहीझरे चीक
णीजूमि खाखरतले ए । केतलादिनपछे सुगुरुखरतरगछे
श्रीअजयदेवसूरी सरूए । षटविगयपरिहरी उग्रतपआदरी

रगत्तपित्ती थयामुनिवरूए । तेरगत्तपित्तीगलतकाया चित्तमें-
चिंताकरे । अधरात सासणदेवीआवी कोकफा नवकरधरे । ए
सूत्रतूं सुलझाइसुपरे ताम गुरुजंपेइसो । जोथायसी मुझ नीरो-
गकाया तो सही उखेलसुं ॥ १३ ॥ तामदेवीकहै नदीय सेढी-
वहै । तैणतट वृक्षखाखरतलेए । तिहां तुह्मेजाइवो तवनकरिवो
नवो प्रगटथासी प्रभुथंभणोए । तेहनें स्नात्रजले रोगसवि
जायटले । इमकहीयगई सासणसुरीए । संघसगलोमिली तिहां
जाइमनरली । ताम धरणिंदध्यानें धरीए । तिहांकरी जयति-
हुअणबत्तीसीपासप्रगट्यातततखिणें । तसु सनात्रनीरे सुख-
सरीरे धन्यधन्य सहुकोभणें ॥ तिहां थानथाप्यो सुजस-
व्याप्यो थयो परचोअतिघणो । तेहनेंनामें तेणठामें गामवास्यो-
थंभणो ॥ १४ ॥ थईयमहिमा घणी पाशथंभणतणी सुगुरुकाया
नवपल्लवीए । संघआवेघणा करेवधावणा महियलकीरतवि-
स्तरीए । सुपनजे देवता कोकफानवहुतासूत्रते सूत्रसिद्धांतनामें ।
वृत्ति नव अंगनी भेदनवभंगनी रची आचारज तेणठामें । ते तेण
ठामें सहुयपामें आसकरजोआवए।बहुभावभत्ते एकचित्ते सेवतां
सुखपावए। एकदागुरु धरणिंदध्यानें प्रगटथई पदमावती। श्रीअ-
भयदेवसुरिंदआगलि । इम कहै सांभलयती॥१५॥स्तबन जे तुह्म-
कस्यो मंत्रअतिशयभस्यो अंतितसु गाहाजे बेकहीए । तेहगुणीये
जिहां इंद्रआवे तिहां कष्ट विणतेह गुणविनहीए तेह भंभारवीका-
जसंभारवी । अवरइण तवन महिमाघणीए । समरतां संपदा रोग-
नावे कदा सदा आवश्यक धुरिभणीए । पडिक्कमणा नितभणेंधु-
रि एहविधिखरतरतणीए। इमकही सासणिदेवसामणि गई निज

थानकन्नणीए । केतले दिवसे देसगुज्जर सयलमलेच्छायण थयो । न्नलो गामजाणी बिंबआंणी । नयरश्रीखंन्नायते ठव्यो ॥ १६ ॥ खंन्ननयर सिरिपासजिणेसरू । दिनदिन दीपे अतीअलवेसरू । जात्रकरेवा मुऊहुंतीरली । प्रन्नुमें न्नेट्यो आससहूफली । मुऊआस सफली थईयसांमी जाम न्नेट्याजगपती। सोन्नागसुंदर करोवन्नति करुं एतीवीनती । अश्वसेन वामादेवीअंगजध्यानमनतोराधरुं । करिकृपा सामी सीसनामी सदा तुह्मसेवाकरुं ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम स्तव्यो थंन्नणपाससामी नगरश्रीखंन्नाइतै । जिम सुगुरुश्री मुखसुणीवांणी सास्त्रआगमसंमते । ए आदिमूरति सकल सूरति सेवतां सुखसंपए । मनन्नावआणी लान्नजाणी कुशल लान्नपयंपए ॥ १८ ॥ इतिश्रीथंन्नणपार्श्वनाथजीरो स्तवन संपूर्णम् ॥ * ॥

॥ अथ अष्टभयनिवारणछंदलिख्यते ॥

॥ ॥ दुहा ॥ सरसवचनदे सरसती ॥ एहअरज अवधार ॥ प्रारथियापहरूंनहीं ॥ उत्तमएआचार ॥ १ ॥ हितकरजे मोसुंहिवे ॥ दीजेवयणदुरस्स ॥ कवियणपिण गुणनेंकहे ॥ सखरो घणुंसरस्स ॥ २ ॥ गुणगिरुउं गौडी धणी, पारसनाथप्रगट्ट ॥ मनसुद्धे मोटांतणां ॥ गुणगातां गहगट्ट ॥ ३ ॥ छंद नाराच ॥ ॥ प्रसिद्धिबुद्धिसिद्धिनिद्धि रिद्धि वृद्धिपूरए ॥ कलत्तपुत्त कित्तिवित्ति वद्धतेसनूरये ॥ वियोगसोगरोगलोग विग्घसिग्घघायकं ॥ प्रगट्टदेव नित्तमेव सेवो पासनायकं ॥ ४ ॥ गुमांनमोड हत्थजोडदेवकोडिवग्गये ॥ अनूपरूपचूंपधारिआइपायलग्गये ॥ पहुबहु सुकित्तनित्त सब्बसोन्नलायकं ॥ प्र० ॥ ५ ॥

कुबोहलोह छोहकोहमोहमाणवज्जियं ॥ अनंतकांत शांतदांत रूपमैण लज्जियं ॥ अशेष शुद्धतत्तजुत्तसोजयेअमायकं ॥प्र०॥६॥ विसालभालसुबिसाल अद्धचंदछज्जियं ॥ रत्तहथ्थीरिसाइ जाण-एथ आइरज्जियं । सुनैणकंद गंधकांतकार्ज जोरा रायकं ॥प्र०॥७॥ कपूरपूर कस्सतूरकुंकमातुरंगए । अरग्गजाअथग्गमें रहेगरक्क-अंगए । अछेहगेहदुत्तिदेह सव्वहीसुहायकं ॥ प्र० ॥ ८ ॥ मृदं-गदोंदोंदों धप्पमप्प वजाये । नफेरजेरझल्लरी नीसाण मेघगज्जाए । तटक्कतांन थेई थेई लक्खसुक्खदायकं ॥ प्र० ॥ ए ॥ दुहा ॥ करि १ केहरि २ दव ३ कुद्धाहि ४ राकि ५ समुदह ६ रोग ७ अतिबंधण ८ जय अठ टले । सांमनांमसंयोग ॥ १० ॥ छंदभुजंगी ॥ हहुंरित्त ढाकोझुकंतोझुकोला । लपकैविलग्गीय-लीमाललोला । वलेटे वलाकावली सुंडदोला, झरेनिज्झरां जेममहैकपोला ॥ ११ ॥ पहुचालतो जाणपाहामतोला । झल-कैललकावतो लालडोला । इसौ दूठपूठै पडंताअकोला । जपं-तांकरे नांचिनीमातचौला ॥ १२ ॥ इतिहस्तिजयनिवारणं ॥ महा सहसीहं अबीहं अदंडं, जरेफाल आफालतो पुच्छफुंडं । डिगै फाडफाचौ वमंवज्जमुंडं । महातिख्खनक्खं रखेरोखछंडं ॥ १३ ॥ फुरक्कावतो मुंछ फाडंततुंडं । ललक्कंतलोलाविकट्टं विहंडं । धणीपासचौनाम ध्यानंधरंडं । टलेश्याल ज्युं सींह होएअहंडं ॥ १४ ॥ इतिसिंघजयनिवारणं ॥ जलांजंगलांमै जटाजूटजाला । घणांझाडझाडमै अग्गझाला । बहु मिग्गवग्गं पशुपंखिवाला । बलंताकमेडाचिडाजंतिजाला ॥ १५ ॥ धुबै धूमलग्गो कीयानग्गकाला, झलोझालरूंखै टह्या नांहिटाला ।

वर्मेसंकटे एणआयांविचाला । प्रभु नामनीरे बुझै तत्तकाला ॥ १६ ॥ इतिअग्निभयनिवारणं ॥ कलूकालरूपि महाविकरालं । फणाटोपरोपै महाकोप जालं । वलकैवलंतो चलंतोकरालं । जिणैंफूंकसूंकै तरुम्मालमालं ॥ १७ ॥ हलाहालसंलोलियं विक्खलालं । रहै लाललोचन्न दोजीहवालं । धरंताप्रभूनामरिहंविचालं । सही सावहोवै जिसीफुल्लमालं ॥ १८ ॥ इतिसर्पभयनिवारणं ॥ भिर्मेभूपभूपे अधिकेअटके । खलां हाकतूटै खग्गां षटकै । परांहैवरां पाकनाखैपटकै । धुरां सिंधुरांकंधरा भूधटकै ॥ १९ ॥ पर्मेप्राणसंधाणवांणेबटकै । हुकै केइ हाथालरोसेहटकै । झलाझालगोले हु नालैभटकै । तुटै तुंमुंडा प्रचंमातटकै ॥ २० ॥ ठठोहासलोहापमंता छिटकै । झुकैसूरझंझेड नांखैझटकै । प्रभुनामलेतांइ सही अटकै । कदे बालवांकौ नहोवैकटकै ॥ २१ ॥ इतियुद्धभयनिवारणं ॥ जतन्नेघणें कोइवैसेजिहांजै । अथग्गेजले आइकुवायवाजै । घटाटोप मेघाघमंतिगाजै । हुवकै तरंगा विरंगाहुवाजै ॥ २२ ॥ लिचापिच्चलागी झमीतालभाजै । अहोकोइराखैअठैअम्मकाजै । इसेसंकटे जेजपे जैन राजै । सही पारपामें तिके सुक्खसाजै ॥ २३ ॥ इतिजलभय निवारणं ॥ गमंगुंबमं गोलकंढीयहोमी । हरस्सं खसं छध्रसं गांठफोमी । टलेगोमथीकोढ अड्डाररोमी ॥ महातापसंतापआतंककोमी ॥ २४ ॥ नहोवैकदे कायमें कांइखोमी । सहुआधिव्याधि सही जाइछोमी । जिनंदं नमेंमन्नमैं मान मोमी । ग्रहै सो सदासुक्खसंपत्तिजोमी ॥ २५ ॥ इतिरोग भयनिवारणं ॥ अमुंछा बलेछा वलेमन्नखोटा । जियां चक्खुं चुंचीलुट्या गाल-

खोटा । वलेपाघवांकी लपेटालंगोटा । सहेव्यासह्यासवला हाथ-सोटा ॥ २६ ॥ दीयैंकोरमादेह दोलादवोटा । वदैवोलवांका फमेमतफोटा । पञ्याबंदिखांनैं महाऽुःखमोटा । प्रज्ञुनामथी वेग थायैविबूटा ॥ २७ ॥ इतिवंदिज्ञयनिवारणं ॥ नमंता जिणेसं सदामन्नरागै । सहीये महाऽुछ्ञयअछ्नागै । रली लोकलखं लुली पायलागै । दिसोदिस्समांहे । जसोजस्सजागै-॥ २८ ॥ कलश ॥ परतिखजिनवरपास । आस उल्लासहअ-प्पण । विविधजासगुणवाददासचा दालदकप्पण । चैणदैण जसुचरण । ईति अतिज्ञीतिनिवारण । लीललाछ लखगान विमलकीरत्ति वधारण । दिणपति जेम दीपंति ऽुति । विमल-चंदमुखछविकरण । दौलत्तिविजय हरखांदीयण । धरमसींह ध्यानहधरण ॥ २९ ॥ इति अष्टज्ञयनिवारणश्रीगौमीपार्श्वनाथजीकोछंद संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकीगगरनिसानि ॥

सरस्वतीमाता जगतविख्याता कवियणमातकहंदाहे, कास्मी-रांमंमण ऽुखविहंमण करवीणासोहंदाहे, सदगुरुगुणगाउं वंछितपाउं खरतरगच्छ सोहंदाहे, मंत्रि जिहहागर बुधनो आगर सदगुरु तात कहंदाहे, १ माताजैतश्री रंज्ञाजिसमि तस कुखे गुरु उपजंदाहे, संवततेरेसेवरसेतीसे जन्म्या सुषहो वंदाहे, सेंतालेवरसे दीक्षाहरसे गुरुजिनचंद दियंदाहे, सितो होतरेपाटे श्रीसंघथाटे धोंधोंढोलघुरंदाहे, २ नियासिवरसे सखरेदिवसे सुरगपुरीपोचंदाहे, पुनमसोमवारे हरखअपारे मेला खूबमिलंदाहे, घसकेसररोलि ज्ञरीकचोलिकस्तुरीचरचं-

दाहे, लोबानसिल्लारसअंबरअगरधूपसुगंध धुकंदाहे, ३ गुरुचरणे आवे पूजा रचावे मनवंछितसुखपावंदाहे, गुलाबचंमेलि राइवेलि गुरुचरणेचाढंदाहे, नारेल पतासा खुरमाखासा सिरणीयां वाटंदाहे नरनारीआवे बहुगुणगावे वीणाताल वाजंदाहे ४ वाजे मृदंगाँ जुगलजंजा जेरी डुकरूघुरंदाहे, नाचेतिहां पातर आवे जातर मुनिवरबहोतमिलंदाहे, सहुमनसापूरे नवलेनूरे एकमनाध्यावंदाहे, मांगेसोपावे मनमेध्यावे आसातासपूरंदाहे ५ पुरपट्टणगामे बहुते गामे थुंजजलागाजंदाहे, देरावलदीपे डुस्मनजीपे जूनापिठकहंदाहे, मुनतानमरोटे सोहेकोटे गुरुविकाणे गाजंदाहे, नागोरजोधांणे तिवरीआणे सोजत सुखदियंदाहे, ६ जेसांण वीलारू सुखदेसारे मेरूतेमनमोहंदाहे, जालोरखंजा, यत वरुिविगायत सदगुरुनितसोहंदाहे, पाटणनेसुरत बहुजनपूजत नित महिमाबाधंदाहे अहमदावादे श्रीसंघसाधे सदगुरुदरस दियंदाहे, ७ जुजनयरसाचोरे बहुतेजोरे उदेपुरे सोहंदाहे, इरूरगढमंरूण डुखविहंरूणसबजनमनमोहंदाहे, इत्यादिक गामे नवनवगामे देसपरदेस दिपंदाहे गुरुविषमीवाटे डुस्मनदाटे चोरधारू न लगंदाहे,८हस्तिमदमातानाहरचीता सींघस्यालहोवंदाहे, ८पासांजलपावे डुरितगमावे अपणा विरुदवहंदाहे, आपे निरधनियां बहुतखिलमियां मणिमाणक दियंदाहे, अपुत्यांपूतदिएघरसूतसद्गुरुदरसदियंदाहे, ए इम एकणजिहां कहुं गुणकेहां पारनकोपावंदाहे,संवतअढारेसे वरसपेतीसे जेठमासजाणंदाहे सातमउजवाखीसोम सवारी दोखतजतीकहंदाहे, सदगुरुसुपसायां

एगुणगायां कोटमरोटवसंदाहे, नरनारीगावे वंछितगावे ऋद्धि-सिधिनितवाधंदाहे, १० इति दादाजीगगरनिसानी संपूर्णम् ॥

॥ इग्यारसनो दोयढालनोस्तवन लि० ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्तिश्रीमंगलकरण । हरणतापजिणचंद । वीर-जिनेंददिनेंदसम । प्रणमुंधरिआनंद १ गौतमआदिगणधरा । श्रुतकेवलि सुविहाण । त्रिकरणयोगेवंदता । पामेकोरूकल्याण २ एकादशी तिथि वर्णवुं । शास्त्रतणै अनुसार । विधिपूर्वक आराधतां । पामेजवनोपार ३ ढालपहली पणियारी नी ॥ नेमिजिनेसरउपदिशै, सुखकारिरेलोय सांजले कृष्णराजान वालाहो द्वारिकानगरीसमवसख्या सु० रेवताचलउद्यान वा० ४ ॥ पर्वाराधन फलकह्यो सु० सांजलेपरषदा वार वा० पर्युष-णचउमासाजला सु० नवपद उंलीसार वा० ५ ॥ पंचमी बीज आठमकही ॥ सु० ॥ जिनकल्याणकजाण ॥ वा० ॥ एकादशी इमजाणियै ॥ सु० ॥ पर्वाधिकमनआण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मग-सरसुदिएकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमाहिश्रीकार ॥ वा० ॥ अरना-थदीक्षामही ॥ सु० ॥ पाम्याजवनोपार ॥ वा० ॥ ७ ॥ मल्लि-जन्मसंजमलियो ॥ सु० ॥ पाम्योकेवलज्ञान ॥ वा० ॥ नमि-नाथनेऊपनो ॥ सु० ॥ केवलनाण प्रधान ॥ वा० ॥ ८ ॥ पांचक-ल्याणकअतिजला ॥ सु० ॥ थया इणजरतमकार ॥ वा० ॥ तिमहिज ऐरवतखेत्रमां ॥ सु० ॥ जाखेजगदाधार ॥ वा० ॥ ९ ॥ पांचजरत ऐरवतवलि ॥ सु० ॥ पांचकल्याणकजाण ॥ वा० ॥ दशखेत्रना इमजाणियै ॥ सु० ॥ पचाशकल्याणकआण ॥ वा० ॥ १० ॥ तीनकालगिणतांथकां ॥ सु० ॥ दोढसै कल्याणक

आय ॥ वा० ॥ तिथीमांहि सिरोमणी ॥ सु० ॥ इग्यारससुखदाय ॥ वा० ॥ ११ ॥ अनंतकल्याणकइणपरे ॥ सु० ॥ अनंतचोवीसीजोय ॥ वा० ॥ मौनकरीआराधिये ॥ सु० ॥ एहथी सिवसुखहोय वाला० ॥ १२ ॥ चोविहारउपवासथी ॥ सु० ॥ पोसहकरिनेसार ॥ वा० ॥ सुगुरुचरणसेविकरी ॥ सु० ॥ काउसग्गदिलधार ॥ वा० ॥ १३ ॥ मोनकरीमल्लिनाथजी ॥ सु० ॥ एकदिवस सुखकार ॥ वा० ॥ मौनप्रथा इणपरिथइ ॥ सु० ॥ लह्यो केवलश्रीकार ॥ वा० ॥ १४ ॥ (ढाल बीजी) माता त्रिशला झुलावे पुत्रपालणे ॥ ए देशी सुखकर देवनिरंजननेमजिनंद इमउपदिसै ॥ ए आंकणी ॥ नविजन नावधरिने सांजले श्रीजिनवाण । अमीरसवयणे श्रवणअंजलीजरपीवतां, एतोजायै नव नवनिर्मितकर्मनिवाण ॥ सुख० ॥ १५ ॥ नवियण अंगइग्यारेआराधवा तपविधि एकही, जेहथीपामे अनुपम महिमा अतुलअपार, वरसइग्यारेने मासएकादश तपकरो, संपूरणतपहुवा होवे मंगलकार ॥ सु० ॥ १६ ॥ न० ॥ अंग अग्यारे लिखावे सुवरणअक्षरे पुस्तकपूठाठवणीनवकरवाली सार, कवली झिलमिल पाटीने वलि पाटली, वीटणामखमलरेसम वरतणा मनुहार ॥ सु० ॥ १७ ॥ न० ॥ झोराखेखण झाबी वासकूंपावलि कोथली, बटवा मिजासणाने चंदरवा अधिकार, पूठीया चोपरू रुमाल नानाजातिना, पाटा पाटलाने त्रिगझोरचै सुखकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ न० ॥ केसर सूखरू खसकूचीने वाटकी, प्यालाने कलसा अंगलूहणादिखधार, चामर छत्र त्रयने आनूषण रलेजड्या, रचियै, वासखेपा-

दिपूजा विविधिप्रकार ॥ सु० ॥ १ए॥ ज० ॥ देवपूजा तिमगुरुपूजा विधिआदरो, करियै साहमीवछल धरियैजावविसाल, रात्रिजागोकरिजिनगुणगावैप्रीतसुं, अधिकोंधनखरचीने लहिये रंगरसाल ॥ सु० ॥२०॥ ज० ॥ इग्यारसनो तपसेवो जविजावसुं, सुव्रतसेठै पौषधथीचितलाय, चौरअग्नीना उपद्रवथी ते कगर्यो, एतिथी सेव्यांशिवमारगमांसुखेजवाय ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इम नेमिजिनवर स्यामसुखकर सिवादेवीनंदनो । एकादशीतप फलप्रकास्यो जविकजन आनंदनो, सर, नय निधि, जूविक्रमवरसैपोषवदिएकादशी, जिनकृपाचंद्रसूरिपजणैं सुगुरुसेवोउल्लसी ॥ सु० ॥ २२ ॥ इति इग्यारसवृद्ध स्तवनम् ॥

॥ अथ नवपदवृद्धस्तवनं ॥

(डुहा) अरिहंतादिकपदतणो । ध्यानधरि मनमांहि, सिद्धचक्रगुणवरणवु, त्रिकरणधरिउछाहि ॥ १ ॥ राजग्रही नयरीजली । समवसर्यागणधार ॥ सिद्धचक्रगुणवरणव्या ते सुणजोअधिकार ॥ २ ॥ (ढाल पहली) जगजीवन जगबालहो ॥ एदेशी श्रीगौतमगणेसरु । पजणेजवि सुखकारलालरे । श्रेणिकपमुहासांजले । उत्तमधर्मविचार ला० श्री० ॥ ३ ॥ डुर्लजमानुष्यजवलही । सेवोश्रीजिनधर्म ला० दानादिकचउजेदथी । आराधिलहोशर्म ला० श्री० ॥ ४ ॥ जावविना जे दानछे । सिवसुखतेहथी न थाय ला० सील ते निष्फलोकमां, जावविनाकहिवाय ला० श्री० ॥ ५ ॥ जाववीहूणोतपसही । जवविस्थारणहेतु ला० दानादिक जावेमिल्या । जवसायरनासेतु ला० श्री० ॥ ६ ॥ जावमनो विषयिकह्यो, साखं-

वन मनआण ला० आलंबन बहु जातिना। नवपदमनमाआण ला० श्री० ॥७॥ अरिहंत सिद्ध आचारज। उवज्झाय साधुवखाण लालरे दर्शन ज्ञान चारित्रवलि। तप ए नवपदजाण ला० श्री० ॥८॥ढाल दूसरी ॥ जरतरीनी ॥ देशी ॥ नवपद्ध्यावो जविजना। त्रिकरण करिइकतारजी ॥ गौतमस्वामिउपदिसै, श्रेणिकनरपति-सारजी ॥ न०॥९॥ अगारदोष दूरेटल्या। केवल ज्ञानप्रकाशजी ॥ देवदानवपति प्रणमता। प्रगटकरे तत्वखासजी न० ॥१०॥ एवा श्रीअरिहंतने। ध्यावोचतुरसुजाणजी ॥ जावसहित आराधतां। सिवसुखलहोमहिराण जी न० ॥ ११ ॥ पनरजेदप्रसिद्ध ले। कर्मरहितसुखदायजी ॥ सिद्धअनंतचतुष्कता। ध्यावोसिद्धल-यलायजी न० ॥ १२ ॥ पंचाचारने पालता, परउपगारप्रधा-नजी ॥ शुद्धसिद्धांतवखाणता, आचारजश्रुतखानजी न० ॥१३॥ गणतृप्तिकरता जला। सूत्रअर्थनो दानजी। शिष्यादिकने-आपता, नमोउवझायसुजानजी ॥ १४ ॥ कर्मजूमिमांविचरता। रत्नत्रयनाधारजी ॥ सुमति गुपतिमुनिपालता। निकषाया-सुविचारजी न० ॥ १५ ॥ जिनप्रणीतजे सास्त्रमां। तत्वसद्दह-णस्वरूपजी ॥ दरशनरयणप्रदीपने। धारोचितमांअनूपजी न० ॥ १६ ॥ जीवादिक पदार्थनो, बोधस्वरूपविचारजी ॥ विनय-करिसीखोसदा। नाणले सर्वआधारजी न० ॥ १७ ॥ अशुज-क्रियानोत्यागले। सुजकिरिया अप्रमादजी ॥ उत्तरगुणनिरु-पथी। लहोचरणनो स्वादजी न० ॥ १८ ॥ सघनकरमतमह-रणकुं। जानुसमोतप जाणजी ॥ कषायरहितबारजेदले। तप-पदमनमांआणजी न० ॥ १९ ॥ (ढाल) ३ जी कपूरहुवे

अतिउजलोजी ए देशी । एनवपदजिनधर्मनोजी, सारजूतक-हिवाय, सिवसुखनो कारकसहीजी, आराधोगुरुसहाय, जवि-कजन सेवोजिनउपदेश, पजणे प्रथमगणेश ज० से० ॥ २० ॥ ए नवपदथी नीपजैजी, सिद्धचक्रयंत्रराज ॥ आराधीने सुखल-ह्योजी, जिमश्रीपालमहाराज ज० से० ॥ २१ ॥ तबपूछे मग-धेसरुजी, कुणश्रीपालनरेश, किमआराधिसुखपामीयोजी, करु, णाकरो गणेश ज० से० ॥ २२ ॥ गौतमस्वामिउपदिशेजी-निसुणो श्रेणिकराजान, चंपानगरीनोराजीयोजो, श्रीपालनामसु-जाण ज० से० ॥ २३ ॥ उंबररोगेपीमीयोजी, परणिराजकुमारि, उजायणीमाजूहारियाजी, रीषजेश्वरमनुहार ज० से० ॥ २४ ॥ मुनिचंद्रगुरुउपदेशथीजी, आराध्यो सिद्धचक्र, रोगगयोबलिसु-खलह्योजी, संपदापामीजिमशक्र ज० से० ॥ २५ ॥ नव पदउलीआंबिलतणीजी, नवराणीनेसाथ, उजमणोपूरणहुवां-जी, करिखरच्यो घणोआथ ज० से० ॥ २६ ॥ नवपमिमादे-रासरुजी, नवजीरणउद्धार, पहिलोपदआराधियोजी, नवपू-जामनुहार ज० से० ॥ २७ ॥ इमनवपदविस्तारथीजी, पूजी-लह्योसुखसार, आयुपूरणकरिध्यानथीजी, नवमेस्वर्गअवतार ज० से० ॥ २८ ॥ इमश्रीपालनाजव थकीजी, नयमेजवसहुसार, निरुपमशिवसुखपामसेजी, कहेगौतमगणधार ज० से० ॥ २९ ॥ श्रेणिकसुणिहरखित थयोजी, प्रजुजीनावांद्यापाय । वीरजिने-सरइमजणेजी, सुणश्रेणिकनरराय ज० स० ॥ ३० ॥ एकएक पदआराधतांजी, केई पाम्याजवअंत, नवपदते निजआतमाजी, ध्याताध्येयलहंत ज० से० ॥ ३१ ॥ तीर्थंकरपदपामस्येजी,

सुंइणजरतमझार, इमसांजलिनृपआनंदियोजी, निज घरपो-
तोसुखकार ज० से० ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इमवीर जिनवर जुव-
नदिनयर नवपदमहिमावरणव्यो, सुरतवंदर रहि चोमासो
सिद्धचक्रगुणगणस्तव्यो, संवत उंगणीसै पचोत्तर आश्विनशु-
दिसातमदिने, जिनकृपाचंद्रसूरिपजणे वर्तोमंगल प्रतिदिने
॥ ३३ ॥ इतिनवपदवृद्धस्तवनम् ॥

॥ महावीरस्तवनं लिख्यते ॥

कर्मतणीकथनीरे कीहांजइनेकहुं ॥ ए देशी ॥ वीरजिने-
सरअलवेसरप्रजुसांजलो, सुनिजरधरिसेवकनी ए अरदासजो,
वालेसरविन केहनेकरीयेंवीनती, इमजाणीनें आव्योतुमारी-
पासजो ॥ वी० ॥ १ ॥ कालअनादि रुल्यो हुं संसारमां,
जवजवजमतां दुःखसह्याअपारजो । वीतरागतमें तारकजाणो-
तातजी, तोपणवीतकवातकहुं निरधारजो ॥ वी० ॥ २ ॥
कालअनंतरहियो सूक्ष्मनिगोदमां, व्यवहारेतरराशी दोयकहं-
तजो, श्वासोश्वासमांअधिकासतरेजवकर्या, इमकरते नविपाम्यो
जवनोअंतजो ॥ वी० ॥ ३ ॥ काललब्धिपामीने परित्तपणों-
लह्यो, पृथिव्यादिकव्यवहारमांआव्योतेणजो । कर्मउदयथी-
फरिपडियोनिगोदमां, पुद्गलपरियट्टअसंख्यरह्यो दुहेणजो
॥ वी० ॥ ४ ॥ व्यवहारराशिकहवाणों हुंतिहां, एजाणुं तुझ-
आगमथीजगताजतजो, एकेंद्रियमां वसतांकालघणो गयो, तेह-
नीकेटलीकहुं तुमआगलवातजो ॥ वी० ॥ ५ ॥ विकलेंद्रियनां
जवसंख्याता मैं कीया, दुःखतणो नहीआवे कहतापारजो,
पंचेंद्रियतिर्यंचपणों लहिनें प्रजो, जलथल खचरनाजवकर्या

दुखकारजो ॥ वी० ॥ ६ ॥ शीतताप जयजूखतृषासहीघणी, क्रूरकर्मकरी उपनोनरकमजार जो, छेदनजेदन ताडनतर्जनादिक सह्या, पर्माधर्म्यादि कृत कष्टअसारजो ॥ वी० ॥ ७ ॥ नरकथकी निकलीनेंतीर्यंच वलि थयो, अकामनिर्जराकरतां बहुली वारजो, देवगतिमां उपजी सुखलंपटथयो, तेथी सुकृतकीनों नहींलगारजो ॥ वी० ॥ ८ ॥ कर्मसंयोगे एकेंद्रियमांऊपनो, इमजवभ्रमण करंता अनंतावेसजो, जजतांक्रमथी मनुष्यपणोमैंपामियों, त्यांपण नलह्योधर्मतणोंलवलेशजो ॥ वी० ॥ ए ॥ इम जवनाटककरतांकालबहुगयो, पुन्यसंयोगेपाम्योप्रजु दीदारजो, स्वामीशासनलागोमुऊनेंमीठमो, हिवप्रजु करुणाकरीमुजकरोनिस्तारजो ॥ वी० ॥ १० ॥ तुम सरिखासाहिबनी सेवामैंलही, हिवप्रजुमुजनेंजाणों सेवकखासजो, तुमगुणजाणुं एटलीसुनिजरकीजीये कृपाचंद्रप्रजुपूरो मनमेनी आसजो ॥ वी० ॥ ११ ॥ गुर्जरदेशेपानसरे प्रजु जेटिया, वरषजगणीसे जगणोत्तरे शुजदीसजो, मौनइग्यारस मनमोहनप्रजुजीमिल्या, आनंददायकजयकारीजगदीश जो ॥ वी० ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ पंचमिकावृद्धस्तवनलिख्यते ॥

दुहा ॥ सिद्धारथकुलदिनमणि । त्रिसलादेवि सुजात ॥ वर्द्धमानजिनचंदकुं । नमनकरिपरजात ॥ १ ॥ गुरुदरियो जरियोगुणें । तरियोकिणविधिजाय ॥ बलिहारि गुरुदेवनी । मोमनरह्योलोजाय ॥ २ ॥ जिनवाणीपीयूषरस, पानकरो निशिदीश ॥ पांमोनाणसुहंकरु । जाखैजगनाईश ॥ ३ ॥ ढाल ॥ कपूरहुवे अतिऊजलोजी ॥ ए देशी ॥ ज्ञानआरोधो जविज-

नाजी । श्राणिजक्तिश्रपार, पांचज्ञानप्रगटायवाजी ॥ पंचमी-
सेवोउदाररे, प्राणि जिनवाणिमनश्राण श्रनुपमसुखनीखाणरे
॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ १ ॥ नाणबमो संसारमाजी, ज्ञानथीमुगति-
थाय, ज्ञानदीपकसमजाणियेजी, सर्वलोक प्रगटायरे ॥ प्रा०
॥ जिन० ॥ २ ॥ दिव्यज्ञान लोचनकह्योजी, लोकालोकदेखाय,
ज्ञानविनापशुसारिखोजी, जाणेनही नर कांयरे० ॥ प्रा० ॥जि०
॥ ३ ॥ ज्ञानश्राराधकसर्वथीजी ॥ किरियादेशविचार, जगव-
तिसूत्रमांजाखियोजी, श्राठमें शतकमझाररे ॥ प्रा० ॥ जि०
॥ ४ ॥ श्रज्ञानीकोमवरसमांजी, तपकरि निर्जराजेह, ज्ञानि-
स्वासोस्वासमांजी, कर्मक्षयकरेतेहरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥
ज्ञानतणो श्रधिकारछेजी नंदिसूत्रमझार, क्रियासहितज्ञानसुंद-
रुंजी, मोक्षतणोदातारर्रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिमसोनो
सुगंधथीजी रत्न मुंदमीयेजाण, संखसोहे दूधेजस्योजी, तिमकि-
रियायुत नाणरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ७ ॥ महानिसीथमाहेकह्योजी,
पंचमीविधिविस्तार, वीरजिनंदेदाखियोजी, सूत्रेश्रीगणधाररे
॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ८ ॥ (ढाल बीजी) सखि श्राजश्रनोपम-
दीवाली ॥ ए देशी ॥ ज्ञानश्राराधीसंपदासाधी, निजगुणनो
ए सुखकारी, सखिनाणसुहंकारगुणकारी ॥ ए ॥ पंचमीतपवि-
धियुत जवि करकै, नाणनेसेवोइकतारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १० ॥
मगसर माह फागुण वैसाखे, जेठ श्राषाढने दिलधारी ॥ स०
॥ ना० ॥ ११ ॥ एषट्मासे विधियुतलीजैं, शुजदिनगुरुमुख-
श्रीसारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १२ ॥ देववंदनदेहरासरकरिने,
पोथीपूजीसुविचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १३ ॥ गीतारथगुरुचर-

णनमीनें, नंदिविधिकरिहितकारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १४ ॥ गुरुमुखउपवास ज्ञावे करीने पमिकमिटाखो अतिचारि ॥ स० ॥ ना० ॥ १५ ॥ शास्त्रजणो श्रीसदगुरु पासै, पंचमीदिनआरंजटारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १६ ॥ पांचवरस पांचमासनेउत्कृष्ट, जावजीवकरेइकतारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १७ ॥ पांचमास लघुपंचमीकीजै, स्तवनथुइकहे ब्रह्मचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १८ ॥

(ढाल ३ जी) पहलो अंग सुहामणोरे ॥ ए देशी ॥ ज्ञाननमोगुण ज्ञविजनारे, नाणप्रकाशकजाणरे, सुगुणनर, पंचमीतपविधियुतकरीरे, लाल पामोअविचलनाणरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥ दोयज्ञेदे नाण जाणीयेरे, निश्चयने व्यवहाररे ॥ सु० ॥ त्रणअनुयोगव्यवहारमांरे ॥ ला० ॥ द्रव्यनिश्चयसुखकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २० ॥ पांचज्ञाननाज्ञेदछेरे, इकावनसुविशेषरे ॥ सु० ॥ ज्ञिन्नज्ञिन्न ते दाखव्यारे ॥ ला० ॥ तेहकहुं लवलेशरे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २१ ॥ मतिज्ञानना जाणियेरे, अठावीशप्रकाररे, ॥ सु० ॥ श्रुतना चवदेनेवीशछेरे, अक्षरादिकसुविचाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २२ ॥ अवधि छ असंखज्ञेदछेरे, मनपर्वयदुग जाणरे ॥ सु० ॥ लोकालोकप्रकाशकोरे ॥ ला० ॥ केवल मनमें आणरे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २३ ॥ तीतज्ञानप्रत्यक्षछेरे, देश सर्वसुजगीशरे ॥ सु० ॥ अवधि मनपर्य बलिरे ॥ ला० ॥ देशप्रत्यक्षकह्याईशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २४ ॥ केवलसर्वप्रत्यक्षनेरे, ध्यावोपरमपवित्ररे सु० ॥ दोयपरोक्षपिछाणियेरे ॥ ला० ॥ मतिश्रुतज्ञेदविचित्ररे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ च्यारज्ञान उप्पाकह्यारे श्रुतअनुयोगविचाररे सु० ॥ उद्देशादिकजाणियेरे, अनु-

योगद्वारमझाररे ॥ सु० ॥ज्ञा० ॥ २६ ॥ उपगारिश्रुतनाणथीरे, जाणेआजत्रिकालरे ॥ सु० ॥ परबोधक श्रुतसैवियेरे, सद्गु, रुचरणनिहालरे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ वायणप्रछनापरावर्त्तनारे- अनुपेहादिलधाररे ॥ सु० ॥ धर्मकथाकहीकीजीयेरे ॥ ला० ॥ सज्झायपांच प्रकाररे ॥ सु० ॥ज्ञा० ॥२८॥ अंगइग्यार बारउपां- गछेरे, दशपयन्ना नंदीशरे ॥ सु० ॥ छछेद चउमूल दिलधरोरे ॥ ला० ॥ अनुयोगद्वारपैतालीशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ गरवेनी स्वामीशरीरसोसाइगयो ॥ ए देशी ॥

ज्ञानभजो भविप्राणीया, वंछितफलदातार, ज्ञानी दीपकसमकह्यो, सूत्रेश्रीगणधार ॥ ज्ञा० ॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि, कल्पलता अनुकार, एहथी अधिकोजाणिये, महिमाअगमअ- पार ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ कालअनादिलगे भम्यो, मिथ्यामति भवमांय, सम्यगूज्ञान प्रगटेयदा, भवमें न रहाय ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ समकितगुणप्रगटायवा, त्रणकरण करेजीव, समकित- ज्ञानएकणसमे, लहेसुखअतीव ॥ ज्ञा० ॥ ३३ ॥ देशविरति, पामें तदा, पल्यपहुत्तस्थितिजाय, संख्यातसागर गयां चरणधर- ज्ञानादिकचितलाय ॥ ज्ञा० ॥ ३४ ॥ घातिकरमनो क्षयकरी, केवलज्ञानप्रकाश, भव्यकमलप्रतिबोधता, विचरे भगवंतखास ॥ ज्ञा० ॥ ३५ ॥ ज्ञानचरणदोयभेदछे, मुक्तिकारणजाण, तपसंजमबिहुंदाखिया, भावए मनमांआण ॥ ज्ञा० ॥३६॥ पांच- मिआराधनकरी, ज्ञानभगतिकरो सार। तपपूरणथयां कीजिये। उजमणो सुविचार ॥ ज्ञा० ॥ ३७ ॥ पांचपांचज्ञानादिना। उपगरण- करोसार धनखरचो शुभभावथी। लहो पुन्यसंभार ॥ ज्ञा० ॥३८॥

देवोदानसुपात्रने । साह्मी वछलसार ॥ जगतिकरोसाह्मीतणी । रात्रिजागोउदार ॥ ज्ञा० ॥ ३ए ॥ वरदत्तनेगुणमंजरी । ज्ञान आराधिने सुख ॥ पामी अविचलपदलह्या । मेटीने जव- ऽुःख ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश ॥ संवत् उगणीसै पिचत्तर पोषवदि एकमजलै । सुरतबंदरजविकसुखकरसीतलजिनसुपसाउलै । श्रीवीरजिनवर पंचमितपविधिप्रकाश्यो शुजमणे । सुविहित परंपरगछखरतरजिनकृपाचंडसूरिजणै ॥ ४१ ॥ इतिपांचम वृद्धस्तवनम् ॥

॥ अथ दीवालीको स्तवन लिख्यते ॥

ऽुहा ॥ वर्द्धमानजिनचंदकुं । नमनकरीकरजोरु । कल्याण- कविधिवर्णवुं । मानमांआणिकोरु ॥ १ ॥ वीरजिणंद दिणंद- सम समवसरयागुणखाण ॥ जव्यकमलप्रतिबोधता, त्रिजुव- नजनमहिराण ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयै ॥ ए देशी ॥

वर्द्धमानजिनराजजी । गुणगणअगमअपार ॥ चौवीशम जिनचंद । जगतसुहंकरु । सर्वजीवसुखकार ॥ व० ॥ ३ ॥ समकितपामीनेप्रजु । जवसत्तावीसकीधा । वीसथानक तप- सेवी जिननामबांधियो । स्वर्गतणा सुखलीधा ॥ व० ॥ ४ ॥ अषाढशुदिषष्ठिदिने । चविया स्वर्गथीसार । देवानंदाने उदरे उपन्या जगधणी । सहुजगमे हितकार ॥ व० ॥ ५ ॥ चउदे- सुपनानिशिलह्यां । उपनो हरखअपार । दिवसवैयांसीरह्या माहणअवतारमां । कर्मतणे अनुसार ॥ व० ॥ ६ ॥ इंद्रआ- देशथी आश्विन वदित्रयोदशीदीश । हरणेगमेसीसंक्रमणकरया

प्रभुजक्तिथी । त्रिशलाकूखैजगीश ॥ व० ॥ ७ ॥ चउदसुपनत्रिशला जुवै । कल्याणकफलएह । वृद्धिपाम्या नरेशर सर्वप्रकारथी । जाग्रतथयोअतिस्नेह ॥ व० ॥ ८ ॥ चैत्रशुदितेरस समे । जन्मथयो सुप्रसिद्ध । दिगकुंवरी तिहां ततक्षिणसूतिकारजकरे । इंद्रआवे बहुरिद्ध ॥ व० ॥ ए ॥ पंचरूपकरी प्रभुग्रही । मेरुशिखर लेजाय । चौसठ सुरपति आवि जनमोत्सवकरी । मातापासेठाय ॥ व० ॥ १० ॥ नंदीसरउछवकरी । देवगयानिजठाम । सर्वसंपदवधितेहथी प्रभुनोथापीयो । वर्धमानशुजनाम ॥ व० ॥ ११ ॥ सिद्धारथ राजाघरे । वरते मंगलमाल । इंद्राणि उठरंगरमाके प्रभुजणी । करतिरंगरसाल ॥ व० ॥ १२ ॥ आमलकी क्रीडाकरे । देवपरिक्षाकाज हारिगयो देवबालक प्रभु नामपामीयो । महावीर माहाराज ॥ व० ॥ १३ ॥ जोवनवयजिनराजजी । परण्यारमणि मनुहार संसारिकसुखजाणि कृत्रिमजगनाथजी । कृपाचंद्र सुखकार ॥ व० ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ ॥

तीसवरस घरमारह्या ॥ मनमोहनजी ॥ दीधो वरसीदानरे । जगसोहनजी । मातपिता स्वर्गेगया ॥ मन० ॥ प्रतिज्ञा पूरण जानरे ॥ जग० ॥ १५ ॥ च्यारनिकायना देवमलि ॥ मन० ॥ दीख्याउछवकीधरे ॥ जग० ॥ मिगसरवदिदशमीविभु ॥ मन० ॥ सुखकरसंजमलीधरे ॥ जग० ॥ १६ ॥ मनपर्यव ज्ञानऊपनो ॥ मन० ॥ चउनाणी जगवंतरे ॥ जग० ॥ एकाकी प्रभु विचरता ॥ मन० ॥ करुणानिधिबलवंतरे ॥ जग० ॥ १७ ॥ परिषहरिपुने जीतता ॥ मन० ॥ पराक्रमे

वरूवीररे ॥ जग० ॥ तपकरता अतिआकरो ॥ मन० ॥ पाम्यो-भवजलतीररे ॥ जग० ॥ १८ ॥ बारबरस छद्मस्थरह्या ॥ मन० ॥ ऊपर सार्ध छमासरे ॥ जग० ॥ वैशाखसुदिदशमीये ॥ मन० ॥ उपनो केवलखासरे ॥ जग० ॥ १९ ॥ लोकालोकनेजाणता ॥ मन० ॥ पावापुरि जिनराजरे ॥ जग० ॥ संघचतुर्विध थापिने ॥ मन० ॥ सीधासगलाकाजरे ॥ जग० ॥ २० ॥ समवसरणमांविराजता ॥ मन० ॥ परउपगारिमहंतरे ॥ जग० ॥ देशना देता भव्यने ॥ मन० ॥ प्रामकरे सुखसंतरे ॥ जग० ॥ २१ ॥ गौतमादिगणधरा ॥ मन० ॥ इग्यारह मनुहाररे ॥ जग० ॥ चउदसहस मुनिवरहुवा ॥ मन० ॥ श्रमणीछतीसहजाररे ॥ जग० ॥ २२ ॥ एकलाखगुणसठसहस ॥ मन० ॥ श्रावकनो परिवाररे ॥ जग० ॥ त्रणलाख अढारहजार ॥ मन० ॥ श्राविका सुविचार रे ॥ जग० ॥ २३ ॥ इत्यादिकपरिवारथी ॥ मन० ॥ परवरिया गुणसाररे ॥ जग० ॥ अंतिमचोमासो रह्या ॥ मन० ॥ पावापुरी मझाररे ॥ जग० ॥ २४ ॥ सोलपहर लगदेशना ॥ मन० ॥ दीधीपरउपगाररे ॥ जग० ॥ पुन्य पापलराजतणा ॥ मन० ॥ प्रश्नो उत्तरसाररे ॥ जग० ॥ २५ ॥ पंचमआरेना भावकह्या ॥ मन० ॥ सवजीवने हितकाररे ॥ जग० ॥ पुन्यपापना फलतणा ॥ मन० ॥ अध्ययन पचावनसाररे ॥ जग० ॥ २६ ॥ छत्रीशवलि उत्तर कह्या ॥ मन० ॥ मरुदेवीअधिकाररे ॥ जग० ॥ बहोतर वरसनो आवुखो ॥ मन० ॥ पूरणकरिहितकाररे ॥ जग० ॥ २७ ॥ कातिवदिअमावसै ॥ मन० ॥ मुगतिसिधाया वीररे ॥ जग० ॥ सादिअनंतस्थिति लही ॥ मन० ॥ तोड्या कर्मजंजीररे ॥

॥ जग० ॥ २८ ॥ कासीकोसलनाराजवी ॥ मन० ॥ पोसह-कस्यो सुखकाररे ॥ जग० ॥ नावउद्योतगयां थकां ॥ मन० ॥ रत्नमुंक्या सुविचाररे ॥ जग० ॥ २ए ॥ देव देवी आव्याघणा ॥ मन० ॥ प्रनुनीनक्तिविशेषरे ॥ जग० ॥ दीवालीथइलोकमा ॥ मन० ॥ लह्योगौतमज्ञान अशेष रे ॥ जग० ॥ ३० ॥ बीजने नाइजमाड्यो ॥ मन० ॥ नगनीये नाइबीजरे ॥ जग० ॥ उठकरीपोषहकरे ॥ मन० ॥ गुणनातीनलहीजरे ॥ जग० ॥ ३१ ॥ उकल्याणक वीरना० ॥ मन० ॥ गायानक्तिविशालरे ॥ जग० ॥ जिन कृपाचंद्रसूरिनणै ॥ मन० ॥ वर्तो मंगलमा-लरे ॥ जग० ॥ ३२ ॥ इति दीवालीको स्तवन संपूर्ण ॥

॥ श्रुतअतहिनलोसंघसकलआधारनमुं त्रिनुवनतिलो श्रुत० अर्थेश्रीवीर जिनेंद्र आख्यो । सूत्रेश्रीगणधरगुरुनाष्यो । तडु-नयथीजें मुनिवरराख्यो श्रु० ॥ १ ॥ जेहथी जगनावसकल-जाणे । नयएकांतमुनिजननविताणे । निश्चयव्यवहारतेमन-आणे श्रु० ॥२॥ जिहांअंग उपांगडेअतिरूडा, उन्नेदपयन्नानहि कूडा, मूलसूत्रनंदीअनुयोगचूडा श्रु०॥३॥जिहांनिर्युक्तिसूत्रेसंगी, वलिनाष्यचूरणी टीकाचंगी, पंचमअंगेकहीपंचांगी श्रु० ॥ ४॥ जिहांसाधुश्रावक मारगलहियै, संवेगपखीवलिसरदहियै, ए त्रणविननवमारग कहियै श्रु० ॥५॥ जेहनीअनुपेहानितकरियै, उपचैरदूषणपरिहरियै, आराध्या निजअनुनववरियै, श्रु० ॥६॥ जिनआगमना जे गुणगावै, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै, तेहमाक-ल्याण सदा पावै श्रु० ॥ ७॥ इतिज्ञानस्त०

॥ रागठुमरी ॥

॥ मेरे रेमनमानीज्ञानजरी मे० ॥ परउपगारीसुगुरुवताइ,, पांचुंजेदेंकरी, मतिश्रुतअवधिअवरमनपर्यव, केवलबोधवरी मे० ॥१॥ तपकरिअग्नि मूसदंसनकी, कर्मेंधनलकरी, सक्रियसंजमकरतांसुमिल, सिद्धिरसानधरी मे० ॥ २ ॥ पूरणपुन्य मिलीमोहिसजनी, सकलानंददरी, बालकहै अवविसरत नांही, पलछिनएकघरी मे० ॥ ३ ॥ इतिपदम्

थां० परवारीहोजिनजी, श्रीधुलेवागढपत्ति, रिषजसोहावणा- होराज, एआकमी देशमेवाममे सोजताहोराज, प्यां० आदि- करण आदिनाथ, जेव्याजलेजावसुंहोराज, ज० ॥ १ ॥ थां० श्री० परचा जगमे परगमा हो राज, थां० आवेसंघअपार, सरस दरसणलहे होराज, स० ॥२॥ थां० श्री० स्यामवरणशुजसुंदरुहो- राज, था० अद्भूतप्रजुदीदार, देख्यांवांछितफले हो राज दे०॥३॥ थां० श्री० आसहतीघणादिवसनीहोराज थां० तेसफलीथइ- आज, पूरवसंचितफल्याहो राज, पू०॥ ४ ॥ थां० श्री० जवजव- चरणारी चाकरीहोराज, थां० मुजनेहितसुखकंद, सदाप्रजुदी, जीयेहोराज, स० ॥५॥ थां० श्री० मालवदेशथी आवीयाहोराज, थां० विषमउल्लंघीवाट, आजदरसणलह्योहोराज, आ० ॥ ६ ॥ थां० श्री० जगणी सेअसीसमेहोराज, थां० फागुणशुदिहितकार, सदासंपत्तिकरुहोराज, स० ॥७॥ थां० श्री० अव्यावाधसुहंकरु- होराज, थां० अनुजवअमृतपान, सदामुऊदीजीयेहोराज, स० थां० श्री० ॥८॥ साहिबनीसुनिजरठतांहोराज, थां० सहजफलेसहुकाज, कृतारथकीजीयेहोराज, कृ० ॥ ए॥ थां० श्री०

आजमनोरथसहुफल्याहोराज, थां० प्रभुदरसणमनरंग, सदाजयजयकरुहोराज स०॥१०॥थां० श्री रिसहेसरजगजयोहोराज थां० श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि, प्रभुमुझमनवस्याहोराज, प्र० ॥११॥ थां० श्री० इति ॥

॥ कृपानिधिवीनतीअवधारोरे, एदेशी ॥

श्रीरिषभजिनेसरस्वामीरे, त्रिभुवनजनमनविसरामीरे, जगतारण अंतरजामी भविकजन श्रीजिनवरआराधोरे, एतोआराधि शिवफलसाधो, भवि० ॥ १ ॥ मनमोहनदिनकरसोहेरे, देख्याभव्यकमलप्रतिबोहेरे, जिमचंदचकोरनिशिमोहे, भ०॥२॥ गढधूलेवाजिनपतिवंदोरे, प्रभुदरसणकरिचिरनंदोरे, एतोनिजगुणसुरतरुकंदो, भ० श्री० ॥३॥ गढलंकामें प्रभुवसियारे, रावणनृपमनमेंउलसियारे, सहुअयासेवानारसिया, भ० ४ ॥ उजयणीमे, प्रभुहोवेरे, श्रीपालनी व्याधिखोवेरे, सुखसंपदाकरिजनजोवे, भ० ५ ॥ वागरूदेशवडोदगांममांहिरे, जिहांवसियाजगतनासांहिरे, प्रभुभावभगतिमनलांहि, भ० ६ ॥ तिहांश्रीधूलेवेआवेरे, घणाजात्रीनामनभावेरे, गौरीमिलमंगलगावे, भ० ७ ॥ परचापरतिखजगछाजेरे, अतिसयगुणअंबरगाजेरे, प्रभुदीठाभवभयभाजे, भवि० ८ ॥ देशमेवाडदेख्योनगीनोरे, करेडापरसनाथमनलीनोरे, देलवाडेदरशणकीनो, भ० ९ ॥ सांतीसरअद्भुतमूर्त्तीरे, उदयापुरजिनालयस्फूर्त्तीरे पद्मनाभसेवासुखपूर्त्ती, भवि० १० ॥ वनेडेआदीसरराजेरे, इमचैत्यअनेकविराजेरे, राजनगरमांअधिकदीवाजे, भ० ११ ॥ उगणीसेअसीवरसेरे,

फागुणशुदिआठमफरसेरे, जिनकृपाचंद्रसूरिमनहरसे, भवि० १२
इति स्तवनसंपूरणम् ॥

॥ ९ ढालका ॥

॥ अथ श्रीसम्मेतशिखरजीको रास लिख्यते ॥

वांदीवीसजिनेसरू, रचस्युं रासविशाल, तीरथशिखरसमेतनी, महिमावर्णीविशाल ॥ १ ॥ मोटोतीरथ महियले प्रगट्योशिखरसमेत, कोडाकोडीमुनिवरु, सिद्धिगयेइणखेत ॥२॥ तीरथसिखरसमेतए, फरस्यां पापपुलाय, भविजनभेटो भावसुं, ज्युंसुखसंपदथाय ॥ ३ ॥ महिमासिखरसमेतनी, कहिनसकेकविकोय, गुणअनंतभगवंतना, तिमएतीरथहोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चौपईनी ॥

गिरवरशिखरसमोनहींकोय, एहनी महिमा सबजगहोय, वीस जिनेसरमुगतेगया, मुनिजनध्यानधरीनेरह्या ॥ १ ॥ प्रथमअयोध्यानगरीभली, तिहांजितशत्रुनरेसरबली, विजयाराणीनेंसुतजाण, अजितकुमरसहुगुणनीखाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिकसेवाकरे, इंद्राणीअतिउच्छवधरे, तीर्थंकरनीपदवीलही, अंतरअरिजिणसाध्यासही ॥ ३ ॥ अनुक्रमइमभोगवतांभोग, पुण्यप्रसादमिल्योसहुजोग, अवसरदें संवछरीदान, संजमलीनोआपसुंजान, ॥ ४ ॥ कर्मखपावीपाम्योज्ञान, केवलदर्शनलह्योप्रधान, विचरेपुहवीमंडलमांहि, भव्यजीवप्रतिबोधनतांहि ॥ ५ ॥ सिंहसेनादिक गणधरभया, पंचाणवेसंख्या सहुथया, एकलाख मुनिवरपरिवर्या, श्रावक श्रावकणी बहुकर्या, ॥ ६ ॥ तीनलाख वलितीसहजार, साधवीयांजाणो सुविचार, श्रावक-

सहस अढाणुंसही, दोयलाखसंख्या गहगही, ॥ ७ ॥ पांच-लाख पेंतालीसहजार, श्रावकणीसंख्या सुविचार, बहुत्तरलाख पूरबनोआय, कंचनवरणसरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढाच्यारसे धनुषसरीर, मानलह्यो प्रभुगुणगंभीर, गजलांछन प्रभुजीनो-जांण अमृतसमजसुमीठीवाण ॥ ए ॥ अनुक्रमप्रभुजी शिखर-समेत, गिरिवरपर आव्यानिजहेत, सहस मुनीसरनेंपरिवार, मासखमण अणसणकरसार ॥ १० ॥ चैत्रीसुदिपांचमनें दिनें, मुक्तिगएप्रभु तीरथइणें, भूचरखेचरकिन्नरसुरी, इंद्रादिक सहुउ-च्छवकरी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथमोटोमही, अढाइमहो-च्छवकियोसही, ए तीरथनीजात्राकरे, ते भवियणअक्षय-सुखलहे ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसंभवजिनराजजी, गएइहांनिर्वाण, शिखरसमेतसुहा-मणो, प्रगट्योतीरथजाण ॥ १ ॥

॥ सुगुणसनेहीसाजन श्रीसीमंधरस्वाम ए चाल ॥

॥ ढाल २ ॥

सावत्थीनगरीभरी, धनसंपदसहुथोक, जितारिनृपराजकरे, सुखियासबलोक, सेनाराणीमीठीवाणीगुणनीखाण, जेहनेंसुत-श्रीसंभवजनम्यासकलसुजाण ॥ १ ॥ कंचनवरणसरीरमनोहर प्रभुनोजाण, लंछनअश्वतणोसोहे प्रभुनोपरधान, साठलाख-पूरबनो प्रभुनोआयुप्रमाण, धनुषच्यारसेउंच्चपणे प्रभुदेहव-खाण ॥ २ ॥ एकसोदोयसंख्यायें प्रभुनेंगणधरहोय, दोयलाख मुनिजेहनेंगुणवंताजगजोय, तीनलाखश्रमणीवली ऊपरसहस-

छत्तीस, जूमंरुखविचरे प्रजुश्रीसंजवजगदीस ॥ ३ ॥ तीन-लाखवलिसहस्रत्रयाणुंश्रावकलोक, षट्लखसहसछत्तीस श्राव-कणीसंख्याथोक, त्रिमुखयक्षअरु डुरितादेवीसानिधकार, वि चरंतां प्रजुसकलसंघमें जयजयकार ॥ ४ ॥ सहसश्रमणपरिवारे प्रजुजीशिखरसमेत, एकमास संलेखणकीनीनिजपदहेत, इण-गिरिऊपरपायो प्रजुजीपदनिरबाण, तीरथमहिमामहियलमोटी थइयसुजाण ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

अजिनंदनजिनवंदिये, पायोपदनिरवाण, शिखरसमेतसुहा-मणो, जेटोतीर्थसुजांण ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ ॥ सहसश्रमणसुं शुकसंजमधरो ए चाल ॥

नगरीअजोध्या सुरपुरीसमजली, संबरराजासोहै मनरली, सिद्धार्था राणीतसुनंदए, अजिनंदनजिनप्रगट्याचंदए, जल्लालो, चंदएसोवनवरणसोहै धनुषसाढीतीनसै, सुंदरशरीरप्रमाण द्युतिकरकपिलंछनतेनितवसे, पूर्वलाखपचासआयुगणधरइकसो सोलए, तीनलाखमुनिछलाख आर्यासहसत्रिंशत्सोलए ॥ १ ॥ चाल ॥ सहसअठ्यासी दोलख श्राद्धनी, संख्या चौलख-सत्तावीसनी, श्रावकणयांरी संख्या जाणए, नायकयक्षकालि-काठाणए ज० ठाणएशिखरसमेत ऊपरमासएक संलेखणा, इकसहससाधूपरवर्याप्रजु मुक्तिपहुचेपेखणा, इमही अयोध्यामे-घनरवरदेवी मातसुमंगला, श्रीसुमतिजिनवरजणएनंदन सदा-होतसुमंगला, ॥ २ ॥ चाल ॥ सोवनवर्ण धनुषतनुतीनसें, लंछनकौंचसोहे सुजगेहसे, पूरबलाखपच्यासीआउए, इकसौ-

गणधरगुणगणजाजए, (ज०) जाजएमुनित्रणलाखसोहे सहस वीसप्रमाणए, पणलछत्रीसहजारसाध्वी श्रावकदोयलछजाणए, संख्या इक्यासीसहसऊपर श्राविकाइमश्रानीये, पणलाखसोले-सहस तुंबरुमहाकालीमांनीये, श्रीशिखरऊपर सातसंख्या सहस साधुसुरंगए, करमासकीसंलेखणा प्रभुमुक्तिपुहताचंगए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इमकोसंबीनगरीतातए, धरनृपतातसुसीमामातए, पदमप्रभु तसुअंगजनाथए,लंछनकमलतणोशुभहाथए,(ज०)हा-थएधनुषप्रमाणपूरा अढाईसेतनुकह्यो, तीनलाखपूरवथितकहावै एकसोगणधरलह्यो, लखतीनतीसहजारसाधू वीससहसलख-च्यारए, साधवी दोयलखसहसछिहंतरश्रावकसंख्यासारए ॥४॥ चाल ॥ पांचलाखवलिपांचहजारए, श्रावकएयांरीसंख्यासारए, कुसुमदेवस्यामादेवीकही, लालवरणतनुसोहै प्रभुसही, (ज०) सोहएशिखरसमेतऊपर श्राठसेत्रिणमुनिवरा, करमास संलेखन प्रभुनी सेवकरे सुरवरा श्रीपदमप्रभुजी मुक्तिपहुतागिरिशिखरम-हिमाभई, तसुचरणपंकजवालवंदे हृदय श्रानंदगहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

श्रीसुपासजिणंदना, पदपंकजश्राराम, भविजनभ्रमरसुसे-वतां, पामेंवंछितकाम ॥ १ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिबा एचाल ढाल ४ ॥

नगरवणारसीसोभता, राजाताप्रतिष्टलालरे, देवीपृथवी-मातजी, स्वस्तिकलंछनसिष्टलालरे, ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनं-दजी, वीसपूरबलखश्रायु ला० धनुषदोयसैदेहनो, कंचनवरण-सुहाय ला ॥२॥श्री० ॥ पंचाणवेगणधरकह्या, साधू त्रिणलाखहो-

यला०च्यारलाखतीसऊपरे,सहससाधवियांजोयला०॥३॥श्री०॥
सहससत्तावनलक्षनी, श्रावकसंख्याथायला० च्यारलाखवली-
त्रैणवे, सहसश्रावकणीजायलालरे, ४ श्री० ॥ मातंगयक्षसांता-
सुरी, पांचसेमुनिपरिवारला०, करिअणसणमुगतैगया, नामलि-
यांनिस्तारलालरे, श्रीसु० ॥ ५ ॥ नगरचंद्रपुरइणपरे, राजाता-
तमहसेनला०, देवीमातालक्ष्मणा, सुतचंद्राप्रभुवेशला०, ६,
श्रीचंद्राप्रभुवंदिये ।चंद्रवरणतनुदेहला०। लंछनचंद्रतणोभलो।
धनुषदोढसैदेहला० ॥ ७ ॥श्री०॥ भविककमलप्रतिबोधता।सेवे-
सुरनरयक्षला०। दसलाखपूरबआउखो । तेणवेगणधरदक्षला०
॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलखसहसपचाणवे । मुनिश्रमणीतीन-
लक्षला० । असीसहससंख्याकही । श्रावकवलिदोयलक्षला०
॥ ९ ॥ लाखपचासऊपरवली । श्राविकाचउलक्षधारला० ।
सहसइकाणबेऊपरे । प्रभुजीनोपरिवारला० ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥
विजयदेवभृकुटीसुरी । सहससाधुपरिवारला० । संलेखनइक-
मासनी ।.पुहतामुक्तिमझारला० ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥

॥ दोहा ॥

जयश्रीसुविधिजिनेसरू । जगपतिदीनदयाल । समेतशिख-
रमुगतेगया । भविजनकेप्रतिपाल ॥

॥ ढाल ५ ॥

श्रीविमलाचलसिरतिलोएचाल ॥ नयरिकाकंदीनरपति ।
एमपितासुग्रीव । देवीरामामातसुत । भएसुविधिशुभजीव ॥१॥
रजतवरणसमतनुसत।धनुषएकपरिमाण । दोयलाखपूरबकह्यो।
प्रभुनोआयुसुजाण ॥ २ ॥ अठ्यासीसंख्याभये । गणधरपरम-

प्रधान । लखदोमुनिविंशतिसहस । इकलखश्रमणीजाण ॥ ३ ॥ दोयलक्षश्रावककह्या । असुगुणतीसहजार । एकत्तरचौलख-सहस । श्रावकणीसुविचार ॥ ४ ॥ सुरीसुतारासुरअजित । श्रीसंघसांनिधकार । सहससाधुपरिवारसुं । आएशिखरसुवि-चार ॥ ५ ॥ माससंलेखणकरप्रजु । मुक्तिगएइहगोर । तीरथ-महिमामहियले, प्रगटीच्यारुंकोर ॥ ६ ॥ इमहीजशीतलनाथनो । हिवसुणज्योअधिकार । जद्दिलपुरदृढरथपिता । मातनंदासु-खकार ॥ ७ ॥ लंछनश्रुजश्रीवछनो । श्रीशीतलजिनचंद । कंच-नवरण नेऊधनुष । मानसरीरअमंद ॥ ८ ॥ एकलाखपूरवकह्यो । प्रजुनोआयुप्रमाण । इक्यासी गणधरकह्या । मुनिइकलाखसु-जाण ॥ ए ॥ एकलाखचालीससहस । श्रमणीसंख्याउंर । सहसतयांसीदोयलख । श्रावकसंख्याजोर ॥ १० ॥ सहसअ-ठावनलक्षचौ । श्रावकणीसुविचार । देवीअशोकाब्रह्मयक्ष । सहुसंघसांनिधकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेतसहस्रएक । साधूनें-परिवार । मुक्तिगएप्रजुमासकी । संलेखनकरसार ॥ १२ ॥

॥ ढाल ६ ॥ धनधनसंप्रतिसाचौराजाएहनी ॥

सिंहपुरीनगरी तिहांराजा॥विष्णुनरेसरतातजी॥ कंचनवरणश्रे-यांसप्रजुजी । उपज्याविष्णुसुमातजी ॥१॥ नमोरेनमो-श्रीत्रिजुव-नराजा । खरूगिलंछनप्रजुपायजी । धनुषअसीदेहमान-चोरासी । लाखवरस नोआयुजी॥न० २॥ गणधरबहुत्तरसहसचौरासी मुनि-श्रमणीतीनलक्षजी । तीनसहसबलिसहसगुणयासी श्रावकपुणदो-यलखकजी । न० ३ अरूवाऱीससहसबलिचौलख । श्राविकाजाणो-सारजी, जक्षअमरसुरीमांनवीजाणो, श्रीसंघसांनिधकारजी ॥४॥

न० ॥ सहसमुनीसरनेपरिवारे, प्रज्ञुजीसिखरसमेतजी, मास संलेखनकरप्रज्ञुपहुता, मुक्तिमहिलसुखहेतजी ॥ ५ ॥ न० । हिवकंपिलपुरतातन्नृपति, श्रीकृतवर्मसुमातजी, स्यामादेवीअंगज उपना, विमलनाथजगतातजी ॥ ६ ॥ न० ॥ सूकरलंउनसोवन काया, साठधनुषदेहीमानजी, साठलाखवछरनोआयु, शिष्य सतावनजानजी, ॥ ७ ॥ न० ॥ साठसहसमुनिअरूसयइकलख श्रमणीश्रावकजांणजी आठसहसदोयलक्षश्राविका, चौलक्ष संख्याआंणजी ॥ ० ॥ न० ॥ षणमुखसुरवरविदितादेवी, प्रज्ञुजीसिखरसमेतजी, षट्हजारसाधुपरिवारे, मुक्तिगएसुखहेतजी ॥ ए ॥ न० ॥ नगरीनामअयोध्यानरवर, सिंहसेनजगसारजी, सुजसामाततिणेंसुतजायो, प्रज्ञुजीअनंतकुमारजी । न० ॥ १० ॥ लंउनश्येनसोवनसमकाया, धनुषपचासप्रमाणजी, तीसलाखवछरनोआयु, गणधरपचवीसआंणजी ॥ ११ ॥ न० ॥ गासठसहसमुनीसरसोहे, बासठश्रमणीहजारजी, उह-जारलाखदोयश्रावक, श्रावकणीइमधारजी ॥ १२ ॥ न० ॥ च्यारलाखबलिचवदहजारए, अंकुशादेवीहोयजी, पातालयक्ष-श्रीसंघकेसानिध, कारीनितप्रतिजोयजी ॥ १३ ॥ न० ॥ आ-ठसैमुनिवरनेंपरिवारे, शिखरसमेतप्रधानजी, माससंलेखनकर-गिरिऊपर, पुहतापदनिर्वाणजी ॥ १४ ॥ न० ॥

॥ दुहा ॥

ऐसेंधर्मजिणेंसरू पुहतापदनिर्वाण, शिखरसमेतगिरिंदपर नमोनमो जगज्ञाण ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ॥ जगतगुरू त्रिशलानंदनजी ए चाल ॥

रत्नपुरीनगरीधणीजी, भानुरायसुजांण, राणीसुव्रतामातनेंजी, धर्मनाथगुणखाण ॥१॥ जगपतिधर्मजिनेसरसार, धनुषपैंतालीसतनुकह्योजी, वज्रलंछनसुखकार ॥ २ ॥ ज० ॥ चोतीसगणधरमुनिकह्याजी, चोसठसहसप्रमाण, श्रमणीबासठसहसस्युंजी, श्रावकदोयलक्षमान ॥ ३ ॥ जग० ॥ च्यारसहसवलिऊपरांजी, चौलाखएकहजार, श्रावकणीसंख्याकहीजी, दसलक्षआयुविचार ॥ ४ ॥ ज० ॥ किंनरसुरयलासुरीजी, एकसहसपरिवार, समेतशिखरमुगतेंगयाजी, बांदूबारहजार ॥ ५ ॥ ज० ॥ हथणापुरविश्वसेननाजी, अचिरामातउदार, शान्तिजिनेसरजनमियाजी, त्रिभुवनजयजयकार ॥ ६ ॥ जगतपति शान्तिजिनेसरसार॥मृगलांछनसोवनसमोजी, देहीधनुषचालीस, आयुवरषइकलाखनोजी, छत्तीसगणधरसीस ॥ ७ ॥ ज० ॥ बासठसहसमुनिछसैंजी, इकसठश्रमणीहजार, दोयलाखश्रावककह्याजी, ऊपरनेऊहजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहसत्रयांणुंश्राविकाजी, तीनलाखपरिवार, गरूडयक्षदेवीसुरीजी, श्रीसंघसांनिधकार ॥ ९ ॥ ज० ॥ नवसैंमुनिपरिवारस्युंजी, आयाशिखरसमेत, मासखमणकरमुक्तिमेंजी, पुहतानिजपदहेत ॥ १० ॥ ज० ऐसेंहथिणापुरन्रखोजी, राजासूरसुतात, कुंथुनाथजिनजनमियाजी, कंचनतनुश्रीमात ॥ ११ ॥ जगपतिकुंथुजिनेसरसार, छागलंछनपेंतालीसनोजी, धनुषदेहनोमान, सहसपचाणवेवरषनोजी, आयुप्रभुनोजाण ॥ १२ ॥ ज० ॥ पेंतीसगणधरदीपताजी, साठसहसमुनिजाण, छसैसाठसहसवलिजी, श्रमणी-

संख्यामान ॥ १३ ॥ ज० ॥ सहसगुणियासीलहनीजी, श्रावक संख्याहोय, सहसइक्यासीतीनलाखनीजी, श्राविकासंख्या-जोय ॥ १४ ॥ ज० ॥ सातसैसाधुपरिवस्याजी, देवीबला-गंधर्व, कुंथुनाथमुगतेंगयाजी, माससंलेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥

॥ दुहा ॥

श्रीअरनाथजिनंदनो, कहस्युंअबअधिकार, श्रोतासुणज्यो-प्रेमधर, थास्यैलाजअपार ॥ १ ॥

॥ देशीविछियानी ॥ ढाल ८ ॥

हांरेलालाश्रीजिनकुशलसूरीसरूएचाल ॥ हांरेलालाश्रीअ-रनाथजिनेसरू । जिहांनगरीअयोध्याचंदरेलाला । तातसुदर्श-नमातजी । नंदादेवीनानंदरेलाला ॥ २ ॥ श्रीअर० ॥ लंछन-नंद्यावर्त्तनो । वीसधनुदेहीनोमानरेला० । कंचनवरणसुहामणो । आयुसहसचोरासीप्रमाणरेला० ॥ ३ ॥ श्रीअ० ॥ इकलाख श्रावकऊपरे । वलीसंख्याअधिकीजाणरेला० । सहसबहुत्तरती-ननी । लहश्राविकासंख्याआणरेला० ॥ ४ ॥ श्रीअ० ॥ देवदे-वीसानिधकरे । इकसहसमुनिपरिवाररेला० । मुक्तिगयाइण-गिरिप्रभु । करमाससंलेखनसाररेला० ॥ ५ ॥ श्रीअ० । मिथिलानगरीप्रभावती । मातपिताश्रीकुंभरायरेला० लंछनकलसपचीसनो । वपुधनुषसोवनसमकायरेला० ॥ ६ । श्रीमल्लिनाथजिनेसरू । सहसपचावनवर्षनी । अतिगणधर अठावीसरेला० । भविककमलप्रतिबोधता, जगनायकश्रीजग दीसरेला० ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ चालीससहसमुनीसरू । श्रमणी पचावनसहसरेला० । सहसत्रयासीलहनी । श्रावकनीसंख्या

साररेखा० ॥ ८ ॥ श्रीम० ॥ श्राविकासित्तरसहसनो । लक्षती-
नसंख्यासुविचाररेखा० । सहसमुनिपरिवारसुं । गएमुक्तिसंलेखण
धाररेखा० । श्रीम० ॥ ९ ॥ राजग्रहीराजापिता । सुग्रीवपद्मावती
मातरेखा० । स्यामवरणतनुशोभतो । जेकछपलंननविख्यातरे-
खा० ॥ १० ॥ श्रीमुनिसुब्रतस्वामिजी ॥ धनुषवीसदेहीतणो ।
श्रायुवच्छरतीसहजाररेखा० । अष्टादशगणधरथया । तीससहस-
मुनीसरसाररेखा० ॥ ११ ॥ श्रीमु० ॥ श्रमणीसहसपचीसनी ।
संख्याबहुत्तरहजाररेखा० । इकलक्षकपरे श्राविका । तीनल-
क्षपचासहजाररेखा० ॥ १२ ॥ श्रीमु० ॥ वरुणयक्षदेवी जली
नरदत्तासांनिधकाररेखा० । सहसमुनिपरिवारसें । गएमुक्ति-
महलसुखकाररेखा० ॥ १३ ॥ श्रीमु० ॥ विजयपितावप्रामा-
तजी । सोवनसमश्रीनमिनाथरेखा० । नीलकमललंछनकह्यो-
वपुधनुषपनरश्रायुसाथरेखा० ॥ १४ ॥ श्रीनमिनाथजिनेसरु ।
दसहजारवरसतणो । गणधरसत्तरपरमाणरेखा० । वीसएकता ।
खीससहसक्रम, साधुसाधवी संख्याजानरेखा० ॥ १५ ॥
श्रीन० ॥ इकलखसित्तरसहसनी, तीनलक्षसहसवलिहोयरेखा० ॥
श्रावकसंख्याश्राविका, । अनुक्रमकरि संख्याजोयरेखा० ॥ १६ ॥
श्रीन० ॥ विरचरंता भूमंडले, श्रायासिखरसमेतरेखा० भृकुटीयक्ष
गंधारीसुरी, इकसहसमुनिपरिवाररेखा० ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दोहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगतिविख्यात । शिखरसिरो-
मणि सहसफण, जगजीवनजगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल ९ ॥ आदरजीवक्षमागुण आदरएहनी ॥

जयजयपरमपुरुष पुरुषोत्तम, पारसपारसनाथजी, सांवरियासाहिब जगनायक, नामअनेकविख्यातजी ॥ जय० ॥ २ ॥ जयजयशिखरसमेतसिरोमणि, श्रीसांवरियापासजी, ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरेवंछितआसजी ॥ जय० ॥ ३ ॥ कासीदेसवणारसीनगरी, श्रीअश्वसेननरिंदजी, वामामाता जगविख्याता तेहनासुतसुखकंदजी ॥ जय० ॥ ४ ॥ पन्नगलंछननीलवरणछवि, देहिशुभनवहाथजी, आयुएकसोवरसप्रमाणे, गणधरदशप्रभुसाथजी ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोलसहसमुनिवरअरुश्रमणी, कही अरुतीसहजारजी भूमंकलविचरेभविजनकुं । बोधबीजदातारजी ॥ जय० ॥ ६ ॥ चोसठसहसलाखइक श्रावक, गुणचालीसहजारजी, तीनलाखश्रावकणीसंख्या, पार्श्वयक्षसुरसारजी ॥ ज० ॥ ७ ॥ बीसजिनेसरमुगते पोहता, महिमाथइयअपारजी, तिणएतीरथप्रगट्योजगमें, मुगतितणो दातारजी ॥ ज० ॥ ८ ॥ छहरीपाले जेनरभावै भेटैं सिखरगिरींदजी, ते नर मनवांछितफलपामे, एसुरतरुनोकंदजी, ज० ॥ ९ ॥ बहुविधसंघतणीकरेभक्ति, संघपतिनामधरायजी, सफलकरेसंपदानिजपामी, जेहनोसुजससवायजी ॥ १० ॥ ज० ॥ परभवसुरनरसंपदापामें, जात्राकरेगहगाटजी, साधरमीवत्सलमुनिभक्ति, पूजाउद्यमठाठजी जय० ॥ ११ ॥ टुंकटुंकपरचरणप्रभुना, पूजोभविजनभावजी, ध्यानधरोजिनवरनो मनमें, आनंदअधिकउछावजी ॥ ज० ॥ १२ ॥ रासरच्योश्रीसिखरगिरिनो, सुणतांनवनिधिथायजी, तिणएभविजन

नावधरिनें, सुणज्योमनथिरलायजी ॥ जय० ॥ १३ ॥ खरतर-गन्नपतिमहिमाधारी, कीर्त्तिजगविख्यातजी, जयश्रीजिनसौ-नाग्यसूरीश्वर, अमृतवचनसुगातजी ॥ ज० ॥ १४ ॥ तासुप-सायेरासरच्योए, अमृतसमुद्रनेसीसजी, बालचंद्रनिजमति-अनुसारे, सोधोविबुधजगीशजी ज० ॥ १५ ॥ संवतउगणीसै-सतरुोतरे, (१९०७) सुदिवैशाखसुढालजी, राशअजीमगं-जमांहिकीनो, जणतामंगलमालजी ॥ जय० ॥ १६ ॥

॥ इति श्री सिखरजीको राश संपूर्णम् । सर्वगाथा २०१ ॥

॥ अथ मुनिमालिका ॥

ऋषनप्रमुखजिणपाययुगपणमुं, शिवसुखदायकमनहउल्लास, पुंरुरीकश्रीगौतमआदिक, गणधरगुरुमनकमलविकास ॥ १ ॥ प्रहसमेसूधासाधुनमुंनित, नावेश्रमणसुगुरुनगवंत, नामग्रहण-करिपापपखालूं । परमानंदसुमतिविकसंत ॥ २ ॥ नरतमहा-मुनिप्रथमचक्कीसर, वाहूबलीउपसमनंमार, सूरयसादिक-आठमुनीसर, पाम्याविमलाचलनवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रिष-नवंसजेअनुक्रमहुवा, मुनिवरकोमीलाखअसंख, श्रीसेत्रुंजै-शिवपुरसीधा, कलमखकालकमुकीसंक ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगरप्रमु-खनिरुपमनवचक्रवर्त्ति, साधुमहाबलसंयमसींह, अचलादिक-बलदेवअष्टमुनि, रामरिषीसरनवमअबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रति-बुद्धिपमुहउहसुंदर, श्रीमल्लिनाथपूरवनवमित्र, पहुतापरमयतीसर शिवपुर, पालीश्रीजिनआणपवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंकुं-विष्णुकुमारलबधिनिधि, खंदगसूरिनासीससयपंच, कार्ति-कसेठसुसाधुकीर्त्तिधर, श्रमणसुकोसलव्रतनिरबंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥

श्रीयदुवंसअक्षोन्नसुसागर, प्रमुखआठअणगारप्रधान, श्रीरह्नेमिनेमिजिनबंधव, निरमलगुणगणरयणनिधान ॥ ८ ॥ प्र० ॥ जालीमयालीनेंउवयाली, पुरससेणबारिसेणप्रजुन्न, संबअनेंअनिरुद्धरिषीसर, सत्यनेमिदृढनेमिसुधन्न ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमरअनीकजसादिकषट्मुनि, गुणगिरुवोश्रीगजसुकमाल, ढंढणरिषीश्रीथावच्चासुत, सहससाधुसंजमसुकृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥ (रागधन्याश्री) सहसश्रमणसुंसुकसंयमधरो, पंचसयांसुंसेलगमुनिवरो, सिद्धथयाश्रीपुंडरगिरिवरो, करुणाकरप्रणमुंसंपदकरो ॥ उल्ला० ॥ संपदकरोशमदमरिखीसरसाधुसारणासोहए, अंतरप्रकासैतिमिरनासै,भविकजनमनमोहए, प्रत्येकबुद्धप्रबुद्धनारदमुनिप्रमुखपैंतालए, दमदंतमहारिषीकुंजवारै साधुनमुंत्रिहुंकालए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंगरिषभदत्तरतनत्रयमुणी, समरुंदेवानंदासाहुणी, पांचेपांडवप्रणमुंमुनिपती, केशीपएशीबोधकजिनमती, उ० जिनमतीकालकपुत्रमेहलथिवरआनंदरक्खियो ॥ अणगारकासबधर्मभाष्यो, साधिशिवपुरसक्खिऊं, कालासवेसीपुत्रआतमअरथसाधकउपसमी, श्रीपुंडरीकमहामुनीसरप्रणमीयेसुभसंयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंदुवलकलचीरीकेवली, श्रीऐमत्तोमुनिवरमनरली, श्रीकरकंडुदुमहनमिनग्गया, निज २ देसे नरवरश्रीजुवा ॥ उ० ॥ श्रीजुवाएवृषभादिदेखीथयाबरुवइरागीया, संयमसिरिभजिमोहनिद्रातजीयजोगैजागीया, प्रत्येकबुद्धाच्यारसिद्धासिद्धथयाएकणसमें, सुप्रसन्नचंदमुनिंदनिरममप्रेमप्रणमुंप्रहसमें ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंतेखुड्डकुमारसुध्याईये, लोहच्चामुनिचरणेलयलाइयै, कालउदाईप्रमुखमहा-

मुणी, संजमशुद्धजयंतिसाहुणी॥ ज०॥साहुणी जाणीजग वखाणी-
परमपदसुखपामीया, श्रीश्रमणजडसुजडसुंदरअचलआतमरा-
मीया, श्रीसुप्रतिष्टयतीससुव्रतसाधुसुव्रतसेहरो, चारित्ररिषि-
गुणवंतगोजडगरुआगरिमासागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरीसि-
वरायरिषीसरवंदीयै, दशारणजडनमुंदुखछंदीयै, अर्जुनमाली-
सुखसंजमधरो, सुदृढप्रहारीशिवरमणीवरो॥ज०॥ शिवरमणीव-
रोश्रीकुरगडूक्षमावंतप्रसिद्धउ,वलिच्यारउग्रविहारतपसीसहित
सुविहितसिद्धउ ॥ कोडिन्नदिन्नअनेंसेवालीपनरशतकतिओत्तरा,
गोतमप्रबोधितसिद्धिपुहतानमुंचरणकरणाधरा ॥ १५॥ चाल ॥
गिरुआश्रीगुणसागरगाईयें, पृथवीचंद्रप्रणम्यासुखपाईयें, खंद-
कुमारसदाअजिनंदीयें, नमिहअरहमित्रमनआणंदीयै ॥ ज० ॥
आणंदीयैमेतार्यमुनिवरजगतिसुंसमरीकरी, ऋषिइलापुत्रचिला-
पुत्रमृगापुत्रहीयैधरी, श्रीइंद्रनामनिग्रंथनिर्ममधर्मरुचिधर्मागरो,
तेतलीपुत्रसुबुद्धिबोधितसुजितशत्रुमुनीसरो ॥ १६ ॥ चाल ॥
उदय २ करजगि २ जसतणो, श्रमणसुंदशणशीलसुहावणो,
श्रीअभयसुतआर्द्रकुमारए, चित्तचतुरनरचित्तचमकारए॥ज०॥
चमकारसारसुजातरिषीवरदेवसांनिधजशधणी, गांगेयगिरुवो-
गुणेगाजैसुजिनपालितहितधणी, श्रीधर्मघोषसुसीसधर्मरुचिसा-
धुश्रीजिनदेवए, श्रीकपिलरिषिहरिकेशवलिमुनिनितनमुंनिरले-
वए ॥ १७ ॥चाल॥ जतिजयघोषविजयघोषजुउ, सेवुंश्रुतधर-
श्रीदेवलसुउ, श्रीइखुकारनृपतिकमलावती, राणीभृगुसुतप्रो-
हितसुजमती ॥ ज० ॥ सुजमतीजेहनीजशाजार्यापुत्रदोयव-
खाणीये, एवडुंलेईचारुचारित्रसुगतिपुहताजाणीये, क्षत्रियमु-

निसरसाधुसंजमधर्मरुचिसुमहाव्रति, निर्ग्रंथनाथअनाथवंदुं-
समुद्रपालसुसंयती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्रनमुंकेवलकह्यो,
विधिसुंशीतलशिवकमलामिह्यो, धन २ धन्नोसुरगिरिधीरए,
वीरप्रशंश्योतपगुणवीरए ॥ ज० ॥ श्रीवीरदिख्खितश्रीसुबाहु-
भद्रनंदकुमारए, आदिकदसेरिषिचरियजेहनासुखविपाकउदा-
रए, श्रीचंद्ररुद्रसुशीसखंदगखिमानिधिकहीयेइणकलै, कुरुदत्त
सुततीसगसरोरुहरिषिनम्यांआस्याफलै ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग-
प्रमुखरिषिच्यारेआदरी, विधिसुंसंजमसिद्धिवधूवरी, अन्नय-
कुमारमुनिअन्नयंकरो, हल्लविहल्लसुआतमहितकरो ॥ ज० ॥
हितकरोदयाधरमेघमुनिवरनंदीषेणआराधीयै, सुनक्षत्रनेसर्वा-
नुन्नूतीशमरशिवसुखसाधीयै, श्रीसिंहसाधुअनेउदायनचरमरा-
जरिखीसरो, श्रीशालन्नद्रसुधन्नमुनिवरसमरतांमंगलकरो ॥२०॥
रागधन्यासरी ॥ वंदुवैरागीवरनमुं, जुगवरजंबूसामि, प्रन्नवसि-
ध्यंन्नवपरगडौ, सुजशयसोन्नद्रस्वामि ॥ २१ ॥ महामुनीसर-
नितनमुंजी, नामेंघरनवनिद्ध, वाधैरिद्धसमृद्ध ॥ २२ ॥ म० ॥
जगसंन्नूतिविजयजयौ, न्नद्रबाहुकृतन्नद्र, जगजोगीसरजागतो,
मुनिवरश्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ महा० ॥ न्नद्रबाहुस्वामीतणा,
च्यारशिष्यमुनिराय, शीतपरिसहजिणेसह्या, सार्या २ आतम-
काज ॥ २४ ॥ महा० ॥ अज्जमहागिरिजांणियै, अज्जसुहत्थि-
विशाल, संप्रतिनृपपडिबोहियो, श्रीऐवंतीसुकमाल ॥२५॥म०॥
आरिजसांमिप्रसंसीयो, अज्जसुन्नदमुनीस, अज्जमंगुमहिमा-
निलो, सींहगिरीसमुणीस ॥ २६ ॥ म० ॥ धनगिरिथिवरमहा-
मुनी श्रीवयरस्वामीमुनिराय, अरहदिणमुनिअपहस्यो, न्नद्र-

गुप्तनिरमाय ॥ २७ ॥ म० ॥ वयरसेनविद्यावरू, श्रीरह्नितगुरुदह्न, पूसमित्रगुणगहगहै, प्रजुदुरबलिकापह्न ॥ २८ ॥ म० ॥ विंझसाधुसुविधइजस्यो, श्रीथंफिलसुमहिह्न, सूत्रअरथरतनेंजस्यो, ह्नमाश्रमणदेवह्नि ॥ २९ ॥ म० ॥ पंचमकालचरममुनी, श्रीडुपसैसूरिदयाल, शुद्धक्रियाखरतरसही, जिनआग्याप्रतिपाल ॥ ३० ॥ म० ॥ इमपन्नरकर्मजूमीजिके, हुवाहोस्यैअनंत, वर्त्तमानश्रीसाधुजी, रतनत्रईगुणवंत ॥ ३१ ॥ म० ॥ ब्राह्मीसुंदरीरायिमई, साहुणीचंदनबाल, आदिकशीलवतीसती, त्रिकरणसुद्धत्रिकाल ॥ ३२ ॥ म० ॥ संवतसोलछत्तीसए, श्रीविमलनाथसुरसाल, दिह्नाकल्याणकदिने, गुंथीश्रीमुनिमाल ॥ ॥ ३३ ॥ म० ॥ रिणीपुरैरलीयामणो, श्रीशीतलजिणचंद, सूरिविजैराजेसदा, संघअधिकआणंद ॥ ३४ ॥ म० ॥ श्रीमतिजद्रसुगुरूतणें, सुपसायैसुखकार, चारितसंघवखाणीयै, सदा २ जयकार ॥ ३५ ॥ म० ॥ मनोहरश्रीमुनिमालिका गुणगणपरमलपूर, कंठवइउत्तमजिके, पामेंसुखजरपूर ॥ ३६ ॥ म० ॥ महामुनीसरगावतां,सुरतरुसफलसमान, अष्टमहासिद्धिघरफलै, सदासदाकल्याण ॥ ३७ ॥ इतिमुनिमालिकासंपूर्णम् ॥

॥ अथ पापआलोयणास्तवनलिख्यते ॥

बेकरजोमीवीनवूंजी, सुणिस्वामिसुविदीत, कूमकपटमूंकीकरीजी, वातकहुंआपवीत ॥ १ ॥ कृपानाथमुझवीनतीअवधार, तुंसमरथत्रिज्ञुवनधणीजी, मुझनेंडुत्तरतार ॥ कृ० ॥ २ ॥ जवसायरजमतांथकांजी, दीठाडुःखअनन्त, जागसंयोगेजेटीयोजी, जयजंजनजगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जेडुःखजांजेआप-

णोजी-तेहनेंकहीयेदुःख, परदुःखभंजणतूंसुण्योजी, सेवकनें-द्योसुख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयणलीधांपखेजी, जीवरुलैसंसार, रूपीलक्ष्मणामहासतीजी, एहसुण्योअधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकालेदोहिलोजी, सूधोगुरुसंयोग, परमारथपीछेनहिंजी, गडरप्रवाहीलोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिणतुझआगलिआपणाजी, पापआलोउंआज, मायबापआगलिबोलतांजी, बालककेहीलाज ॥ कृ० ॥७॥ जिनधर्मजिनधर्मसहूकहेजी, थापेआपणीवात, सामाचारीजूईजूईजी, संसयपड्योमिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाणअजाणपणेंकरीजी, बोल्याउत्सूत्रबोल, रतनेकागउडावतांजी, हार्योजन्मनिटोल० ॥ कृ० ॥ ९ ॥ भगवंतभाष्योतेकिहांजी, किहांमुझकरणीएह, गजपाखरखरकिमसहेजी, सबलविमासणतेह ॥ कृ० ॥ १० ॥ आपपरूपुं आकरोजी, जाणेलोकमहंत, पिणनकरुं परमादीयोजी, मासाहसदृष्टान्त ॥ कृ०॥११॥ कालअनन्तेमेंलह्याजी, तीनरतनश्रीकार, पिणपरमादेपाड़ियाजी, किहांजईकरुंपुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणुंउत्कृष्टीकरुंजी, उद्यतकरुंरेविहार, धीरजजीवधरैनहीजी, पोतेबहुसंसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥ सहजपड्योमुजआकरोजी, नगमेरुनीवात, परनिंदाकरताथकांजी, जायैदिननेरात ॥ कृ० ॥ १४ ॥ किरियाकरतांदोहिलीजी, आलसआणेजीव, धर्मपखेधंधेपड्योजी, नरकेकरसैरीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहुंतागुणकोककहेजी, तोहरखुंनिशिदीश, कोहितसीखभलिकहेजी, तोमनआणुंरीश ॥ कृ० ॥ १६ ॥ वादभणीविद्याभणीजी, पररंजनउपदेश, मनसंवेगधर्योनहीजी, किमसंसारतरेश ॥ कृ०॥१७॥

सूत्रसिद्धांतवखाणतांजी, सुणतांकर्मविपाक, खिणएकमनमांहि ऊपजैजी, मुऊमरकटवैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविधत्रिविधकरीऊचरुंजी, जगवंततूह्महजूर, बारबारजांजुंबलिजी, छूटकवारोदूर ॥ कृ० ॥ १९ ॥ आपकाजसुखराचतांजी, कीधाआरंजकोम, जयणानकरीजीवनीजी, देवदयापरभोम ॥ कृ० ॥ ॥ २० ॥ वचनदोषव्यापककह्याजी, दाख्याअनरथदंम, कूमकपटबहुकेलवीजी, व्रतकीधाशतखंम ॥ कृ० ॥ २१ ॥ अणदीधोलीजैतिणोजी, तोहिअदत्तादान, तेदूषणलागाघणाजी, गिणतानावेज्ञान ॥ कृ० ॥ २२ ॥ चंचलजीवरहैनहींजी, राचैरमणीरूप, कामविटंबनसिकहुंजी, तेतुंजाणेंस्वरूप ॥ कृ० ॥ ॥ २३ ॥ मायाममतामेंपड्योजी, कीधोअधिकोलोज, परिग्रहमेह्योकारमोजी, नचढिसंयमसोज ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लागामुजनेलालचेजी, रात्रिजोजनदोष, मेंमनमुंक्योमांहरोजी, नधर्योधर्मसंतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इणजवपरजवदूहव्याजी, जीवचोरासीलाख, तेमुजमिछामिछुक्कमंजी, जगवंततोरीसाख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ कर्मादानपनरैकह्याजी, प्रगटअढारेपाप, जेमेंकीधातेसहुजी, वगशवगशमाइबाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुजआधारछेएतलोजी, सरदहणाछेशुद्ध, जिनधर्ममीठोजगतमेंजी, जिमसाकरनेदूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषजदेवतूंराजियोजी, सेत्रुंजगिरिसिणगार, पापआलोयाआपणाजी, करप्रजुमोरीसार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्मएहजिनधर्मनोजी, पापआलोयाजाय, मनसुंमिछामिछुक्कमंजी, देतादूरपुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तुंगतितुंमतितुंधणीजी, तुंसाहिबतुंदेव, आणधरुंसिरताहरीजी, जव-

नवताहरिसेव ॥ कु० ॥ ३१ ॥ कलश इमचढीयसेत्रुंजचरण-नेव्यानाजिनंदनजिनतणा, करजोमिश्रादिजिणंद, आगेपाप-आलोयाआपणा, श्रीपूज्यजिनचंदसूरिसद्गुरुप्रथमशिष्यसुजश-घणें, गणिसकलचंदसुसीसवाचक, समयसुंदरगणिनणै ॥ ३२ ॥ इतिआलोयणस्तवनं ॥

॥ अथ आलोयणवृद्धस्तवनंलिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ सकलसिद्धिदायकसदा, चौवीशेजिनराय, सद्गुरु-सामिनीसरसती, प्रेमेंप्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपतित्रिशला-तणो, नंदनगुणगंजीर, शासननायकजगजयो, वर्द्धमानवरु-वीर ॥ २ ॥ एकदिनवीरजिणंदनें, चरणेकरीपरिणाम, जविक-जीवनाहितजणी, पूछेगौतमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगतिमारगआरा-धिये, कहोकिणिपरिअरिहंत, सुधासरसतववचनरस, जाखें-श्रीजगवंत ॥४॥ अतिचार १ आलोइवे, व्रतधरीयेगुरुशाखि२ जीवखमावोसयलजे, योनिचोरासीलाख ३ ॥ ५ ॥ विधिसुं-वलिवोसराविये, पापस्थानकअढार ४, च्यारशरणनितअनु-सरे ५, निंदोदुरितआचार ६ ॥ ६ ॥ शुजकरणीअनुमोदिये ७, जावजलोमनआण ८, अणशणअवसरआदरी ए, नवपदजपो-सुजाण १०, ॥ ७ ॥ शुजगतिआराधनतणा, एछैदशअधिकार, चित्तआणीनेंआदरो, जिमपामोजवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल १ ॥

॥ एछिंडीकिहांराखी ॥ इसचालमे ॥

ज्ञानदरिशणचारित्रतपवीरज, ए पांचेआचार, एहतणाइह-जवपरजवना, आलोइयेअतीचाररे ॥ १ ॥ प्राणीज्ञानजणो-

गुणखाणी, वीरवदेंइमवाणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुउंलवीयेनहीगुरुविनयें, कालैधरीबहुमान, सूत्रअर्थतदुन्नयकरीसूधा, न्नणीयेवहीउपधानरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरणपाटीपोथी, ठवणीनोकरवाली, एहतणीकीधीआशातना, ज्ञानन्नक्तिनसंन्नालीरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिकविपरीतपणाथी, ज्ञानविराध्युंजेह, आन्नवपरन्नववलियन्नवोन्नव, मिछामिदुक्कमतेहरे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ समकितह्योशुद्धजाणी, जिनवचनें शंकानविकीजें, नविपरमतअन्निलाष, साधुतणीनिंदापरिहरजो, फलसंदेहनराखिरे, ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ समकित० ॥ मूढपणुंछंमोपरशंसा, गुणवंतनेंआदरीयें, साहमीनेंधर्मेकरीथिरता, न्नगतिप्रन्नावनाकरीयैंरे, प्रा० ॥ ॥ ६ ॥ सम० ॥ संघचैत्यप्रासादतणोजे, अवर्णवादमनलेख्यो, ड्व्यदेवकोजेहविणास्यो, विणसंताउवेख्योरे, ॥ प्रा० ॥ सम० ॥ ॥ ७ ॥ इत्यादिकविपरीतपणाथी, समकितखंड्युंजेह, आन्नव० ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ चारित्रल्योचितआणी पांचसुमतित्रिणगुपतिविराधी, आठेप्रवचनमाय, साधुतणेंधरमेंप्रमादें, अशुद्धवचनमनकायरे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ चारि० ॥ श्रावकनेंधर्मेंसामायक, पोसहमांमनवाली, जेजयणापूर्वकजेआठे, प्रवचनमायनपालीरे, ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चारि० ॥ इत्यादिविपरीतपणाथी, चारित्रखंड्युंजेह, आन्नव० ॥ मिछामि० ॥ ११ ॥ चारि० ॥ बारेन्नेदेंतपनविकीधो, उतेंयोगेंनिजशकतें, धर्मेमनवचकायावीरज, नविफोरविउंन्नगतेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चारि० ॥ तपवीरजआचारें इणपरें, विविधविराध्याजेह, आन्नव० ॥ मिछा० ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ चारि० ॥ वलियविशेषें चारित्रकेरा, अतिचार-

आलोइये, वीरजिणेसरवयणसुणीनें, पापमयलसविधोइयरे ॥
॥ प्रा० ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ ॥

पृथवीपाणीतेऊ, वाउवनस्पती, एपांचेथावरकह्याए, करी-करसणआरंज, खेत्रजेखेडीया, कूवातलावखणावीयाए ॥ १ ॥ घरआरंजअनेक, टांकांजोइंरा, मेडीमालचिणावियाए, लिंपणगुंपणकाज, एणिपरेपरंपरें, पृथवीकायविराधीयाए ॥ २ ॥ धोयणनाहणपाणी, झीलणअपकाय, छोतिधोतिकरिदूहव्याए, जाठीकरकुंजार, लोहसोवनगरा, जाडजुंजालिहालागराए॥३॥ तापणसेकणकाजें, वस्त्रनिखारण, रंगणरांधणरसवतीए, इणिपरें-कर्मादान, परिपरेंकेलवी, तेऊवाऊविराधीयाए ॥ ४ ॥ वाडी-वनआराम, वावीवनस्पती, पानफूलफलचूंटीयाए, पौहँकपा-पडशाक, सेक्यांसूकव्यां, छेद्यांछूंघाआथीयांए, ॥ ५ ॥ अलसी, नेंएरंड, घाणीघालीनें, घाणातिलादिकपीलीयाए, घालीकोलु-मांहिं, पीलीशेलडी, कंदमूलफलवेचीयाए ॥६॥ एमएकेंद्रीजीव, हण्या हणावीया, हणतांजे अनुमोदीयाए, आजवपरजवजेह वलीय० ॥ तेमुझमि० ॥ ७ ॥ क्रमीसरमीयाकीडी, गा-डरगंडोला, इअलपूराअलशीयाए, वालाजलोकचूडेल, विच-लितरस, वलीअथांणांप्रमुखनांए ॥ ८ ॥ इमबेइंद्रीजीव, जेमें-दूहव्याए, तेमु० ॥ उद्देहीजूंलीख, मांकडमक्कोडा, चांचडकी-डीकुंथुआए ॥ ए ॥ गद्दहीयाघीमेल, कांनखजूरडा, गींडोला-धनेरीयाए, इमतेइंद्रीजीव, जेमेंदूहव्यांएतेमुझ० ॥ १० ॥ माखीमछरडांस, मसापतंगीया, कंशारीकोलियावडाए, ढींकण-

वीच्छूतीरू, जमराजमरीय, कौंतावंगखरूमांकरीए॥११॥इमचौ-रिंद्रीजीव, जेमे०॥ तेमुऊ०जलमांनांखीजाल०॥ जलचरदूहव्या, वनमांमृगसंतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्यापंखीजीव, पारूीपासमां, पोपटघाल्यापांजरेंए, इमपंचेंद्रीजीव, जेमे० ॥ तेमुऊ० ॥१३॥

॥ ढाल ३ ॥

॥ प्राणीवाणीहितकारीजी ॥ एचाल ॥

क्रोधलोजजयहासथीजी, बोल्यावचनअसत्य, कूरूकरीधन-पारकाजी, लीधांजेहअदत्तरे ॥ १ ॥ जिनजीमिछामिदुक्करू-आज, तुझसाखेंमहाराजरे, जिनजी, देईसारूंकाजरे ॥ जि० ॥ ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देवमनुजतिर्यंचनाजी, मैथुनसेव्यां-जेह, विषयरस लंपटपणेंजी, घणुंविटंब्योदेहरे ॥ जि० ॥ २ ॥ ॥ मि० ॥ परिग्रहनीममताकरीजी, जवजवमेलीआथ, जेजि-हांनीतेतिहांरहीजी, कोइनआवीसाथरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणीजोजनजेकर्यांजी, कीधाजहअजह ॥ रसनारसनी लालचेंजी, पापकर्यांप्रत्यहरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रतलेई-विसारीयांजी, वलीजाग्यापच्चखाण, कपटहेतुकिरियाकरीजी, कीधाआपवखाणरे ॥ ५ ॥ जि० ॥ मि० ॥ त्रणढालआठेदु-हेजी, आलोयाअतिचार, सिवगतिआराधनतणोजी, एपहि-लोअधिकाररे ॥ जि० ॥ मि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ ॥ साहेलडीरेदेशी ॥

पंचमहाव्रतआदरो अथवाल्योव्रतबारतो, यथाशक्तिव्रत-आदरी, सा० ॥ पालोनिरतिचारतो ॥ १ ॥ व्रतलीधांसंजा-रीये ॥ सा० ॥ हियडेधरीयविचारतो, शिवगतिआराधन-

तणो ॥ सा० ॥ एबीजोअधिकारतो ॥ २ ॥ जीवसवेखमाविये, ॥ सा० ॥ योनिचोरासीलाखतो, मनशुद्धेंकरोखामणा ॥सा०॥ कोइशुंरोषनराखतो ॥ ३ ॥ सर्वमित्रकरीचिंतवो ॥ सा० ॥ कोइनजाणोशत्रुतो, रागद्वेषएमपरिहरों ॥ सा० ॥ कीजेजन्मपवित्रतो ॥ ४ ॥ साहम्मीसंघखमाविये ॥ सा० ॥ जेउपनीअप्रीतितो, सज्जनकुटुंबकरीखामणा ॥ सा० ॥ एजिनशासनरीतितो ॥ ५ ॥ खमियेंनेखमावियें ॥सा०॥ एहजधर्मनोसारतो, शिवगतिआराधनतणो ॥ सा० ॥ एत्रीजोअधिकारतो ॥ ६ ॥ मृषावादहिंसाचोरी ॥ सा० ॥ धनमूर्छामेहुन्नतो, क्रोधमानमायातृष्णा, ॥ सा० ॥ प्रेमद्वेषपैशुन्यतो ॥ ७ ॥ निंदाकलहनकीजीयें ॥ सा० ॥ कूडांनदीजेआलतो, रतिअरतिमिथ्यातजो ॥ सा० ॥ मायामोहजंजालतो ॥ ८ ॥ त्रिविधत्रिविधवोसिरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थानअढारतो, शिवगतिसाधनतणो ॥ सा० ॥ एचोथोअधिकारतो ॥ ९ ॥

॥ ढाल ५ ॥

॥ हवेनिसुणोइहांआवियाए ॥ एदेशी ॥

जनमजरामरणेंकरीए, एसंसारअसारतो, कस्यांकर्मसहुअनुभवेए, कोइनराखणहारतो ॥ १ ॥ शरणएकअरिहंतनुंए, शरणसिद्धभगवंततो, शरणधर्मश्रीजैननोए, साधुशरणगुणवंततो ॥ २ ॥ अवरमोहसविपरहरीए, चारशरणचित्तधारतो, शिवगतिआराधनतणोए, ए पांचमोअधिकारतो ॥ ३ ॥ आभवपरभवजेकस्यांए, पापकर्मकेईलाखतो, आतमसाखेंतेनिंदीयेए, पडिक्कमियेगुरुसाखतो ॥४॥ मिथ्यामतिवर्त्तावियांए, जेभाख्या-

उत्सूत्रतो, कुमतिकदाग्रहनेवशेए, वलीभाख्योउत्सूत्रतो ॥ ५॥ घड्यांघडाव्यांजेघणांए, घरटीहलहथीयारतो, भवभवमेली-मूकीयांए, करताजीवसंहारतो ॥ ६ ॥ पापकरीनेपोषियाए, जनमजनमपरिवारतो, जनमान्तरपहोतापछीए, कोइनकीधी-सारतो ॥ ७ ॥ आभवपरभवजेकर्यांए, एमअधिकरणअने-कतो, त्रिविधत्रिविधवोसिराविर्येए, आणिहृदयविवेकतो ॥ ८ ॥ दुष्कृतनिंदाएमकरीए, पापकर्यांपरिहार, शिवगतिआराधन-तणोए, एछोअधिकारतो ॥ ए ॥

॥ ढाल ६ ॥

॥ आदरतुंजोइनेंआपणीएदेशी ॥

धन्यधन्यतेदिनमाहरो, जिहांकीधोधर्म, दानशीयलतपआ-चरी, टाल्यांदुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजयादिकतीर्थनी, जे-कीधीयात्र, युगतेंजिनवरपूजीया, वलीपोख्यांपात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तकज्ञानलखावियां, जिणहरजिणचैत्य, संघचतुर्विधसाचव्या, एसातेखेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणासुपरेंकर्यां, अनुकंपा-दान ॥ साधुसूरिउवझायनें, दीधांबहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारजअनुमोदिये, एमवारंवार, शिवगतिआराधनतणो, एसातमोअधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ भावभलोमनआणीयें, चित्त-आणीठाम, समताभावेंभावीयें, ए आतमराम ॥ ६ ॥ ध० ॥ सुखदुःखकारणजीवनें, कोइअवरनहोय, कर्मआपजेआचर्यां, भोगवियेंसोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समताविणजेअनुसरे, प्राणी-पुण्यनांकाम, छारऊपरलीपणुं, झांखरचित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥

ज्ञाव ज्ञलीपरें ज्ञावीय, एधर्मनोसार, शिवगतिआराधनतणो, एआठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल ७ ॥

॥ रेवतगिरिउपरे ॥ एदेशी ॥

हवेअवसरजाणी, करीयेंसंलेषणसार, अणसणआदरीयें, पचरकीचारआहार, लघुतासविमूकी, ठांमीममतासंगए आतमखेले, समताज्ञानतरंग ॥ १ ॥ गतिचारेंकीधा, आहारअनंतनिःशंक, पणतृप्तिनपाम्यो, जीवलालचीयोरंक, डुलहोएवलीवली, अणसणनोपरिणाम ॥ एथीपामीजे, सिवपदसुरपदठाम ॥ २ ॥ धनधन्नाशालिज्ञद्र, खंधोमेघकुमार, अणसणआराधी, पाम्याज्ञवनोपार, शिवमंदिरजाशे, करीएकअवतार, आराधनकेरो, ए नवमोअधिकार ॥ ३ ॥ दशमेअधिकार, महामंत्रनवकार, मनथीनविमूको, शिवसुखफलसहकार, ए जपतांजाये, डुर्गतिदोषविकार, सुपरेंएसमरो, चउदेपूरवनोसार ॥ ४ ॥ जन्मांतरेजातां, जोपामेनवकार, तो पातकगाली, पामेसुरअवतार, एनवपदसरिखो, मंत्रनकोसंसार, इहज्ञवनेपरज्ञवे, सुखसंपत्तिदातार ॥ ५ ॥ जुओज्ञीलनेज्ञीलरी राजाराणीथाय, नवपदमहिमाथी, राजसिंहमहाराय, राणीरतनवतीबेहु, पाम्याठेसुरज्ञोग, एकज्ञवथीलेशे, सिद्धिवधूसंयोग, ॥ ६ ॥ श्रीमतीनेएवली, मंत्रफल्योततकाल, फणिधरफीटीने प्रगटथइफूलमाल, शिवकुमरेयोगी, सोवनपुरिसोकीध, एम एणेमंत्रे, काजघणानासिद्ध ॥ ७ ॥ एदशअधिकारे, वीरजिणेसरज्ञाख्यो, आराधनकेरो. विधिजेणेचित्तमांराख्यो. तेणेपाप-

पखाली, जवजयदूरैंनाख्यो, जिनविनयकरंतां, सुमतिअमृत-रसचाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नमोभविभावशुं ए ॥ एदेशी ॥

सिद्धारथरायकुलतिलोए, त्रिशलामातमल्हारतो, अवनी-तलेतुमेअवतस्याए, करवाअमउपगार ॥ १ ॥ जयोजिनवीर-जीए, एआंकणी ॥ मेंअपराधकस्याघणाए, कहेतांनलहुंपारतो, तुमचरणेआव्या जणीए, जोतारेतोतार ॥ २ ॥ जयो० ॥ आशकरीने आवीयोए, तुमचरणेमाहाराजतो, आव्यानेउवेख-शोए, तोकिमरहसेलाज ॥ ३ ॥ ज० ॥ कर्मअलुजणआकराए, जन्ममरणजंजालतो, हुंबुंएहथीउजस्योए, ठोमावोदेवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आजमनोरथमुजफल्याए, नाठादुःखदंदोलतो, तुठोजिनचोवीसमोए, प्रगट्यापुण्यकल्लोल, ॥ ५ ॥ ज० ॥ जवजवविनयएतुमारमोए, जावजक्तितुमपायतो, देवदयाकरी-दीजियेएबोधबीजसुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति आराधना ॥

॥ द० राग प्रभाति ॥

स्वामीरिसहेसरु दीठोमेंसुरतरु सुनिजरकरी प्रजुसुजस दीजैस्वामी० ॥१॥ आतमगुण तुमतणो प्रगटसोहामणो सादि अनंतस्थिति सुखलहीजै स्वामी० ॥२॥ ध्येयनाध्यानथी ध्याता-निजगुणलहे जावअभ्यासथी कर्मछीजै स्वा० ॥ ३ ॥ साध्यसाध कदशा अनुजवीआतमा बाध्य बाधक पणोदूरकीजै स्वा० ॥४॥ एकप्रदेशमां अनंतसुखतेंलह्यो तेहनोअंश प्रजुमोयदीजै स्वा० ॥ ५ ॥ त्रणजगतनाथतूं सेवकांसुखकरु अवरदूजोनही-

कोयदीसै स्वा० ॥ ६ ॥ वीनतीमानजौ सुजसमुजश्रापजो, जिनकृपाचंद्रसूरि जयबरीजै स्वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

दरसणकीयो आजआदीसरको दर० धूलेवागढमेंआपविराजो, नाभिरायनंदननीको दर० ॥ १ ॥ द्रव्यभावविधदरशणजाणो, भावविनादरसणफीको दर० ॥ २ ॥ दरसण करि भविनिजगुणपावे, वीतरागपदजिनवरको दरस० ॥ ३ ॥ जिनवरदरसणनिमित्तलहिने, उपादानआतमहीको दर० ॥४॥ कारणताग्रही कार्यअनूपम, सिद्धपणो निरुपमटीको द० ॥ ५ ॥ ज्ञानगुलालप्रेमपिचकारी, क्षमाअवीरखेले हिलमिलको द० ॥ ६ ॥ असीहोरी भविजनखेले, सूरिकृपाचंद्र सुखवरको द० ॥ ७ ॥ इति० ॥

॥ कृपानिधिवीनतिअवधारो रे एदेशी ॥

श्रीरिषभजिनेसरस्वामीरे,त्रिभुवनजनमनविसरामीरे,जगतारण अंतरजामी, भविकजनश्रीजिनवर आराधोरे एतो आराधि शिवफलसाधो भवि० ॥ १ ॥ मनमोहनदिनकरसोहेरे, देख्याभव्यकमलप्रतिवोहेरे, जिमचंद चकोरनिशिमोहे भ० ॥ २ ॥ गढधूलेवाजिनपति वंदोरे, प्रभुदरसणकरिचिरनंदोरे, एतोनिज गुणसुरतरुकंदो भ० ॥३॥ गढलंकामे प्रभुवसियारे, रावणनृपमनमेउलसियारे, सहुअयासेवानारसिया भ० ॥ ४ ॥ उज्जयणीमें प्रभुहोवेरे, श्रीपालनीव्याधिखोवेरे, सुखसंपदाकरिजनजोवे भ० ॥ ५ ॥ वागरूदेशवमोदगांममांहिरे जिहांवसियाजगतनासांहिरे, प्रभुभावभगतिमनछांहि भ० ॥ ६ ॥ तिहांथी धूलेवेआवेरे, घणाजात्रीनामनभावेरे, गौरीमिलमंगलगावे भ०

॥ ७ ॥ परचापरतिखजगमाजेरे, अतिसयगुणअंबरगाजेरे, प्रज्ञुदीठाजवजय जाजे ज० ॥ ८ ॥ देशमेवाडदेख्योनगीनोरे, करेडा पारसनाथमनलीनोरे, देलवाडेदरसणकीनो ज० ॥ ए ॥ आदीसरअद्भुतमूर्त्तिरे, उदयापुरजिनालयस्फूर्त्तिरे, पद्मनाजसेव्यासुखपूर्त्ति ज० ॥ १० ॥ वनेडेआदीसरराजेरे, इम चेत्यअनेकविराजेरे, राजनगरमांअधिकदीवाजे ज० ॥११॥ उगणीसे असीवरसेरे, फागुणशुदि आठम फरसेरे, जिनकृपाचंदसूरिमनहरसे ज० ॥ १२ ॥ इति० ॥

॥ मोरादेमइया आदिकरणतेराजइया एदेशी ॥

श्रीसंजवजिनराया त्रणजगनाथकहवाया श्रीसंज० नगरी अयोध्याजन्मलियो है, जितारिकुलनजचंदा, सेनामातसुजात सोवनद्युति, अश्वलंछनसोहाया संज० ॥ १ ॥ फागुणसुदिआठमअवतरिया, मगसरशुदिचवदशजाया, मगसर पूनिमदीक्षाधारी, कातिवदि पांचमनाणपाया संजव० ॥ २ ॥ चैत्रशुक्लपंचमीनिर्वाण, सवजीवनेंसुखदाया, साठलाखपूरवनोआयु, धनुषच्यारसै काया संज० ॥ ३ ॥ महागोपमहामाहण प्रजुजी, जवअटवी सत्थवाह, जवजलधिनिर्यामकतुमही, एओपमामनजाया संज० ॥४॥ गणधरदोयअधिकशतजाणो, सिवरमणीकोराया जिनकृपाचंद्रसूरि सुखखाणी, सेवामे मनलाया- संज० ॥ ५ ॥ इति ॥

थांपरवारीहोजिनजी श्रीधुलेवागढपतिरिषजसोहावणाहोराज रिष० ए आंकणी देशमेवाडमेसोजताहोराज थां० आदिकरणआदिनाथ जेटथा जले जावसुंहोराज जे० थां०

श्री० ॥१॥ परचा जगमेपरगऱ्याहोराज थां० आवेसंघआपार स
रसदरसणलहेहोराज सर० थां० श्री० ॥ २ ॥ स्यामवरण
शुभ्रसुंदरुहोराज थां०अद्भुतप्रभुदीदार देख्यावांछितफलेहोराज
देख्या० थां० श्री० ॥३॥ आसहती घणादिवसनीहोराजथां०
तेसफलीथइआज, पूरवसंचितफल्याहोराज पूरव० थां० श्री०
॥ ४॥ भवभवचरणारी चाकरीहोराज थां० मुजनेहितसुखकंद
सदा प्रभुदीजीयेहो राज सदा० थां०श्री० ॥५॥ मालवदेशथी
आवीयाहोराज थां० विषमउल्लंघीवाट आजदरसणलह्योहोराज
आ० थां० श्री० ॥ ६ ॥ उगणीसेअसीसमेहोराज थां०
फागणशुदिः हितकार, सदासंपतिकरुहोरा सदा० थां० श्री०
॥ ७ ॥ अव्याबाधसुहंकरु होराज थां० अनुभवअमृतपान, सदा
मुझदीजीयेहोराज सदा० थां० श्री० ॥ ८ ॥ साहिबनीसुनिज-
रभताहोराज थां० सहजफलेसहुकाज कृतारथकीजिये होराज
कृता० थां० श्रीधु० ॥ ९ ॥ आजमनोरथ सहु फल्या होराज
थां० प्रभुदरसणमनरंग सदाजयजयकरुहोराज सदा० थां० श्री०
॥ १० ॥ श्रीरिसहेसरजगजयोहोराज थां० श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि
प्रभुमुजमनवस्याहोराज प्रभु० था० श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

वारीजाउंरेसांवरियातोपरवारणारे तो० एदेशी सुणो-
सुणोजी जिनवरजीह्मांनेतारजोजी एआंकणी अश्वसेननरेसर-
नंदन, वामादेवीकेसुतवंदन, नीलवरणभविमोहनिकंदन, कर्मरि-
पुवारजोजी सु० ॥१॥ परम पुरुस परमेसर कहिये, परमात्मा-
परमगुरुलहिये, परपुद्गलसंगदूरेगमिये, सुगुणसुधार जोजी सु०
॥ २ ॥ कालअनादिपरपरणतिमे, नानादुखसह्याच्यारगतिमें

अबप्रनुदरसणपायोरतिमें, अनुनवसंनारजोजी सु० ॥ ३ ॥ देशमेवाममेतीरथहोवे, करेमापारसनाथ प्रनुसोहे, प्रनुदरसण नविजनमनमोहे, सुखसंपतिकारजोजी सु० ॥ ४ ॥ उगणीसे शुनअसीवरसे, मेरुतेरसदरसणसरसे, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिफरसे- आवागमननिवारजोजी सु० ॥ ५ ॥ इतिसंपू० ॥

श्री अजितनाथजगनाथ नविजनकाजसुधारन वाले जित- शत्रुराजाकेनंद विजयामातामनआनंद वैशाखशुदितेरसजिन- चंद मातुउदरअवतरणे वाले श्रीअ० ॥ १ ॥ माघशुदिआठम- जनुजाण सुरपतिसेवासारेमनआण, इंद्राणीकेप्राणसमान, सब- जनतारणवाले श्रीअ० ॥२॥ माहशुदिनवमीसंयमलीनो, नव्य- मनोरथकीनो पोषशुक्लइग्यारसनीनो केवलज्ञानपानेवाले श्री- अजि०॥३॥ चेतशुदितीजनिर्वाण, सुखअनंतपायोपरधान, सा- दिअनंत स्थिति महिराण, नव्यमनोरथपूरणवाले श्रीअजि०॥४॥ गजलंउनप्रनुनोपहिचान बहुतरलाखपूरवआयुजाण साढा- च्यारशतधनुषप्रमाण देहमानधराणेवाले श्री० ॥ ५ ॥ सोव- नवरण सरीरसोहंत पंचाणुगणधरमहंत चउविहसंघसेवासारंत कृपाचंदसूरिजयकरणेवाले श्रीअजि० ॥ ६ ॥ इति

शांतिजिनंदनेसेवोरेमनवा शांतिजिनंदनेसेवो मनवांछित- फललेवोरेमनवा शांतिजि० एआंकणि नयरहस्थिणापुरदक्षिण नरते, विश्वसेनमहाराजा, अचिराराणीगुणमणीखाणी, बाजेज- गजसबाजारे म० शां० ॥ १ ॥ सर्वारथसिद्धथीचवियास्वामी, मातुउदरअवतरिया, नाद्रववदिसातम नरणीये, सहुजनकार- जसरीयारे म०शां० ॥ २ ॥ रयणीयेसुखसेजेसूति चउदेसुपना-

देखे, सुकुलीनीततखिणजागृतथई, जनमकृतारथलेखेरे म०शां० ॥ ३ ॥ जेठवदीतेरस प्रजुजनम्या, त्रीजुवनमेंउद्योत, स्नात्र महोत्सवमेरुशिखरपर, इंद्रकरे सुश्रोतरे म०शां० ॥ ४ ॥ राजा घरमंगलजयकारी, पुत्रजनमउछरंग,गर्जमांहि प्रजुमारिनिवारी, तिण शांतिनामसुखसंगरे म० शां० ॥ ५ ॥ कुमरपणेंपचवीस सहस, वरसवस्यासुखवास, मंमलीकचक्रीपदपाली, एटलावर-ससहुखासरे म० शां० ॥ ६ ॥ जेठवदिचउदसशुजवारे संजम प्रजुजीलीनो, एकसहसराजापरिवारे, चोथो ज्ञानमनजीनोरे म० शां० ॥ ७ ॥ करमशत्रुनेजीपवाकारण विचरेपरमदयाल, पोषसुदिनवमीनंदीवृक्षतले, केवलपाम्योरसालरे म० शां० ॥ ८ ॥ समवसरणमे चउमुखजिनवर, देशनादेंमनुहार, संघ चतुरविधथापीजगतगुरु, कीनोजगतउपगाररे म० शां० ॥ ए ॥ मृगलंछनविराजितप्रजुजी,गरुमयक्षसेवासारे,शासनसुरीनिर्वाणी अनुपम, वांछितदेनिरधाररे म० शां० ॥ १० ॥ लाखवरसप्रजु आयुसपाली,समेतशिखर शिववरिया श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवी, निजगुणनिरमलकरियारे म० शां० ॥ ११ ॥ इति०

सुनोशीवपुरस्वामी अंतरजामी सारोअमारोकाज अ०सोलम जिन अचिराजीकेनंदा, विश्वसेननरराज,सुद्धस्वरूपधारकसुख-कारक, तीनजुवनसिरताजरे सुनो०॥१॥ जनमसमय प्रजुमारि-निवारी,शांतिनामसुखसाज,जगतजीवजीवनसुखकारण,प्रगटेग-रिबनिवाजरे सु० ॥ २ ॥ महागोपमहामाहणजगपति, नीरया मकजिनराज, जवअटविसत्थवाहसुहंकर, प्रजुदरसणलह्यो

आजरे सु०॥ ३ ॥ मांरूवगढपतिशांतिजिनेसर, श्रीसुपार्श्वमहाराज, उगणीसैगुणयासीमेरु तेरसदिनसुसमाजरे ॥ ४ ॥ सु० जावजले प्रज्ञु जेटियारे, इंदोरसंघकेसाज, जिनकृपाचंद्रसूरिसदा प्रज्ञु सेवाथी शिवराजरे ॥ ५ ॥ सु० इति०

अट्ठाइनो छढालियो ।

वीरजिणिंददिणेंदसम । प्रणमुं धरिने नेह । पर्युषणविधिवर्णवुं । सांजलो जविजन तेह ॥ १ ॥ त्रणचोमासी अतिजली । उली बे कहेवाय । पर्युषण ठपीजली । अठाई सुखदाय ॥ २॥ इन्द्रादिक सुरवरमिली । द्वीपनंदीसरजाय । द्रव्यजाव पूजा करै । तन मनथी लयलाय ॥ ३ ॥ ढाल पहिली गरबो। सुणो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीततजी चितधारिये । ए देशी । सुणसाहेली ? पर्वपजुसण पुण्ये आव्या जाणिये, सखि ? वीरजिनेसरसासन है, जयवंतो जगमां जासन है । त्रणजगमां एज सुखासन है, सुणसा० ॥ ४ ॥ सखि ? पर्वपजुसणआव्याहै, जविजनने मनमां जाव्याहै, सहुसंघने अधिकसुहाव्याहै, सुणसा० ॥ ५ ॥ सखि० ? इंद्रादिकदेवमलीसंगे नंदीसरजावै मनरंगे, प्रज्ञुजक्तिकरै अतिउमंगे सुणसा० ॥ ६ ॥ नंदीसरआठमो द्वीपजाणो, वलयाकारमनमां आणो, बावनदेरासरजिनजाणो, सुणसा० ॥ ७ ॥ अंजनगिरीच्यारे जिहांराजे, चोरासीसहस ऊंचा ठाजे, अंजनवरणा ते विराजे, सुणसा० ॥ ८ ॥ च्यार दिशि तेहने सोहे, वावच्यारेंदधिमुखहोहे, दधिवर्णा जविनां मनमोहे, सुणसा० ॥ ए ॥ विदिशिमां रतिकर कहिये, दोय दोय संख्या लहिये, लालवरणजविसरदहिये,

सुणसा० ॥ १० ॥ एकदिशि तेरहजाणो, चिहुं दिसिनां बावनमाणो, जिनचैत्यजुहारे सुरराणो, सुणसा० ॥ ११ ॥ पर्युषण पर्व आव्यां जाणी, जिनवरनीजक्तिमनआणी, करेश्रावक अतिउह्नटआणी, सुणसा० ॥ १२ ॥ जिमनंदीसर सुरपतिसेवै, तिम श्रावक सुविधि लेवै, कृपाचन्द्रसूरिनिजगुणहेवै सुणसा० ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ ज्ञानादिकगुण संपदारे ए देशी ॥

आस्रबपांचनिवारजोरे, पर्वपजूसणजान, कषायशत्रुदल वारजोरे, धारज्यो जिनवरध्यान सुज्ञानी धारज्योरे, धारज्योपरवप्रधान ॥ १४ ॥ प्रथमअहिंसकपणोधरोरे, जीवरक्षाकरो सार, अमारीपरूहवजरूायनेरे, सासनसोजवधार, सु० धा० ॥ १५ ॥ मृषावाद बोलो नहीरे, अदत्तनोकरोत्याग, मैथुनविरति आदरोरे, जिनधरमेंदृढराग सु० धा० ॥ १६ ॥ परिग्रहपरिमाणकीजियेरे, तृष्णासेतुसमान, एपांचेआस्रवतजोरे, यथाशक्तिसुखखान, सु० धा० ॥ १७ ॥ कषायच्यारनिवारिनेरे, क्षमाप्रमुखदिलधार, अंतररिपुनेजीतवारे, पर्वसेवोनिरधार, सु० धा० ॥ १८ ॥ सामायक पोसहकरोरे, दानादिकद्योसार, पर्युषण पुण्येआवियारे, आराधोसुखकार, सु० धा० ॥ १९ ॥ अजयदानअरिदमनोरे, सुणो कथानकसार, सूरिकृपाचन्द्रसेवतांरे, पामे जवनो, पार सु० धा० ॥ २० ॥

॥ ढाल तीजी ॥

॥ कपुरहुवेअति ऊजलोरे ए देशी ॥

परव पजुसण सेवियेरे, शुचिकर मनपरिणाम, देवगुरुआ-

राधिनेरे, साधो धर्मनाकाम, चतुरनर, पर्वपजूसणजाण, अनुपमसुखनी खाण चतुर० पर्व० ॥ २१ ॥ द्रव्यन्नावपूजाकरोरे, श्रीजिनन्नक्ति उदार, प्रन्नुपदपंकजन्नेटियैरे, त्रिकरणकरि एकतार, चतुर० ॥२२॥ द्रव्यपूजाजिनराजनीरे, करतांपरित्त-संसार, सामग्री अछते करोरे, जिनदरसनदिलधार, चतुर० ॥ २३ ॥ प्रन्नुदरसण पातकहरेरे, वन्दतांवांछितथाय, पूजतां-लछीसंपजेरे, कल्पवृक्षकहेवाय, चतुर० ॥२४॥ जिनदरसणम-हिमाकहीरे, आर्द्रकुमारनेजाण, सूरिकृपाचन्द्र सेवियेरे आख्यानकमनआण, चतुर० ॥ २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रभुपासनोमुखडोजोवा ए देशी ॥

आर्द्रदेशमांहेनगीनो, आरदनगरसोहै सुखसीनो, आर्द्रक-राजानेराणी, आर्द्रकुमर गुणखाणी, सुणो न्नविकजनप्राणी, जिनदरसण महिमावखाणी ॥ २६ ॥ मगधदेशराजगृह छाजै, जिहांश्रेणिकराजाबिराजे, अन्नयकुमारमंत्रीश, च्यारबुद्धि-तणो छै ईश, सुणो० ॥ २७ ॥ आर्द्रकश्रेणिकनेप्रीत, परंपराये विदीत, मंत्री तिहांआवैजावै, आर्द्रकुमारन्नेटणोपठावे, सुणो० ॥ २८ ॥ अन्नयकुमारबुद्धिप्रकाशै, जिनप्रतिमान्नेजेउल्लासे, जिनमुद्राअद्भुतजोवे, जातिस्मरणआर्द्रनेहोवे, सुणो० ॥२९॥ कुमर वाहणमांवेसी, आर्यदेशआव्योमनहर्षी, दीक्षालीधीम-नचंगे, थया प्रत्येकवुद्धउमंगे, सुणो० ॥ ३० ॥ खड्गधारासम-व्रतपाले, अतिचारपंकपखाले, श्रीमतिनेपूर्वन्नवसंगे, रह्या चोवीसवर्षछमंगे, सुणो० ॥ ३१ ॥ पश्चात्ताप करीनेव्रतलीनो,

शुद्धधर्मैं दृढमनकीनो, राजग्रहसाहमांजावै, बिचबौद्धादिकने हठावे, सुणो० ॥३२॥ बिचगोशालेने हरावी, हस्तीतापस समजावी, श्रेणिकने अन्नयकुमार, वन्दनआव्यादिलधार, सुणो० ॥ ३३ ॥ श्रीवीरनाचरणसेवीने, मुनिजन्मकृतारथकीन, जिनकृपाचन्द्रसूरिसैवे, नवियणजगमां जसलेवे सुण०॥३४

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मनडोमोह्योरेमनमोहनजी ए देशी ॥

पर्वपजूसणआवियान्नविप्राणीजी, एतो आराधोगुणखाण, पर्वआराधोरे न्न० ॥ ३५ ॥ ठ्ठअठमादितपकरो, न्न० पत्त मासखमणसुखकार, पर्व० न्न० ॥ ३६ ॥ अमारिपरूहवजरूाविने, न्नवि० सर्वजीव प्रतिपाल, पर्व० न्न० ॥ ३७ ॥ सूर्ययशाराजापरे, न्न० सेवो तप दृढचितलाय पर्व० न्न० ॥ ३८ ॥ अयोध्यानगरीनोराजियो न्न० न्नरतपुत्र त्रिखंरूप्रतिपाल, प० न्न० ॥ ३९ ॥ इंद्र प्रशंस्यो तिणसमे, न्न० उर्वशीरंन्नाइहांआत, प० न्न० ॥ ४० ॥ विद्याधर कुमरीबनीन्न० परणीराजायेचित्तचाह, पर्व० न्न० ॥ ४१ ॥ न्नोगविलासन्नलीपरे, न्न० कालवीत्योनविजाणंत, प० न्न० ॥४२॥ परूहसांन्नलीवीनव्यो, न्न० राजानैकारणतेह, प० न्न० ॥ ४३ ॥ पर्वाराधनफलकह्यो, न्न० चूकाव्योनविचूक्योएह, प० न्न० ॥ ४४ ॥ तपनाहिंलोप्योन्नावथीन्न० सूर्ययशामहाराज, प० न्न० ॥ ४५ ॥ प्रतिज्ञा चूकीउरवसी न्न० इंद्रआव्योसुखसाज, प० न्न० ॥ ४६ ॥ मुकुटादिकन्नूषणदेई, न्न० स्तवनाकरीमनोहार, प० न्न० ॥४७॥ इंद्र गयो स्वर्गेतदा न्न० वर्त्योजयजयकार, प० न्न० ॥ ४८ ॥

आरीसा—जवनमेंरूपनो, ज० केवलज्ञानउदार, प० ज० ॥ ४९ ॥ जव्यकमलप्रतिबोधिने, ज० पाम्योशिवसुखसार, प० ज० ॥ ५० ॥ पर्वपजूसणवर्णव्यो, ज० जिनकृपाचंद्रसूरीश, प० ज० ॥ ५१ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ कलश धनाश्री देशी ॥

गायोगायोरेजविपर्वपजूसणगायो, तीर्थोमांशत्रुंजयमहिमा, नवकारमंत्र सवायो, दानमांप्राणिदयादिलधारो, पर्वमाहिकहवायोरे ज० प०॥५२॥ लौकिक लोकोत्तर बहु जेदे, पर्वघणाचित्तलायो, सहुमांचिन्तामणिसमजाणो, एहमांमनठहरायोरे ज० प० ॥ ५३ ॥ शुज ओगणीसेठहोत्तरवरसे, श्रावणसुदि मनजायो, पारसनाथ निर्वाणनेंदिवसे, पर्वमहातमगायोरे ज० प० ॥ ५४ ॥ खरतरगछ जिनआणाधारक, जिनकृपाचन्द्रसूरिरायो, सुरतबन्दररहिचोमासो, एअधिकारबनायोरे ज० प० ॥ ५५ ॥ अठाहि स्तवनम् सं०

श्रीमहावीर स्वामीना कल्याणकनुं स्तवन ॥

सिद्धारथकुलदिनमणि, त्रिशलामातसुजात । महावीरगुण वर्णवुं, त्रिजुवनमें विख्यात ॥ १ ॥ कल्याणक वर्णनकरुं, शास्त्रतणेअनुसार सावधानथई सांजलो, श्रोताजनसुखकार ॥२॥ इणअवसर्पिणीकालमां, तीर्थंकरचोवीस, जव्यकमलप्रतिबोधता, विचर्याजगना ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ संभवजिनवरवीनती ए देशी ॥

जंबुद्वीपनाभरतमां, माहणकुंमगामजाणोरे । रिषभदत्त ब्राह्मण वसे, कोमालगोत्र कहवाणोरे ॥ ४ ॥ सुणो भविक जिनचरित्रने, सुणतांपापपुलायरे, निजगुणनिर्मलकारणे, एहिज प्रथम उपायरे सु० ॥ ५ ॥ रिद्धिवंतजगपरगमो, देवानंदातसु- भज्जारे, जालंधरगोत्र धारणी, सुकृतकरवासज्जारे ॥ ६ ॥

प्राणतथीचविनेप्रभु, आषाढसुदिछठदिवसेरे, माताउयरे- अवतर्या, सुहणा लाधा रभसेरे सु० ॥ ७ ॥ जाग्रतथई सुह- णाग्रहै, सैजथीउठीआवैरे, प्रीतमपासैविनयकरी, चवदेसुह- णासुनावैरे सु० ॥ ८ ॥ माहाण सुणी हरषित थयो, अरथक- हेशुभचित्तैरे, पुत्ररत्नहोस्येसही, पामशोबहुविधवित्तेरे, सु० ॥ ए ॥ निसुणीअति प्रमुदितथई, देवानंदासुकुलिनीरे, सूरि- कृपाचन्द्रइमवदे, सहजस्वभावमां भीनीरे, सु० ॥ १० ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ जिमजिमएगिरिभेटीयेरे ए देशी ॥

पहिलेदेवलोकनोधणीरे, शक्र नाम सुरराज, सनेही, अव- धिज्ञानथीजाणीनेरे, चोवीसमजिनराज, स० ॥ ११ ॥

भावधरीनेभविजनारे, निसुणोएअधिकार स० देखेअवधि- दर्शनेरे, आनंदपाम्यो अपार, स० ॥ १२ ॥ उठ्योसुरपतिबे- गथीरे, सात आठपगसाहमोजाय, स० नमनकरेत्रिकरणकरीरे, शुद्धभावचित्तलाय स० भा० ॥ १३ ॥ नमोत्थुणंकहीवांदिनेरे, बैठोसिंहासणआय, स० सुरपतिनेमनऊपनोरे, विकल्पएह

कहिवाय स० ज्ञा०॥१४॥ तीनकालमेंनहिहुवेरे, एहवोएहवनाव स० अंतादिककुलमांहिनैरे, तित्थयरादिनआव स०ज्ञा०॥१५॥ नीचगोत्रना उदयथीरे, एहबन्योअधिकार स० उग्रादिक कुलमां सहीरे, संक्रमावुं जिनसार,स०ज्ञा०॥१६॥ इमचिन्तवीसुरेश्वररे, हरिणेगमेषीबुलाय, स० दशअछेरासुणायनेरे, आज्ञादे सुखदाय, स० ज्ञा० ॥ १७ ॥ हरिणेगमेसीइहांआई नेरे, लेईप्रभुनेहितकार, स० सिद्धारथ राजाघरेरे, त्रिशलाकूखैअवतार, स० ज्ञा० ॥ १८ ॥ आसोजवदि त्रयोदशीरे, उत्तराफाल्गुनीजाण, स० तयासीमेंदीन नाथजीरे, संक्रमाव्याहित आण, स० ॥ १९ ॥ कल्याणक बीजो स्तव्योरे, कल्पसूत्रमनधार, स० जिनकृपाचन्द्रसूरिशास्त्रमांरे, एहकह्योअधिकार, स० ज्ञा० ॥ २० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हारेमारे ठाम धरमना० ए देशी ॥

हांरे मारे क्षत्रियकुंड नगर नगीनो जाणजो, राजारे तिहां सिद्धारथक्षत्रियवसेरे, लो० हां० त्रिशलाराणी गुणमणिखाणीएहजो, रयणीये सुखसेजमां सूतीतिणसमेरे, लो० ॥ २१ ॥ हां० चवदे सुहणा देखीजागीतामजो, राजानेंजइ पूछै निपुणाअर्थनेरे लो० हां० राजाताजा थया इणवयणै जोरजो, निजबुद्धिअनुसारे भाषे शुभअर्थनेरे, लो० ॥ २२ ॥ हां० जिण दिन आव्याकूखेजगनानाथजो, तेदिनथीघणी वृद्धिथई राजाघरेरे, लो० हां० निश्चलथईने रहिया जगतदयालजो, माता ऊपरअनुकंपा प्रभुमनधरैरे लो० ॥ २३ ॥ हां०

हां० त्रिशलाराणी मनअकुलाणी त्यारजो, शोकातुरथई मूर्छितथावे तेहवेरे, लो० हां० ज्ञानथीजाणयो मातातणो विकल्पजो, प्रभुजी चाल्या एकदेशथीजेहवेरे, लो० ॥ २४ ॥ हां० हर्षितथइने राणीकहे सुहेणजो, पारसनाथप्रसादे मुजवंछितफल्यारे, लो० हां० गर्भमांही प्रभुप्रतिज्ञा कीधी सारजो, मावित्र जीवतां दीक्षानविलेवीमयारे, लो० ॥ २५ ॥ हां० संपूरणथइ गर्भस्थितिसुखकारजो चैत्र सुदीतेरसने जन्म्यानाथजीरे, लो० हां० त्रणजगमांहि वरत्यामंगलमालजो, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिशिवपुरसाथजीरे लो० ॥ २६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ दशमे देशावगासीकारे ए देशी ॥

जन्मसमय जिनराजनेरे, दिशि कुमरी आवंत, सूतिकरमकरैभावथीरे, इन्द्रासन चालंत, सुणोभवियणजणारे, सुणतांअधिक आनंद, सु० ॥ २७ ॥ अवधि प्रयुंजे सुरपतिरे, जिन जन्मोत्सवजाण, आवेऋद्धिविस्तारीनेरे, भाव अधिकदिलआण, सु० ॥ २८ ॥ सिद्धारथघर आवीनेरे, जिनजननी प्रणमंत, पांचारूपकरी प्रभुग्रहीरे इन्द्रमेरुपोहचंत, सु० ॥ २९ ॥ चोसठसुरपति तिहांमल्यारे, स्नात्रकरणने काज, तीर्थोदक कलशा भरीरे, नवरावेजिनराज, सु० ॥ ३० ॥ अष्टप्रकारीपूजाकरीरे मातापासेलाय, रत्नवृष्टिकरीसुरपतिरे, द्वीप नंदीसरजाय, सु० ॥ ३१ ॥ राजाघर ओछव घणोरे, प्रभुजन्म्यासुखकार, वृद्धिथई नाम आपियोरे, वर्धमानहितकार, सु० ॥ ३२ ॥ कुमरपणेप्रभुगुणनिधीरे, चारअतिशय सुखदाय, आमलकी क्रीडा-

समेरे, महावीरनाम थाय, सु० ॥ ३३ ॥ नेसालेजइआवियारे, परण्याराजकुमारी, मातपिता स्वर्गेगयारे, दीक्षाथीदिलधारी, सु० ॥ ३४ ॥ लोकान्तिक सुरवचनथीरे, देवेवरसीदान, मागसरवदी दशमीदिनेरे, ज्ञातवनषंरूडद्यान, सु० ॥ ३५ ॥ चोसठइन्द्रउत्सवकरेरे, दीक्षालेवेजिनराज, सूरिकृपाचन्द्र सेवियेरे, तुर्यकल्याण सुखसाज सु० ॥ ३६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ए देशी ॥

प्रजुजीसंजमलेइने, वरूजागीहो विचर्याजगनाथके, परिसहसहताइकमने, क्षमाधारैहो सहुजीवनेसाथके, प्र० ॥ ३७ ॥ बारेवरसउम्मासबलि, एकपक्षनोहो उदमस्थनोकालके, रहीनेप्रजु केवललह्यो वैशाखनी हो दशमीउजवालके, प्र० ॥ ३८॥ वैशाखसुदी अगियारसे, पावापुरी हो आव्या सुरसाथके, समवसरणसुरवररच्यो, तिहां वेठाहोत्रणजगनानाथके, प्र० ॥ ३९ ॥ इन्द्रजूत्यादिकगणधरु, एकादशहो थाप्या गुणगेहके, संघचतुर्विध जगजयो, जिनवाणी हो वूठोअमीरसमेहके, प्र० ॥ ४० ॥ चौत्रीसअतिशयशोजता, जूमंरूलहो विचरे जगजाणके, जव्यकमलप्रतिबोधता, शिवंकर हो सहु जीवना त्राणके, प्र० ॥ ४१ ॥ तीस गृहिकेवलिपणे, वेतालीस हो श्रमणपर्यायके, बहुतरवरसनोआउखो, पालीनेहो पावापुरीआयके प्रजु० ॥ ४२ ॥ कातिवदिअमावसे, स्वातिनक्षत्रहो चन्द्रनोसंयोगके, पाछलीरात्रेशिववर्या, सादिअनंतहो लह्योसुखनो जोगके प्र० ॥ ४३ ॥ इनविधप्रजुना वरण्व्या,

कल्याणक हो षट,अतिहि उदारके, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि-
जणे, मुजहोज्यो हो आगमनो आधारके, प्र० ॥ ४४ ॥ कल-
श सुजद्रव्यमुनिनिधिचन्द्रवरसे जाद्रव शुदि एकमसमे, श्रीवी-
रजिनवरजविकसुखकर, कल्याणक शुजसंगमे, शीतलजिनेसर
चन्द्रप्रजुवर सुरतबन्दरसुखवरु, जिनकृपाचन्द्रसुरीन्द्रसेवो
धर्ममंगलहितकरु ॥ ४५ ॥ इति ठक० सं० ॥

॥ श्रीमहावीरस्वामीना सत्तावीसभवनुं स्तवन ॥

स्वस्तिश्री संपदकरण, हरणताप दुःखदंद, प्रणमिपासजिणं-
दने, जिनगुण गाउं अमंद, ॥ १ ॥ वीरजिणंद दिणंदसम,
शासनके सिरदार, अलियविघन दूरेहरे, नमिये वारंवार ॥२॥
गौतमस्वामीआदिने, त्रिकरण करुं प्रणाम, लब्धिसिद्धिदायक
सदा, सारेवांछित काम ॥ ३ ॥ सुयदेवीसुपसायले, वरणुंवि-
विध प्रकार; वर्धमान जिनचंदना, जव सत्तावीस सार ॥ ४ ॥
ढाल पहेली—जगजीवनजगवालहो ए देशी । वीरजिनेश्वर
वंदिये, शासनपति सुखकार, लालरे, माहणकुंरू नाम नय-
रमां, रुषजदत्त गुणसार, लालरे, वीर० ॥ ५ ॥ माहणको-
मालगोत्रनो, देवानंदा सुजाण, लालरे, पत्नी शीलगुणेकरी,
शोजितगुणमहिराण, लालरे, वीर० ॥ ६ ॥ आषाढसुदि छठी
दिने, चविया स्वर्गथी ईश, ला० उत्तराफाल्गुनी तिणसमे,
रूपनाकूखे जगीश, ला० वी० ॥ ७ ॥ चवदेस्वप्ना देखीया,
देवानंदासुप्रधान, ला० जाग्रतथई पतिने कह्यां, अर्थग्रहेसु-
जान, ला० वी० ॥ ८ ॥ रुषजदत्त ब्राह्मणजणे, सुतहोस्ये
गुणखाण, ला० सर्वकला ग्रहशे मुदा, सूरवीरमनआण ला०

वी० ॥ ए ॥ चउवीसमजिनऊपना, जवसत्तावीसकीध, ला० तेवरणुंसंखेपथी सुणतांकारजसिद्ध, ला० वी० ॥ १० ॥ जंबूद्वीपमांजाणीये, पश्चिम विदेहमऊार, ला० प्रतिष्ठानपुरमावसे, नयसारनामउदार ला० वी० ॥ ११ ॥ कणवारियो गामालेई, काष्ठलेवा वनजाय, ला० साधुकेई तिहां आविया, वांदि लाव्यो निजगाय ला० वी० ॥ १२ ॥ असनादिकपमिलाजने, धर्मसुण्यो चित्तलाय, ला० समकितपामिने मुदा, मार्गे मुनिपोहचाय, ला० वी० ॥ १३ ॥ कालअनादि जमतांथकां, जवसंख्या न लहंत, ला० समकितथी जवजाणिये, तेह कहुं विरतंत, ला० वी० ॥ १४ ॥ पहलोजव नयसारनो, पहले देवलोक जाय, ला० जिनकृपाचन्द्रसूरि कहे, बीजो जव कहिवाय, ला० वी० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी॥—श्रीयुगमंधरजीनेकहेजो ए देशी ॥

सांजलो जविजन मनरंगे, वीरप्रजुना जव उमंगे, सां० जंबुद्वीपमां है गाजे, जरतक्षेत्र दक्षिण राजे, नगरीअयोध्यादीवाजे, सां० ॥ १६ ॥ रिषजदेव राजा सोहे, जरतादिक शतसुत होवे, लोकस्थिति जगजनबोहे, सां० ॥ १७ ॥ जरतने विनीतानो राजदेवे, पुत्रनामांकित देश होवे, आदीसरदीक्षालेवे, सां० ॥ १८ ॥ सहसवरस संजमपाली, केवलपाम्यो करमटाली, समवसरणस्थिति नीहाली, सां० ॥ १९ ॥ जरतगया वन्दनकाज, मरुदेवीपाम्यो शिवराज, चउविह संघ थाप्यो शुजकाज, सां० ॥ २० ॥ जरतनो पूत्र मरीचिजाणो, त्रीजोजवए कहेवाणो दीक्षानोआव्यो टाणो, सां० ॥ २१ ॥

संजमथी चूक्यो तेणे, त्रिदंमीवेसे एणे, समवसरणबाहिर ठेणे, सां० ॥ २२ ॥ जरत पूछे प्रजुनेवारु, केटला थासे जगतारु, अवसरपिणिमां सुखाकारु सां० ॥ २३ ॥ तीर्थंकर चोवीसहोवे, बारचक्री पमुहाजोवे, जविजननां संशयखोवे, ॥ २४ ॥ समवसरण जिनजीव कोई, प्रजुजी कहै मरीचि होई, जरत आव्यो वंदनसोई, सां० ॥ २५ ॥ मरीचिने वन्दना करीने, वासुदेव चक्री सरीने, तीर्थंकर थासे जवतरीने, सां० ॥ २६ ॥ तीनकाल जिनवरगमिये, सरीखाथी तुजने नमिये, जरत कही निजघरगमिये, सां० ॥ २७ ॥ चक्रीपिता माहरो आजै, पितामह जिनपति ठाजै, वासुदेवअधिको राजै, सां० ॥ २८ ॥ माहरोकुल अधिकोसोहे, गोत्रमद कर्यो मनमोहे, नीचगोत्र बांध्यो होहे, सां० ॥ २९ ॥ पंचमदेवलोके जावै, चोथो जव ए कहवावै, जिनकृपाचन्दसूरिगावै, सा० ३०॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ स्वामी शरीर सोसाई गयो ए देशी ॥

पांचमेजवब्राह्मणकुले, तापसथईने स्वाम, देवजव पामी करी, ब्राह्मणजवथयो आम, ॥ ३१ ॥ कर्मतणीगतिजाणीये, कीधाकर्म प्रमाण, ठ ब्राह्मण ठ देवना, सोलेसर्व ए जाण ॥३२॥ बहुसंसार भ्रमणकर्यो, राजगृहनगरमझार, चित्रनंदी राजा तिहां, प्रियंगुराणी मनुहार, क० ॥ ३३ ॥ विशाखजूति युवराजने, धारणी कूखे सुजाण, विश्वजूतिनामकपना, सतरमेंजवमन आण, क० ॥ ३४ ॥ राजकुमरने कारणे, दीक्षामें चित्तलाय, नियाण करिने अढारमें, देवजवमां जाय, क० ॥ ३५ ॥ तिहांथी चवि पोतनपुरे, प्रजापतिराजन, मृगावतीकूखे ऊपनो,

सातस्वप्न प्रमाण, क० ॥३६॥ त्रिपिष्ट नाम कुंवर थयो, जगणी सम जव एह, त्रणखंडनो राज्य जोगवी, सातमी नरके तेह क० ॥ ३७ ॥ इकवीसमें जव सिंहथयो, बावीसमें नरके जाय, नाना जवकरी तेवीसमें, चक्रीपदनेपाय, क० ॥३८॥ देव जव चोवीसमें, पचीसमेंनंदनराय, दीक्षालेई सेवन करी, वीस थानक सुखदाय, क० ॥ ३९ ॥ तीर्थंकर नामबांधिने, देवलोक दशमें मांहि, ठवीसमें जव ऊपना, कृपाचन्द्रसूरि सांहिं क० ॥ ४० ॥

॥ ढाल चोथी यतनी ॥

देवलोकथी चविनेस्वामी, देवानंदाने मनरामी, ऊपना सहुने हितकामी, सलूणा, वीर जिनेसरगावो, एतोमणिमोतियरूवधावो, सलूणा, वीर० ॥ ४१ ॥ सुखसेजे सुपना देखे अनुक्रमथी तेसुविशेषे, निजजन्मगणे तब लेखे, स० वी० ॥ ४२ ॥ निज प्रीतमपासेजावे, फलपूठीने हरखावे, पाठी निज सेजमें आवे, स० वी० ॥ ४३ ॥ देवानंदाहरख जराणी, धर्मजागरिका गुणखाणी, करे सखियो सहित उलसाणी, स० वी० ॥ ४४ ॥ तिणसमे सौधर्मइंद, अवधिथी जोवेजिणंद, शक्रस्तवकरेसुखकंद, स० वी० ॥ ४५ ॥ इम वांदी सिंहासण वेसे, चिंतवतां संशयपेसे, जिनजक्तिकरी शुखलेसे, स० वी० ॥ ४६ ॥ हरणेगमेसीने बोलावे, दश अछेरा समजावे, शुज गर्जसंहरण करावे स० वी० ॥ ४७ ॥ हरिणेगमेषी वैक्रियकरीने, तिरछे लोकमां आव्यो सरीने, अशुज पुजल सब हरीने, स० वी० ॥ ४८ ॥ आश्विन वदि तेरसराते, उत्तराफाल्गुनी चन्द्रविख्याते, संक्रमाव्या देवनिजहाथे, स० वी० ॥ ४९ ॥

क्षत्रियकूंड नगर नगीनो, सिद्धार्थ राजसुखजीनो, त्रिसला-
राणीमनलीनो, स० वी० ॥ ५० ॥ त्रिसला माता मनरंगे,
चवदे स्वपना चितचंगे, देखे मनधरीय उमंगे, स० वी०
॥ ५१ ॥ सिंह हाथी वृषभ लछी माल, चंद्र सूर्य ध्वज कलस
विलास, सर समुद्र विमान रसाल स० वी० ॥ ५२ ॥ रत्न-
राशी अग्निशिखाहोवै, चवदे स्वप्ना माता जोवे, देखीनेजाग्र-
तहोवै, स० वी० ॥ ५३ ॥ अर्थ पूछे त्रिशला राणी, सुतरत्न-
होस्ये गुणखाणी, जिनकृपाचन्द्रसूरिवखाणी, स० वी ॥ ५४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ साहिब शिव वसीया ए देशी ॥

सिद्धारथ राजाघरेरे, आव्याजगनानाथ, प्रभुमुजमनवसिया,
मनवसीयामुजदिलवस्यारे, शिवपुरकेरासाथ, प्र० ॥ ५५ ॥
बीजो कल्याणक थयोरे, दिवस बयासी बाद, प्र० त्रिशला
उदरेआवियारे, शास्त्रघणासंवाद, प्र० ॥ ५६ ॥ आचारांग
ठाणांगमांरे कल्पसूत्रमांपाठ, प्र० जो नहीमानेमोहथीरे, एह
कर्मनोठाठ, प्र० ॥ ५७ ॥ गर्भमें प्रभु निश्चलरह्यारे, माता शोक-
करंत, प्र० एकप्रदेशे चालतारे, माता घणीहरखंत, प्र० ॥५८॥
मातापिताजीतां थकांरे, नलेवुं संजमभार, प्र० अभिग्रह
लेइने, प्रभुरे, वृद्धिपाम्याजयकार, प्र० ॥ ५९ ॥ चैत्रसुदिते-
रसदिनेरे, जन्म्याजगतदयाल, प्र० जिनकृपाचन्द्रसूरिभणेरे,
वर्त्योजयजयकार प्र० ॥ ६० ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ माने संसार सेरी वीसरीरेलोल ए देशी ॥

म्हारे जगतसुहंकर नाथजीरे, लोय, दिशिकुमरीआवेतत-

लवजो, जन्मोत्सवकरे सुरपतिरेलोय, मातापासे ठावेसुदेणजो म्हां० ॥ ६१ ॥ वृद्धिथईतिणकारणेरेलोय, वर्द्धमान नामदीयो-तेणजो, अनुक्रमे दीक्षाआदरीरे लोय, चारित्र पाल्यो शिव लेणजो, म्हां० ॥ ६२ ॥ वैशाखसुदि दशमी दिनेरेलोय, लह्यो केवलज्ञानदिणिन्दजो, लोकालोकने जाणतारे लोय, विचरेजग-नाथ जिनंदजो, म्हां ॥६३॥ इंद्रनूत्यादि गणधररूरे लो० थयाए-कादशगुणखाणजो चउविहसंघसुंपरिवर्यारेलोय, नविकमलना बोधकजाणजो, म्हां० ॥ ६४ ॥ कार्तिकवदि अमावसेरेलोय, प्रनुपाम्यामुगति सुखकारजो, कल्याणक बगे थयोरेलोय, जिनकृपाचन्द्रसूरि जयकारजो म्हां० ॥ ६५ ॥ कलश । नुज-वरसरस ६, मुनि ७, निधि ए, चन्द्रे १ (१ए७६) श्रावणसुदि-तेरसदिने, सुखकर जिनेसरना वखाएया गुणगण आणंदित मने, खरतरगणेसर नविक हितकर सुरतबन्दरे गाइयो, जिन-कृपाचन्द्रसूरि थुएयो हरखे नविकजनमननाविथो ॥ ६६ ॥ इति सत्तावीसनवनो ढालियो समाप्त ॥

॥ ऋषभदेव स्वामीना तेर भवनुं स्तवन ॥

आदिजिणिन्द दिणेन्दसम, नविककमल विकसात । प्रणमुं पदपंकजसदा, सहुजगमें विख्यात ॥ १ ॥ समकित पामिने प्रनु, नव तेरे जेकीध, ते सुणजो नवि इकमना, मन-वांबित फल लीध ॥ २ ॥ धन्नो १, मिथुन २, सुर ३, मह, ब्बल ४, ललितांग ५, वज्रजङ्घजाण ६, जुगल ७, सोहम ७, वैद ए, अच्युत १०, चक्री ११, सरु १२, जिनजाण-

१३, ॥ ३ ॥ नाममात्र ए जवकह्या, विस्तारथी कहुएम । सुणतांसमकितसंपजे, मनमाधरिने प्रेम ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली चोपाईनी ॥

जंबुद्वीपखेत्रपहिचान, महाविदेह पश्चिम प्रतिष्ठान, नगरे प्रियंकरराजान, धन्नो सार्थपति अजिधान, ॥ ५ ॥ वसंतपुरजावानेकाज, उद्घोषण करे दिनसाज, सहुनो निर्वाह होस्थे सही, आवोसाथ मनमांगहगही ॥ ६ ॥ धर्मघोष सूरि तिहांआवै, पंचसया मुनिवर सुहावै, सार्थपतीने धर्मलाज देइ, वसंतपुरजावा अनुमति लेइ ॥ ७ ॥ सथवाफोचाल्यो तिणसमे, मार्ग थोफो थोफो कापे गमे, अटवीमांआव्या तिण काल, तेटलेप्रकव्योवर्षाकाल ॥ ८ ॥ हरिततृण प्रकव्या त्यांघणा, पंकाकुल मारगजूतणा, नदीयां पर्वतथी उतरीने, मार्ग रोक्या नहिजाय तरीने ॥ ९ ॥ सार्थपति पटवासके मांहि, सथवाफो थाप्यो तिण ठाहि, पर्वतनी गुफा फासु जाण, आचारज रह्या गुणमणिखाण ॥ १० ॥ वंदी वचने गुरुसंजाल, घृतनो दानदेइ सुविसाल, समकितपाम्योरंगरसाल, वसंतपुर पहोंच्या ततकाल ॥ ११ ॥ सार्थपति समकित अनुसरी, तिहांथी चवि जुगलदेहधरी, त्रीजेजव सौधर्मेजाय, तिहांथी चविमहाविदेहै आय ॥ १२ ॥ पश्चिमगंधलावतीयै होय, सतबल नर पति तिहांजोय, चन्द्रकान्ताराणीमनरळी, महाबल पुत्र थयो सुखकली॥ १३ ॥ चोथो जव ए कहुं चितलाय, महाबल विसवी घणो कहवाय, उदयअस्त जाजाणों नहीं, सुखमां मगन सदातेरही ॥ १४ ॥ इकदिननाटक निरखेराय, सुबुद्धिमंत्रीगाथासं-

नवाय; प्रतिबोधपामी संजमलियो, अणसण करी निजकारजकियो ॥ १५ ॥ ईशान देवलोके पंचमनवे, ललितांगदेव थयो त्यांहवे, स्वयंप्रना देवीत्यां जाण, धर्मिणी पूरवनव प्रमाण ॥ १६ ॥ छठ्ठेनवपूर्वविदेहमझार, लोहार्गलनयरे सुखकार, सुवर्णजंघनृप लक्ष्मीवती, राणी पुत्रवज्रजंघसती ॥ १७ ॥ चक्रीपुत्री स्वयंप्रनाजीव, श्रीमतिनामे पुत्री सदीव, वज्रजंघ परण्यो स्वयंवरे, पुत्र प्रयोगे तिहां बिहुंमरे ॥ १८ ॥ सातमेजुगलिकउत्तरकुरु, आठमे सौधर्मे सुरवरु, नवमें नवविदेहमझार, जीवानंद वैद्य सुखकार ॥ १९ ॥ श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि नणें, श्रोताजननिसुणो इकमने, पांचमित्र तिहां बीजामल्या, सुखथीसहुना वांछित फल्या ॥ २० ॥

ढाल बीजी ।

सुण बहिनी पियुडो परदेशी–ए देशी.

एकदिनवैद्यना घरमांबैठा, क्रीडाकरे सुखमांपेठारे, कोढीसाधु आव्योवरिष्ठा, वैद्यने निंदे हिष्ठारे ॥ २१ ॥ सुणो नवियण सुगुणा जिनवाणी, शास्त्रमां एह गवाणीरे, साकरथी पण मीठी जाणी, अनुनव रसनी खाणी रे ॥ २२ ॥ वैद्यकहेदोषऔषधजोवे, तोही चिकित्साहोवेरे, अढीलाखसोनैयालइने, सेठनेहाटे जइनेरे, सु० ॥ २३ ॥ गोशीर्षचन्दनने रत्नकंबल, लेइनेमुनिपासपहुंतारे, लक्षपाकतैलनाप्रयोगे, मुनिनेकीधी सातारे सु० ॥ २४ ॥ सोवनवरण सरीर मुनीनो, करीने निजघर आयारे, सातक्षेत्रमां धनखरचीने, दीक्षाथी मन लायारे सु० ॥ २५ ॥ निरतिचार चारित्र पालीने, बारमें देवलोक

उपनारे, विदेहपुंडरीकणी वज्रसेन, धारिणीदेखे चवदसुपनारे सु० ॥ २६ ॥ वैद्यजीव चक्रीइग्यारमें, वज्रनाजथयोराणोरे, बाहुसुबाहू पीठ महापीठ, पांचमो नृपपुत्र जाणो रे सु० ॥ २७ ॥ चक्रवर्तीतीर्थंकरपासे, दीक्षा लेवे मित्रसंगेरे, वीसस्थानक आराध्योजावे, जिनकृपाचन्द्रसूरि रंगेरे ॥ २८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

मनडो अष्टापद मोह्यो माहरोजी ए देशी.

संजमपाली ठयेजणाजी, सर्वार्थसिद्धे जायजी, वारमोजवएजाणीयेजी, तेत्रीस सागरनोआयजी ॥ २९ ॥ सुणो जविजिनचरित्रनेजी, सुणतां पापपलायजी, जिनचरित्र वखाणतांजी, जवजवसुकृतथायजी सु० ॥ ३० ॥ जंबुद्वीपमां दक्षिणेजी, जरतक्षेत्र मनुहारजी, मध्यखंड इक्ष्वाकु जूमिकाजी, कुलगर सातसुखकारजी, सु० ॥ ३१ ॥ नाजि कुलगर सातमोजी, मरुदेवाजसुनारजी, आषाढवदिचोथउपनाजी, मरुदेवाउदरमांसारजी ॥ ३२ ॥ उत्तराषाढाचव जाणीयेजी, कल्याणक सुखकारजी, चवदेसुपनादेखियाजी, नाजि राजा अरथ विचारजी, सु० ॥ ३३ ॥ चैत्र वदी आठम दिनेजी, जन्म्या जगत दयालजी, सुरगिरे स्नात्रमहोत्सवेजी, करी लाया सुरपति वालजी ॥ ३४ ॥ नाम दीधो ऋषजेसरूजी, सुरपतिकरे विधि जोरजी, क्रमथी राज्यपाम्यो मुदाजी, लोकस्थिति सुखसोरजी सु० ॥ ३५ ॥ नगरी अयोध्या वसायनेजी, इन्द्रे आपी तेणजी, राज्य करे प्रभु तिणसमेंजी, कृपाचन्द्रसूरि सुखलेणजी सु० ॥ ३६ ॥

॥ ढाल चोथी–श्रीसंभव जिनराजजीरे ए देशी ॥

आदीसर जिनवरतणोरे, चरित्र कहुं चितलाय, सुणो रंग रसीया, कला बहुतर शीखवीरे जरतादिकने सहाय सु० ॥३७॥ सुणो सुणोरे जविक चितलाय, जिनपतिना गुणगाय, सु० ब्राह्मी प्रमुख पुत्री जणीरे, कलासीखवीसर्व सु० जरतने राज्य-जोलायनेंरे, दीक्षालीधी अगर्व, सु० ॥ ३८ ॥ चैत्रवदीअष्टमी दिनेरे, कल्याणक त्रीजोजाण, बारमासीनो पारणोरे, श्रेयांस कराव्यो सुजाण सु० ॥ ३९ ॥ अखात्रीज तेथी थईरे, लोक-मांहि सुखखान सु० सहसवरस संजम पालीनेरे, सकटमुख-उद्यान सु० ॥ ४० ॥ घाति कर्मनो क्षय करीरे, केवल पाम्यो ईश सु० चउविहसंघ थापीकरीरे, विचर्या जगमां जगीश सु० ॥ ४१ ॥ फागणवदिएकादशीरे, चोथो कल्याणक जाण सु० शत्रुंजयशिखर समवसर्यारे, गणधरचोरासीमान सु० ॥ ४२ ॥ पूर्वनवाणु जगनाथजीरे, समवसर्या इण ठाम सु० जूमंमल प्रजु विचरतारे, सार्यावांछित काम सु० ॥४३॥ माघ-वदितेरसदिनेरे, अष्टापद सुखकार सु० दशसहसमुनि परिव-र्यारे, मोक्षगया दिलधार सु० ॥ ४४ ॥ कल्याणकए पांचमोरे, गावो मंगल काज सु० जिनकृपाचन्द्र सूरि जणेरे, पाम्यो शिवपुर राज सु० ॥ ४५ ॥ कलश ॥ संवत उगणीसे छिहुतर जाद्रव वदि तृतीया दिने, सुरत बंदर रही चोमासो जिनगुण-गाया शुजमने, शीतलवाम्री गुणप्रवाम्री सुपसाये शीतलजिनै, जिनकृपाचन्द्रसूरि दाखे वर्त्तो मंगल प्रतिदिने ॥ ४६ ॥

॥ इति ऋषज देवस्वामीना तेर जवनुं स्तवन ।

। अथ श्री महावीर स्वामीनो पाळणो ।

सहियर वीरप्रभुनो जन्मोत्सव गावुं रंगसुं, एतोगातां भवभव-केरापातकजाय, जगगुरु जिनवर जन्म जाणी इंद्र आवे तिहां, प्रणमी माता नंदनलेइ हरखाय स० वी० ॥ १ ॥ जगगुरु मेरुशिखरपर स्नात्रकरे सुरपति मलि, गावे इन्द्राणीमिल प्रभु गुणग्रामरसाल, वाजित्रवाजै नाटिकहोवे नानाभातिना, देव-देवीमिल स्तुतिकरै सुविशाल स० ॥ २ ॥ ज० स्नात्रकरीने माता पासे लाविया, पालणेमें पधराव्या हरखी जगनानाथ, त्रिशला माता आनंद भरी हुलरावती, सुतगुणगाती निसदिनसहि-यरसाथ, स० ॥ ३ ॥ प्रभुजी पालणियेमें रमतां सुर सेवाकरे, इन्द्राणीमिल मोतियनचोक पुराय, ज० सुरकुमरी अतिरंगे नाटकनाचती, घुंघरा लेती ठम ठम पग ठमकाय स० ॥ ४ ॥ ज० जगजीवन जगपालक प्रभु जीवो सदा, एतो क्रोडदिवाली रहसो दीन दयाल, मारा प्राणजीवन प्रभु प्यारा तमने वीनवुं, नंदन वसजो मारा मनडामां चितलाय, स० ॥ ५ ॥ ज० माता त्रिशलाराणी नंदननो मुखजोवती, करती चुंबन वारणा निज हियडेमांलगाय, नंदन तारा गुणथी हुं जगमां मोटीथई, माहरे तुंहिज त्राता ताहरो सरणलेवाय स० ॥ ६ ॥ नंदन मोसालेथी सुंखडीलेइ आवसे, तेतो तुज मुख जोई आसे परम पवित्र, एतो चेडो राजा मनमां आनंदधारतो, तुज नानडीया मामी मलसे मित्र, स० ॥ ७ ॥ नंदन तुजगुण गाऊं रंगे रमाडुं हेजथी, तुंतो इन्द्राणीने वाहलो घणो सनाथ, नंदन ताहरापितातो सहु जगमां परसिद्धथया, जेनो नाम सिद्धारथ थयो तुज थी

सार्थ स० ॥८॥ नंदन जगजन तारसो वारसो कर्मसंतापनें, शिव रमणीने परणसो हाथो हाथ, नंदन चोवीसमजिनवर शिवसुखकर छो तुमे, नंदन समवसरणमां बेससोपरषदासाथ स० ॥ ९ ॥ नंदन चोसठ इन्द्र मलि तुम सेवा सारसे, नंदन प्रातिहारज आठ असे अधिकार, नंदन चउविह संघ थापीने विचरसो भूतले, तुमसेवाथासे भविजनने सुखकार स० ॥ १० ॥ मातात्रिसला इम गुण गावै रंगसु, जेभवि वीरप्रभुनो पालणो गावे रसाल, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि प्रणमें जिन चोविसमो, गातांसंघने निशदिन वर्त्ते मंगलमाल सु० ॥ ११ ॥ कलश । त्रण जगत सुखकर महिमसुंदर तीर्थंकरचोविसमो, तास गुण वर हर्ष निरभर गावो भवि भव नहि भमो, शुभगछखरतर मुनिपुरंदर कृपाचन्द्रसूरीश्वरु, रसरिषि अंक चंद्र (१९७६) वर्षे नगर सूरत गुणवरु, ॥ १२ ॥

॥ इति चोविसमा जिननो पालणो संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपजुसणपर्वनी थुइ लिख्यते ॥

वीरजिनेसर, जगअलवेसर राजग्रही समोसरियाजी । पर्वपजुसण इण परिभाखे । चउविह संघ परिवरियाजी, आषाढ चोमासाथी पचासदिननी संख्याजाणोजी । संवछरी पडिकमणो करिने आतमनिजघरआणोजी ॥१॥ दोय राता दोय धोला जिनपति । दोय काला दोय नीलाजी, लांछनवरणप्रमाण सुसोभित । सोले जिनवरपीलाजी । सतरे भेदीपूजाकरीने चैत्यपरवाडीकरिजेजी । परव पजुसण पूरवपुन्ये । पाम्या लाभ जाणीजेजी ॥ २ ॥ कल्पसूत्र निजघरपधरावी । रात्रि जागो तिहां कीजेजी । वरघोडो

सजि संघ मलीने । सद्गुरुने आणी दीजेजी । नव इग्यारे तेरे वायण । सुणिने दुरगति वारोजी । पूजा प्रजावना सद्गुरुजक्ति करिने जन्म सुधारोजी ॥ ३ ॥ साहमीवछल करिये जावे । वारंवार उजमंताजी । केइ शीयल तप संयम पाले । जाव अधिक उलसंताजी । आठ दिवस पजुसणसेवो । जिमसेवे सुरइं-दाजी । सुयदेवीसुपसायेजाखे जिनकृपाचन्द सूरींदाजी ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीपजुसणपर्वनी थुइ संपूर्ण ॥

पर्युषण स्तवन ।

पर्वपजूसण पुन्ये पामीयारे । आराधो सुमजावे सुजाणरे ॥ जिनशासनमां पर्व वखाणियेरे लोकोत्तरगुणखाणरे । पर्व० ॥१॥ अठाइ महोछव करे नंदीसरेरे । सहु इन्द्रादिक मनुहाररे । तिमजवि जावजलेथी इहां करोरे । जिनपूजन सुखकाररे । पर्व० ॥ २ ॥ पहिलेदिन उपवास जलिपरेरे । सांजलो आर्द्रकुमार चरित्ररे । रात्री जागो करो पुस्तक तणोरे । ज्ञानजक्ति करो पवित्ररे । पर्व० ॥ ३ ॥ दूजेदिन सहुसंघमिली जलोरे । वाजित्र हय गय रथ परिवाररे ॥ पुस्तक उछवकरी गुरु पासमांरे । आणीआपो सुखकाररे ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ त्रीजेदिन सहु पुस्तक पूजिनेरे, सांजलो कल्पसूत्र 'जिन' वाणरे ॥ आश्रव पांच निवरो जविजनारे । पालो जिनवर केरी आणरे । पर्व० ॥ ५ ॥ चोथेदिन चतुर चित्तमां धरोरे । जिन जक्ति विविध प्रकाररे । पूजा परजावना करी सासनतणीरे । सोजा वधारो सुविचाररे । पर्व० ॥ ६ ॥ पांचमे दिवस महोत्सव जन्मनोरे । वरते धवल मंगलसुप्रसिद्धरे । पालणो वीर प्रजुनो गाइनेरे । जिनवरजक्ति

करी जस लीधरे । पर्व० ॥ ७ ॥ वीरचरित्र सुणो छठे दिनेरे । मध्याने पारस नेमि वखाणरे ॥ आंतरा काल सांजली जावसुंरे । पच्छानुपूर्वी करी सुजाणरे । पर्व० ॥ ८ ॥ दिनसातमें आदि चरित्र वखाणतारे । निसुणो थविर तणो चरित्ररे । आठमे दिन समाचारी साधु तणीरे । सांजलो जवि कल्पसूत्ररे । पर्व० ॥ ए ॥ चैत्यप्रवाम्री संघ मिली करोरे । बूठो सुकृत केरो मेहरे ॥ संवच्छरी पमिक्कमणामें खमावियेरे । छठ अठम करो गुण गेहरे । पर्व० ॥ १० ॥ अमारी पलावी जीव यतना जाणीरे । सासन-उन्नति करो सुविनीतरे ॥ इण परे पर्व आराधो जवि जनारे । कृपाचन्द्र शासननी ए रीतरे । पर्व० ॥ ११ ॥

॥ इति पर्युषण स्तवनानि समाप्तानि ॥

। रोहिणीतप स्तवनं ।

॥ ढाल पहेली ॥

वर्द्धमानजिनवर नमी, सुयदेवी सुपसाय । रोहिणी तप विधीवर्णवुं, शास्त्रथकी चितलाय, ॥ १ ॥ कल्याणक ओली जली, पंचम्यादि तपजाण । इम बहुविध तपवर्णव्यो, तिम रोहिणी मन आण ॥ २ ॥ हांरे मारा ठामधर्मना साढा पच-वीसदेशजो ॥ ऐदेशी ॥ हांरेहारे जंबूद्वीपमां जरतक्षेत्रम-नुहारजो, अंगदेशनगीनो सोहे अतिजलोरेलोय ॥ हां० ॥ चंपा नामें सुंदर नवली नयरीजो, वासुपुज्यनन्दन जगवन्दन नृपति-लोरे लोय ॥ ३ ॥ हां० ॥ मघवाराजा जगतदिवाजा तत्थजो, कमला राणी सीयल सुहाणी रायने रे लो ॥ हां० ॥ सुतजो-

गवतां पुन्यतणे परजावजो, आठ पुत्र थया राणीमनमां जाय-
नेरे लो० ॥ ४ ॥ हां० ॥ तेहने ऊपर रोहणी नामे पुत्रीजो,
मातपिता ने वाहली घणी ते ऊपनी रे लो० ॥ हां ॥ चंद्रक-
लाजिम पुत्री वधे सुहेणजो, पांचधाय करिपालतां योवनवय-
नीपनीरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ॥ सुरकुंवरी सम देखी राजा पुत्रीजो,
वरचिन्तामनपेठीरायनेतिणसमेंरेलो० ॥ हां० ॥ स्वयम्बराम-
एरूपमांड्यो पुहवीनाथ जो, देशदेशना जूपति तेड्या सुख समेरे
लोय ॥ ६ ॥ हां० वीतसोकराजानो नन्दन नाम जो, सोजागी
गुणरागी कन्याये वर्योरे लो० हां० पूरवजवनापुन्यथी थयो वि-
वाहजो, बहुली सम्पदा पामी कुंवर कारज सर्योरे लो० ॥ ७ ॥
हां० ॥ रङ्गरली थइ सहुपहोता निज ठाम जो, चित्रसेनने
राज्यदेइ संजम लीयोरे लो० ॥ हां० ॥ वीत सोक नो नन्दन
पामी राज्य जो, रोहिणी राणी साथे सुख सम्पदपीयोरे लो०
॥ ८ ॥ हां० रोहिणीराणीने आठपुत्र चार पुत्री जो, पूरव
जवना सम्बन्धथी आवी अवतर्या रे लो० ॥ हां० ॥ आठमापु
त्रनो नामदियो लोकपालजो, खोले मां लइ रायराणी गोखे वर्याि
लो० ॥ ए ॥ हां० क्रीमाकरें दम्पति नाना प्रकार जो, तिण सम
एक नारी ने दीठी रोवतीरे लो० हां० दीनथइ सिरपीटे नान
विलापजो, देखी ने अचरज पामी रोहिणी सतीरे लो० ॥ १० ।
हां० राजाने कहे राणी नाटक जोरजो, एहवो तो मैं कदिय
नदीठो नाथजीरे लो०, हां० कहोनी मुझने नाटकनो स्वामि
नाम जो, जिन कृपाचंद्र सूरि एहने सुकृत साथजीरे लो० ॥ ११

॥ ढाल दुसरी ॥
देशी यतनी—

तब राजाकहे सुणराणी, मदमांहीघणी जराणी, ए पुत्रमरे गजराणी, रोवेछे नेत्र जराणी, सलूणी बोलबिचारीबोलो एतो सहु जगने सम तोलो, सलूणी बो० ॥ १२ ॥ जब वीते तब जो कीजै, इमकहीने राजाखीजे, खोलेथी हाथमांलीजे, छेड् कुंवरने नीचो नाखीजे सलूणी बो० ॥ १३ ॥ तब रोहिणी हसती बोले बालक किम नीचे होले, राजा मनमां दुख मोले, रोवे अति चिन्ता ठोले, ॥ सलूणीबो० ॥ १४ ॥ पडतो सुत सासणदेवे, सुकोमल हाथे लेवे, सिंहासन ऊपर सेवे, नाटक करि लुंछना लेवे, सलूणी बो० ॥ १५ ॥ ए अचरिज सहुजन निरखे, राजाराणीमनहरखे, विस्मयलहि नरपति सरखे; सुत पूरबपुण्यने परखे, सलूणी बो० ॥ १६ ॥ राजा इण परि विचारे, कोई ज्ञानि गुरुपाउधारे, तो एहसंदेहनिवारे, जिन कृपाच-न्द्रसूरि सुखसारे, ॥ १७ ॥

॥ ढाल तीजी ॥
। रंग रसीया रंग रसवन्यो मनमोहनजी ए देशी ।

इकदिन ज्ञानि पधारिया, सुणो सुगुणाजी, वासुपूज्य स्वामीना अणगार, गछपतिआव्यारे सुणो सुगुणाजी, रूपकुंज-स्वर्णकूंजजी, सु० चउनाणीकरे उपगार, गछ० ॥ १८ ॥ राजा-दिक वंदन गया, सु० देसनादीधी उदार, ग० करजोडी राजा जणे, सु० रोहिणीनो अधिकार, ग०सु० ॥ १९ ॥ मुझमनअ-चरज अतिघणो सु० कृपाकरी कहो सुविचार गछ० सु० पूरव-

जव मुनिवर कह्यो, सु० तेहसुएयो दिलधार, गछ० सु ॥ २० ॥ जंबुद्वीपना जरतमांसु० सिद्धपुरनगरकहवाय, ग० सु० पुहवी- पाल राजा तिहां सु० सिधमती राणी सुहाय, ग० सु० ॥ २१ ॥ इकदिन क्रीमा कारणे, सु० चन्द्रजद्यान में जाय, ग० सु० क्रीमा करता पधारिया, सु० गुणसागर मुनि महाराय, ग० सु० ॥ २२ ॥ मुनिने बांदी राजा कहे, सु० राणी मुनिनेदेवोदान, ग० सु० विषयनी अन्तराय मानती, सु० करुवीतुंबी देइ कीधो हेरान, ग० सु० ॥ २३ ॥ कालधर्म पाम्यो मुनिवरु सु० राणीने काढी राय ॥ ग० सु० ॥ सातमे दिन कोढ जपनो, मरी छठी नरकते जाय, ग० सु० ॥ २४ ॥ नरकतीर्यचना जवकर्या ॥ सु० ॥ इम काल अनन्तो जाण ग० सु० ॥ श्रीजिनकृपा- चन्द्रसूरि जणे ॥ सु० ॥ तुमे न करो पाप सुजाण, ॥ ग० सु० २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

जिम २ गिरिवर जेटियैरे तिम २ पाप पुलाय सलुणा ॥ एदेशी ॥ ते राणीजव चक्रमारे, दुःख सह्या अनन्त, सलुणा तारापुरमाहे वसेरे, धनमित्रसेठमहन्त, ॥ स० ॥ २६ ॥ कर्म तणी गति जाणजोरे, कर्म करो नहिं कोय, स० धनवती कूखे जपनीरे, दुर्गंधा नामहोय, स० ॥ २७ ॥ एक वणिकना पुत्रनेरे, परणावी सुरसाल, ॥ स० ॥ पतिसंयोगे जछलीरे दुर्गंधता तत्काल, स० ॥ २८ ॥ त्रास पामीतेहनो धणीरे, परदेशें गयो नाश ॥ स० ॥ ज्ञानि ने पूछे पितारे, दुर्गंधानो त्रास० ॥ २९ ॥ ज्ञानि पूर्वजवकहेरे, प्रतिकारपूछेखास, स० ॥ गुरु कहे रोहिणी तप करोरे, सातवरस सातमास, स० ॥ ३० ॥ रोहिणीनक्षत्रने

दिनेरे, चोविहारउपवास, स० ॥ अठपोहरी पोषध करोरे, वासुपूज्य पूजो खास, स० ॥ ३१ ॥ इम रोहिणी तप आदरीरे, सेविविधि युत सार, स० ए ताहरी राणी थइरे, रोहिणी नामे नार, स० ॥ ३२ ॥ पूर्वभव रोहिणी तणोरे, हरखित थया सूणि तेह, स० ॥ जिनकृपाचन्द्रसूरि सेवजोरे, धर्म धरि ससनेह, स० ॥ ३३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

जइने कहजो म्हारा वाल्हाजी रे ए देशी ।

राजा कहे मुनिराजने मारा वाल्हाजीरे, रोहिणीतप विधि-सार, गुणनिधिवंदिये, मा० तब मुनिवर तपविधिकहे, मा० चित्रसेनने रोहिणी नार, बिहुं तप विधि सुणे, मा० ॥ ३४ ॥ चन्द्र रोहिणी दिन तपकरो, मा० बारमा जिनवर सेव, करिये भावसुं, मा० गुणनो करो गुरुमुख सुणी, मा० पांचसक्रस्तव देव, त्रिहुं काल वांदिये, मा० ॥ ३५ ॥ देवजुहारो देहरे, मा० प्रभुआगल वृक्षअशोक, करिये भावशुं मा० नैवद्य नाना भांतिना, मा० प्रभुसन्मुख ढोवे थोक, चढते भावशुं, मा० ॥३६॥ केशर चन्दन मृग मदा, मा० पूजो प्रभु उछरङ्ग, नाना भांतशुं, मा० आठमङ्गल प्रभु आगलै, मा० रचियें तन्दुल उजालचङ्ग, दुरित निवारणो ॥ मा० ॥ ३७ ॥ पुस्तकपूजो भावशुं, मा० साधुसेवा करो सार, भवसागरतरो, मा० देवो दान सुपात्र ने, मा० साहमीवत्सल अधिकार, करे मन रंगशुं ॥ मा० ॥ ३८ ॥ उजमणो कीजै भलो, मा० ज्ञानादिउपगरणकरे सार, नाना भांतिना, मा० सत्तावीससंख्याकही मा० अथवा शक्ति तणे

अनुसार, धनखरचे घणो मा० ॥ ३९ ॥ ब्रह्मचर्य पालो मुदा मा० उत्सव विविधप्रकार, करिये उमङ्गसुं मा० शासण सोन्न- वधारिने मा० रथयात्रा सुखकार, चउविधसंघ मिली मा० ॥ ४० ॥ इणपरे रोहिणी विधि कही मा० राजा राणी तीर्थंकर पास, विधिसुं तपग्रहे मा० श्री जिन कृपाचन्द्रसूरि नणे मा० नव नव धर्म सेवो नवि खास, सर्वसुख संपजै मा० ॥ ४१ ॥

॥ ढाल छठी ॥

राग धन्यासरि

रोहिणी तप सेविने राजादिक, उजमणो कियो नावै, वासु- पुज्य स्वामीने पासै, दीक्षार्थी चित्तलावैरे, नवि नावधरिने सेवो एतोसेविसिवसुख लेवो रे, नवि० ॥ ४२ ॥ चीत्रसेनराय रोहिणीराणी, दीक्षालीधिगुणखाणी, आठेपुत्रे संजमलीनो, वरवासिवपटराणीरे नवि० ॥ ४३ ॥ संजम सेवीने राजादिक, आतम तत्वनिहाली, तप तपिने कर्म क्षय कीनो, दुध्धर अण- सण पालीरे नवि० ॥ ४४ ॥ केवलीथइने राजादिक सहु, सिद्धि वधूकरझाली, सादिअनंतस्थिति सुख पायो, वरती जगमें खुसालीरे ॥ नवि० ॥ ४५ ॥ मनमोहन महिमानो आगर, में थुणियो सिवगामी, उगणीसे इठन्तरवरसे, वीरजन्म अनि- रामीरे ॥ नवि० ॥ ४६ ॥ आदीसर जिनवर सुपसायै, झाबुवा नगरे अधिकारी, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि सेवो, जिनशाशन जयकारीरे नवि० ॥ ४७ ॥

॥ इति रोहिणीस्तवन ढढालियो ॥

॥ ॐ ॥

अथ पूर्णिमा बृहत्स्तवनम् ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्रीसुखसंपदा,कारणजिनवरदेव, आदीश्वरअरिहंतजी, सारेसुरनरसेव ॥ १ ॥ पूनिमतिथिआराधवा, तपकरियेसुविशेष । बारेमासपूनिमतणो, चरित्रकहुं लवलेश ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ॥

॥ जिमजिम गिरवर भेटियेरे–एदेशि ॥

श्रीजिनधर्मसुहंकरोरे, आराधोगुणखांण 'सनेही, पूनिमपर्व- मोटो कह्योरे, मास बारेमनआंण स० ॥ ३ ॥ "जिमजिम पर्व आराधियेरे, तिमतिम लहिये सुक्ख स० । जिनशासन जगमें जयोरे, मेटे भवभवदुक्ख स० ॥ ४ ॥" श्रावणमासमें जांणियेरे, 'वदितीज श्रेयांशनिर्वाण स० । अनंतनाथ सातम चव्यारे, आठम नमि जन्मजांण स० ॥५॥ कुंथुनाथनवमीचव्यारे, 'शुदिदू- जसुमति एह स० । पांचमनेमी जनमियारे, छठदीक्षाथीनेह स० ॥ ६ ॥ आठमपासजी सिवलह्योरे, पूनिमसुव्रतचव्या ईश, स० । उपवासकरि आराधियेरे, कल्याणकसुजगीश स० ॥ ७ ॥

इति श्रावण मास

भाद्रव'वदिसातमचव्यारे, सान्तिनाथ जगनाथ स० । एहिजतिथि चंद्रप्रभूरे, फाल्यो सिववधुहाथ स० ॥ ८ ॥ सुपार्श्व आठम चव्यारे, 'सुविधि नवमशुदि जाण स० । मुक्ति महिलमें विराजियारे, पर्युषण सुप्रमांण, स० ॥ ९ ॥

इति भाद्रव मास

'असोजवदि तेरस थयोरे, गर्भापहार (वीरनो बीजो) कल्याण स० । नेमीज्ञान अमावसेरे, 'पूनिम नमिचव्या जाण स० ॥ १० ॥

इति अश्विन मास

कार्तिकवदि पांचम समेरे, संभव पांम्यो नाण स० । पद्मप्रभु बारसजनमियारे, नेमि चव्या जगभाण स० ॥ ११ ॥ तेरस पद्म दिक्षाग्रहीरे, वीर दरस (अमावश) निर्वाण स० । 'सुविधी सुदितीज अर द्वादशी रे, केवलनांण सुखखांण स० ॥ १२ ॥ पर्युषण ओली भली रे, ज्ञान पंचमिपर्वजांण, स० । "जिनकृपाचंद्रसूरिसदारे, पर्वसेवोगुणखांण स० ॥ १३ ॥

इति कार्तिक मास

॥ ढाल २ ॥

"आज आपे चालो सहियां-सिद्धाचलगिरिजइयेरे" ए देशि ॥ मिगसर'वदिपंचमि सुविधि जनु, छठेदीक्षालीनी । दशम वीर संजम एकादशी, पद्म मुक्तिगति कीनीरे ॥ १४ ॥ "सुनो सुगुणा जिनशासन सुंदर, पर्व घणा जयकारी" । 'सुदि दसमी अरनाथजी जाया, पाम्या सिवसुखभारीरे सु० ॥ १५॥ इग्यारस अरनाथनी दीक्षा, मल्लीजन्म व्रत लीनो । केवल मल्ली नमी सुहंकर, पांमी जगत जस कीनोरे सु० ॥ १६ ॥ चवदश संभव जन्म लियो हैं, पूनिम दीक्षाधारी । पूनिमतिथि सेवीने भविजन, लहो सदा सुखसारीरे सु० ॥ १७ ॥

इति मार्गशीर्ष मास

'पोषदशमि पार्श्व प्रभु जन्म्या, इग्यारस संजम लीधो। चंद्रजन्म बारसनेदिवसे, तेरस व्रतमनकीधोरे सु० ॥ १८ ॥ चउदश शीतलज्ञानग्रह्योहे, 'सुदि छठ विमलनाण पायो। नवमी सांति नाण सुखदाई, इग्यारस अजित नाण आयोरे सु० ॥ १९ ॥ अभिनंदन चवदशदिनसुंदर, केवलज्ञानकहाई। धर्मजिनेश्वरपोषीपूनिम, केवललह्यो वरदाई रे सु० ॥ २० ॥

इति पोष मास

'छठ पद्मप्रभु चवनकल्याणक, बारस शीतलजन्मजांण। शीतलनाथनी द्वादशि दीक्षा, तेरस रिषभनिर्वाणरे सु० ॥२१॥ अमावश श्रेयांश केवल पायो, सुदि बीज अभिनंदन जाया। वासुपुज्य नाण धर्म विमल जिन, तीज जनमकहवायारे सु० ॥ २२ ॥ चोथ विमल जिन संजम धारी, आठम अजित जन्म-लीनो। नवमी दीक्षा अजित अभिनंदन, द्वादशि संजमलीनो रे सु० ॥ २३ ॥ त्रयोदशि धर्म जिन दीक्षा, माघ मास में जाणो। 'श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो परमारथ पहिचाणोरे सु० ॥ २४ ॥

इति माघ मास

॥ ढाल ३ ॥

"यात्रीडा यात्रा नवाणुं कारियेरे"—एदेशि ॥

सुज्ञानी ! कल्याणक तप करियेरे, एतो करिये तो भवजल-तरियै सु०। टेर। बारे पूनिमपर्व वखाणोरे, कल्याणकतपम-नआंणोरे। फागुन मासमांहेतुमेजाणोसुज्ञानी ! कल्याणकतप करियेरे ॥ २५ ॥ 'वदिछठ सुपार्श्व ज्ञानपायोरे, सातमनिर्वाण-कहायोरे, सातम चंद्र ज्ञान सुहायो, सुज्ञानी ! कल्याणक तप

करियेरे ॥ २६ ॥ नवमी सुविधि चव्या नगीनोरे, एकादशी, रिषन्नज्ञानन्नीनोरे, श्रेयांश बारस जन्म लीनो, सुज्ञानी! कल्याणकतपकरियेरे ॥ २७ ॥ मुनिसुव्रतनाण बलिहारीरे, श्रेयांशतेरशदीक्षाधारीरे, वासुपूज्यचउदसजन्मसारीसुज्ञानी क० ॥२८॥ अमावस संजम लीजेरे, 'अरनाथ चव्यासुदिबीजेरे, मल्लि जिनचोथ लहीजे, सुज्ञानी क० ॥ २९ ॥ आठम संन्नव चव्या सुविहांणरे, मल्लि बारस निर्वाणरे, मुनिसुव्रत दीक्षा जांण, सुज्ञानी क० ॥ ३० ॥ फागुन चौमासो सेवोरे, न्नाव होली करि फल लेवोरे, वासुपूज्य ज्ञानफलवेवो सुज्ञानी क० ॥ ३१ ॥

इति फाल्गुन मास

'वदि चोथ पार्श्व चव्या नांणरे, पंचमि चंद्र चवन मन आणरे, आठम रिषन्नजनम चरणजांण, सुज्ञानी क० ॥ ३२ ॥ 'तीज धवल कुंथनाथ नाणरे, अजितनाथ पंचमि निर्वाणरे, संन्नव अनंत सिवपुर ठाण, सुज्ञानी क० ॥ ३३ ॥ सुमति नवम निर्वाणलहीजेरे, इग्यारस ज्ञान कहिजैरे, तेरसवीरजन्म ग्रहीजे, सुज्ञानी क० ॥ ३४ ॥ चैत्री पद्मप्रन्नु ज्ञान मासेरे, अष्टापद ओली न्नासेरे, कृपाचंद सूरि सुविलासे, सुज्ञानी क० ॥ ३५ ॥

इति चैत्र मास

॥ ढाल ४ ॥

"विमलगिरि यात्रा नवाणुं करिये"–एदेशी ॥

न्नविजन! पूनीमपर्व्वने सेवो, सेवी शिवसुख लेवोरे न्न० । टेर । वैशाखवदि पडिवा कुंथु सिव, दूज शीतल निर्वाण । पांचम कुंथु संजमलीनो, छठ शीतलचवनजांण रे न्न० पू० ॥३६॥

नमि दशमी शिवमंदिर पाम्यो, अनंत तेरस जन्म जाणो ।
चवदश चरण ज्ञान कुंथु जन्म्या" 'सुदि चोथ चतुर्थ (अभि-
नंदन) चवाणो रे ज० पू० ॥ ३७ ॥ धर्मच्यवन सातमअभिनं-
दन,-आठम शिवपुरराणो, सुमतिजन्म नवमीदिनदीक्षा, वीर
दसमी दिन नाणो रे ज० पू० ॥ ३८ ॥ बारस विमल च्यवन
अजित जिन, तेरस संजम प्रमाणो, ।

इति वैशाष मास

जेठ वदी छठ श्रेयांश चविया, आठम सुव्रत जन्म कल्या-
णोरे ज० पू० ॥ ३९ ॥ नवमी दिन निर्वाणसुव्रतनो, तेरससांती-
जन्म कहिये,एहिजदिन निर्वाण एप्रभुनो, चवदस संजम ग्रहिये
रे ज० पू० ॥ ४० ॥ 'सुदि पंचमि धर्म शिवसुखलहियो, नवमी
वासुपूज्य चविया । सुपार्श्व बारस दिन जनम्या, तेरस संजम
ठवियारे ज० पू० ॥ ४१ ॥

इति जेठ मास

आषाढवदि चोथ रिषभ चविया, विमल सातम निर्वाण ।
नमिदीक्षा नवमीदिनलीधी, अनुपमसुखनीखाणरे ज०पू० ॥४२॥
'वर्धमान सुदिछठ च्यवनशुचि, नेमि आठम शिववरिया ।
चवदस वासुपूज्य शिवपायो, सुखसंपतिनादरिया,रे ज०पू०॥४३॥

इति अषाढ मास

बारे मास कल्याणकप्रभुना, वरणव्या शास्त्रप्रमाण । बारे-
पूनिम पर्ववखाण्या, सेवोभविकसुखखाणरेज० पू० ॥४४॥ चैत्री-
दिन उपवास करीजे, पूजा विविध प्रकार । दश वीश तीश
चालीश पचास, तिलक करे सुखकार रे ज० पू० ॥ ४५ ॥ इस-

ह्रिज फूल फलादिक ढोवे, प्रभु आगे सुविशाल । देववंदन पमिकमणोगुणनो, करिलहेसुख रसालरे ज० पू० ॥ ४६ ॥ ओली-दोय ने तीनचौमासा, पर्युषण सुखकार । दीवाली नाणपंचमी जाणो, मोनइग्यारशदिलधाररे ज० पू० ॥ ४७ ॥ पोषदसमी मेरु-तेरस वली; आखातीज अधिकारी । चैत्रीकार्तिकी, पर्वइत्यादिक-सेवो सदा सुखकारी रे ज० पू० ॥ ४८ ॥

॥ कलश ॥

संवत्‌ओगणीसेइठंतर—अक्षयत्रितीया दिनभले, झाबुवा-नगरे स्तवनकीधो. आदिजिनसुपसाउले, श्रीगछखरतर गुणपुरं-दर जिनवरआणानोरसी, श्रीजिनकृपाचंदसूरिसेवो धर्ममनमें उल्लसी ॥ ४९ ॥

इति पूर्णिमा बृहत्स्तवनम् ॥

जयकरि जिनराज पुरसादाणीरे ॥ वामासुत वरदाय निरमल नाणीरे ॥१॥ पांचकमलप्रभुअंग, निरुपमनिरख्यारे ॥ तीनकमल मुजसंग, आतमहरख्यारे ॥२॥ वदनमहोदयदेख, चंद लजाणुंरे ॥ गगनभमें निसदीस, इममनआणुंरे ॥ ३ ॥ सुरमणिज्युं सुखकार, नयणविराजेरे ॥ हृदयकमल सुविलास, थालज्युंभाजेरे ॥ ४ ॥ प्रभुकरचरण विलोक, पंकजहार्योरे ॥ ततखिण निजसंवास जलमें धार्योरे ॥५॥ इमसरवंगउदार, श्रीजिनरायारे ॥ साचेपुन्यसंयोग साहिवपायारे ॥६॥ प्रभुगुण अनुभवनीर, सांगसुरंगेरे ॥ टाल्यो पातिकपंक, आतमसंगेरे ॥७॥ बरस अढार चोतीस, वदिवैशा-खैरे ॥ मनुहर पांचमदीस सहुसंघसाखेरे ॥८॥ नगरमहेवामांहि, पासजुहार्यारे ॥ श्रीजिनचंदमुणिंद, वंछितसार्यारे ॥९॥ इति ॥

अपनेघरवेठा लीलकरो ,निजपुत्रकलत्रसैप्रेमधरो ॥ देशादेशांतरकांइफोलो,नितनामजपोश्रीनाकोफो ॥१॥ मनवंछितसगलि आसफले, सिरऊपर चामरछत्रढले ॥ आगलचाले फिलमिलघोफो, नित नामजपो श्रीनाकोफो ॥ २ ॥ जूतप्रेत वैतालवली, फायणने सायण जेहटली ॥ ठलछिद्रनलागेकाइजोफो नित० ॥ ३ ॥ एकांतरतावसीओदाहु, औषधविनजायथयोमाहु, नविदूखे माथोपगगोफो नित० ॥ ४ ॥ कंठमाल अनेगुम्मरू सबला, वलिरूपसमेरोगटलेसबला, पीफानकरे फुन गल फोफो नित० ॥ ५ ॥ नपफे डुर्जिक्षडुकाल कदा, सुवृष्टिहोय सुकालसदा, ततखिणअशुजकरम तोफो नित० ॥ ६ ॥ जागंतो तीरथपासपहु, जिहांजात्रीआवेजगतसहु मुजने जव डुःखथकी ठोफो नित० ॥ ७ ॥ श्रीपार्श्वप्रजुमहेवानगरे, मेंजेट्या जिनवरहरषजरे ॥ समयसुंदरकहै गुणजोफो नित० ॥८॥ इतिपदम् ॥

॥ जगतमें नवपद जयकारी ॥ एचाल ॥

नाकोफापारस प्रजुधारी । आवे दरसणकों नरनारी । आंकणी महेवानगरमाहै ठाजै । चिंतामणी तीरथपतिराजै । स्यामछविसुंदर विराजै । दरससै सहु डुखफाजाजै । जफावणी अश्वसेन केलाफला । वामादेवीकेनंद । प्रजावतीके कंत प्रजुजी । मुखफो पूनिमचंद । दरस आज सरस कीयो जारी । आवे० ॥१॥ जनमवाणारसीमें जाणो । धन्यते दिवस कहवाणो । कमठमद दूर करणटाणो । विषधरने कस्यो नागराणो । ज० संयमपाली निरमलो । कर्मनिर्जराहेतु । केवललही संघथापीयो । कांइ जवसागरनोसेतु । जयेप्रजु निरुपम सुखधारी आवे० ॥ २ ॥ राण-

पुरे रिसहेसरवंदे । घाणेराव महावीरचंदे । नारदपुरि सिद्धा-चलनंदे । गिरनारगिरि नेमिजिणंदे । ज० नाडोलमे प्रद्मप्रज्जु । वरकाणे श्रीपास । पंचतीर्थीयात्राकरी कांइ । सफलहुइ सहु आस । केसरीयाखीमेंल्लअधीकारी । आवे० ॥ ३ ॥ कोरटे रिषञ्च वीरवंदे । आहोर गोमीचा आनंदे । जालोरगढजेट्या जिनचंदे । महावीर सेवासुखकंदे । ज० इमअनेक ग्रामनगरमें । जेटे श्रीजिनराज । विषम उल्लंघी वाटने । जले पारसनाथसुखकाज । दरसण कस्यो मनउल्लरंगसारी । आवै० ॥ ४ ॥ सोलमासांति जिनराज । नेमीसर जेटे महाराज । सूरिजिन कीर्तिरतनआज । दरसण लह्यो श्रमणसंघसाज । उगणीसै इक्यासीये । आठम फागुणशुदिदीश । जिनकृपाचंदसूरि जावसुं जले । जेट्याजग-नाईश सदा होवे संघमें जयकारी । आवे० ॥ ५ ॥ इतिपदम् ॥

श्रीचिंतामणिपासजी दरसणपायो आज प्रज्जुजी । मनविस-रामी साहिबा, सेवाथी शिवराज प्र० श्रीचिं० ॥१॥ आतमगुण प्रगटायवा, निमित्तकारण जिनसेव प्र० उपादान आतमसही, पु-ष्टालंबन देव प्र० श्रीचिं० ॥ २ ॥ कारण कार्य पणोलहे, करतातणो शुज्जयोग प्र०॥तिममुज आतमनिस्तरे,लहिजिनवरसंयोग प्र० श्री० ॥३॥ अव्याबाध अनंतनो,पाम्योनिजगुणजोग । प्र० ज्ञानादिकजे संपदा,तेहनोनलहोवियोग प्र० श्री०॥४॥ सादिअनंत स्थितिवरी, अरूपीअरिहंत । प्र० अगुरुलघु अदयपणो निरंजनसुखसंत प्र० श्री०॥५॥ इमअनंतगुणनोधणी, ज्ञेयअनंतनोजाण । प्र० समयांतर उपयोगमां, वरतोछो सुणखाण प्र० श्री० ॥६॥ तुं परमेश्वर वालहो, परमपुरुष परमाण । प्र० परमातम पदतेंलह्यो, प्रज्जुछो जीवनप्राण

प्र० श्री० ॥ ७ ॥ सांतिसुधारसचंदलो, सांतिकरण सुखकार ॥ प्र० सोलमजिनवर सेवना, पामीलहै जवपार ॥ प्र० श्री० ॥ ८ ॥ अरिष्ट निवारण नाथजी, बावीसम जिनराज ॥ प्र० प्रबलपुण्य संयोगथी, दरसण लह्यो संघसाज प्र० श्री० ॥ ए ॥ नगरमहेवा सुखकरु, नाकोडा जगदीश ॥ प्र० जव्यकमल प्रतिबोधवा, दिनकर शोजलहीस प्र० श्री० ॥ १० ॥ उगणीसै इक्यासीये, आठम वदि-चैत्रमास ॥ प्र० जिनकृपाचंद सूरितणी, सफलफली मनआस प्र० श्रीचिं० ॥ ११ ॥ इतिपदम् ॥

देशीपणिहारी ॥ श्रीचिंतामणिपासजी माराप्रजुजी होराज ॥ लोऊवपुरराजान बालाठो अश्वसेन अंगजमुदा मा० वामामात सुजान वा० श्रीचिंता० ॥१॥ आतम गुणनाजूपगो मा० निजसत्ता रखवाल ॥ बा० सादिअनंत स्थितिवरी मा० जव्यतणा प्रतिपाल वा० श्री० ॥२॥ रिषज अजित संजवनमुं मा० समवसरण सुख-दाय ॥ बा० चत्तारिअठदश दोयनमुं मा० सहसफणा जिनराय बा० श्री० ॥३॥ जेसाणगढमें दीपता मा० महावीर जगवान बा० ॥ आदीसर अरिहंतजी मा० चंदाप्रजु गुणखाण बा० श्री० ॥४॥ देरासर त्रणजुवननो मा० चोमुख प्रतिमासार ॥ बा० अष्टापद सांतिनाथजी मा० दूजीजूमी सुखकार बा० श्री० ॥५॥ संजवजि-नपतिसुखकरु मा० शीतलजिनवरईश ॥ बा० सीमंधरादि तीर्थं-करा मा० विहरमानजिनवीस वा० श्री० ॥६॥ तेवीसमा प्रजुजग-धणी मा० चिंतामणिमहाराज॥बा० बावन देहरिदीपति मा० देरा-सरसुखकाज बा० श्री० ॥७॥ अद्भुत देहरा सोजता मा० इंद्रजवन अनुकार ॥ बा० बिंबअनुपम निरखिया मा० ठ हजार अधिकार

बा० श्री० ॥८॥ हरखघणै प्रजुजेटिया मा० वाहरूमेर संघसाथ॥ वा० चजविहसंघपरिवारसुं मा० यात्राकरि सुखसाथ बा० श्री० ॥ ए ॥ जगणीसे बयासीये मा० माघवदि दिखधार ॥ बा० कृपाचंद सूरिजावसुं मा० जेव्यो प्रजुदीदार बा० श्री० ॥ १० ॥

॥ इतिपदम् ॥

अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

जात्रीमा जाइआबूजीनी जात्राकरेजोएदेशी

यात्रिमा जाइ श्रीसिद्धाचल जेटो, चिरसंचित डुकृतमेटोरे, यात्रीमा जाइश्रीसिद्धाचल जेटो ॥ एआंकणी एमहिमावंतविराजे, निरखंता पातिकजाजैरेया० ॥ १ ॥ श्रीवीरजिनेश्वर जाखै, शत्रुंजयनी महिमा दाखैरेया० ॥२॥ पुंमरीक गणधारी, इहांसीधाकर्म गणवारीरेया० ॥३॥ पांमवप्रमुखजे सीधा, एगिरि फरसी सुखलीधारेया० ॥४॥ श्रीऋषजजिनेश्वरवंदो, चितधरी अधिक आनंदोरेया० ॥ ५ ॥ रायणतल पगलावारु, प्रजुवंदीवंछितसारुरेया० ॥ ६ ॥ पुंमरीक अतिदीपे, निरखंतां पातिकजीपैरेया० ॥ ७ ॥ चोमुख जिनवरसोहे, देखंता जविमनमोहेरेया० ॥ ८ ॥ अद्भुत बिंबविराजै, जेटैजविसिवसुखकाजैरेया० ॥ ए ॥ पाजैचढतां जावे, गुणगातां वंछितपावैरेया० ॥ १० ॥ शेत्रुंजयनदीअतिरुमी, एहनी महिमा नही कूमीरेया० ॥ ११ ॥ उलकाफोलचेलणातलाइ, सिद्धवम सिद्धसिलावरदाइरेया० ॥ १२ ॥ एगिरि वरपूजैजावे, ते नरकनिगोद न जावैरेया० ॥ १३ ॥ दरसणरी आसघणेरी, ते सफली सुकृतसेरीरेया० ॥१४॥ अनुजव अमृतपीजै, कृपाचंद सदामुजदीजैरेया० ॥ १५ ॥ इतिपदम् ॥

॥ अथनेमिनाथजीको स्तवन ॥

आजअनंद बहाररे प्रभुबेठे मगनमे ॥ एदेशी ॥ नेमिजिनं
दयालरे । सेवोस्यामसलुणा, सेवोस्या० आ० ॥ समुद्रविजयनं
दन जगबंदन, सिवादेवी मातमह्हाररे ॥ सेवोस्यामसलुणा० ॥१॥
अपराजित अनुत्तरथी चविया । मातुउदर मझाररे ॥ सेवो
स्याम० ॥ २ ॥ कातिवदि बारस प्रभुउपना । चित्रानक्षत्र
शुभवाररे ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ चउदे स्वपनादेखेराणी । तीर्थंकर
सूचनाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ ४ ॥ सावणशुदि पंचमी जिनज
नम्या । त्रिभुवनमें सुखकाररे ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ मेरुसिखरपर
जन्म महोत्सव । इंद्रकरे अधिकाररे सेवो० ॥ ६ ॥ समुद्रविजय
राजाघरउछव, बरत्यो जयजयकाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ ७ ॥
शुदिछठिविभुजये व्रतधारी, ब्रह्मचारि सुविचाररे ॥ सेवो० ॥८॥
सोरिपुरमे जन्मभयोहै, द्वारिकासंजमसाररे ॥ सेवोस्याम० ॥९॥
गिरनार गिरिके सहसा बनमे, चोथोनाण दिखधाररे ॥ सेवो
स्याम० ॥ १० ॥ पांचसुमतिधर तीनगुप्तिवर ॥ विचरेप्रभु
मनुहाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ ११ ॥ दुक्करतपकरि कर्मशत्रुहणि,
घातिकर्मखयकाररे ॥ सेवो० ॥ १२ ॥ रेवतगिरि विचरंत
आया । शुक्लध्यान ध्यानाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ १३ ॥ आसो
जनी अमावस दिवसे । केवल ज्ञानश्रीकाररे ॥ सेवो० ॥ १४ ॥
समवसरणमे चोमुखप्रभुजी, देशनादेवे सुखसाररे ॥ सेवो०
॥ १५ ॥ चउविह धर्मप्रकासे जगगुरु । संघथाप्यो सुरसालरे
॥ सेवो० ॥ १६ ॥ अढार सहससाधुनी संपदा, श्रमणी चालीस
सहजाररे ॥ सेवो० ॥ १७ ॥ एकलाख गुणत्तरसहस, श्रावक

समकितधाररे सेवो० ॥ १८ ॥ तीनलाख छत्तीशहजार । श्रावकणी सुविचाररे ॥ सेवो० ॥ १९ ॥ सहसबरस प्रनुआयुपाली, मुक्तिबधु जरताररे ॥ सेवो० ॥ २० ॥ रथनेमीराजिमतिबेउं । मोक्षगया निरधाररे ॥ सेवो० ॥ २१ ॥ पांचसें छत्तीस मुनिवर साथें, सादिअनंत स्थितिकाररे ॥ सेवो० ॥ २२ ॥ आषाढशुदि आठमने दिवसे । सिद्धि सौधमकाररे ॥ सेवो० ॥ २३ ॥ गोमुख यक्षवांछितपूरे । अंबिकाकरे सुखसाररे ॥ सेवो० ॥ २४ ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसुरि सेवो, तीरथ जयजयकाररे ॥ सेवो० ॥२५॥

॥ इतिपदम् ॥

॥ अथ श्रीभद्रेश्वर महावीरजी स्तवन प्रारंभ ॥

बीरजिनेसरसांजलोरे लाल सेवकनी अरदास सुखकारीरे, तारकविरुद सुहामणोरे लाल सुणिआयो तुमपास उपगारीरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ साहिबसुनिजर कीजियेरे लाल, मुजपर गरिब निवाज ॥ सुख० ॥ मनमोहन महिमा निलोरे लाल ॥ तुमसेवा सुखकाज ॥ उ० वी० ॥ २ ॥ काल अनादि लगे जम्योरे लाल, जवअटबी विषमअगाध ॥ सुख० क्रोधादिक स्वापदजिहांरे ॥ला॥ प्रतिप्राणिने दें वाध ॥ उ० ॥ वी० ॥ ३ ॥ इंद्रियविषय कंटकतिहांरे ॥ ला० दुर्धरशालसमान ॥ सु० चउगइ मारग चालतारे ला० मोहकरे हेरान उ० वीर० ॥ ४ ॥ काल आहेमी केरू पड्योरे ॥ ला० छलताके निशदीश सुख० ए आपदथी उद्धरोरे लाल, तुममोटा जगदीश ॥ उ० ॥ वीर० ॥ ५ ॥ जद्रेसर जलेजावसुरे लाल ॥ जेट्या श्रीजगवंत ॥ सुख० तेवीसमजिन सुखकरुरे लाल ॥ महिमावंत महंत ॥ उ० ॥ वीर० ॥ ६ ॥ बावनदेहरी

मांदीपतारे लाल ॥ मनोहर श्रीजिनराज ॥ सुख० अद्भुतदीठो देहरोरे लाल ॥ मानुंनवीनरच्यो आज ॥ ज ॥ वीर० ॥ ७ ॥ दंरूकलस सोहे सदारे लाल ॥ धजापताका लहकंत सुख० मांरूणीजोतां एहनीरे लाल ॥ नवि मनमांहरखंत ॥ ज ॥ वीर० ॥ ८ ॥ पुरवपुन्यथी पामीयोरे लाल ॥ अनुपम जिनमुखचंद सु० कल्पमंरून श्रीजगधणीरे लाल ॥ वंदेनित कृपाचंद ॥ ज० ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनुं स्तवनप्रारंभः ॥

राग देसी—जीवनम्हारातेवीसमाजिणचंद ॥ वामानंदनजेव्यारे साहिवाम्हारा नावसुंरे म्हाराराजजीवन० ॥ १ ॥ अश्वसेनकुलचंद, पापकरमसहुमेव्यारे सा० अनादिनारे म्हा० ॥२॥ जी० मूरतमोहनबेल, नीलवरणतनुछाजैरे ॥ सा० सोहामणीरे म्हा० ॥ ३ ॥ जी० मुखछबिअगमअपार, पूनमनिसिजिमराजैरे ॥ सा० रजनीकररे म्हा० ॥ ४ ॥ जी० नयनअमीरसरेल, कामणगारा प्यारारे सा० म्हारा, मनहररे म्हा० ॥ ५ ॥ जी० नालविसालरसाल, अष्टमीससिसुखकारारे ॥ सा० नव्यचकोरनैर म्हा० ॥ ६ ॥ जी० चिंतामणिप्रनुपास, लोद्रवपुरमेंविराजैरे सा० सुखकररे, म्हा० ॥ ७ ॥ जी० सहसफणामहाराज, दरिसणवांछितकाजैरे, सा० दुःखहररे म्हा० ॥ ८ ॥ जी० संघमिल्योबहुथाट, हेजैघणेगहगाटेरे सा० हरखसुंरे म्हा० ॥ ए ॥ जी० अष्टदिवसउछरंग, रथयात्राबहुरंगेरे सा० उमंगसुंरे म्हा० ॥१०॥ जी० दीठोतुम्हदीदार, शिवप्रनुमुजनैतारोरे सा० हितधरीरे ॥ ११ ॥ जी० तुमसमअवरनदेव, दीठोनहीसुखकारोरे सा०

जगतमांरे म्हा० ॥ १२ ॥ जी० तुमपदपंकजसेव, नवनवमु-
जनेमिलज्योरे सा० सुहंकरूरे म्हा० ॥ १३ ॥ जी० एहीजसु-
णीअरदास, वांछितपूरणकरज्योरे सा० कृपाकरीरे म्हा० ॥
॥ १४ ॥ इति पदम् ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभुजीनुं स्तवन ॥

श्रीचंद्रप्रभुसहिवा, सिववासीसुरनामीरे ॥ अरजकरूकरजो-
मीने, निसुणोत्रिभुवनस्वामीरे. श्री० ॥ १ ॥ कालअनादिलगे-
सही, साधारणतरूपामीरे ॥ पृथव्यादिकमांहेलह्यो, संख्यातीत-
दुःखधामीरे ॥श्री० ॥ २ ॥ कालसंख्यातेबितिचउ, पंचेंद्रि-
पणोपामीरे ॥ नानागतिनादुःखसह्या, तेजाणोसिवगामीरे. श्री०
॥ ३ ॥ नवोदधितापनिवारवा, मेंसुण्योतुंहीजकामीरे ॥ तिणतु-
जचरणकमलतणी, सेवाअविचलधामीरे. श्री० ॥ ४ ॥ तुंत्रा-
तासंसारनो, तुंहीजदीनउद्धारीरे ॥ मुजवल्लनतुंमुजधणी, ओर-
नकोसंसारीरे. श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञायकज्ञेयानंतनो, लोकालोक-
प्रकासीरे ॥ सुखघनमंदिरतेंलह्यो, तुंहितगेसिववासीरे. श्री०
॥ ६ ॥ उगणीसेपैतालीसमें, वरधापुरेहितकारीरे ॥ फागणसुदि-
तृतीयादिने, प्रतिष्ठासुजसवधारीरे. श्री० ॥ ७ ॥ युक्तिअमृत-
गुरूराजनी, युक्तिप्रवरसुविचारीरे ॥ कृपाचंद्रप्रभुकीजियै, संघ-
सकलसुखकारीरे. श्री० ॥ ८ ॥ इतिपदम् ॥

॥ अथ श्रीआबुजीस्तवन प्रारंभः ॥

श्रीआदिजिनेश्वरभेटीया, आबुगिरिसिणगारहोमरुदेवीना-
नंदन ॥ तुमदरसणमुजमनवस्यो, जिनमनचंदचकोरहो ॥म० तु० ॥
जिमदेखीजलधारने, मोरकरेझंकारहो ॥ म० तु० ॥ १ ॥ कुमु-

दनीरजनीकरलही, कमलनीजेमदिनंद, हो ॥म०॥ सायरजिम-बधेचंद्रथी, तिममुजमनआनंदहो ॥ म० तु० ॥२॥ नेमीसरजिन-राजजी, सांतिसुधारसचंद, पारसजिनपतिसुखकरु, बंधाकुश-लमुनींदहो ॥ म० तु० ॥ ३ ॥ अचलगढैअतिदीपता, सुवरण-मयजिनदेवहो ॥ म० ॥ चउगइसंकटचूरवा, सुरनरकरेजसुसे-वहो ॥ म० तु० ॥ ४ ॥ नवोदधिभ्रमणनीवातमी, केहनेकहि-यैजायहो ॥ म० ॥ रागादिकरिपुगणजणी, दूरकरोजिनरायहो ॥ म० तु० ॥ ५ ॥ आसहतीघणादिवसनी, सफसथइतेआजहो ॥ म० ॥ जनमकृतारथमाहरो, सीधावांछितकाजहो ॥ म० तु० ॥६॥ तुंपरमेश्वरबालहो, जीवनप्राणआधारहो ॥ म० ॥ नवनव-चरणनीचाकरी, मुजनेदेज्योहितकारहो ॥ म० तु० ॥ ७ ॥ उगणीसैअठावनसमें, सुदिफागणरविवारहो ॥ म० ॥ सात-मदिनेयात्राकरी, कृपाचंदसुखकारहो ॥ म० तु० ॥८॥ इतिपदम् ॥

आजआनन्दघनउमग्योरे, बुठोअमृतधार, मीठोमिसरीथी-घणोरेबाला, मिलीयापासकुमार, आजनलैनेव्याहो, जग-नायकलायकश्रीरेचिंतामणीपास ॥ आज० ॥ १ ॥ मोतीयरूफ-ड़मांमीयोरे, घरआईवहगंग, हिवमोहेजेगहगयो, मांरेआज-हुवोउछरंग ॥ आज० ॥ २ ॥ पूरबनवजेसंचियोरे, सुकृत-तणोनंमार, आजउदेआयोनलो, मैंतोदीठोप्रभूदीदार ॥ आज० ॥ ३ ॥ संतसुधामयसांनलीरे, सूरतअजबअनूप, तिणथी-मनड़ोमाहरोरेस्वांमि, मोहिरह्योधरचूप ॥ आज० ॥ ४ ॥ मोयोमानसरोवररे, बांधीनवलीप्रीत, छिलरीयेढूकेनहीं-स्वामि, हंसाआहीजरीत ॥ आज० ॥ ५ ॥ देखीमुद्रातांहरीरे,

स्वांमीमिलगईतारोतार । दीठांहीहिवनहीरुचेरे देवअवरसविकार ॥ आज० ॥ ६ ॥ जेहवोठेहितमाहरोरे, प्रभुजीसुंसपराण । तिमजेप्रभूतुमराखसोतो, थासेकोडीकल्याण ॥ आज० ॥ ७ ॥ सगलोमिलवोसोहिलोरे, राजरमणधनरंग । पिणविनस्वारथनहीमिलेमाने, साहिबजीरोसंग ॥ आज० ॥८॥ संवतअठारेसतोतरेरे, पोसदशमीशुभदीस, विनयघणेप्रभुवीनवेरे, श्रीजिनलाभसूरीस ॥ आज० ॥ इतीपदम् ॥

॥ राग सोरठ ॥

दीठाभोयणीगाममझारा, एतोमल्लीजिनंदमनुहारा ॥ दी० ॥ मुक्ताफलसमद्युतिप्रभुजीकी, मुरतिमोहनगारारे ॥ दी० ॥ १ ॥ चरणकमलकंचनकछपसम, मानुजगदाधारा, जानुअनोपमजिननानिरखी, मोहराजगयोहारारे ॥ दी० ॥ २ ॥ करसरोरुहअद्भुतजाणी, पङ्कजजलधिमझारा, कटीसुरंगीजिननीप्रेखी, केसरीअरन्यविहारारे ॥ दी० ॥ ३ ॥ प्रभुवक्षस्थलधीरजश्रीलजि, मेरुअचलाधारा, जिनगंभीरताजाणीचर्मोदधि, लोकांतकीनविहारारे ॥ दी० ॥ ४ ॥ निरलांछनप्रभुमुखजोइने, शशधरनित्यविहारा, नासिकादीपशिखासमजाणी, दीपकचंचलकारारे ॥ दी० ॥ ५ ॥ नयणअमीरसपूरणप्रभुना, कुरंगअटवीआधारा, भालविसालअनोपमराजें, अष्टमीशशीसमकारारे ॥ दी० ॥ ६ ॥ देशविदेसकाजात्रीआवें, भेटप्रभुदीदारा, विविधोत्सवपूजाकरेप्रभुजीनी, भावधरीसुविचारारे ॥ दी० ॥ ७ ॥ घणादिवसथीआशाधरीने, आयोजगदाधारा, कृपाचंद्रनिजसेवकजाणी, सुनिजरकरोसुखकारारे ॥ दी० ॥ ८ ॥ सुभभगणी-

सेगुणत्तरवरसें, वैसाखसुदिसुविचारा, आठमदिनप्रजुपदकज-जेव्या, आनंदअधिकअपारारे ॥ दी० ॥ ए ॥ इतिपदम् ॥

॥ देसीतमाकुरी ॥

जीवनमारातेवीसमाजिणचंद, वामानंदनजेव्यारे, साहिबा-म्हांराजावसुंरेम्हांराराज ॥ जी० अश्वसेनकुलचंद, पापकरम-सहुमेव्यारे ॥ साहि० अनादिनारे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जी० मुरति-मोहनवेल, नीलवरणतनुराजेरे सा० सोहामणीरे म्हां० जी० मुखछविअगमअपार, पूनिमनिशिजिमराजेरे सा० रजनीकरुरे म्हा० ॥ २ ॥ जी० नयनअमीरसरेल, कांमणगाराप्यारारे सा० मनहरुरे म्हां० जी० जालविसालरसाल, अष्टमीशशिसुखका-रारे सा० जव्यचकोरनेरे म्हां० ॥ ३ ॥ जी० चिंतांमणिप्रजू-पास, लोड्रवपुरमेंविराजेरे सा० सुखकरुंरे म्हां० जी० सहस-फणाम्हाराज, दरसणवंछितकाजैरे सा० दुखहरुरे म्हा० ॥ ४ ॥ जी० संघमिल्योबहुथाट, हेजैघणेगहगाटेरे सा० हरखसुंरे म्हा० जी० अष्टदिवसउछरंग, रथयात्राबहुरंगेरे सा० उमंग-सुरे म्हां० ॥ ५ ॥ जी० दीठोतुमदीदार, हिवप्रजुमुजनेतारोरे सा० हितधरीरे म्हां० जी० तुमसमअवरनदेव, दीठोनहीसुख-कारोरे सा० जगतमेंरे म्हां० ॥ ६ ॥ जी० तुमपदपंकजसेव, जवजवमुजनेमिलज्योरे, सा० सुहंकरुरे म्हा० जी० एहीज-मुणिअरदास, वंछितपूरणकरज्योरे सा० कृपाकरीरे म्हा० ॥७॥ इतिपदम् ॥

॥ देसीजिह्नानी ॥

जगगुरुश्रीसंखेसरमंमनपासजिनंदाहो सुखकारीमहाराज-

भवजयवारणशिवसुखतरूनोकंदाहो. दयाल ॥ ज० श्रीअस्व-
सेननरेश्वरकुलनभचंदाहो. सु० वामामातसुजातजगतआनं-
दाहो. ॥ द० ॥ १ ॥ सुंदरनीलवरणछवीअद्भुतछाजेहो. सुख०
देहप्रमाणअनोपमनवकरराजेहो. द० ज० रूपअधिकतुम-
देखीरतिपतिलाजैहो. सु० सहुसुरनरमिलसेवेवांछितकाजेहो.
द० ॥ २ ॥ ज० प्रभावतीनाप्राणेसरप्रभु प्याराहो. सु० मोह-
भूपनीखीलाथकीतुमन्याराहो. द० ज० कमठमहासठमानविका-
रणहाराहो. सु० तारणनागनागेंद्रवणावणहाराहो. द० ॥ ३ ॥
जग० जोवनवयमेंदिक्षाछिनीसुविचारीहो. सु० मेघमालीउप-
सर्गकरीगयोहारीहो. द० ज० केवलपांमीजगतजीवउपगारीहो.
सु० संघचतुर्विधथापीवर्यासिवनारीहो. द० ॥ ४ ॥ ज० तुम-
मोटात्रिभुवननानाथकहावोहो. सु० दीठांजविनेंदिलमांअधिक-
सोहावोहो. द० ज० तारणतरणतुमेंएवकोविरुदधरावोहो. सु०
तोमुजतारतांवारहवें नविलावोहो. द० ॥ ५ ॥ ज० देवलबहु-
लाजगमेंदेवतादीठाहो. सु० मुजमनकेमांतेनविलागामीठाहो.
द० ज० सरागीपणोपामीअयातेधीठाहो. सु० वीतरागप्रभुमुद्रा-
दीठीवलीउाहो. ज० ॥ ६ ॥ कालअनादिथीपरपरणतिमा
रमियोहो. सु० पुद्गलसंगेच्यारगतिमांभमीयोहो. द० ज० हिव-
प्रभुमुरतिजोतांपातिकगमीयोहो. सु० प्रभुजीप्रसादेंमोहराजउ-
पसमीयोहो. द० ॥ ७ ॥ सांतिसुधामयनवलोजिनदीदारहो.
सु० निरख्योआजआनंदभरीसुखकारहो. द० ज० पुण्यप्रबल-
थयोअधिकदिवसश्रीकारहो. सु० जगतवत्सलजथैजेव्याप्रभु-
महुहारहो. द० ॥ ८ ॥ ज० वलियारदेसमें श्रीसंखेश्वर-

स्वांमीहो. सु० सुगुरुपसायेहिवप्रजुसेवापांमीहो. द० जगणो-त्तरेजगणीसै वेसाषनामीहो. सु० कृपाचंद्रविज्ञुपदकजमनविस-रांमीहो. द० ज० ॥ ए ॥ इतिपदम् ॥

जवीयांजावधरिनेजेटोजगवाननेरे, प्रजुजीतारेसारेवंछित देव, रसीयाधर्मजीनेसरगुणगावोरंगसुंरे, एनीसुरनरपतिकरेसेव ज० ॥ १ ॥ पनरमजिनवरसेवियें, धर्मधुरंधरस्वाम, धर्मनाथ-जिनराजजी, पुरेवंछितकाम, गोमीपारसनाथप्रणमोसोहामणारे एतोबीजीजूमीबिंबविशेष ज० ॥ २ ॥ नेमजिनेसरवालहो, ब्रह्मचारीसिरदार, श्यामवरणछविसुंदरु, जविजननेसुखकार, प्रजूनोपरचोचिहुंदिसपरगमोरे, वलिवारमावासुपुज्यजांण ज० ॥ ३ ॥ शांतिजीनेसरसोलमां, शांतितणाकरनार, नेमनाथच-वरीजली, संजवचोमुखच्यार, एतोदेरासरदीठादोयसोहामणारे, दीपेबावनदेहरीविसाल ज० ॥४॥ बारमजिनवरसेवियें, वासुपु-ज्यमाहाराज, बीजोदेहरोशांतिनाथनो, मानुनवीनरच्योआज, आदीसरनोदीठोअद्भुतदेहरोरे, वलिचंद्राप्रजुचेत्यनवीन ज० ॥ ५ ॥ अजितजिनंदजुहारियें, अलियविघनसहुजाय, मुनि-सुव्रतजिनवीसमा, दादादेहरीकहाय, बंमेमाहिप्रथमजिनजे-टियारे, एतोचेत्रप्रवामीमनछरंग ज० ॥६॥ समवसरणमेंशोजता, चोमुखश्रीजिनचन्द, जविजननामनमोहता, सेवेसुरनरइंद, जामनगरमेंउछवरंगवधामणारे, हरखेमिलनेनरनारीगुणगाय, ज० ॥ ७ ॥ जगवतीजावेसांजली, उपधानवह्योचितचंग कस्तुर परमुखजविकजना, पहरिमालमनरंग, देशविदेसनाआवेबहुजा तरीरे, बरत्योकृपाचंद आनंदजयजयकार ज० ॥८॥ इतिपदम् ॥

॥ भरथरीनीदेसीः ॥

धर्मजनेसरजगधणी, त्रिभुवनपतिमनुहारजी, भव्यहृदयकजदिनमणी, सुव्रतामातमल्हारजी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ भानुकुलनभचंद्रमा, सुरतरुसमजिनराजजी, करुणाकरसहुजीवना, सारेवंछितकाजजी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ भवअटवीभमतांथका, मिलियोनहीकोईसाथजी, अनंतकालसंसारमां, तेथीरझड्योनाथजी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ हिवमुजनेप्रभुजीमल्या पूरवपुन्यप्रमाणजी, मननामनोरथसहुफल्या, साहिबचतुरसुजांणजी ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ भगवतिअंगभविकजना, निसुण्योभावविसालजी, उपधानतपपूरणथयो, पहरिमालरसालजी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ समवसरणरचनारची, भविमनहरखअपारजी, जामनगरजुगतेवण्यो, उछवविविधप्रकारजी ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ उगणीसेसडसठसमे, माघमाससुविचारजी, सुदिपांचमजिनसेवना, कृपाचंद्रसुखकारजी, ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ इतिस्तवनं ॥

राधासोचकरेमनमेरे एदेशीश्रीसिद्धाचलभेटोरे, भविका अशुभकरमसहुभेटोरे श्री० आं० पूरवनिवाणुं श्रीआदीश्वर, इण गिरिवरपरआयारे, पुंडरीकपमुहाचैत्रीदिन, सिद्धिवधूलयलायारे श्री० ॥ १ ॥ कातीपूनिमपरवकहीजे, द्राविडवारिखिल्लसीधारे, इमअनेकएतीरथफरसी, मुगतितणासुखलीधारे श्री० ॥ २ ॥ तीनभवनमेंतीरथबहुला, यात्राफलक्रमजाणोरे, नगरग्रामादिच्चैत्यजुहार्यां एफलमनमांआणोरे, श्री० ॥ ३ ॥ जिनकल्याणकभूमीफरस्यां, दशगुणोफलतुमेपामोरे, जंबुवृक्षनोचैत्यवंदिने, शतगुणोफलसुखकामोरे श्री० ॥ ४ ॥ धातकी-

खंडेपुस्करद्वीपे, रुचकअंजनगिरिकहियैरे, जिनवंदनन्हवणादिकरतां, सहसगुणोफलल्लहियैरे श्री० ॥ ५ ॥ अष्टमनंदीसरनाजिनालय, कुंडलनाचैत्यवंदोरे, क्रमथीदशगुणोफलपांमीजै, मानुषोत्तरचिरनंदोरे श्री० ॥ ६ ॥ वैभारगिरिपरवीरजिनेसर, समेतसिखरजिनवीशरे, वैताढ्यनेबलिमेरुसिखरना, सास्वताचैत्यजगीशरे श्री० ॥ ७ ॥ गिरनारमंडननेमिजिनेसर, अष्टापदचोवीशरे, कोटिगुणोफलषट्ठनोक्रमथी वंदोविसवावीशरे, श्री० ॥ ८ ॥ एहथीशत्रुंजयगिरिजेथ्यां, अनंतगुणोफलजाणोरे, एकारणथीभवियणभावे, यात्राकरणमनआणोरे, श्री० ॥ ९ ॥ छहरीपालीजेनरभेटे, तेएशुभफलपावैरे, कुमतिकदाग्रहदूरनिवारी, निजआतमघरआवैरे श्री० ॥ १० ॥ उगणीसैपांसठफागुणशुदि, बीजदिवसप्रभुवंदेरे, नाथावजपालसंघसहितशुभ, कृपाचंदचिरनंदेरे श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीसकलतीर्थफलक्रमस्तवनम् ॥

॥ पोसह स्तवन ॥

॥ दोहा ॥

जेशलमेरनगरभलो, जिहाँ श्रीपार्श्वजिनन्द,प्रहउठीने प्रणमतां, आपे परमानन्द ॥ १ ॥ तासु चरण प्रणमीकरी, पौषध विधिविस्तार । पभणिस श्रावक हितभणी आगमने अनुसार ॥ २ ॥ पौषध पौषध सहूकरे, पौषध करे सहुकोय । पण पौषधविधि सांभलो, जिम निस्तारो होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

प्रभु प्रणमुंरे पार्श्वजिनेश्वर स्थम्भणो एदेशी पहिलेदिनरे,

सांझ समयउपकरणसहु । पडीलेहीरे, रूडीपरे राखे बहु । पाछलिरातेरे, साधुसमीप आवीकरी । राइप्राइश्चित्तरे, प्रथमकरे मनसंवरी । उछाखो सम्यरि श्रावककरे पौषधअष्टप्रहरि गुरुमुखे, ऊचरे दंरूकतीनबेला सामायिक पण तिणरुखे । पछे करे प्रतिक्रमणो आंतरणी साधुवन्दे तिहांकिणे । कर्मनूमी अगवयं मङ्गलीक कुलकनणे ॥ ४ ॥ प्रतिलेखनारे अंगउंही सगलीकरे । उपास्रयरे, पुंजीकाजोउद्धरे । ईरीयावहीरे, स्थापनाआगे पडीक्कमे, करे स्वाध्यायरे, साधु सहुने पायनमे ॥ ॥ चाल ॥ पायनमे सगलामाधुकेरा, सुणै सुगुरुवखाणए, ध्यानकरे अथवागुणेप्रकरणकहै अर्थसुजाणए । पूणपहरपडिलेहणकरिने मातरोपडिलेहए, जलघडालौटा वाटकापडिलेहवा वलितेहए ॥ ५ ॥ गुरुसाथेरे चैत्यप्रवाडी करेखरी, देववन्देरे शक्रस्तवपांचेकरी । उपाश्रयरे आवी ईरियापडीक्कमे, आगमणोरे आलोहीनीचानमे ॥ चाल ॥ नीचानमे बैसणे बैसे मिछामिडुक्कड देहिने । तिविहार होतोपाणियारे मुहपत्तिपडिलेहिने, नवकार गुणतां पाठ नणतां प्रहरतीजे दिनरहै । पडिक्कमी इरीयावही पहली, बली, बेउ प्रतिलेखना करे ॥ ६ ॥ धर्मशालारे पूजी इरियापडिकमे, थे पालोरे स्थापना पडीलेहे समे, मुहपत्तिरे पडीलेही उन्नोअइ, करे गुरुमुखरे, पच्चखाण मनगहगइ ॥ चाल ॥ गहगही आठे देइ खमासण वस्त्र सगलां आपणां । पडिलेहवा मात्रा तिणपरी चरवले पूजणतणां । देहनीचिन्ताकाजजातो करे नगवन आवस्सही। मारगे इरीया समती सोधे आवतो कहे नीस्सिही ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ बेकर जोमि विनवुंजीसुण स्वामी शुजदीस ए देशी । हिव ज्ञवियण तुमे सांजलोजी, गुरुने नमावो शीस । सामायिक पौषध तणांजी, दूषण टाळो बत्रीश ॥ चाल ॥ बत्रीशदूषणवार तनुना मार वेसे पाखठी १।अतिअथिरआशन २। दृष्टिचंचल ३ करे काया एकठी ४ । करे कामसावद्य ५ । लेठींगण ६ । आलस ७ कररुका मोरुए ८ । खणेखाज ए । वीसामणकरावे १० । ठंघकरे ११ । मलठोरुए १२ ।

॥ ढाल ॥ वचन तणां दूषण दशेजी,जाणो इणप्रकार । कुवचनबोले १ लोकनेजी, दे दूषण सहसात् कार २ ॥ चाल ॥ सहसातकूरू कलंकदे ३ वलि आपठंदे बोलए ४ । संक्षेपसुत्र करे आखावो ५ कलहकरें नीटोलए ६ ठपहासकरिने ७ करे विकथा मांमी ८ न राखे पदसंपदा ए । आवो बैठो ठठो एहवि कहे ज्ञाषा सर्वदा १० ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ दश दूषण हिवमनतणाजी, सांजलजो मनएक । न्यून अधिक न लहे क्रियाजी, मनमे नही विवेक १ ॥ चाल ॥ सुवित्रेक जसु २ धन लाज्ञ ३ बांछे करे पौषध बीहतो ४ । पौषध करीने करे नियाणो पुत्र प्रमुखने ईहतो ५ अज्ञीमान ६ रीसे करे पौषध ७ धरे फल संदेहए ८ । वली विनयट विवेक ए (ज्ञगति) लगार न करे १० मन दूषण दशएहए ॥ १० ॥

॥ढाल॥ काया वचन मन तणाजी,दूषण एह बत्रीस । टाले दूषण तेहनाजी, पौषध विश्वावीस॥चाल॥ विश्वावीश बोले नहि वलि ठघारू मुख आपणे । कुटाग्रहीसुबातनकरे पांच दूषण परिहरे। ठपवास करीने दिवस पौषध कीधो नहीं तो निशि

करे । इक पक्ष छोरू नही उतराध्ययन अक्षर अनुसरै ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ चउपरवी पौषध कह्योजी, सुत्रसिद्धांतविचार । हरिजद्रसूरि विवरो कह्योजी, बावीससहस्त्रीसार ॥ चाल ॥ बावीससहस्त्रीसारबोले दिवसप्रति करवो नही । पौषध अतिथी संविजाग वलि पर्व दीवसकरवासही । उद्दिष्ठशब्द तणो अर्थ शैलंगाचारिज करै । पौषध पर्युषण पर्व कल्याणक तिथी पणेए आदरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ उपधाने पौषध कह्योजी, सुत्र महानिशीथप्रमाण । तिविहार चउविहार जीमणोजी । एकविगय घृतजाण ॥चाल॥ घ्रत जाण आचरणापरंपरापूर्वाचार्ये एकही । जगवंतजाष्योसत्य तेहिज खेंचाताण करवी नही । तिविहार पौषध चार प्रहरी अष्ट प्रहरी सीमाकरी । तीनगछतणी आचरणा अविधी बे पिण आदरी ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ कपूर हुवे अतिउजलोरे—एदेशी ॥

सांजसमय स्थंडिला करेरे । वार वारमाहिवार । ईरीयावही-इम पडीकमेरे । जयतिहुअण करे सार ॥ १४ ॥ संवेगीश्रावक-साचो पौषध एह, एतो जगवंत जाष्यो तेह । त्रिकरण शुद्ध-करो तुमेरे । जिम पामोजवछेह सं० ॥१५॥ आंकणी । अर्ध-बिंबरवि आथमेरे । सूत्र कह्यो सुविचार ॥ स्तवन करे तिण-हीज समयरे, तारादीसेदोचार ॥ १६ ॥ सं० कालबेला इम पडीकमेरे । लांबी क्षमासणदेइ, शुद्धक्रियानी खपकरेरे । मन-संवेग धरेइ ॥ १७ ॥ सं० जिनदत्तकुशल काउस्सग्ग करेरे । प्रतिक्रमणाने छेह । प्रतिक्रमण पुरो थयोरे । खरतरनी विधि

एह ॥ १८ ॥ सं० मधुरस्वरे राते करेरे । महरसीमसझाय । गीतगावे वैरागनारे । पातक दूर पलाय ॥ संबे० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ४ ॥ मारगदेशकमोक्षनोरे–एह ॥

बहुपडिपुन्नापोरसीरे । वान्दे देवउल्लास, संथारागाथा जणेरे । खामे जीवनीरासोरे ॥ २० ॥ ते नरनारीया । सफल करे अवतारोरे । निशीपौषध करे । भावे भावना बारो रे ॥२१॥ ते० पाप अठारे परीहरेरे । चित्तधरे सरणाचार । भाव संथारो संथरेरे । ध्यानधरे सुविचारोरे ॥ २२ ॥ ते० धर्मजागरीयाजागतोरे । करे मनोरथएह । संयमलेइजिनदिनेरे । धन्य दिवसमुज तेहोरे ॥ २३ ॥ ते० संखश्रावक पौषधकस्योरे । वीरवखाणयोरे तेह । तिणपरि तुमे पौषधकरोरे । जिमपामोसिवगेहोरे ॥ २४ ॥ ते० वीतभयपाटणनो धणीरे, नामे उदायन राय । तिण राते पौषधकीयोरे । वीरवन्दन चितलायोरे ॥ २५ ॥ ते० तुंगीयानगरी तणारे, श्रावक शुद्ध अनेक । जिणविधि ते पौषध कियोरे । तिम करजोसुविवेकरे ॥ २६ ॥ ते० वलि श्रावक पौषधकियोरे । आनन्दने काममेव । वलिदृष्टान्त सुवाहुनोरे । मनधरज्योनितमेवोरे ॥ २७ ॥ ते० ॥

॥ढाल ५ मी॥ महामुनीश्वर नितनमुंजी एराह पाछलिराते ऊठीनेहो, श्रावक होय सावधान, राईप्रायश्चित्त काउसग्गकरेहो, देववन्दे सुविधान ॥ २८ ॥ संवेगी श्रावकहो पौषधनी विधिएह, मिलती सूत्रसिद्धान्तनेहो, मति मनकरज्यो सन्देह ॥२९॥ सं० उच्चस्वर बोले नही हो, दोष कह्या भगवन्त । वलि सा-

मायिक लेइनेहो, प्रतिक्रमण करे तंत ॥ ३० ॥ सं० प्रतिलेखन क्रिया करे हो, सगली पूरवरीत, सहुसझायकिया पढे हो, सुगुरु वन्दे धरिप्रीत ॥ ३१ ॥ सं० पहिली पौषधपारिने हो, सामायिक पणपार, प्रतिलाभे अणगारनेहो, अतिथिसंविभागविचार ॥ ३२ ॥ सं० विधिसेति पौषधकरेहो, बहुफलदायकहोय । अविधिसंघाते कीजतांहो, काजसरे नही कोय ॥ ३३ ॥ सं० पिणविधिनी खपकीजता हो, अविधि हुवे जे कांय, मिछामिदुकरू दीजतांहो, छुटक बारो थाय ॥ ३४ ॥ सं० पौषध औषध कर्मनोहो, टाले दुर्गति दुःख, अशुभकर्म सहु क्षयकरेहो, आपे शास्वतासुख ॥ ३५ ॥ सं० उत्कृष्ट पौषधतणीहो, यह विहि कही विस्तार, जेशलमेरी संघनेहो, आग्रहकरी सुविचार ॥ ३६ ॥ सं० सौलेसेसिरूसठ समय हो, नगर मरोट मझार, मृगसिर सुदि एकमदिनेहो, शुभदिन सुरगुरुवार ॥ ३७ ॥ सं० श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरूहो, श्रीजिनसिंहसूरीश, सकचन्दसुपसायलेहो, समयसुन्दरभणे शीस ॥ ३८ ॥ सं० ॥ इति स्तवनम्.

॥ द्वितीया स्तवनम् ॥

चान्द्लियाका ॥ चान्दलिया सन्देसो जिनवरने कहेरे । इतरो कामकरे अ विशालरे । बारे पर्खदा जिनवर उंभगेरे । श्रीसीमन्धर जग आधाररे ॥१॥ चां० सोवनवर्ण शरीर सोहामणोरे । मोहन मूर्ति महिमावन्तरे । जगमें सुशयधणो सहुकोज पेरे । जेदिस ते दिन धन्य भगवन्तरे ॥२॥ चां० साहिब दुःख अनन्ता म्है सह्यारे । हूं भमियो गमिउं बुं भव आलरे । शरणञ्च

खिजो निज सेवकारे । तो बिना कोई न दीनदयालरे ॥३॥ चां० इतरा दिवस लग ज्रूलोथकोरे । सेव्यो तो होसी सुरकइयकरे । ते अपराध क्षमीजो माहरारे । मोटा तो बगसे खूनअनेकरे ॥ ॥ ४ ॥ चां० ॥ हिवेइकतारी किधी एहवीरे । तोविण अवरु नमवा सूंसरे । सुरतरुफल जोगीने तुछनारे । खावानी केम आवे हुंसरे ॥ ५ ॥ चां० इसको तो नेह घणोहि जालवोरे । जावे आवे ने करवा प्रीतरे । समविखमी पणनगणें वाटकीरे । नवला स्नेही नवलीरीतरे ॥ ६ ॥ चां० मनको चंचल युक्ततनु आलसेरे । कर्म कठिन सबलि अन्तरायरे । पापकीया कई जव पाछलारे । मनमेलुं किम मेलु थायरे ॥ ७ ॥ चां० वाले-श्वर सांजलमुझ विनतीरे । म्हारे तो तुहीज सज्जनसयनेर । हियका जीतर तु सज्जन वसेरे । ध्यान धरुं स्मरुं दिनरेणरे ॥ ८ ॥ चां० कोइ कहे मन तन माहरोरे । कोई कहै जीवन प्राणरे । म्हारे तो तो बिन को नहीरे । जिनजी जावेजाण मजाणरे ॥ ९ ॥ चां० नयणे निरखिस मूर्ति तहारीरे । ते दिन सफल गणीसमहारायरे । सनमुख करसुं प्रजुमुख वात-कीरे । जोंकीपरनिजमनची लाजरे ॥ १० ॥ चां० देवोंन दिधि मुझपाखकीरे । जकी मिलु जिणजी तुझ आयरे । मनरा मनोरथ मनमे रह्यारे । किण आगल कहु चितलायरे ॥ ११ ॥ चां० तारे तो मुक्त पाखे सहीरे । पण म्हारेतो तुझबिन नही सरन्तरे । जलधर सारो मोरा वायरारे । मेहबिन मोर-किम रहन्तरे ॥ १२ ॥ चां० चान्दो गगन सरोवर प्राहुणोरे । दूरथकी करे विकाशरे । जेहजीणोकेमनमेंवसेरे । तेह सदाहि

तेने पासरे ॥ १३ ॥ चां० दूरथकी जानजोवन्दनारे । मोरी प्रहऊगमते सूररे । महिरकरीजो सेवकऊपरेरे । मुझने राखिजोराज हजुररे ॥ १४ ॥ चां० कैइप्रपंच हो साहबसुं करेरे । कहतां न आवे मनमें काणरे । श्रीसीमन्धर तुम जाणोसहीरे । श्रीसोहम गणि जिनहर्ष सुजाणरे ॥ १५ ॥ चां० ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ अइमत्तामुनिनी सझाय ॥

॥ श्रीअइमत्ता मुनिवरजूके । करणीकीबलिहारीवे । षट वर्षनके संजमलीनो । वीरवचनचित्तधारीवे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजयनृपतिश्रीदेवीनंदन । पोलासपुरअवतारीवे । अंगइग्यारपढे गुणआगर । त्रिविधत्रिविधअविकारीवे ॥ श्री० ॥ २ ॥ तपगुणरयणसंवत्सरआदिक । करकें कायउझारीवे । प्रभुआदेशें विपुलाचलगिरि करीअणसण अतिभारीवे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवलपायमुक्तिगये मुनिवर । कर्मकलंकनिवारीवे । अढारअरुतालेताहिंगिरिऊपर । कीनीआपनासारीवे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृतधर्मसुगुरुके । सुपसायेंसुविचारीवे । शिष्यक्षमाकल्याणहरखधर ॥ गुणगावे अतिजयकारीवे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति श्रीअइमत्तामुनिनीसझाय ॥

॥ अथ करकंडूप्रथमप्रत्येकवुद्धनीसझाय ॥

॥ चंपानगरी अतिभली । हुंवारीलाल । दधिवाहनभूपालर । हुंवारीलाल । पद्मावतीकूखें ऊपनो ॥ हुं० ॥ कर्मेंकीधो चंडालरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ करकंडूने करुं वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येकबुद्धरे ॥ हुं० ॥ गिरुवानागुणगावतां ॥ हुं० ॥ सम-

कितथायेबुद्धरे ॥ हुं० क० ॥ २ ॥ लाधीवांशनीलाकमी ॥ हुं० ॥ थयोकंचनपुररायरे ॥ हुं० ॥ बापसुं संग्राममांमीयो हुं० साधवीवीयो समजायरे ॥ हुं० क० ॥ ३ ॥ वृषजरूपदेखीकरी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोधपाम्यो नरेशरे ॥ हुं० ॥ उमत्तसंजमश्रादर्यो ॥ हुं० ॥ देवतादीधोवेषरे ॥ हुं० क० ॥ ४ ॥ कर्मखपाय मुक्तेंगया ॥ हुं० ॥ करकंडूरिषिरायरे ॥ हुं० ॥ समयसुंदरकहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातिकजायरे ॥ हुं क० ॥ ५ ॥ इति प्रथमप्रत्येकबुद्धनी ॥ स० ॥

॥ अथ भरतचक्रवर्त्तीभावमुनिनी सज्ञाय ॥

॥ जरतजी मनहीमें वैरागी । मनहीमेंवैरागी । भरतजी मन० । सहसबत्तीसमुगटबद्धराजा । सेवाकरे वरुजागी । चौसठसहस अंतेवरिजाके । तोही न हुवा अनुरागी । जरतजी मनहीमें वैरागी ॥ १ ॥ लाखचोरासी तुरंगमजाके । ठन्नुंकोरुहैपागी । लाख चोराशी गजरथसोहे । सुरताधरमसुं लागी ॥ जरत० ॥ २ ॥ च्यारक्रोरु मण अन्नजऊपरु । लूंण दशलाख मणलागे । तीनकोरुगोकुलनितदूजे । एककोमी हलसागी ॥ जर० ॥ ३ ॥ सहसबत्तीसदेसवरुजागी । जए सरबकेत्यागी । ठन्नुंकोरु गांमके अधिपति । तोही न हुवा अनुरागी ॥ जर० ॥ ४ ॥ नवनिध रतन चउगमावाजे । मन चिंतासवजागी । कनककीरतमुनिवरवंदतहै । दीजो मुगति में मांगी ॥ जर० ॥ ५ ॥ इति जरतजीकास्वाध्याय ॥

॥ अथ शीलासतीनी सज्ञाय ॥

॥ जलजलतीमिलतीघणीरे । फाखोफालअपाररे । सुजाण-

शीता । जाणें केसूफूलियारे लाल रातासैरअंगाररे ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ धीजकरे सीतासतीरे लाल सीलतणें परिमाणरे ॥सु०॥ लखमणरामखुशीअयारे लाल । निरखे राणोराणरे ॥ सु० ॥ धी० २ ॥ स्नानकरी निरमलजलेंरे लाल । पावकपासें आयरे ॥ सु० ॥ उभीजाणें सुरांगनारे लाल । अनुपमरूपदिखायरे ॥ सु० धी० ॥ ३ ॥ नरनारी मिलीयाघणारे लाल । उभाकरे हायहायरे ॥सु०॥ जसलहुसीइणआगमेंरे लाल। रामकरेअन्यायरे ॥सु० धी० ॥ ४ ॥ राघवविनवांछ्योहुवेरेलाल । सुपनेंही मनकोयरे ॥ सु० ॥ तोमुझ अगनिप्रजालज्योरे लाल । नहींतो पाणीहोयरे ॥ सु० धी० ॥ ५ ॥ इमकहिपैठी आगमेंरे लाल । तुरतथयो अगनिनीररे ॥ सु० ॥ जाणें द्रहजलसुं भर्योरे लाल । झीलेधरमसुधीररे॥ सु० धी० ॥६॥ देवकुशमवरषाकरेरे लाल । एहसतीसिरदाररे ॥ सु० ॥ शीताधीजेउतरीरे लाल । साखभरे संसाररे ॥ सु० धी० ॥ ७ ॥ रलियायतसहुकोअयारे लाल । सगलेअयाउछरंगरे ॥ सु० ॥ लखमणरामखुशीअयारे लाल । शीताशीलसुरंगरे॥ सु० धी० ॥८॥ जगमांहें जसजेहनोरे लाल । अविचलशीलकहायरे ॥ सु० ॥ कहे जिनहरष सती-तणारे लाल । नितप्रणमी जे पायरे ॥ सु० धी० ॥ ९ ॥ इति शीतासतीसझायसंपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेससझायलिख्यते ॥

दमका नांहिभरोसा सांई । करले चलनेंकासामान । तन पिंजरसें निकशजाइगा । जिनमेंपंछी प्राण ॥ द० ॥ १ ॥ लख चौरासी जोनीमें भटक्यो । उपनों गरभाधान । सवानवमास

वश्योअंधकूपमें । मनुष्यरूपसनमान ॥ द० ॥ २ ॥ उत्तम कुलमें जनमलियोहै । सुखमें खाणअरुपाण । जीरूपक्यां तेरे कोइनसाखी । साखीदानअरुध्यान ॥ द० ॥ ३ ॥ आशात्रि शनाविकथानिद्रा कुमतारूपनिधान । दिनदिनवधे पापकी संगत । यामें क्रोधअरुमान ॥ द० ॥ ४ ॥ चलतेफिरते सोवत जागत । करतखाणअरुपाण । छिनछिनआयुघटतहैतेरे होतदेहकीहाण ॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपतमें होयरह्या गुलतान, देखतदेखत विनसजायगा । मतकर मान गुमान ॥ द० ॥ ६ ॥ झूठासब यह जगतपसारा । नारीविषकी खान । मायाममताआदिके वैरी । इनसे कहापहचान ॥ द० ॥ ७ ॥ पाचूंचोरमूंसें घरतेरो । इनकीखोटीवाण । आठ वैरी तेरे संगफिरतुहै । मोहवमासुलतान ॥ द० ॥ ८ ॥ कोः रहणपावे नहींजगमें । यह तुं निहचैजान । अज हुं छांि समकितकुटलाई । मूरखतरअज्ञान ॥ द० ॥ ए ॥ भाईबंध अरु सजनसंबंधी । राखे तेरामान । अंतसमें कोईकामनआवे किसपेमानगुमान ॥ द० ॥१०॥ जपतपशीलपालो सुजसंगत देवसुपात्रेदान । सुविहितसाधुचरणचितध्यावो । प्रभुभज तज अभिमान ॥ द० ॥ ११ ॥ इति उपदेस सज्झाय संपूर्णम् ।

जं जं विहिणा लिहिअं । तं तं परिणमइ सयललोयस्स
इह जाणेवि णु धीरा । विहुरेवि न कायरा हुंति ॥ १ ॥

॥ अथ बाहूबलजीनी सज्झाय लिख्यते ॥

ईडर आंबा आंबलीरे ॥ ए चाल ॥

वेरे । वारवारपायलाग । हरषभरमुझसुं बोलज्योरे । थानें बाबा-जीरीआण थानें रीषभदेवजीरीआण । थेतो मकरो खेंचाताण । थेतो माहरे जीवनप्राण ॥ हरष०॥ मुझसुंबो०। आंकणी॥१॥ हुंतो भाईताहरोरे । जेमेंकीधोदोस । तोपिण खमज्योभाईफारे । गरुवानकरे रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बांहदेईमिलारे । जोवो आंखउघाड़ । बोलो मीठाबोलफारे । पूरो मननोलाड़ ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलोनाखुं तोफनेंरे । जिणकुलजाईवेढ । नायो आयुध सालमेरे । ज्युं बांभणघरढेढ ॥ ह० ॥ ४ ॥ भाभीनाउंलंभ-फारे । किम संभलाये कान । जातां पांववहेनहींरे । तुझनें-मुंकी रान ॥ ह० ॥ ५ ॥ तूंजीत्यो हूं हारीयोरे । देवभरेछे साख । तुझसरिखो जगकोनहींरें । मुझसरिखाछे लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथे सूरजआवीयोरे । पसीनोसारोगात । वैसोभोजन जीमियेंरे । खारकदाखनिवात ॥ ह० ॥ ७ ॥ निन्नांणूं एकणमतेरे । मुझनें लोभीजाण । ते सहूमुझनेपरिहस्योरे । ज्युं बर-साले छाण ॥ ह० ॥ ८ ॥ तूं माहरे जीवन आतमारे । तुंहीज मांहरेबांह । दिससूनीभाईविनारे । आवोनेंघरजांह ॥ ह० ॥ ९ ॥ बोलघणाईबोलियारे । भरतेसर महाराज । हाथीना-दांत जे नीकल्यारे । तेपाछानवीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अभि-मानी सिरसेहरोरे । बाहूबलीरिषिराय । सीधाकरमखपायनेंरे । विमलकीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ इति श्रीबाहूबलिजी सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ सचित्तअचित्तनीसझाय ॥

॥ ढाल चौपईनी ॥ प्रवचनअमरीसमरीसदा । गुरुपद

पंकजप्रणमीमुदा । वस्तुतणाकहूंकालप्रमांण । सचित्त अचित्त-
विधिखहै जिममाण ॥ १ ॥ बिहुंऋतुमिलीचौमासा मांन । षट-
ऋतुमिलीनें वरिसप्रमांण । वर्षाशीतउष्ण त्रिण काल । त्रिहूं-
चौमासें वरसरसाल ॥ २ ॥ श्रावणभाद्रवआसू मास । काती
इमवरसालावास । मागसिरपोसमाहनेंफाग । ए च्यारे सीया-
लालाग ॥ ३ ॥ चैत्रवैशाखनें ज्येष्टआसाढ । उष्णकाल ए
च्यारअगाढ । वर्षा शरद शिशिर हेमंत । वसंत ग्रीष्मषटऋतु-
इमतंत ॥ ४ ॥ रांध्युंविदलरहैचउयाम । उदन आठपुहुरअ-
भिराम । प्रहरसोल दधि कांजी छाछ । पछेरहेतो जीवनि-
वास ॥ ५ ॥ पापरूलोइया वटकप्रमांण । च्यारपहुर तिम
पोलीमांन । पनरदिवस वर्षापकवान । त्रीसदिवससीयाला-
मांन ॥ ६ ॥ वीसदिवस उन्हालेरहे । पछे अभक्ष्याये जिन-
कहै । मातरप्रमुख नीवी पकवान । चलित रसे तसकालप्र-
माण ॥ ७ ॥ धांनधोवण एकप्रहरप्रमाण दोयघरीजरवांणी-
जाण । फलधोवण एक प्रहरप्रमाण । त्रिफलाजल छघ-
रीनुंमांन ॥ ८ ॥ त्रिणवारे ऊकलिउंजेह । सुद्धउष्णजल
कहियेतेह । प्रहरतीन चउ पंचप्रमाण । वर्षाशीतउन्हालेजांण
॥ ए ॥ श्रावणभाद्रवरू दिनपंच । मिश्रलोट अणचालितसंच ।
मिगसरपोसे त्रिणदिनजांण । आसूकाती चउदिनमांन ॥१०॥
माहफागुणेंकह्यो पण याम । चैत्रवैशाख चउप्रमाण । जेठआ-
साढ प्रहर त्रिणजोय । तिणउपरांत सचित्ततेहोय ॥ ११ ॥
गोहूं शालि षरू धांन कपास । जव त्रिणवरसें अचित्तहोय-
खास । विदल सर्व तिलतूंवरदाल । पांचवरसे होइ अचित्तवि-

शाक ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसें अचित्तविचार । शीततापवर्षादिकजोय । सचित्तजोनि अचित्तेहोय ॥ १३ ॥ हरडे पींपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अभिराम । जोयणशत जलवटमांवहे । साठिजोयणथ- लमांहें रहे ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तुप्रवहणनीजेह । थाइं अचित्त प्रवचनकहैएह । धूमअगनि परीयापणेंकरी । अचित्त योनि- तस थायेखरी ॥ १५ ॥ वारपहूररहे झगलीराब । सोलपहुर राईतां अजाब । कराहविगयपरि सेकयोधांन । पहिरचौवीस गोमूत्रनुंमांन ॥ १६ ॥ अतिखारुं घृत कालातिल । पलटाई वर्णादिकरील । काचो दूध रहे बहुवार । एह अभक्ष्कहैमुनि- सार ॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक विदलनीदाल । सेकया धांनपरें तसकाल । च्यारपहुर सीरोलापसी । विदल परतेप्रवचनवसी ॥ १८ ॥ प्रथमदिवसप्रारंभी गिणयो । कालप्रमाणसविकेहनो- भण्यो, चलितरस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तुअभक्ष्क- हिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सेंधव कह्यो अचित्त । श्राद्धविधे अख्यरांप्रतीत । ए कालादिकव्हरांजेथाय । तेहअचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥ गीतारथनेंवयणेंजोय । आचीरण- अनाचीरणहोय, आई धांनअंकुरनीकले । तबतेवस्तु अभ- क्ष्मां भिले ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवणहरियाल । आवेज- लवट मांहिरसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचनसाखि । पिण लेवानी नहींतसुभाखि ॥ २२ ॥ इमबोल्यो जबलेशविचार । विस्तारप्रवचनसारोद्धार । धीरविमलपंडितसुपसाय, कवि नय- विमलकहेसज्झाय ॥२३॥ इतिसचित्तअचित्तवस्तु स्वरूपसज्झाय ॥

॥ अथ काउसग्गना १९ दोसनीसज्ञाय ॥

सकलदेवसमरीअरिहंत, प्रणमीसदगुरुगुणेमहंत । जग-
णीसदोषकाउसग्गतणा । बोलुं श्रुतअनुसारेसुणा ॥ १ ॥
घोटकदोष कह्यो वलिएह । वांकोपगराखे वलि जेह । लता-
दोष बीजो हवेसुणो । ऋीलहलावेजेअतिघणो ॥ २ ॥ उठीं-
गणलेई जेरहे । थंजदोष ते तीजोकहै । मालदोषचोथोकह्यो-
एह । मस्तकअटकावी रहेजेह ॥ ३ ॥ पगअंगूठामेलीरहे ।
उद्धिदोष ते पंचमकहे । बेकंपगजेलाकरेजेह । नउलदोष
उठोकह्योएह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखे निजहाथ । शबरीदोष
कह्यो जगनाथ । मुखचलनाकरे अतिघणी । खलितदोष अठ-
मतेसुणी ॥ ५ ॥ घूघटताणीनें जेरहे । बहुदोष ते नवमोलहे,
लरुथरुतूं पहिरे पहिरणूं । दशमेदोष लंबोत्तरजणूं ॥ ६ ॥
हृदयस्थल आठादितरहे । ते थणदोष इग्यारमो लहे । वस्त्रांसुं
ढांक्यो सवि देह । संयतिदोष बारसमोएह ॥ ७ ॥ जांमण-
चालो करे अतिघणुं । जमुहदोस तेरसमोजणुं । अंगुलीह-
लावे संख्याकाज । चवदमोदोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र-
तणा चाला जेकरे । वायसदोष पनरमोधरे । पहिस्या वस्त्र
संकोरुीरहे । कपित्थदोष सोलसमोसहे ॥ ९ ॥ मस्तकधूणावे
अतिघणुं । ते सिरकंपसतरमोजणुं । महिरानीपरि जे वरुवरु ।
वारुणी दोषअढारमोचरु ॥ १० ॥ मूकदोषकह्यो उगणीसमो ।
तेहकरी काउसग्गमतगमो । त्रिणदोष ए माहिलाटले । सोल-
दोषसाधवीनेंमिले ॥ ११ ॥ लंबुत्तरथणनेंसंयती । दोषएह
बोह्याजगपती । बहूदोष चौथो जबमिले । च्यारदोषश्रावि-

कानेंटले ॥ १२ ॥ काउसग्गथी समतासुखथाय । कठिनकर्मनी कोम्भिपुलाय । काउसग्गकरतां सवि सुखहोई । काउसगसम तपनकह्योकोय ॥ १३ ॥ दोषरहित काउसग्गकीजीये । जिमसहिजे शिवफललीजीये । पंम्भितधीरविमलनोसीस । कविनयविमलकहे निशिदीश ॥ १४ ॥ इति काउसग्गना १ए दोषनी सझाय संपूर्णम् ॥

॥ श्री नारकीनी सात ढाल ॥

॥ दोहा ॥ त्रिसलानंदनप्रणमीये । शासननायकवीर । सिद्धारथनृपकुलतीलो । बलवंतसाहसधीर ॥ १ ॥ चरण अंगुठेचांपीयो । जेणे मेरुगिरींद । सवीसुरसंशयकपनो । जाणयात्रिजुवनचंद ॥ २ ॥ बाललीला सुखजोगवी । पछे लीये संयमजार । केवलज्ञानपामीकरी । करे जविनेउपकार ॥ ३ ॥ समवसरणबेसीकरी । गौतमआगलवीर । नरकतणां दुःखवर्णवे । सांजलेवीरवजीर ॥ ४ ॥ विविधप्रकारनीवेदना । सहतां नारकीजीव । सांजलतांहीयोथरथरे, जाषे शासनवीर ॥ ५ ॥

॥ प्रथम ढाल ॥ देशी त्रीपदीनी ॥

पहेलीनरके जाणरे, सागरएकनुं । आयुजाषे वीरजीए ॥ १ ॥ बीजीनरके जोयरे । सागरत्रणनुं । आउएटलुं जाणीयेए ॥ २ ॥ सागरसातनुआयुरे । त्रीजीएकह्युं । केवलीवचनते सर्दह्योए ॥ ३ ॥ चोथी दससागरजाणरे । गुणवंतसांजलो । एवचनश्रीवीरनाए ॥ ४ ॥ गणधरजाषेतासरे । पांचमी नरकनो । सत्तरसागर आउषोए ॥ ५ ॥ उठीनरके गुणवंतरे ।

सागरबावीशनो । इणीपरे गुरुमुखसांजल्योए ॥ ६ ॥ सातमीये जाणोसंतरे । सागरतेतीसनो । आयुवीरजी प्ररूपताए ॥ ७ ॥ एसातेनरकेआयुरे । जाणोशास्त्रथी । नरक वेदना-अतिआकरी ए ॥ ८ ॥ कहेमुक्तिवीरजीणंदरे । कीमसमेवेदना । धर्मे मुक्ति जसलहेए ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥ रत्नप्रजापहिलीकहि । सकरप्रजा तुं जाण । बालुकप्रजा त्रीजीसुणी । सांजलो चतुरसुजाण ॥ १ ॥ चोथी पंकप्रजासुणो । धुमप्रजा पांचमीजेह । तमप्रजा छठीकही । तमःतमा सातमीवेह ॥ २ ॥

॥ द्वितीय ढाल ॥ मनकुंमारुं मोकलुंमारावालाजीरे । कालअनंतीवेदना गुणवंताजीरे । घणुंशुंजाषुंएह, सुगुणनर-सांजलो गुणवंताजीरे । शोरबकोरनारकीकरे ॥ गु० ॥ केवली-जाणेतेह ॥ सु० गु० ॥ १ ॥ पंदरजेदनादेवता ॥ गु० ॥ वेद-नाउपजावेप्रचंड ॥ सु० गु० ॥ खंडोखंड तेप्राणना ॥ गु० ॥ उपरमुगरदंड ॥ सु० गु० ॥ २ ॥ एहवाशब्दकुण सांजले ॥ गु० ॥ एकसांजले श्रीजिनराज ॥ सु० गु० ॥ पापकरीने प्राणीयो ॥ गु० ॥ जइवेसे नारकीपाज ॥ सु० गु० ॥ ३ ॥ कर्कशजाषाबोलता ॥ गु० ॥ वर्णकुवर्ण तुं जाण ॥ सु० ॥ मांहोमांहेसांजले ॥ गु० ॥ सहेजली दुःखनीखाण ॥ सु० गु० ॥ ४ ॥ शीतलजोनीयेउपजे ॥ गु० ॥ रहेतां तेणठाम ॥ सु० ॥ गु० ॥ रुधिरमांसचामडां ॥ गु० ॥ छे तस घोरअंधार ॥ सु० गु० ॥ ५ ॥ कीचजहणकीकरे ॥ गु० ॥ घणानरकमां-दुःख ॥ सु० गु० ॥ मननीवात मनमांरहे ॥ गु० ॥ परवश-

नारक न सुख ॥ सु० गु० ॥ ६ ॥ दीवसनविं सूजेतेहने ॥ गु० ॥ परमाधामी ऊपजेह ॥ सु० गु० ॥ नासीने जायकीहां ॥ गु० ॥ एवोथानकनहिजेह ॥ सु० गु० ॥ ७ ॥ सांजलीहैमो कमकमे ॥ गु० ॥ एहवा नारकीडुःख ॥ सु० गु० ॥ जीवजंत-मारेप्राणीयो ॥ गु० ॥ किमलहेमुक्ति सुख ॥ सु० गु० ॥ ० ॥

॥ दोहा ॥ दसप्रकारनीवेदना । सहेता नारकीजीव । अन्यो अन्ये जुजतां । सहतांडुःखसदीव ॥ १ ॥ अशुजबंधन अशुज गति । अशुज संस्थान जेहुंम । जेदनबेदन अशुजवर्ण । सहेतां डुःखप्रचंम ॥ २ ॥ अशुजगंधने जाणवो । अशुजरस वली-जेद । माठोफरस वलीकह्यो । माठोअगुरुलघुवेद ॥ ३ ॥ माठोशब्द वलीकह्यो । वेदना दसे प्रकार । त्रैलोक्यदीपकथी-जाणजो । जाषीसूत्रमफार ॥ ४ ॥

॥ तृतीय ढाल ॥ मनडोअडेररह्योअभिमाने ॥

साते नरकमां जाणे वेदना । श्रीवीरवखाणेरे मारा नरक तणांरे । डुःखसुणजो एआंकणी । नहिसूरज नहिचंद्र । नहि-पाणीपवनप्रचंमारे ॥ मारा० ॥ १ ॥ माहाघोरअंधकार । थानकपणनहिसाररे ॥ मारा० ॥ बिहामणीजूमि जाणो । तस-फरसखंमाधाररे ॥ मारा० ॥ २ ॥ साते नरके जाणो । तस वेदनाकहिनविजावेरे ॥ मारा० ॥ माहाक्रोध धरीने तिहां । हथीआरधरीनेआवेरे ॥ मारा० ॥ ३ ॥ कातरणी जेसीकरे-देह । एमचरणकरतांतेहरे ॥ मारा० ॥ माहारौरवशब्दने जाणो । केवलीजाणेतेहरे ॥ मारा० ॥ ४ ॥ परमाधामीपचा-वेरे । वली कंधेमस्तकेअंगेरे ॥ मारा० ॥ देहने हणमांमरोमे ।

वळी तेहनीपूंठेदोफेरे ॥ मारा० ॥ ५ ॥ वैतरणीनदीमां लई-आवे । वली पाणीमांजबकांवेरे ॥ मारा० ॥ ए कर्मतणांवि-पाक मांहेमांहे मलीजावेरे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ करे कुहाफाराखे। वली वचन बिहामनाजाखि ॥ मारा० ॥ छेदनजेदनकरतां। वली पापनीराशे वधतारे ॥ मारा० ॥ ७ ॥ समळीने रूपे-आवे । वली वायसरूपसुहावेरे ॥ मारा० ॥ वाघसींहनारूप जेकरतां । थइ चीतारूपेताकुकेरे ॥ मारा० ॥ ८ ॥ इमअनेक हिंसारीजीव । इम परमाधामीरूपरे ॥ मारा० ॥ वीरजाषे पन्नरेजेदे । करेमुक्ति धर्मथीसुख वेदेरे ॥ मारा० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ इम दसप्रकारनीवेदना । कहिनरके जिनराय । शीतउषणनी वेदना । केवलीसे कहि न जाय ॥ १ ॥ जुख तृषातसें वेदना । परज वेदनाअत्यंत । परवशताज्वरतापणुं । दाघज्वरपामेअनंत ॥२॥ जय शोक तेहने घणो । इम ते नारकी जाम । वीरजिन इणीपरेजासता । सुणतां गौयमस्वाम ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ सुणसाहेबजी परमातमपुजानुं फल मुजआपो—एदेशी ॥

हो सुणगौतमजी । वीरपयंपे नरकतणां दुःखनिवारता,परनारी-तणी जे संगकरता । वली पापथकीप्राणीनवी फरता । जमरायनी-संकानविधरता सुणश्रोताजी । नरक तणांदुःखसांजलतां हइकुं-कमकमे॥१॥गुणवंताजी । वीरतणीवाणी सांजलतां धर्म खजानो तेजरे । ए आंकणी लोहतणीपुतलीतपावेछे । अतिअग्निमयकरा-वेछे । तस आलिंगनतेहकरावे छे सुण० गु॥२॥ पांचसेजोजन उंचाउगाखेछे । तेहने ते जूंमपगाफेछे । फरीतेहनीवाहे ते

वाखेछे ॥ सुण० गु० ॥ ३ ॥ श्वान ते रूपे करफे छे । फाखी नारकी अंगने मरफेछे । वली तेहनीपूठे दोफेछे ॥ सुण० गु० ॥ ४ ॥ मृगलाजेमपासमांपाफेछे । करवीरी करवतेंकरी फाफेछे । इम उंचापकरी नमाफेछे ॥ सुण० गु० ॥ ५ ॥ वली तस शूली-आरोपेछे । वली काननाक तसकापे छे । वीरुआतस तेहना-विपाकेछे ॥ सुण० गु० ॥ ६ ॥ वली तातातेलमांघालेछे । जासरुमां तेहनेवाले छे वली खालउतारी जालेछे ॥ सुण० गु० ॥ ७ ॥ अनिष्टआहारकरावेछे । इम नारकीदुःखनेपा-वेछे । बहुशब्द करतांकालगुमावे छे ॥ सुण० गु० ॥ ८ ॥ वली तनुमांखारमीवालेछे । परमाधामी दुःखदेखावेछे । प्रनु वीरवाणी शीतलथावे छे ॥ सुण० गु० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ नुमिछे तीहां आकरी । वन जे शीतलजाण । आवीवेसे तरुछांहफी । पफतांजाजेप्राण ॥ १ ॥ वीरुआ विषय विलासतस । सुखथोफो दुःखबहुजाण । नरकतणां दुःखसां-जलो । नाषे वीरवर्धमान ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी मनेसंभवजिनसुंप्रीत ए देशी ॥

कुंजीमां करतापाक । देहतेजाणोरे । तेलघाणीमांतेह घाले जमराणोरे ॥ १ ॥ महेरनआवेतास । गलग्रही जावेरे । रसकढे तसतंतुथी । वली नसबालेरे ॥ २ ॥ नावा जायेतेह । मन नयनांतरे । परमाधामीतेह । फालेकांतरे ॥ ३ ॥ सूलीपरोवे-जेह दांतमां लेवेरे । वली मारीकरे शतखंफ, घणु दुःखदेवेरे ॥ ४ ॥ फीरीफीरीलागेपाय । वेदनासहेतांरे । एमकालअनंतो-त्याह । सहे दुःख मरतांरे ॥ ५ ॥ हवे तो सहीआं नजाय ।

नारकीदुःखमांरे । कोइ न पूछेसार । नारकीसुखमांरे ॥ ६ ॥ नहिशरणुं तीहांकोइ । असरणमरतारे । परमाधामीजेह, बहु दुःखदेतारे ॥ ७ ॥ सांजली परहरेदेह । थायेप्राणीरे । कहे मुक्ति महाराज कहे प्रजुनाणीरे ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पापकरम कीधाघणा । बहुजीवसंहार । पीमा न जाणेपरतणी । जीवमोवमोगमार ॥ १ ॥ अलीकवचतमुख जाषीआ । पारकाचोर्यामाल । सेवीपरनारीनिःशंकपणे । आरंजकीधाअपार ॥ २ ॥ बहुपरिग्रहमेलव्यो । निशीजोजनअंधार । बहुजीवविणास्यातिहांकणे । अजक्ष अथाणुंनहिपार ॥ ३ ॥ कठोलमांगासनेमेलवी । जम्यो आहारनिःशंक । लालजोगे बहुजीवमा । उपजे तेनदीसंत ॥ ४ ॥ अलगीथाए नारतस । आजरू जेटनिवार । ठाणांगे प्रगटपाठए । जाणोतुमेनिरधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छट्ठी विसारिमी ए देशी ॥

मातपितागुरुउंलव्या गुणरागीरे । किधा क्रोधअपार । सुणोतुमेरागीरे । मानमायालोजथी ॥ गु० ॥ बुद्धिनहि रहीकांइ ॥ सुणो० ॥ १ ॥ नरकतणां जेवारणां ॥ गुण० ॥ पापेउघाड्या तेह ॥ सुणो० ॥ इम परमाधामीनीवेदना ॥ गु० ॥ शूलीकूटी वज्र ॥ सु० ॥ २ ॥ उदीरी उदीरी देहने ॥ गु० ॥ पछेपछाडेतेह ॥ सु० ॥ तरसवसेंकरी तेहने ॥ गु० ॥ उकाली कथीर तेपाय ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुखमां नाखे तेहने ॥ गु० ॥ वदन बली जाय ॥ सु० ॥ बहु कीमापमेदेहमां ॥ गु० ॥ वली आव्याकरे शतखंम, सु० ॥ ४ ॥ निशीजोजनतस वारणुं ॥

गु० ॥ जाणे पापअखंम्, ॥ सु० ॥ तनोने वलीआकरो ॥ ॥ गु० ॥ नीरआणेप्रचंम ॥ सुण० ॥ ५ ॥ तेघाले निज आंखमां । श्रवणमा जरेकथीर ॥ सु० ॥ महाकालवीहामता ॥ गु० ॥ महाबीजत्सचित्तधार ॥ ६ ॥ दीनदयामणांजाणवां ॥ गु० ॥ नरकनाजीवअतीव, ॥ सु० ॥ वीरजीणंद इम देशना ॥ गु० ॥ सुणो ते मुक्ति सदीव ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥ नरकतणां डुःखसांजली । कंपेतासशरीर । तब गोयम ते इमकहे । सांजल गुणगंजीर ॥ १ ॥ प्रजुचरणे शीर नामीने । पूछे गौतमस्वामि । अंतरजामीमाहरो । सरसकहो सिरनामी ॥२॥ ए वेदना में बहु सही । वसीयो कालअनंत । कोइकपुन्यकल्लोलथी । मुजमील्याजगवंत ॥ ३ ॥ पंच माहाव्रत जे धरे । पाले पंचाचार । पांचसुमति जे आदरे । ते लेशेजवनोपार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ आसणरा योगी ए देशी ॥

इणीपरे बहुवेदना अहिआसी । हवेआव्यो चरणेनिवासीरे । वीरजी गुणवंता । वसतां नरकमांहेंजिनराज । गयो कालअनंत माहाराजरे ॥ वी० ॥ १ ॥ ज्ञानीविनाकुणजाणेप्राणी । कहेतांनावेपाररे । सुद्धसंयमरागी । दश दृष्टांते दोहीलो जाख्यो नरजव पुन्यसंयोगेरे ॥ वी० ॥ २ ॥ शुद्धसंयमनो खप करशे । टाली विषयविकाररे ॥ सु० ॥ पंचे इंद्रियने वशकरसोजो । तो शिवरमणीनेवरशोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ निद्रा विकथा दूरनिवारो । श्रीजिनधर्मचित्तधारोरे ॥ सु० ॥ समकितरत्नहियेमेधारो । नरकतणां डुःखवारोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जांजे सर्वे

मिथ्याधर्म । एवो जिनशासनधर्मरे ॥ सु० ॥ श्रीचिंतामणीचरणपसाये । संकट विकट तेजायरे ॥सु०॥५॥ जुजपुरसहेर गुरूनी महिरे ॥ कस्यो चोमासछल्लासरे ॥ सु० ॥ संवतछगणीस सतोतरेवरसे । पोसतणीसुददसमिरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंचलगछेपूज्यपटोधर । श्रीपुण्यसिंधुसूरिरायारे ॥ सु० ॥ संघनी साखे मिछामिछुक्करू । होज्यो अधिक सवायारे ॥ सु० ॥ ७ ॥ जोकोइजाणशे श्रवणेसांजलशे । तसघरमंगल मालरे ॥ सु० ॥ नरकतणांछुःख वीरेजाख्यां । वीरवचन रसचाख्यारे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कहे मुक्ति कमला तमवरजो । सईहजो वीरजीवाणीरे ॥ सु० ॥ मिथ्यात्वप्रमादतजोसवीजाइ जिनआणा चितलाइरे ॥ सु० ॥ ए ॥ इति० ॥

॥ अथ सिद्धपदवर्णन सज्ञाय ॥

॥ श्रीगौतमस्वामी पूछाकरे, विनयकरि शीसनमाय प्रजुजी, अविचल थानकमें सुण्यो, कृपाकरी मोयवताय प्र० सिवपुरनगरसोहामणुं १ आठकर्मअलगाकरी, साध्याआतमकाज प्र० छूटा संसारनाछुःखथकी, रहवारोतिहांठाम प्र० शि० २ वीरकहेऊर्ध्वलोकमां, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम स्वर्गपुरिजेऊ परे, तेहनावारे नामहो गो० शि० ३ लाखपिस्तालीस जोयणा, लावीपोली जाणहो गो० आठजोजनजाम्रीविचै, ठेरू मांखीपांखमाणहो गो० शि० ४ उज्वलहार मोतितणा, गोछुध संख प्रमाणहो गो० तेथकीउजलीअतिघणी, उलटी छत्रसंठाणहो गो० सि० ५ अर्जुनस्वर्ण समदीपती, घठारीमठारीजाणहो गो० फटकरतनथकीनिरमली, सुआली अत्यंत-

वखाणहो गो० शि० ६ सिद्धसिला उल्लंघीगया, अधररह्या सिद्ध राजहो गो० अलोकसुजाइअड्या, साड्याआतमकाजहो गो० शि० ७ जनमनही मरणनही, नहिजरानहि रोगहो गो० वैरीनहीं मित्रोनही, नहीसंजोगवियोगहो गो० शि० ८ भूखनहीं तिरखानहीं, हरखनहीं नहीसोकहो गो० करमनहीं-कायानहीं, विषयरस नहींयोगहो गो० शि० ९ शब्दरूपर-सगंधनही फरसनहीं नहींवेदहो गो० ॥ बोलेनही चाले-नही, मोनपणुं नहीखेदहो गो० शि० १० गामनगरएको-नहीं, वसतीनही उजाड़हो गो० ॥ कालतिहांवरतेनहीं, नहीं रातदिवस तिथिवारहो गो० शि० ११ राजानहीं परजानहीं, नहीठाकुर नहींदासहो गो० ॥ मुक्तिमें गुरुचेलोनहीं, नहींलघु वड़ाइवासहो गो० शि० १२ अनंतसुखमें झीलरह्या, अरूपी-ज्योतप्रकाशहो गो० ॥ सहुकोइने सुखसारिखा, सगलाने अविचलराजहो गो० शि० १३ अनंतासिद्ध मुगतेगया, वली-अनंताजायहो गो० ॥ अवरजग्या रुंधेनहीं, जोतमांजोत-समायहो गो० शि० १४ केवलज्ञानेसहितछै, केवलदर्शन खासहो गो० ॥ क्षायकसमकितदीपता, कदयनहोवै उदासहो गो० शि० १५ सिद्धस्वरूपजेउलखे, आणीमनवैरागहो गो० ॥ शिवरमणीवेगेवली, नयकहे सुखअथागहो गो० शि० १६

॥ इति सिद्धिपदवर्णन सझाय संपूर्ण ॥

॥ प्रथम आचारांगसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥

पहिलोअंगसुहामणोरे, अनुपमआचारंगरे ॥ सुगुणनर ॥

वीरजिनंदेजाषियोरेलाल, उववाईजासउवंगरे ॥ सु० ॥ १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउं वारंवाररे ॥ सु० ॥ विनये गोचरीआदरेरेलाल, जिहांसाधुतणोआचाररे ॥ सु० ब० ॥ २ ॥ सुयखंधदोयछै जेहनारे, प्रवरअध्ययनपचवीसरे ॥ सु० ॥ उद्देशादिकजाणियेरे लाल, पिच्यासीसुजगीसरे ॥ सु० ब० ॥ ३ ॥ हेतुजुगतकर सोजतारे पदअढारहजाररे ॥ सु० ॥ अक्षरपदनेछेहरू रे लाल, संख्याताश्रीकाररे ॥ सु० ब० ॥ ४ ॥ गमाअनंता जेहमांरे, वलिअनंतपर्यायरे ॥ सु० ॥ त्रसपरित्तो छै इहांरे लाल, थावरअनंतकहायरे ॥ सु० ब० ॥ ५ ॥ निबद्धनिकाचितसासतारे, जिनप्रणीतएजावरे ॥ सु० ॥ सुणतांआतमउल्लसेरे, लाल, प्रगटेसहजस्वजावरे ॥ सु० ॥ ब० ॥ ६ ॥ सुगुणश्रावक वारूश्राविकारे, अंगेधरियउल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वकतुमेसांजलोरे लाल, गीतारथगुरु पासरे ॥ सु० ब० ॥ ७ ॥ एसिद्धांतमहिमानिलोरे, ऊतारे जवपाररे ॥ सु० ॥ विनयचंद्रकहेमाहरेरे लाल, एहिज अंगआधाररे ॥ सु० ब० ॥ ८ ॥ इतिआचारांग स० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्रसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजोरेअंग तुमेसांजलो, मनोहर श्रीसुयगडांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रणसेतेसठपाखंडीतणो, मतखंड्यो धररंग ॥ मो० ॥ १ ॥ मीठीरेलागे वाणीजिनतणी, जागेजेहथीरेग्यान ॥ मो० ॥ एवाणीमनजाणीमाहरै, मानु सुधारसमान ॥ मो० ॥ मी० ॥ २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, एतो सूत्रगंजीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुतअरथजाणे सहू, हीरनीर धनुतीर

॥ मो० मी० ॥ ३ ॥ एहनारे सुयखंधदोयछे, वलि अध्ययन-तेवीस ॥ मो० ॥ उद्देसासमुद्देसा जिहांजला, संख्यायेरेतेत्रीस ॥ मो० मीठी ॥ ४ ॥ नय निक्षेपप्रमाणजख्या, पदछत्तीसहजार ॥ मो० ॥ संख्याता अक्षरपदमांहे, कुणलहे तेहनोरेपार ॥ मो० मी० ॥५॥ गमाअनंता पर्यायवली, जेदअनंतजिणमांहि ॥ मो० ॥ गुणअनंत त्रसपरित्तकह्या, थावरअनंतजेमांहि ॥ मो० मी० ॥ ६ ॥ निबद्धनिकाचित्त जे सासयकम्रा, जिनपणत्तारे जाव ॥ मो० ॥ जाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा, चरणकरणनोरे जाव ॥ मो० मीठी० ॥ ७ ॥ करियेजगतजुगतएसूत्रनी, निश्चैलहियेरे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्रकहे प्रगटेएहथी, आतमगुणनीरे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इतिसूयगमांग सज्झाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठटके कंकणलियोरी ॥ एचाल ॥ त्रीजो अंगजलोकह्योरे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरोमनमगन थयो ॥ हारे देखी २ जाव, हांरे जीवाजीवस्वजाव ॥ मो० ॥ सबलजुगतकरीछाजतोरे जि०, जीवाजिगमउपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एहअंगमुऊ मनवस्योरे जिनजी, जिमकोकिल दलअंब ॥ मो० ॥ गुहिरजावकरि जागतोरेजि०, आज तो एहआलंब ॥ मो० ॥ २ ॥ कूटशैलसिखरीशिलारे जि०, काननमेंबलिकुंरू ॥ मो० ॥ गह्वर-आगरद्रहनदीरे जि०, जेहमेंअछेरेउदंरू ॥ मो० ॥ ३ ॥ दसठा-णाअति दीपतारे जि०, गुणपर्यायप्रयोग ॥ मो० ॥ परित्तजेहनी बाचनारे जि०, संख्याताअनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्टसिलोक-निजुत्तसुं रे जि०, संग्रहणीपडिचित्त ॥ मो० ॥ एसहु संख्याता-

जिहांरे जि०, सुणतांउह्लसेचित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुयखंधइक राजतोरे जि०, दशअध्ययनउदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिकवीसछैरे जि०, पद बहुत्तरहजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागीजिनशासनतणारे जि०, सुणे सिद्धांतवखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद्रकहैते हुवेरे जि०, परमारथराजाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्रसझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ थारामहिलांऊपर मेहझरोखेवीजली ॥ एचाल ॥ चोथो समवायांग सुणो श्रोतागुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणाउपांगकरी सोजावणी, हो लाल करी सो० ॥ अरधमागधीजाषा साखासुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परिमलव्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासथी, हो लाल जी०, लहीयैएहथि ज्ञाव विरोधकांइनथी, हो लाल वि० ॥ जांगातीन स्वसमयादिकनाजाणीये, हो लाल यादि०, लोकअलोक ने लोकालोकवखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ एकथकीछै सतसमवायपरूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्रमाणकजीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविहगणीपिकटतणीसंख्या कही, हो लाल त०, सासताअरथअनंतकि छै एहनासही, हो लाल छै० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके जला, हो लाल उ०, संख्यायें एकएकप्रत्येके गुणनिला, हो० प्रत्ये० ॥ पद एकलाखचौमालसहसतेउत्तरा, हो० स०, पदनेंअग्रउदग्र संख्याताअक्षरा, हो० सं० ॥ ४ ॥ जाष्यचूर्णिनिर्युक्ती करीसोहेसदा, हो० करी०, सुणतांजेदगंजीर त्रिपत न होयकदा, हो० त्रि० ॥ जेहनमावे-

अंगकि अन्तरगतिहसी, हो० अन्त०, जलवरसंतेजोर कुण न हुवेखुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्योधरमसनेह जिणंदसुंमाहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्रजाणयोखरो हो० सू० ॥ जिममालतीलहे भृंग करीर नविरहे, हो० क०, ईश्वरशिरसुरगंग तजी परिनविवहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन निग्रंथतणो जुगतेवको, हो० त०, साकरसेलडीद्राखथकीपिणमीठको, हो० थ० ॥ स्युं कहियेबहुवातविनयचंद इमकहै, हो, वि० एहनासुणने भाव श्रोताअतिगहगहै, श्रो० ॥ ७ ॥ इति समवायांग० स० सं०

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सज्झायलिख्यते ॥

॥ ढाल पंथीडानी ॥ पंचमअंगे भगवतीजाणियेरे जिहां जिनवरनावचनअथाहरे ॥ हिमवंतपरवतसेती नीकल्यारे, मानु परतिखगंगप्रवाहरे ॥ पं० ॥ १ ॥ सूरपन्नत्तीनामे परगडोरे, जेहनोछै उद्दामभवांग रे ॥ सूत्रतणीरचना दरियाजिसीरे, मांहिलाअरथ ते सजलतरंगरे ॥ पं० ॥ २ ॥ इहांतो सुयखंध एकअतिभलोरे, एकसोएकअध्ययन उदाररे ॥ दशहजारउद्देसा जेहनारे, जिहांकिण प्रश्न छत्तीसहजार रे ॥ पं० ॥ पदतो दोयलाखअरथे भल्यारे, ऊपरसहसअठ्यासीजाणरे ॥ लोकालोकस्वरूपनीवर्णनारे, विवाहपन्नत्तीअधिकप्रमाणरे ॥ पं० ॥ ४ ॥ करियेपूजा अने परभावनारे, धरिये सद्गुरुऊपररागरे ॥ सुणिये सूत्रभगवतीरागसूंरे, तोहोय भवसागरनोत्याग रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ गौतमनामे द्रव्यचढाईयैरे, सम्यक्ज्ञान उदयहोय जेमरे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणीरे, भगति युगतिमनआणीप्रेमरे ॥ पं० ॥ ६ ॥ इणविधसुं एसूत्र आराधतांरे, इणभव सीझेवंछितका-

जरे ॥ परजवविनयचंद्रकहे तेलहेरे, मोहनमुगतिपुरीनोरा-
जरे ॥ पंच० ॥ ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्रसज्काय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सज्झायलिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलखलागाराजाजीरेंमालियै ॥ ए देशी ॥ छछो-
अंग ते ज्ञातासूत्रवखाणियैजी, जेहनाछै अरथअनेक उदं-
रुहो ॥ म्हारा सुणज्योधरिनेह सिद्धांतनीवातरुडीजी ॥ श्रवणे
सुणतां गाढोरसऊपजेजी, मधुरतातर्जितजिममधुखंरु हो ॥ म्हा०
॥ १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्तीउपांगछै जेहनोजी, इण मांहे जिनपूजानी-
विधिजोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिकसुणि परम शांतिरसअनुजवेजी,
चर्चिकसुणिकरै समसोरहो ॥ म्हा० ॥ २ ॥ नगरउद्यानचैत्यव-
नखंरुसोहामणाजी, समवसरण राजाना मातनेतातहो ॥ म्हा० ॥
धरमाचारजधर्मकथा तिहां दाखवीजी, इहलोकपरलोकशुद्धि-
विशेषसुहातहो ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ जोगपरित्यागप्रव्रज्यापर्षदाजी,
सूत्र परिग्रह वारू तपउपधानहो ॥ म्हा० ॥ संलेहणपच्चरकाण
पादपोपगमनताजी, स्वर्गगमन शुजकुलउतपत्तानहो ॥ म्हा० ॥ ४ ॥
बोधिलाजवलितंतते अंतकृत्यकहीजी, धर्मकथानादोयछे सुयखं-
धहो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीसअध्ययन ते आजछेजी,
बीजाना दसवर्गमहाअनुबंधहो ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ कंठकोमितिहां
सकलकथानकजाषियाजी, जाष्या वलि उगणीसउद्देसहो
॥ म्हा० ॥ संख्याताहजार जला पदएहनाजी, एहथकीजायै
कुमतिकलेशहो ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ विनयकरे जे गुरुनोबहुपरैजी,
तेहने श्रुत सुणतां बहुफलहोयहो ॥ म्हा० ॥ ते रसियामनवसिया

विनयचंद्रनेजी, सोमांहेमिलै जोया एककैदोयहो ॥ म्हा० ॥ ७ ॥
इति ज्ञाताधर्मकथांग स० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्रसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवैसातमोअंग ते सांभलो, उपासगदशा नामेचंगरे ॥ श्रमणोपासकनीवर्णना, जसुचंदपन्नत्तीउपांग रे ॥ १ ॥ मनलागो मोरोसूत्रथी, एतो भव वैरागतरंगरे ॥ रसराताज्ञाता गुणलहै, परमारथसुविहित संगरे ॥ म० ॥ २ ॥ इणअंगे सुयखंधएकछै, अध्ययन उद्देसविचाररे ॥ दस २ संख्यायेंदाखव्या, पदपिण संख्यात हजाररे ॥ म० ॥ ३ ॥ आनंदादिकश्रावकतणो, सुणतां अधिकाररसालरे ॥ रसलागेजागेमोहनी, श्रोताजनने ततकालरे ॥ म० ॥ ४ ॥ श्रोताआगलतो वांचतां, गीतारथपामेरीझरे ॥ जे अर्द्धदग्धसमझैनही, तेहसुंतो करवी धीजरे ॥ म० ॥ ५ ॥ दसश्रावक तो इहांभाषिया, पिण सूत्र भण्योनहीकोयरे ॥ ते माटे शुद्धश्रावकभणी, एकअरथनीधारणाहोयरे ॥ म० ॥ ६ ॥ साचोहोयतेप्ररूपियै, निस्संकपणें सुजगीसरे ॥ कविविनयचंद्रकहै स्युंथयो, जो कुमतीकरस्यैरीसरे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति उपाशकदशांगसज्झायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांगसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीरवखाणीराणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥ आठमोअंग अंतगडदशाजी, सुणीकरो कानपवित्र ॥ अंतगडकेवली जे थयाजी, तेहना रे इहां अछेचरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्मकठिनदलचूरतांजी, पूरताजगतनीआस ॥ जिनवरदेव इहां भासताजी, सासताअर्थसुविलास ॥ आठ० ॥ २ ॥ सकल-

निक्षेपनयजंगथीजी, अंगनाभावअभंग ॥ सहिजसुखरंगनी-तहिपकाजी, कहिपकाजासउवांग ॥ आ० ॥ ३ ॥ एकसुयखंध इण अंगनोजी, वर्गछै आठअभिराम ॥ आठउदेसाछे वलीजी, संख्यातासहसपदठाम ॥ आ० ॥ ४ ॥ आठमाअंगनापाठमेंजी, एहवोअछेरेमीठास ॥ सरसअनुभवरसऊपजैजी, संपजैपुण्यनी-रास ॥ आ० ॥ ५ ॥ विषयलंपटनरजेहुवेजी, निरविषयी-सुण्यांथाय, जिममाहाविषविषधरतणोजी, नागमंत्रेसुण्याजाय॥ आ० ॥ ६ ॥ अमृतवचनमुखवरसतीजी, सरस्वतीकरोरे-पसाय ॥ जिमविनयचंद इण सूत्रनाजी, तुरतलहैअभिप्राय ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअंतगडदशासूत्र स० ॥

॥ अथ ९ ॥ अणुत्तरोवाई अंग सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदलविंदलीलै ॥ ए चाल ॥ नवमोअंगअणु-त्तरोवाई, एहनीरुची मुझनेआईहो ॥ श्रावकसूत्रसुणो ॥ सूत्रसूणो हितआणी, एतो वीतरागनीवाणीहो ॥ श्रा० ॥ १ ॥ जसुकल्पावतंसिकानामै, सोहे उपांगप्रकामेहो ॥ श्रा० ॥ एतो आगमनेअनुकूला, मानु मेरुसिखरनीचूलाहो ॥ श्रा० ॥ २ ॥ एतो सूत्रनोनामसुणीजै, तिम २ अंतरगतिभीजैहो ॥ श्रा० ॥ प्रगटैनवलसनेहा, एहथीउलसेमोरीदेहाहो ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ अणुत्तरसुरपदपाया, तेहनागुण इणमेंगायाहो ॥ श्रा०॥ नगरादिकभावबखाण्या, तेतौ छैअंगेआण्याहो ॥ श्रा० ॥४॥ इहांएकसुयखंधवारू, त्रणवर्गवलीमनुहारूरे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा-त्रिणेंसनूरा, संख्यातसहसपदपूराहो ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ सूत्र-सुणावूं अमेतेहनें, साचीश्रद्धाहुय जेहनेहो ॥ श्रा० ॥ श्रोता-

श्रीप्रीतलगावूं, निंदकने मुंहनलगाउंहो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतांकरैबकोर, तेतोमाणसनहीपिणढोरहो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंदकहेसाचो, श्रुतरंगै सहुकोराचोहो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सज्झायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरणसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघाआमपधारोपूज ॥ एदेसी ॥ दशमो अंग-सुरंगसुहावै, प्रश्नव्याकरणइननामें, सूत्रकल्पतरुसेवे तेतो, चिदानंदफलपामे ॥ आवो २ गुणनाजाणतुमनेसूत्रसुणाउं॥ पुष्पकलीज्यूं परिमलमहकै, गुरुपरागनेरागै ॥ तिम उपांग-पुष्पिकाएहनो, जोरजुगतिकरिजागै ॥ आवो० ॥ २ ॥ अंगु-ष्टादिकजहांप्रकास्या, प्रश्नादिकअतिरूडा ॥ ते छै अष्टोत्तर-सतएतो, सूत्रमध्यमणिचूडा ॥ आ० ॥ ३ ॥ आश्रवद्वारपांच-इहांआण्या, पांचेसंबरद्वारा ॥ महामंत्रवाणीमांहहियै, लबधि-भेदसुखकारा ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुयखंधएकछै दसमेअंगै, पण-यालीसअज्झयणा ॥ पणथाखीसछहेसवलिपद, सहससंख्या-तनीरयणा ॥ आ० ॥ ५ ॥ जेनरसूत्रसुणैनहीकानै, केवल-पोषेकाया ॥ मायामांहिरहैलपटाणा, तेनरइमहिजआया ॥ आ० ॥ ६ ॥ सूत्रमांहितो मारगदोयछै, निश्चयनयव्यवहारा ॥ विनयचंदकहै ते आदरियै, तजमनमदनविकारा ॥ आवो० ॥ ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ विपाकसूत्र सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल करूखानी ॥ सुणोरे विपाकश्रुत अंगइग्यारमो, वजोविकथावृथाजेअनेरी ॥ ललितउपांगजसुमवर पुष्फचू-

लिका, मूलिका पापआतंककेरी ॥ सु० ॥ १ ॥ अशुज्ञ किं-
पाक सम डुकृतफलज्ञोगवी, नरकमें गरकथयाजेहप्राणी ॥
सुकृतफलज्ञोगवीस्वर्गमांजेगया, तासवक्तव्यताइहांआणी ॥
सु० ॥ २ ॥ दोयश्रुतखंधने वीशअध्ययनवलि, वीसउद्देस
इहां जिनप्रयुंजे ॥ सहससंख्यातपद कुंदमचकुंदजिम, बहुल-
परिमलज्रमरचित्तगुंजे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सरसचंपकलता सुरज्ञि-
सहुनेरुचै, अन्य उपगारनीबुद्धिमाटै ॥ सूत्रउपगार तेहथी
सबलजाणियै, जेहथीपुरुषसुखअचलखाटै ॥ सु० ॥ ४ ॥
बंधने मोहना बेउं कारणअछै, डुकृतने सुकृत जोवोविचारी ॥
डुकृतनेपरिहरी सुकृतनेआदरी, जिनवचनधारियै गुणसंज्ञारी
॥ सु० ॥ ५ ॥ मकररे मकरनिंद्या निगुणपारकी, नारकी
तणीगति कांइबांधै ॥ नारकी प्रकृतितज सहजसंतोषज्ञज,
लागश्रुतसांज्ञलीधरमधंधै ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुखने डुःखविपाक-
फलदाखव्या, अंगइग्यारमें वीतरागे ॥ चिरजयो वीरशासन
जिहां सूत्रथी, कविविनयचंद्रगुणज्योतिजागे ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंगइग्यारे मेंथुण्या, सहेलीए ॥
आजथयारंगरोलकि ॥ स० ॥ नंदीसूत्रमांहि एहनो, स० ॥
ज्ञाष्यो सर्वनिचोलकि ॥ १ ॥ सहेलीए आजवधामणा ॥
आंकणी ॥ पसरीअंगइग्यारनी, स० ॥ मुझमनमंरूपवेलकि ॥
सींचूते हरखेकरी, स० ॥ अनुज्ञवरसनीरेलकि ॥२॥ हेजधरी
जेसांज्ञलै, स० ॥ कुणबूढा कुणबालकि ॥ तोते फललहेफूटरा,
स० ॥ स्वादेंअतिहिरसालकि ॥ स० ॥ ३ ॥ हरखअपारधरी-

हियै, स० ॥ अहम्मदावादमझारकि ॥ चासकरीए अंगनी- स० ॥ वरत्या जय २ कारकि ॥ स० ॥ ४ ॥ संवतसतरपचा वर्ने, स० ॥ वर्षारितुनभमासकि ॥ दसमीदिनसुदिपक्षमां, स० ॥ पूरणथई मनआसकि ॥ स० ॥ ५ ॥ श्रीजिनधर्मसूरी- पाटवी, स० ॥ श्रीजिनचंद्रसूरीसकि ॥ खरतरगच्छनाराजिया, स० ॥ तसुराजै सुजगीसकि ॥ ६ ॥ पाठकहरखनिधानजी ज्ञानतिलकसुपसायकि ॥ विनयचंद्रकहे मेंकरी, स० ॥ अंगइग्यारसज्झायकि ॥ स० ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सज्झाय ॥

॥ ढंढणरिषीनी सज्झाय ॥

॥ ढंढणरिषिजीनेवंदना हूंवारी, उत्कृष्टोअणगाररे हुवारी- लाल, अभिग्रहलीधोएहवो हुं० ॥ लेस्युंशुद्धआहाररे ॥ हु० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रतिजठेगोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध- आहाररे ॥ हुंवा० मूलनलै अणसूझतो हु० ॥ पंजरकीधो- गातरे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरिपूछै श्रीनेमीने हूं०, मुनिवर- सहसअढाररे ॥ हुं वा० ॥ उत्कृष्टोकुणएहमें हुं० ॥ मुझनेंकहो विचाररे ॥ हुंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढणअधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुखनेमजिनंदरे हुंवा० ॥ कृष्णउमाह्योवांदवा हुं० ॥ धन- जादवकुलचंदरे हुंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर- मिल्या हुं०, बांद्याकृष्णनरेसरे हुंवा० ॥ किणहीमिथ्यात्वी- देखने हुं०, आएयोभावबिसेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझघर- आवोसाधुजी हुं०, ल्योमोदकछै शुद्धरे हुं० ॥ मुनिवरविह- रीनेपांगुरया हुं०, आयाप्रभुजीनेपासरे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥

मुऊस्वधै मोदकमिल्या हुं०, कहोनेतुम्हेकिरपालरे हुं० ॥
लब्धिनही वल्लताहरी हुं०, श्रीपतिलबधिनिहालरे हुं० ॥ ७ ॥
ढं० ॥ एलेवो जुगतोनहीं हुं०, च्याल्या परठनकाजरे हुं० ॥
इंटनिवाहेजायने हुं० चूरे करमसमाजरे हुं० ॥ ८ ॥ ढं० ॥
आंणीचढतीजावना हुं०, पांम्योकेवलनाणरे हुं० ॥ ढंढणऋषि
मुगतेगया हु०, कहे जिनहर्ष सुजाणरे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥
इतिढंढणऋषिसज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सज्झाय ॥

श्रीजिनवाणीरेधन्ना, अमियसमाणी मोरानंदन, मनकोतो मानीरे नंदनताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहिवैरागीरे धन्ना, धरमनो-रागी मोरानंदन माहरोतो मनकोरे किमपरचावसुं ॥ २ ॥ दसदिसीदीसेरे धन्ना, तोविनसूनी मोरानंदन, अनुमतिदेतांरे जीववहेनही ॥ ३ ॥ बत्तीसैनारीहो धन्ना, अतहिपियारी मो० ॥ वाणीतो बोलेरे मधुरसुहामणी ॥ ४ ॥ बालकतो कामणीरे धन्ना, वयपिणतरुणी मो० ॥ गजगतिचालेरे चाल-सुहावणी ॥ ५ ॥ एघरमंदिरहो धन्ना, एसुखसज्या मो० ॥ कोरूबत्तीसे धननोतूंधणी ॥ ६ ॥ एधनमांणोरे धन्ना, वयपिण जांणो मो० ॥ जोगविलेज्योरे जोगसुहामणो ॥ ७ ॥ व्रतअति-दोहिलोरे धन्ना, नहियसुहेलो मो० ॥ सुगमनहीछेरे साधुक-हावणो ॥ ८ ॥ घर २ जिक्षाहो धन्ना, गुरुतणीशिक्षा मो० ॥ कहणीरे रहणीनहीछेसारखी ॥ ए ॥ इकवारे सुणीयेहो धन्ना, आगमजणीये मो० ॥ जिनवरजांणेहो दुकरजोगछे ॥ १० ॥ वनवासेरहणो हो धन्ना, परीसहसहणो मो० ॥ कोमलकेसारे

शोषकरावणो ॥ ११ ॥ साचोतें जाण्योहे अम्मा, झूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ दुक्करमारग जननीदाखियो ॥ १२ ॥ सुखअभिलाषीहे अम्मा, फूठनआखी मोरी अम्मा ॥ कायर-मारगजननीदाखियो ॥ १३ ॥ एजगस्वारथीहे अम्मा नही-परमारथि मोरी अम्मा, वीरवखाएयोपरखदासहुसुएयो ॥१४॥ मेंइमजाएयोहें अम्मा, वीरवखाएयो मोरी अम्मा, एधनजोबन आयुथिरनही ॥ १५ ॥ अनुमतिदीजेहे अम्मा, ढीलनकीजै मोरी अम्मा, जोखिणजावेसो फिरआवेनही ॥ १६ ॥ अनु-मतिआपी हो अम्मा, जीवसुखपाम्यो मोरी अम्मा, संजम-लीधोरे मनमांगहगही ॥ १७ ॥ छठ २ पारणोहे अम्मा, विगयनिवारणो मोरी अम्मा, वीरवखाएयोसुरनरआगलै ॥१८॥ सुखसंजमपाले हे अम्मा, दूषणटाले मोरी अम्मा, अंगइग्यारे अरथरूमाजणें ॥ १९ ॥ संजमपाल्यो हे अम्मा, अढारपख-वारू मोरी अम्मा, माससंथारे सरबारथसिद्धलह्यो ॥ २० ॥ इति धन्नाऋषि सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसज्झाय लिख्यते ॥

देवदाणवतीर्थंकरगणधर, हरिहरनरवरसबला ॥ करम-प्रमाणे सुखदुखपाया, सबलहुआमहानिबलारे प्राणी, कर्म-समोनहिकोई ॥ १ ॥ आदीसरजीनेकरमअटाल्या, वरसदिवस रह्याजूखा ॥ वीरनेवारेवरसदुखदीठा, ऊपनाब्राह्मणीकूखेरे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठसहसमुतमाख्या एकणदिन, जोध-जुवाननरजैसा ॥ सगरहुवेमहापूत्रनोदुखियो, कर्म्मतणाफल-एसारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्तीससहसदेसांरो साहिब,

चक्रीसनतकुमार ॥ सातरोगसरीरमेंऊपना, कर्म्मेंकीयो तनु-
छाररे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म्मेंहवालकियाहरिचंदने, वेची सुता-
राराणी ॥ बारेवरसलग माथेंश्राएयो, नीचतणे घरपाणीरे ॥
प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहनराजारीबेटी, चावीचंदनबाला ॥
चौपदज्यूंचहुटामेंवेची, करमतणाएचालारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥
संजूमनांमे आठमोचक्री, कर्म्मेंसायरनाख्यो ॥ सोलेसहसजक्ष-
कजादेखे, पिण किणहीनहिराख्योरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥
ब्रह्मदत्तनामे बारमोचक्री, कर्मेंकीधोआंधो ॥ इमजाणीने अहो
जविप्राणी, कर्म्मकोइ मतबांधोरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥
छपन्नकोरुजादवरो साहिब, कृष्णमहाबलजांणी ॥ अटवी
मांहिमूंजेएकलरुो, विल २ तोविनपाणीरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ए ॥
पांरुवपांच महाजूफारा, हारीड्रोपदानारी ॥ बारे वरसलग-
बनररुवरुिया, जमिया जेमजिख्यारीरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥१०॥
बीसजुजा दसमस्तकहूंता, लखमणरावणमाख्यो ॥ एकलरुे
जगसहुनरजीत्या, तेपिण कर्म्मसुंहाख्योरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥११॥
लखमणराम महाबलवंता, अरुसतवंतीसीता ॥ कर्म्मप्रमाणे
सुखङुखपांम्या, वीतकबहुतसवीतारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥
समकितधारीश्रेणिकराजा, बेटे बांध्यो मुसकैं ॥ धरमीनरने
कर्मधकाया ॥ करमसुंजोरनकिसकारे ॥ प्रा० क० ॥ १३ ॥
सतियसिरोमणीड्रौपदिकहियैं, जिनसम अवरनकोई ॥ पांच-
पुरुषनीहुइ तेनारी, पूरबकर्म्मकमाईरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥
आजागरीनो जेस्वामी, साचो राजाचंद ॥ मांइकीधो पंखी-
कूकरुो, कर्म्मेंनाख्यो तेफंदरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईश्वर-

देवने पारवतीनारी, करतापुरुषकहावै ॥ अहनिसमहिलमसां-णमेवासो, भिक्षाभोजनखावेरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस-किरणसूरजपरतापी, रातदिवसरहे अटतो, सोलकलासससी-धर जगचावो, दिन २ जायेघटतोरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इमअनेक खंड्यानरकरमें, भांज्या ते पिणसाजा ॥ ऋद्धिहरष-करजोमीनेविनवै, नमो २ कर्म्ममहाराजारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इतिकर्म्मसझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ सातविसनकीसज्झाय लिख्यते ॥

सातविसननारे संगमतकरो, सुणतेहनोसुविचार विवेकी ॥ सातनरकनारे भाइसातेई, आपैदुखअपार विवेकी ॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथमजूवानेरे विसनपड्यांथकां, पांमवपांचप्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजापिण इणविसने पड्यो, खोइसहूराजरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरेमांसभक्षण अवगुणघणा, करै पर-जीवसंहार विवेकी ॥ महासतकनीनारीरेवती, नरकगइनिरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजेमदिरापांनविसनतजी, चित-धरीवलिचाह वि० ॥ द्वीपायणरिषि दूहव्योजादवे, द्वारकानो, अयोदाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथेविसने वेस्याघरवसै-लोकमेंनरहेलाज वि० ॥ कयवन्नादिकनोगयोकायदो, कुवि सनेरे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पापआहेमे कुविसनसाचवै-प्राणीहणियेप्रहार वि० ॥ मारीमृगली श्रेणिकनृपगयो, पहली-नरकमझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठेचोरीने विसनेकरी, जीवलहेदुखजोर वि० ॥ मुंजदेवराजायेंमारियो, चावोहुंमक-मोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीसंगत कुविसनसातमें,

हाणिकुजसबहुहोय वि० ॥ राणोरावण सीताअपहरी, नासलंकानोरे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इमजांणीने जव्यतुमेआदरो, सीखसुगुरुनीरेसार वि० ॥ इणजवपरजवआनंदअतिघणा, कहेधमसीसुखकार ॥ वि० ॥ सा० ॥ ९ ॥ इतिसातविसनकीसज्झायसंपूर्णं ॥

॥ अथ चेलणासतीनीसज्झाय लिख्यते ॥

वीरवांदीवलतांथकांजी, चेलणादीठोरेनिग्रंथ ॥ रातिवनमांहि काउसग्गरह्योजी, साधतो मुगतिनोपंथ ॥ १ ॥ वीरवखाणीराणीचेलणाजी, सतियसिरोमणिजांण ॥ चेडाराजानीसातेसुताजी, श्रेणिकसीयलपरिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीतछंगारसबलोपडेजी, चेलणाप्रीतमसाथ ॥ चारत्रियो चितमेवस्योजी ॥ सौवडिबहिररह्योहाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबकजागीकहेचेलणाजी, किमकरतोहुस्यैतेह ॥ कुसतीमनमाहि ए कुणवस्योजी ॥ श्रेणिकपड्योरेसंदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउरपरोजालज्योजी, श्रेणिकदियोरेआदेस ॥ जगवंतसांसो जांजियोजी, चमकियोचित्तनरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीरवांदीवलतांथकांजी, पैसतां नगरमझार ॥ धुंआनोघोरदेखीकरीजी, जाजारे अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनोवचनपालीकरीजी, व्रतलियो अजयकुमार ॥ समयसुंदरकहे चेलणाजी, पामियो जवतणोपार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति चेलणामहासतीसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ वैराग्य सज्झाय ॥

॥ जूलोमनजमरा कांइजमै, जमियोदिवसतेरात ॥ मायारो

छोजीप्रांणियो, जमियोपरिमलजात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुंजकाचो कायाकारमी, जेहनाकरोरे जतन्न ॥ विणसतां वारलागेनही, निरमलराखोरेमन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहनाछोरू केहनावाछरू, केहना मायनैबाप ॥ ळंजीवजासी एकलो, साथे पुन्यनेपाप ॥ ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्यातो डूंगरजेवडी, मरवोपगलारेहेठ ॥ धनसंची संचकांइकरो, करवीदेवनीवेठ ॥ ४ ॥ जू० ॥ लखपति छत्रपती सबगए, गए लाखोकेलाख ॥ गरबकरी गोखैबैठता, जइ जलबलराख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजलदुखजर्यो, तिरवोछेरेजेह ॥ वीचमेंबीह सबलोअछै, करमें वायनेमेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नहि मारगचालवो, जायवोपहिलेरे पार ॥ आगलनहि हटवांणियो ॥ संबललेज्योरेलार ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरखकहे धनमाहरो, धनकेहनो हतो न थाय ॥ वस्त्रविनाजाय पोढवो, लखपतिलाकम्माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ महमंदकहे वस्तुवोरीये, जे कुछआवेरेसाथ ॥ अपणो लाजउवारियै, लेखोसाहिबहाथ ॥ जू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबलिसज्झाय ॥

॥ राजतणा अतिलोजिया, जरतबाहूबली झूझेरे ॥ मूंठी उपाडीमारिवा, बाहूबलिप्रतिबूझेरे ॥ १ ॥ वीराम्हारागजथकीउतरो, ब्राह्मीसुंदरीजासैरे ॥ ऋषजजिनेसरमोकली, बाहूबलीनेंपासैरे ॥ वी० ॥ गजचढ्यां केवलनहोईरे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोचकरी चारित्रलियो, वलिआयो अजिमानोरे ॥ लघुबांधववांदूनही, काउसग्गरह्यो शुजध्यानोरे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरसदिवस काउसग्गरह्यो, वेलडियांवींटाणोरे ॥ पंखीमालामां-

भियां, सीततापसूकाणोरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवीवचनसुएया-
इसा, चमक्योचित्तमझारोरे ॥ हयगयरथमें परिहस्या, नवि-
मूंक्योअहंकारोरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मनवालियो, मूंक्यो
निजअभिमांनोरे ॥ पांवजपाभीवांदिवा, ऊपनोकेवलज्ञानोरे ॥
वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवलीपरखदा, बाहुबलऋषिरायारे ॥
अजरअमरपदवीलही, समयसुंदरवंदेपायारे ॥७॥ वी०॥ इति ॥

॥ अथ अरणकमुनि सज्झाय ॥

॥ अरणकमुनिवर चाल्यागोचरी, तमके दाझे सीसोजी ॥
पायउन्नराणारे वेलूपरजलै, तनसुकमालमुनीसोजी ॥ अर०
॥ १ ॥ मुखकमलाणोरे मालतीफूलज्यूं, ऊभोगोखने हेठोजी॥
खरैडुपहरैरे दीठोएकलो, मोहीमाननीमीठोजी ॥ २ ॥ अ०
वयणरंगीलीरे नयणेविंधियो, ऋषिथंभ्योतिणवारोजी ॥ दासी-
नेकहे जायऊतावली, ऊरिषितेभीआंणोजी ॥ ३ ॥ अ०
पावनकीजे ऋषिघरआंगणो, वहिरो मोदकसारोजी ॥ नव-
जोवनरसकायाकांइदहो, सफलकरोअवतारोजी ॥ ४ ॥ अ० ॥
चंद्रावदनीरे चारितचूकव्यो, सुखविलसै दिनरातोजी ॥ इक-
दिनगोखैरमतोसोगठै, तवदीठी निजमातोजी ॥ ५ ॥ अ० ॥
अरणक २ करतीमायफिरे, गलियै २ मझारोजी ॥ किणहिक-
दीठोरे माहरोअरणलो, पूछैलोकहजारोजी ॥ ६ ॥ अ० ॥
ऊतरतिहांथीरे जननीरेपायनमे, मनमेंलाज्योतिवारोजी ॥
धिग् २ पापीरे माहाराजीवने, एहमें अकारजधारयोजी ॥७॥
अ० ॥ अगनधुखंती रे सिला ऊपरै, अरणक अणसण

कीधोजी ॥ समयसुंदरकहे धनतेमुनिवरू, मनवंछितफलसीधो-
जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अकरणमुनिसज्झायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्रसज्झाय लिख्यते ॥

नामइलापुत्रजांणियै, धनदत्तसेठनोपूत ॥ नटवीदेखीरे मोहियो, नहिराख्योघरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटेरे प्राणिया, पूरबनेहविकार ॥ निजकुलछंडीरे नटथयो, नाणीसरमलिगार ॥ क० ॥ २ ॥ इकपुरआयोरे नाचवा, उंचोवंसविशेष ॥ तिहां रायजोवारे आवियो, मिलियालोकअशेष ॥ क० ॥ ३ ॥ दोयपगपहरीरे पावडी, वंसचढ्योगजगेल ॥ निरधाराउपर नाचतौ, खेलेनवनवाखेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोलबजावेरे नाटवी- गावेकिन्नरसाद ॥ पायतलघूघरा घमघमैं, गाजैअंबरनाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तवतिहांचिंतेरे राजियौ, लुब्धयोनटवीरे साथ ॥ जोनटपडैरेनाचतो, तोनटवीमुझहाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांनन- आपैरेनूपती, नटजांणीनृपवात ॥ हूंधनवंछुरे रायनो, रायवंछे मुझघात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांइक मुनिवरपेखियौ, धन २ साधु नीराग ॥ धिक् २ विषयारेजीवने, मनआण्योवैराग ॥ क० ॥ ८ ॥ संबरआवैरे केवली, ततखिणकर्मखपाय ॥ केवलि महिमारेसुरकरै, समयसुंदरगुणगाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमारमुनिसज्झाय लिख्यते ॥

वीरजिनंदसमोसर्याजी, वंदेमेघकुमार ॥ सुणीदेशनावैरा- गीयौजी, एसंसारअसाररे मायडी ॥ अनुमतिद्यो मुझआज ॥ संयमविषमअपाररे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछतूंकेणे भोल- व्यौरे, श्रेणिकतातनरेस ॥ कांइकणौ किणदूहव्योरे, हूंनविछुं

आदेशरे जाया ॥ संयमविष० ॥ किमनिरबाहिसन्नाररे जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदिनिगोदेहूं रह्योजी, सहियाडुक्खअणंत ॥ सासोश्वासें न्नवपूरीयाजी, तेह नजांणूअंतहे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणातूंबालक अछेजी, जोबनन्नस्योरे कुमार ॥ आठरमणिपरणावियोरे न्नोगविसुक्खअपाररे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनममरण निरयातणौजी, डुक्खनसहियोजान ॥ वीरजिणंदवखाणियोजी, ते मैसुणियौकांनहे मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछकांचलीयैजीमणोजी ॥ अरसविरसआहार ॥ न्नुंइपाला नितहींमणोजी, जाणसीतळकुमाररे जाया ॥ हूं न० ॥ ६ ॥ न्नमतांजीवअनंतन्नम्योजी, धर्मडुहेलो होय ॥ जराव्यापे जोवनखिसेजी, तबकिमकरणोहोयरे मायमी ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणीआठेरमेजी, तोमे नवसरहार ॥ जोवनन्नर छोरूनहीजी, कांइमूकोनिरधारकुमरजी ॥ हूं न० ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमीजी, रूपरमणि रसन्नोग ॥ अतहि सुंहाली देहमीजी, किम हुयसंजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ए ॥ स्वारथनोसहूएसगोजी, अरथपखेसहुकोय ॥ विषयविषममहुराकह्याजी, किमन्नोगवियेसोयहे मायमी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमि २ माउपसायकरी जी, मेंदीधुं तुऊडुक्ख ॥ दिउआदेस जिम हुंसुखीजी, वीरचरणेंह्युंदीखहे ॥ मां० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तनफाटे लोयणऊरेजी, डुख न सहणाजाइ ॥ वछसुखीहुवो तिमकरोजी, मेंदीधोआदेसरे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणिमाणकमोतीतज्याजी, तोड्यो नवसरहार ॥ मृगनयणी आठैरमेजी, हिवअह्मकवणआधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमरन्नणै सुकुलीप्रियाजी, बहुडुख-

एसंसार ॥ नेहतुमारोजांणियोजी, जो ल्यो संयमन्नाररे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथसिविका तब सझीकरीजी, कुंवरधारणी-माय ॥ श्रेणिकरायउछवकरैजी, चारित्रलियो रिषिरायरे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इमजांणीवैरागियौजी, वरजैजेनरनारि ॥ कर-जोड़ी पूनोजणेजी, ते तरस्यैसंसारहे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिज्झाई निर्णय सज्झाय ॥

श्रावणकातीमिगसरमास, पहिलीपड़वा तीनविमास ॥ चौथीपड़वा वदिवैशाख, च्यारपुहर असिझाइन्नाख ॥ १ ॥ जांलगिधूलीझड़ैवार, धुंवरपड़तीहुवैजिवार ॥ जां परचक्रनो न्नयनविजाय, तांलग असिज्झाईकहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केसपाखांण, वरसैतांलग असिज्झाईजांण ॥ फूटैमल्लमांहोमां-हिजांम, तांलग असिज्झाईतिणठांम ॥ ३ ॥ नृपति परन्नवपो-हतोहोय, जांलग पाटनबैसेकोइ ॥ तांलग वोलीजे असिझाइ, सहुकोसरदहज्यो मनमांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एकपोहर असिज्झाईथाय ॥ निबल मेह तिम जांणोसही, आठपहोरसबलजलकही ॥ ५ ॥ चैत्रसुदिपांचमदिनथकी, पड़िवालग असिझाइवकी ॥ पड़िवाबीजतीजचांदणी, समी-सांझ असिझाईगिणी ॥ ६ ॥ आद्रानक्त्र न लागैजांम, गाज-बीजअसिझाइताम ॥ गाजवीजजोहुवेअकाल, असिज्झाइबेपु-हरसंन्नाल ॥७॥ चंद्रग्रहणअसिज्झाईजणी, बारह पोहर उत्कृष्टी-गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठविचार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै-बार ॥ ८ ॥ सोलप्रहरउत्कृष्टीकही, सुगुरुमुखै न्नवियणसर-

दही ॥ नगरप्रधांन मरेजोकोइ, आठपुहरअसिज्झाईहोय ॥९॥
वसतीथकी सातांघरमांहि, नरविहूंकैअहोरतिअसिज्झाई ॥
पुरुष पड्योहोयमृतकअनाथ, तां असिझायकही सोहाथ॥१०॥
पुत्रतणै प्रसवै दिनसात, बेटीआठदिवसविख्यात ॥ सोकर मांहि
कहीअसिझाई, नारीऋतु दिनतीनकहाइ ॥ ११ ॥ ईंडोफूटै
प्रसवैगाइ, जांजररुधिरपडै तिनठाइ ॥ असिज्झाइ साठकर-
मांहि, त्रिणहपोहर के ऊपरनांही ॥ १२ ॥ आसाढैचौमासै-
दिने, पडिकमणाठायांथीगिणै ॥ बारपोहर असिझाईकही,
कातीचौमासैइणपरिसही ॥ १३ ॥ इण परअसिझाईछैबहू,
गीतारथगुरुजांणैसहू ॥ सांजलिए में कहीसंखेवि, हरखैपय-
प्रजूकीजैहेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतक्षरजे, च्यारमात्रदीजे-
तेह ॥ सत्तमवर्गवीअअक्षरै, तबकविनांमकहियोइणपरै ॥१५॥
इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीसअभक्षसज्झाय लिख्यते ॥

जिनशासनरे सूधीसरदहिणाधरो, श्रीगुरुमुखरे नवतत्व ए
निरताकरो ॥ मिथ्यामतरे कुमतिकदाग्रहपरिहरौ, सहि पाखो-
रे तेनर समकितमनखरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मनखरौ समकित-
शुद्धपाखौ, टालोदोष दयापरो ॥ धुरिपंचअणुव्रत तीनगुणव्रत,
च्यारसिक्षाव्रतधरौ ॥ इमदेशविरती क्रियानिरती, सुणो जवि-
यणमनरली ॥ दाखविएगुणपरह केरा, दोषममकाढौबली ॥२॥
ममकाढोरे लोजीनर कूडौकरौ, जांणीसावद्यरे अजक्षबावीसे-
परिहरौ ॥ वड पींपलरेपिलखणनेंकवुंबरो, ऊंबरफलरे खेतुमें,
जक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ खेतुमेंजक्षणकरौ मांखण,

मद्यमधु आमिषतणो ॥ विषहेमकरहागंमिपरहा, दोषमूल-
माटी घणो ॥ परिहरोसज्जन रयणीजोजन, प्रथमदुरगतिबा-
रणौ ॥ मतकरौब्यालू अतिअसूरौ, रविउदयविनपारणो ॥४॥
अथाणोरे अनंतकायसबनिमिये, काचागोरसरे मांहि कठो-
लनजिमिये ॥ एहवेंगणरे तुच्छफलासविगांमए, आपणपूंरे व्रत-
लीधोनविखंमए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नविखंमए व्रतनियमलेइ,
बेइफलव्रतजंगनौ ॥ अज्ञातफलबहुबीज जोजन, चलितरस
होयजेहनो ॥ संबरआणी अजक्षजानी, तजोए बावीसए ॥
गुरुवयणविगतैं वलीपूछयौ, अनंतकाय बत्तीसए ॥ ६ ॥ अनं-
तीरे कंदजाति जाणोसहू, जसुजक्षण रे पातिकबोल्याछैंबहू ॥
कचूरौरे हलदनीआदूंबली ॥ वजचूरणरे कंदबहूंकुंवलीफली
॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंमली फली कुंवलीबीजपाखै, चाखैचतुरन-
रआंविली ॥ रतालु पिंमालु थेगथोहर, सतावरीलसणकुली ॥
गाजरमूला गिलौ रींगण विरहालीटुकवत्थुलौ, पल्यंकसूरण-
वालवीली मौथ नीलीसांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेलारे कूंपलक-
वलातरुतणा, अंकूरारे लोटाते जलपोयणा ॥ कुमारीरे जमर-
वृक्षनीछालमी, जेकहियेरे लोकेअमृतबेलमी ॥ ए ॥ वेलमी-
तानुवाजा खिलोमा ने खरसुआ, जूयजूंफोमा छत्राकार जांणौ
नीलफल सेवेजूआ ॥ बत्तीसबोलप्रसिद्धबोल्या लक्ष्मीरतनसू-
रिइम कहे, परिहरेजे नर दोषजांणी प्रांणी ते सत्रिसुखलहे
॥ १० ॥इति बावीस अजक्ष सझाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सज्झाय ॥

॥ संवेगरसमेझीलता, मनसुंकरेआलोच ॥ देखीनेदोहग

टलै, तासुसाध्योरे मेंकरिलोच ॥ १ ॥ यादवरायधन २ गज-सुकमाल, तेहने करूंरे प्रणामत्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभूपासेसंयमआदर्यौ, तेहनोएपरिणाम ॥ मनवच कायाव-सिकरी, जोहूंपामूंरे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनिमुगतिजा-यवाअलजयो, परूषैन दिनदसवीस ॥ साहसीकइमउच्चरतो, पिण दिनजावेरे तो छेहदीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांणजाय-काउसग्गरह्यौ, तिणसांझि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवरअवरइमचिं-तवै, एहनैं साचीरैछै मुंहमूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझसुताविनअ-वगुणतजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगडीरचि सिरऊपरै, चिहुंदिसिबांधीरे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदनाजिम अधिकवधै, तिमवधै मन परिणांम ॥ चवदमेंगुणठाणेंचढ्यो, मुनिवरपांम्योरे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकीजांमणनेथई, तेरयणवरस हजार ॥ वांदवाआवीप्रहसमें, पिण नविदेखेरे-प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांझींकरी, रातिनी-वीतग वात ॥ हरिदेखीहियडोफूटसी, तेणेंकीधोरे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसमसुधारससेवतां, पांमियो अवि-चलराज ॥ मनरंगसाधुमहंतना, गुणगावेरे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥ गज० सं० ॥

॥ अथ प्रषणचंद्र सज्झाय ॥

॥ राजछंडीरलियामणोरे, जांणीअथिरसंसार ॥ वैरागै मन-वालियो, कांइलीधोसंजमभार ॥ प्रषणचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमेमोटामुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहेकाउसग्ग रह्योरे, पग-ऊपरपगठाय ॥ बांहबेउं ऊंचीकरी, सूरज सांमी दृष्टिलगाय

॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिकवंदननीसस्योरे, वीरजीने वंदनजाय ॥ देइतीनप्रदक्षिणा, त्रिविध २ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दुरमुखदूतवचनसुणीरे, कोपचढ्योततकाल ॥ मनसुंसंग्राममांमियो, जीव पड्योजंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्नपूछियोरे, एहनी सीगतिथाय ॥ जगवंतकहे हिवणांमरेतो, सातमीनरकेजाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिणइकअंते पूछियोरे सर्वार्थसिद्धविमांन ॥ वाजी देवनी दुंदुजी, मुनिपांम्याकेवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनिमुगतेगयारे, श्रीमहावीरनाशिष्य ॥ रिद्धहरखकहे धन्यते, जिणदीठारेपरतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंडितश्रीजेतसी मुनिकृत दशवैकालिक सज्झाय लिख्यते ॥

॥ मुनिवृषज श्रीमनक मुनयेनमः ॥ श्रीदशवैकालिकसूत्रकृत चतुर्दशपूर्वधर श्रीशय्यंजवसूरिं वंदे ॥

॥ तत्र प्रथमाध्ययन सज्झाय लिख्यते ॥

॥ धर्ममंगलमहिमानिलो । धरमसमोनहींकोय । धर्म सूधे नमेंदेवता । धरमेंशिवसुखहोय ॥ १ ॥ "धर्म०" जीवदयानितपालीये । संयमसतरप्रकार । बारेजेदें तपतपें । धर्मतणो ए सार ॥ २ ॥ धर्म० ॥ जिम तरुवरनें फूलडे । जमरोरसलेजाय । तिम संतोषे साधुआतमा । फूलपीडानविथाय ॥ ३ ॥ धर्म०॥ इणविधिविचरे गोचरी । वहिरेशुद्धआहार । ऊंचनीच मध्यमकुले । धन धन तेअणगार ॥ ४ ॥ धर्म० ॥ मुनिवरमधुकर समकह्या । नहिंनिश्रानहिंलोज । लाधेजाडोयेंदेहीनें । अणलाधे संतोष ॥ ५ ॥ धर्म० ॥ अध्ययनपहिलोद्रुमपुष्फीने ।

ारा अरथविचार । पुन्यकलसशिष्यजैतसी । धर्मेजयजय-
र ॥ ६ ॥ धर्म० ॥ इति श्रीप्रथमाध्ययन सझाय सं० ॥

॥ अथ द्वितीयाध्ययनसज्झाय लिख्यते ॥

दीक्षादोहिलीआदरीजी । कामभोगफलछांरू । संकल्पवसें
पगपगेजी । वैरागेरंगमांरू ॥ १ ॥ मुनीसर धनधनतेअणगार ।
गतजी जोगआदरेजी । तेहनें हुं बलिहार मुनीसर धन-
तेअणगार ॥ २ ॥ मनवालेभूलो चूकतोजी । नकरे ढील-
ार । जाणे न को जगकेहनोजी कुंणहुं कुंणतेनारि ॥ मुनी०
३ ॥ करिआतपनाआकरी जी । कोमलमकरेदेह । रागद्वेष-
ीपाडूआजी । जिम सुखपामेअछेह ॥ मुनी० ॥ ४ ॥ अग्नि-
ःजलतेंपरूंजी । अगंधनकुलसाप । वम्युंनवांछे विषवलिजी ।
म आपणेकुलचाप ॥ मुनी० ॥ ५ ॥ धिगधिगतुं जसवां-
े जी । वांछेवम्युंआहार । जीवाथीमरवोभलोजी । निर्लज्ज
ाजेछिगार ॥ ६ ॥ मुनी० ॥ नारिसारिपारकीजी । देखी
ी मतभूल । वाऊऊकोल्ह्यातरूपरेजी । अथिरहुइसकुलीर
७ ॥ मुनी० ॥ जिमहाथीअंकुशवशेजी । थिरठामआवेतेम,
ीमतीसती बुझव्योजी । स्थिरठामआव्यो रहनेम ॥ ८ ॥
ी० ॥ अध्ययनसामन्नपुप्फियाजी । सखरा अरथविचार ।
यकलशशिष्यजैतसीजी । प्रणमेसूत्र सुखकार ॥ ९ ॥
ी० ॥ इति श्रीद्वितीयाध्ययनसझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ तृतीयाध्ययन सज्झाय लिख्यते ॥

॥ सूधासाधुनिर्ग्रंथ । साधे मुक्तिनोपंथ । आतमसंवर्यो ए।

संबरआदस्योए ॥ १ ॥ दूषणटालेदीख तेहनेंएहवी शीख । वीरजिनवरकहेए । मुनिवरसरदहेए ॥ २ ॥ उद्देशकआदि-देय । एहवापिंम नलेय । कृतकमजाणियेए । साम्होआणियेए ॥ ३ ॥ लेवे न राईभत्त । न जीमे गृहिनें पत्त । रायपिंम न आदरे ए । सज्यातरपरिहरेए ॥ ४ ॥ राखे न संनिधिराय । दान-शाला नविजाय । वाय न वींजणों ए । राग न रींजणोंए ॥ ५ ॥ चोवाचंदनचंपेल । तन न लगामेतेल । जोवे नहिं आरशीए । तेगुरु तारसीए ॥ ६ ॥ खेले न पासासार । तेकिम बोलेमार । छत्रनवि शिरधरे ए । गृहीसंगति परिहरेए ॥ ७ ॥ मांचांखाट-पलंग । तजे चिकित्साअंग । जूतीनवि पगतलेए । जीवदया-पलेए ॥ ८ ॥ आदरेतीनरतन्न । छोमे तीनजतन्न । कोमकोम मोलनाए । अगनिजलअंगनाए ॥ ए ॥ मूलाआदिकंद मूल । सचित्तबीजफलफूल । तजेतिम सेलमीए । लूंण धूपन वमीए ॥ १० ॥ वमन विरेचनकर्म । करी नगमावे धर्म । दांतेदांतण नघसए । नलगामेमिसिए ॥ ११ ॥ पहिरे नहीं हीरचीर । सोजानकरेशरीर । पीठी न मंजणि ए । आंखिनआंजणिए ॥ १२ ॥ सूत्रमेंबावनबोल । वरजे साधुअमोल । तपकिरिया-करीए । पहुचे शिवपुरीए ॥ १३ ॥ नामे एखुड्डीयार । अझय-णतीजोसार । अरथअनेक छेए । जैतसी मनरूचेए ॥ १४ ॥ इतितृतीयाध्ययन सझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ चतुर्थाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

महावीरजाख्योएम । सामिसुधरमाउपदिसे । जीहो मुनि-वर महावीरजाख्योएम । सुणसुणजंबुतेम । चोथो अझयणउ-

जीवनीजीहो मुनिवर महावीरजाख्यो एम ॥ १ ॥ सुणसुणजं-बूतेम। पृथवीअपतेऊ वाऊ वनस्पतित्रस जांणियें। जीहो मुनि-वर । पृथवीअपतेऊ वाऊ वनस्पति त्रस जांणियें। एह छएजी-वनिकाय। हिंसाटालीदयापाली ये। जीहो मुनिवर महा० ॥ २ ॥ महाव्रतपांचसदैव । वलीछठो व्रत पालीये । जीहो मुनिवर । महाव्रतपांचसदैव । वलीछठो व्रत पालीये । त्रिविधे त्रिबिधे जावजीव । गरहीनिंदीपडिक्कमि । जीहो मुनिवर ॥ त्रिबिधे त्रिबिधे जाव जीव गरही निंदी पडिक्कमि म० ॥ ३ ॥ शिष्यपूछे लेईदीख । किमचालुं बोलुंकिमरहुं । जीहो मुनिवर । शिष्य-पूछे लेईदीख । किमचालुं बोलुंकिम रहुं । समजावेगुरुशीख । जयणायेंचालेबोलजेरे । जीहो मुनिवर ॥ समजावेगुरुशीख । जयणायेंचालेबोलजेरे म० ॥४॥एजिनसासनसार प्रथमज्ञान पछि-दयापालजोरे। जीहो मुनिवर ॥ एजिन० । जीवाजीवविचार । जाणेअनुक्रमज्ञानथी । जीहो मुनिवर म० ॥ ५ ॥ जाणे० ॥ केव-लदंसणज्ञान । पामे कर्मखपायने । जीहो मुनिवर ॥ केवल० ॥ छेहडे लहे सिद्धथान । अजरअमरसुखसासता । जीहो मुनि-वर म० ॥ ६ ॥ छेहडे० ॥ अझयणछजीवणियानाम। सुणतां तन-मन उल्लसें । जीहो मुनिवर । सरदहे सुद्धपरिणाम । पुण्यक-लश शिष्यजैतसी जीहो मुनिवर ॥ ७ ॥ महावीरजाख्योएम । इतिचतुर्थाध्ययनसझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ पंचमाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

॥ तुंगीयागिरि शिखरसोहे ॥ ए देशी ॥

॥ पंचमपिंडेषणअझयणे । उद्देशा बे साररे । विधिसुंआंणी

नातपाणी । करोतरो संसाररे ॥ १ ॥ दीखपाखो दोषटाखो । धरोध्यानसमाधिरे । सूत्रसाचो अरथआछो नणोवाचो साधरे ॥ २ ॥ संचरेमुनि गोचरीनें । नगरगाममझाररे । जीव निहाले दयापाले । बोले हसे न लिगाररे ॥ ३ ॥ दी० ॥ अशनपाणी खादिमस्वादिम । सूझता हुये जेहरे । असूझते मुनि दोषजाणी । कहे न कल्पे तेहरे ॥ ४ ॥ दी० ॥ छकायमरदी साधुअरथे । कीयाभोजनजेहरे । तेह नगर जे जतिवरजे । सूआवरू आदिदेइरे ॥ ५ ॥ पिंरूनिषेध्या कुलनिषेध्या । तजे भजे निरदोषरे । मुधादाई मुधाजीवी, बेऊंजावे मोखरे ॥ ६ ॥ दी० ॥ विधिलेवे विधिआलोवे, विधिकरेआहाररे । लूखोसूखो अरसनीरस, हीलेनहींलिगाररे ॥ ७ ॥ दी० ॥ कालेआवे कालेजावे । विचरेनहीं अकालरे । काले कालसमाचरेजे । वांडु साधुत्रिकालरे ॥ ८ ॥ दी० ॥ नातपाणी सयणआसण । छता न देवेजेहरे । जती रतीतसु रोषनकरे । निंदे वंदे सम एहरे ॥ ९ ॥ दी० ॥ तपचोरनें वयचोरादिक । हुवेकिलवीषी देवरे । डुर्गतिडुर्लभबोधजांणी । धरममारगसेवरे ॥ १० ॥ दी० ॥ शिष्यशिक्षा ग्रहेंभिक्षा । ते लहे सिवलोयरे । जैतसीकहे शास्त्रमांहे, बोलबहुले जोयरे ॥ ११ ॥ दी० ॥ इतिपंचमाध्ययनसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ षष्ठाध्ययनसझाय लिख्यते ॥

॥ वैरागीनीरागीहो सूधासाधुजी । दंसणनाणसंपन्न, वनवाडीमांहीआविसमोसखा । सुमतिगुपति प्रतिपन्न ॥ १ ॥ वैरा० ॥ मिलमिलराजाहो राजानामुंहता । ब्राह्मणक्षत्रिय

लोक । साधूनेंपूछे हो किमछे ताहरो । आचारगोचरलोग ॥ २ ॥ वैरा० ॥ मुनिवरपजणे हो मारगसाधुनो । कठिन आचारविचार । हुयोनहुस्ये हो धरमकोइ इणसमो । मुगति-तणोदातार ॥ ३ ॥ वैरा० ॥ षट्व्रतपालेहो छकायराखतो । नहीं नाहणसिंणगार । पल्लंगनिषेध्याहो गृहीजाजन तज्या, अकल्पथानअढार ॥ ४ ॥ वैरा० ॥ तेललूणगुलथीहो संनि-धिजेकरे । तेगृही नहींअणगार, नित्यतपजाख्योहो एकवार जोजने । बरजे विसनविकार ॥ ५ ॥ वैरा० ॥ वस्त्र पात्रराखे हो संयमराखवा । नधरेममताप्रेम । विजूषण करतां हो करे-बंधचीकणो । अकल्पकल्पेकेम ॥ ६ ॥ वैरा० ॥ जीवदयापाले हो । पगपगदिनसमे । वरजे रातविहार । एककायहणतां हो त्रसथावरहणे । लहेदुर्गति अवतार ॥ ७ ॥ वैरा० ॥ तपजप करणीहों दुःखहरणीकरे । निरमम निरहंकार । संवेगीसोजागी हो चंदसमनिरमलो । पुहचे मुगतिमकार ॥ ८ ॥ वैरा० ॥ छठोअतिमीठोहो लागे बाचतां । जलोधरमारथकाम । नामें सुखपामेंहो जैतसी आतमा, उलसेमनपरिणाम ॥ वैरा० ॥ ए॥ इतिषष्ठाध्ययन सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ सप्तमाध्ययनसझाय लिख्यते ॥

॥ साधुबूझोरे । जाषासुमतिविचार । जाषाचिंहुंजेदे करी ॥ सा० ॥ सच्च असच्चा मीसा, असच्चमोसाचोथीकही ॥ १ ॥ सा० ॥ बोले निरवद्यवांणी, सच्च असच्चामोसा-वलि ॥ सा० ॥ जाषोजाष न वेय । बीजीनें त्रीजीवलि ॥ २ ॥ सा० ॥ निहचे कठिनकठोर, संकितसावद्यसंजवे ॥

सा० ॥ जिणथीलागेपाप । तेहवीवाणी नसंजवे ॥ ३ ॥ सा० ॥ चोरनें न कहेचोर । न कहेकांणोकांणाजणी ॥ सा० ॥ परपीमाडुवेजेण । वाणीतेहवी नबोलणी ॥ ४ ॥ सा० ॥ असाधुनेनकहेसाधु । साधुनें साधुबोलावज्यो ॥ सा० ॥ सुरनर पसुहारजीत, कहि दोषनलावज्यो ॥ ५ ॥ सा० ॥ वक्कसुद्धिअऊयण । बोलघणाछे सातमे ॥ सा० ॥ लागे जिणथीपाप । मपरूतूं इणवातमे ॥ ६ ॥ सा० ॥ दस विधबोलोसाच । श्रीअरिहंतआज्ञाछेइसी ॥ सा० ॥ पुण्यकलश गणिसीस । सूत्रागीजणेजैतसी ॥ ७ ॥ सा० ॥ इतिश्रीसत्तमाध्ययनसझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथाष्टमाध्ययन सज्झाय लिख्यते ॥

॥ जिनवरगणधरमुनिवरनेंकहेरे । हिंसाटालीनें दया पालरे। जूजूवाजीव जांणी छकायनारे । पगपगजयणाकरतो चालरे ॥ जिन० ॥ १ ॥ टालेसूक्ष्मआठविराधनारे । छोरू मदमत्सर परमादरे । तपजपखपकरीकाया सुखवीरे । जीते इंद्रियविषयसवादरे ॥ २ ॥ जिन० ॥ जरा न करे देहा जाजरीरे, नवधे रोगपीमाघटमाहिरे । इंद्रीहीणपमेनहीं जांलगरे, तांलगि धरम करमनोउत्साहरे ॥ ३ ॥ जिन० ॥ क्रोधै वैरवढे घटेप्रीतमीरे । माने विघटे विनयआचाररे । माया बाहेसरनीगमेरे । लोजे विणसे सहु संसागरे ॥ ४ ॥ जिन० ॥ ज्योतिष निमित्त सुहना फल कहेरे । मंत्र जंत्र जामा फूमा देइरे । कांमणटूमण ओषध केलवेरे । किमतरस्येंने तारस्ये केमरे ॥ ५ ॥ जिन० ॥ चीत जीत नजोवी नारीचीतरीरे । वाले लोचन रविजिमतेजरे । हीणी खीणी वली सो वरसनी रे । तिहांपण व्रतधर नकरेहेजरे ॥ ६ ॥

जिन० ॥ कुकमी वळमामरे बिह्वीग्रकीरे । मरेब्रह्मचारिनारीशुं तेमरे । सिणगार सोना षटरसखायवोरे । तालपुट जहर हला-हलजेमरे ॥ ७ ॥ जिन० ॥ वसही सयणासणपायपूळणोजी । पहिलेही लेज्यो लेवाजोगरे । धन धन मुनि ते चंदसूहमस-मारे । लहेसुख इहलोगरे ॥ ८ ॥ जिन० ॥ आचारपणही-नाम अझेणमे रे । आठमे सखरा आचाररे । सिद्धांतरीसाखे नाखे जैतसीरे । सूत्रथीग्राज्यो मुजनिस्ताररे ॥ ए ॥ जिनवर० ॥ इति अष्टमाध्ययनसझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ नवमाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

॥ उलगमी उलगमीकरिये गीतारथगुरूतणीरे । मानमोमी मदळोमी । आसातना असातनाटाली नमियेंपूजीयें । वंदिये करजोम । उलगमी० ॥ १ ॥ सिद्धांतसिद्धांतसुणावे सखरावां-चनेरे । बूझवेअरथविचार । इंद्रचंद्रचंद्रसूर जिम सद्गुरूसे-वीयेरे । विनयकरी वारंवार । उ० ॥ २ ॥ नवमे २ विनयस-माहिअझेणमेरे । नव नवा अरथविचार । उद्देसे उद्देसे चोथे-थिवरवरणव्यारे । समाधि थानकच्यार । उ० ॥ ३ ॥ पहिली पहिली विनयसमाधित्रिधिजलीरे । बीजीसूत्रसमाधि । त्रीजी तप २ चोथीआचारनीरे । च्यारनेदआराधि ॥ उ० ॥४॥ समाधी समाधीआराधे ते सुखसिद्धिलहेरे । अजरअमरपददेव । बेकर-जोमी बेकरजोमी वांदे जेतसीरे । गुणवंतश्रीगुरूदेव ॥ ५ ॥ उ० ॥ इति नवमाध्ययनसझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ दशमाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ अरिहंतवचने दीक्षाआदरीजी । निरूपम रम

जाण । दसम भिक्खुनामअध्ययणमेंजी, वम्यु न वांछे सुजाण ॥ अरि० ॥ १ ॥ प्रथवी न खणे खणावे नहीं जी । पीवे न पावे सीतलनीर । जाले न जलावेतेऊकायनें जी । वींजे न वींजावे समीर । अरि० ॥ २ ॥ छेदे न छेदावे तरू हरीकायनें जी । वरजेबीजसचित्त । पचे न पचावे भोजनरसवतीजी । तस थावर विधचित्त ॥ अरि० ॥ ३ ॥ पांचेव्रतपाले पांचेइंद्री दमें जी । गामकंटक सहेधीर । रहेसमसांणे पडिमा पडिवजेजी । तजे प्रतिबंधसरीर ॥ अरि० ॥ ४ ॥ रागद्वेषमदमत्सरमाया परिहरेजी । नकरे विणजव्यापार । तजे तमासा हासा मसक-रीजी । वांछे नहीं सतकार ॥ अरि० ॥ ५ ॥ भरम न भाखे धरमभाखेभलोजी । पामे परमपद सादिअनंत । आतमध्याने आतमउद्धरेजी । वाचे सूत्रसिद्धांत ॥ अरि० ॥ ६ ॥ श्रीसिज्जं-भवगणधररच्योजी । दसवैकालिकसूत्र । सखरो आचारप्ररूप्यो साधुनोजी । मनकताख्यो निजपूत ॥ ७ ॥ संवतसतर सतोतर समेंजी । वीकानेर मझार, पाठकपुण्यकलसगणी शिष्य जैत-सीजी, सिझायरचिसुखकार ॥ ८ ॥ अरि० ॥ इति दसमाध्य-यन सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ कलस लिख्यते ॥

॥ दसवैकालिक सूत्रसुहामणोरे । रच्यो सिज्जंभवस्वाम । अझेण व्यालुवेलादसेहुवाजी । तिण दीयो एहवोनाम ॥ १ ॥ दसवैकालिकसूत्रसुहामणोरे । ऊपरचूलिका बे रलीयामणी रे । जिममेरुसिरचूल । सीमंधरस्वामीभणीजक्षणी भणीरे । सख-रीछे वातसमूल ॥ दस० ॥ २ ॥ अढारेठाणा हो पहिलीचूलि-

कारे । जाणों चतुरसुजांण । हयगयवाहण रसी अंकुशसढेरे । वसीहुवे मुनितिमगाण ॥ दस० ॥ ३ ॥ अरतीने वारे विरती-आदरेजी । लोपेनहीं जिनलीक । तपजपखप किरियाकरे । ते वंदनीकपूजनीक ॥ दस० ॥ ४ ॥ चूलिकाबीजी बोधबीजसंपजेरे । बीजी तीजी वात । मुनिवर समताभरसंबररमेरे । धर मेत्रीनी सातधात ॥ दस० ॥ ५ ॥ संवेगी सोभागी वैरागीजतीरे । पाले निरमलसील । केवलदंसणपामी भवजलतरीजी पामे अविचललील ॥ दस० ॥ ६ ॥ सुणतांभणतां सिद्धांतवाचतांजी । फलसे अंगोअंग । नव नव मंगल पुण्यकलससदा जी । जयतसी जयजयरंग ॥ दस० ७ ॥ इति श्रीदसवैकालिक सूत्र सझाय पंडितजयतसीजीकृत संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीद्विमुखराजानी सझाय लिख्यते ॥

॥ नयरीकपिलानोधणीरे ॥ जयराज गुणखाणी । न्याये नितपाले प्रजारे । गुणमालापटराणी ॥ १ ॥ डुमूहराय बीजो प्रत्येकबुद्ध । वैरागे मनवालियोरे । समकितपालेसुद्ध ॥ डु० ॥ धरतीखणतां नीसर्योरे । मुगट एकअभिराम, मुखबीजो प्रति बिंबीयोरे तिण द्विमुखहुवोनाम ॥ डु० ॥ २ ॥ मुगटलेवा भणी मांमीयोरे । चंडप्रद्योतसंग्राम । पिण अन्यायकुशीलीयोरे । किम सरे तेहनांकाम ॥ डु० ॥ ३ ॥ इंद्रधज अति सिणगारीयोरे । जोतां त्रिपत नथाय । सकललोक खेलेरमेरे । महोत्सव मांड्योराय ॥ डु० ॥ ४ ॥ तिहांजाइ इंद्रधजदेखीयोरे । पड्यो मलमूत्रमझार । हा हा शोभाकारमीरे । ए सहुअथिर संसार ॥ डु० ॥ ५ ॥ बैरागे मनवालियोरे लीधो संजमभार । तप

संजमकीधा आकरा रे । पाम्या नवनोपार ॥ छु० ॥ ६ ॥ बीजो प्रत्येक बुद्ध्योरे । छुमूहनामेरिषिराय । समयसुंदर कहे साधुनारे । नितनित प्रणमुंपाय ॥ छु० ॥ ७ इति द्विमुखराजानी सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ नमीराजानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ नयरसुदरसणराय । होजी मणिरथराजकरेतिहां । कीधो सबलअन्याय । होजी जुगबाहुबंधवमारीयो ॥ १ ॥ मयणरेहा गइ नाश, होजी जायोपुत्रउद्यानमें । पमीय विद्याधरपास । पण शीलराख्योसाबतो । पदमरथनूपाल ॥ २ ॥ होजी घोमे अपहर्योआवीयो । तेणेतेलीधोबाल । होजी पुत्रपाली मोटोकीयो । शत्रुनम्या सहुताम ॥ ३ ॥ होजी नमीएहवुं नामथापीयुं । थयो मिथिलानोराय होजी सहसअंतेउरसुंरमे । दाघज्वरचढ्योदेह ॥४॥ होजी करमथकी छूटेनही । अथिरसहु रिद्धिएह । होजी नमीराजा संजमलियो । इंद्रपरख्योआय ॥ ५ ॥ होजी चढते परिणामेचढ्यो । प्रणम्या सुरनरराय । होजी समयसुंदरकहे साधुना । नित्यनित्य प्रणमुंपाय ॥ ६ ॥ इति नमीराजानी सझाय सपूर्णम् ॥

॥ अथ नभगति राजानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ पुंड्रवर्धनपुरराजीयो । म्हांकीसहीयर सिंहरथनाम नरिंदरे । इकदिनघोमेअपहर्यो म्हांकी० । पमीयो अटवी मांहीरे ॥ १ ॥ परवतऊपरपेखीयो ॥ म्हांकी० ॥ सतनूमिउं आवासरे । कनकमालाविद्याधरी ॥ म्हांकी० ॥ प्रणमीप्रेम उल्लासरे ॥ २ ॥ नगरीनणी राजानिसर्यो ॥ म्हांकी० ॥ नन्नगइनाम-

कहायरे । मारगमेंआंबोमिह्यो ॥ म्हांकी० ॥ सुंदरफलफूल-पानरे ॥ ३ ॥ कोयलकरे टहुकरा ॥ म्हाकी० ॥ मांजररही महकायरे । राजा इक मांजरग्रही ॥ म्हाकी० ॥ तिम मंत्री-प्रधानरे ॥ ४ ॥ वलतो राजा ते वह्यो ॥ म्हांकी० ॥ वृक्ष दीठोवीलायरे । शोभासघलीकारमी ॥ म्हांकी० ॥ खीणमें खेरुथायरे ॥ ५ ॥ जातिस्मरणपामीयो ॥ म्हांकी० ॥ संयम-पालेसूद्धरे । समयसुंदरकहेसाधुने ॥ म्हांकी ॥ चोथाप्रत्येकबु-द्धहो ॥ ६ ॥ इति च्यार प्रत्येकबुद्धसझाय नग्गतिराजानी सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिरचित प्रथमकषाय सझाय लिख्यते ॥

क्रोध मकरसो भोलाप्राणियारे । क्रोधथीआये क्रोरुकले-सरे । आधिव्याधिवधे घणीरे । धर्मनोरहेनहिं लवलेसरे ॥ १ ॥ बहुकाले जे तपजपआदरेरे । क्रोधथी खिणमांखेरु थायरे । कुणाला नगरीना मुनिजाणियेरे । क्रोधथी दुरगतिमां ते जायरे ॥ २ ॥ क्षणक्षणमां जे क्रोध करे मुनिरे । पाप श्रमण ते कहिवाय रे । शिष्यनाऊपरक्रोधकरीअयोरे । चंडकोशियो कह्यो जिनरायरे ॥ ३ ॥ पोताना आतमगुणबालेसहिरे । पछे परनोघरबालंतरे । अग्निसमानजाणोतुमे क्रोधनेरे । जेत्यागेते मोटाकहंतरे ॥ ४ ॥ अनंतानुबंध्यादिक चउभेदथीरे । न लहे दरशनआदिसमृद्धिरे । सूरिकृपाचंद कहे धारज्योरे । क्षमा-थीपामे अविचलरिद्धिरे । इति संपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय कषाय लिख्यते ॥

मानवभवपामी करीजी । विनयकरो निशिदीस । मान महागजटालवाजी । भाखेश्रीजगदीस । चतुरनर मेलो माननी-वात । जिमथायैं सुखसात । च० मे० ॥ १ ॥ मोह महाराजा-तणोजी । मान अे अंगजजाण । जातिमदादिक एहनाजी । परि-करजाणोसुजाण ॥ च० ॥ मे० ॥ २ ॥ मानतणे वस जेपड्या-जी । तेरझ्यासंसार । मानत्यागथी बाहूबलीजी । पायो केवलसार ॥ च० ॥ मे० ॥ ३ ॥ विनयथी विद्या संपजेजी । समकितलहेसुखकार । चारित्र पाली निरमलोजी । पोहचे मुक्तिमझार ॥ च० ॥ मे० ॥ ४ ॥ रावणराजगमावीयोजी । दुर्योधन दुखलीन । प्रतिविष्णु नरकेगयाजी । माननी संगति-कीन ॥ च०॥ मे०॥ ५ ॥ विनयमूल जिनधर्मनोजी । भाख्यो-श्रीजिनराज, सूरिकृपाचंद्रगुणस्तवेजी । विनयजाणो सिरताज ॥ च० ॥ मे० ॥ ६ ॥ इति मानसझाय ॥

॥ अथ मायानी सझाय लिख्यते ॥

॥ माया विषवेली विषवेली एतो दे दुरगतिमां ठेली । माया विषवेली०॥ ए आंकनी ॥ मायावेलरीमनमांउगी । आर्यव कीले-उखेली ॥१॥ मायावि० ॥ मायाकायाजगमेंझूठी, ममतामांहि-कहेली ॥ २ ॥ माया० ॥ कपटदपटकरि लोकने धूते । बहूरूपे भरमेली॥माया० ॥३॥ आषाढभूतिये मायामूंकी । लहीसिवपद-नीसेली ॥ माया० ॥४॥ मल्लिजिनेश्वरपूरवभवमे, मित्रथीमाया-करेली ॥ माया० ॥ ५ ॥ स्त्रीतीर्थंकरपाम्यातेहथी । उत्तमगु-णगणमेली ॥ माया० ॥ ६ ॥ धूतारां बहुमाया करके, धूते

जगजनहेली ॥ माया० ॥ ७ ॥ मायात्यागकरो गुरुसंगे । कृपाचंद्रसुखबरेली ॥ माया० ॥ ८ ॥ इतिमायानीसझाय ॥

॥ अथ लोभनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ राग ज्ञर्तरि ॥ लोज्ञतजो ज्ञविप्राणिया, लोज्ञे सबगुण जावे, लोज्ञेसुखनहिहूवेकदा, तोकिम निजगुण पावे लो०॥१॥ सागरसेठ बहुलोज्ञीयो, नरकगयोनिरधार, मम्मण तिमबहूला-ज्ञना, थयाकुरगतिनाज्ञरतार ॥ लो० ॥२॥ सुज्ञुमचक्री साध-नज्ञणी, लोज्ञपिशाचग्रहाणो, मध्यसमुद्रमां बूडीयो, थयोनर-कनोराणो ॥ लो० ॥ ३ ॥ सुखमलोज्ञजिहां लगे, शिवसुखञ्ज-ज्ञिलाषा, लोज्ञशत्रुदूरेकरी केवलज्ञान प्रकाशा ॥ लो० ॥ ४ ॥ च्यारज्ञेदलोज्ञनाकह्या, जिणगणधरदेवे, तेहतजी लहेक्रमथकी, निजगुणनेसेवे ॥ लो० ॥ ५ ॥ च्यारकषायनिवारवा, कषायगं-जणतपकीजे, कृपाचंद्रसूरि इमज्ञणे, वंछितफललीजे ॥ लो० ॥ ६ ॥ इति लोज्ञ सझाय ॥

॥ अथ दीवालीनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ हांरेमारे ठामधर्मना साढा पचवीशदेशजो ॥ ए देशी ॥ हांरेमारे दीवालीदिनञ्जाव्यो सजनीजाणजो । वीरजिनेश्वर ञ्जंतिमचज्ञमासीरह्यारे लोय॥ १॥ हांरेमारे पावापुरीमांवसिया त्रिज्ञुवननाथजो । सोलेपहेरलगे देशना दीधी सुखकरुरेलो० ॥ २ ॥ हांरेमारे पुन्यपालराजापूछे सुहणानो ञ्जर्थजो । ज्ञावी-फलकह्योपंचमञ्जारानोसहीरे लो० ॥ ३ ॥ हांरेमारे गौतम-स्वामीने मुकया बोधनकाजजो । ञ्जमावसनीरजनीये प्रज्ञुसि-ववर्योरे लो० ॥ ४ ॥ हांरेमारे चोसठसुरपतिञ्जाव्या तत-

खिणतामजो । कल्याणकनिर्वाणनो उत्सवसोकशुंरे लो० ॥ ५ ॥ हांरेमारे पावावलता गौतम जाणयोनिर्वाणजो । वज्राहतपरे मुर्छितथई जागृतथयारे लो० ॥ ६ ॥ हांरेमारे विविधविलाप-करेश्रीगौतमस्वामी जो । वीतरागथईकेवललब्धिपामीयारे लो० ॥ ७ ॥ हांरेमारे काशीकोसलदेशतणा गणरायजो । अढारे-मिलि पोसहविधिशुंआदर्योरे लो० ॥ ८ ॥ हांरेमारे नावउद्योत गयांथकां द्रव्यउद्योतजो । रयणमुकीने दीवालीकरी तिन समेरे लो० ॥ ए ॥ हांरेमारे गोतमकेवल महिमाकरेइंद्रजो । नाइबीजजमाड्यो बेहनीये नाइनेंरे लो० ॥ १० ॥ हांरेमारे दीवालीनो छठकरीचौवीहारजो । सोलपहोरनो पोसहतपआ-राधियेरे लो० ॥ ११ ॥ हांरेमारे गुणनोकरी परनाते मंगल-काजजो । गौतमस्वामीनुं एकासणोकरे नावशुंरे लो० ॥ १२ ॥ दीवालीपर्व लोकोत्तर लोकीकजो । परसिधथयो कारतिकव-दिअमावसेरे लो०॥ १३॥ हांरेमारे पर्वाराधनकरो नवि मनउ-छरंगजो । जिनकृपाचंद्रसूरिकहे सुखसंपति वरोरे लो० ॥ १४ ॥ हांरे मारे० ॥ इति दीवालीसज्झाय ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्वनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ देशी यतनी ॥ सखी पर्वपजुषणआव्या । नविजनना मनमांनाव्या । एमां आश्रवपांचहटाव्या, एतो सर्वजीवसुख-पाव्या सनेही पर्व पजुषण सेवो । एतो सेवी शिवसुख लवो । सनेही पर्व० ॥ १ ॥ श्रीवीरजिनेश्वरनाखे । एपर्वसेवो श्रुतसाखे । श्रीनद्रबाहुस्वामीदाखे । एतोकल्पसूत्रइम आखे ॥ स० ॥ पर्व० ॥ २ ॥ आठदीवसअमरपलावे । जिनचैत्ये

पूजारचावे । कल्पसूत्रघरे पधरावे । देवेरात्रिजागो नले-
जावे ॥ स० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ रथहयवरगजसणगारे । साशन-
नीशोजावधारे । वाजित्रध्वनिमनुहारे । वरघोमोसजे दिल-
सारे ॥ स० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ आमंबरकरीने लावे । श्रीकल्प-
सूत्र शुजावे । सदगुरुनें हाथे ठावे । सुहवमिल मंगलगावे ॥
स० ॥ ५ ॥ सदगुरुनीमीठीवाणी । सुणो चउविहसंघ गुण
खाणी, मनमाअतिउल्लटआणी । संसारतरे जविप्राणी ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ इकवीशवार सुणीजे । पूजापरजावना
कीजे । उठ अठम चौथकरीजे । सुणीवीरजन्म जसलीजे ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ आषाढ चोमासेथी जाणो । पचासदिव-
स परमाणो । संवछरीपर्व कहाणो । जाखे श्रीजिनवरजाणो ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ इमपर्वआराधनकरीये । पंचकारणमनमां
धरीयें । श्रीजिनवाणीअनुसरीयें । कृपाचंद्रसूरि जसवरीये ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ए ॥ इति श्रीपजुषणपर्वनी सझाय संपूर्ण ॥

अथ रांदेर श्रीऋषभ जीर्णचैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं लिख्यते ॥

(राग) सारंग ॥ ऋषजचरणकजध्यावो मनजमरा ॥ ऋ० ॥
परमानंदरसपावो ॥ मन ज० ॥ ऋष० ॥ १ ॥ अपरकमलतु-
हिन संयोगे । मुद्रितहोयकमलावे ॥ म० ॥ २ ॥ प्रजुपदपंकज
अहनिशिविकसे । तेहथीचित्तललचावे ॥ मनज० ॥ ३ ॥ चंद्र-
विकासीकुमुदकुमुदनी । दिनमे ते मुरझावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥४॥
जिनपादांबुजनिरुपमदेखी । अंतरज्योतिजगावे ॥ म० ॥ ऋ०
॥ ५ ॥ तनमनथिरकर जिनकजध्यावे । रूपातीत सुखपावे ॥

म० ॥ रू० ॥६॥ प्रथमजिनेसर प्रथमधराधिप, प्रथममुनि जग-गावे ॥ म० ॥ रू० ॥७॥ प्रथमजगतगुरुजिनउपगारि। प्रजापति-नाम धरावे ॥ म० ॥ रू० ॥८॥ महागोप महामाहनप्रनुजी । नव-अटवीसत्थवाह ॥ म० ॥ रू० ॥ ए ॥ नवजलधिनिर्यामक-जगपति । सुजश सदासुकहावे ॥ म० ॥ रू० ॥१०॥ उगणीसेंच-मोत्तर बरसे माघशुदिमन नावे ॥ म०॥ रू० ॥११॥ शुन दशमी रांदेरनगरमां । जिनचैत्येपधरावे ॥ म ० ॥ रू० ॥ १२ ॥ श्रीजिन-कृपाचंद्रसूरिनर्के । संतसुयशमिलगावे ॥ म० ॥ रू० ॥१३॥ इति-रांदेरमध्ये जीर्णचैत्योद्धारे श्रीरिषनजिनबिंबप्रतिष्ठास्तवनंसंपूर्णं ॥

॥ अथ बीजनी थुइ लिख्यते ॥

॥ वासपूजजिनअंतरजामी । मनविसरामीस्वामीजी, नवि-जन तारण सिवसुखकारण, निजगुणनाप्रनुकामीजी, बीजदिवस जिनवरशिवसुखकर । चंद्रविमानेपामीजी, नगरबुहारिमांमनु-हारि सेत्रोजिनसुखधामीजी ॥ १ ॥ वासुपूज्य पद्मप्रनुराता चंद्र-सुविधिजिनधवलाजी मल्लिपासदोयनीलाजाणो मुनिसुव्रतनेमी-कालाजी, आठद्विगुणजगनायकलायक सोवनवरणसुहायाजी बीजदिवश नव नव चउद्दिकजिनवंडं अहनिशिपायाजी ॥ २॥ डुविधधर्मजिनवरप्रकाश्यो अर्थअधिकसुखकारिजी । सूत्रेकरि-गणधरगुरुनाख्यो नविजननाउपगारिजी । दोयशिक्षा दोयन-यनिक्षेपा चउनंगीमनआणोजी, बीजआराधिसंपदासाधि पर-मारथपहिचाणोजी ॥ ३ ॥ बीजदिवस उपवासकरीजे । पडि-क्कमणादिकसारोजी । एतपसुरतरुसरिखोजाणो निरुपमसुखदा-तारोजी, कुमारयक्ष तिम शासनदेवी चंमासानिधनूरिजी ।

शुभ फलदायकसंघनेहोज्यो श्रीजिनकृपाचंद्रसूरीजी ॥ ४ ॥
इतिबीजनी थुइ संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीपजुषणपर्वनी थुइ लिख्यते ॥

॥ वीरजिनेसरजगअलवेसरराजग्रहीसमोसरियाजी, पर्वपजुषणइणपरिभाखे चउविहसंघपरिवरियाजी, आषाढचोमासाथी-पच्चाशदिननीसंख्याजाणोजी । संवच्छरीपडिकमणो करिने आतमनिजघरआणोजी ॥ १ ॥ दोयरातादोयधोलाजिनपति । दोयकाला दोयनीलाजी, लांछनवरणप्रमाणसुसोभितसोले-जिनवरपीलाजी । सतरेभेदीपूजाकरिने चैत्यपरवाडीकरीजे जी । परवपजुषण पुरवपुन्ये पाम्या लाभजाणीजेजी ॥ २ ॥ कल्पसूत्रनिज घरेपधरावी रात्रिजागोतिहांकीजेजी । वरघोडो-सजिसंघमलिने सद्गुरुने आणीदीजेजी । नव इग्यारे तेरे वायण सुणिनेदुरगतिवारोजी । पूजाप्रभावनासद्गुरुभक्ति करिने जन्मसुधारोजी ॥ ३ ॥ साहमीवच्छलकरियेभावे वारं-वारउजमंताजी । केइशीयलतपसंयमपाले भाव अधिकउलसंता जी । आठदिवस पजुषणसेवो जिमसेवे सुरइंदाजी । सुयदे-वीसुपसाये भाखे जिनकृपाचंद्रसूरिंदाजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीपजुष-णपर्वनीथुइसंपूर्ण ॥

॥ अथ छींक विचार सज्झाय लिख्यते ॥

॥ छींकशुकननो कहुंविचार । सुगुरुसमीपसुण्यो में सार । आगलमांजो छींकजहोय । अशुभतणीजाणेजो कोय ॥ १ ॥ पहेलाशुकनहुवा शुभघणा । छींकहुवां निरफलतेतणां । छींक-जहुवांपछी जोजाण । शुकनहुवांते करो प्रमाण ॥ २ ॥ डावी-

छींकहोय अर्धफलकहे । जमणीछींक बूरीसहुकहे । पूंठेछींकसुखदायकसही । घणी छींकते निरफलकही ॥ ३ ॥ हांसेजयउपाधीयेकरी । हठघणो मनमांहेधरी । एकछींक ते निरफलजाण । कूतरछींकतो निःखरजाण ॥ ४ ॥ मंजारछींकते मरणजकरे । इसीछींक कष्टकारीसरे । वस्तुवेचतां छींकजहोय, आण्युं किरियाणुं मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां छींकजो होय । वमणो लाभ सघलानो जोय । गइवस्तुजो जोवाजाय । छींकहोयतो लाभ न थाय ॥ ६ ॥ नवांवस्त्रवली पहेरतां । छींकहोये आगल अणछतां । भोजनहोमपूजानुंकाम । मंगलिकधर्मसुठाम ॥ ७ ॥ कामएटलां कीधानीअंत । वलीक्रियाकरावेखंत । रतिस्नानकरीनेरहे । छींकहोयतो पुत्रजलहे ॥ ८ ॥ ऋतुवंतीने दीधेदान । पछीहोवे पुत्रनिदान । वैरीजीती जाशुं जोय । छींकेवैरीसबलोहोय ॥ ए ॥ रोगीकाज वैद्यतेरूवा । जातांछींके जोनवनवा, ते रोगीने मृत्युजाणीये । कामविना वैद्य नाणीये ॥ १० ॥ वैद्यरोगीने घरेआवतां । छींक होये औषध आपतां । रोगीतणो रोगते समे । आहार लेते जमवुंगमे ॥ ११ ॥ व्यापारेलिधेव्यापार । छींकहोयतोवृद्धिअपार । लेखुं शुद्धदीधुंरायने । छींकफोकथायेतेहने ॥ १२ ॥ पाणी पीतांअथ विसंवाद । छींकदृष्टिदोषअनिवाद । नवेघरे वसवाआवीये । छींकहोयेते उचालीये ॥ १३ ॥ व्याजे द्रव्य केहनेआपतां, वली पृथ्विमांधनदाटतां । कर्षजोवाजातां वली । छिहोयपुहवीमनरली ॥ १४ ॥ छींकशुकन नर जाणेजेह ।

पगपगसंपदपामेतेह । ठींकविचारजाणे जोकोइ । ऋद्धिवृद्धिक-
ल्याणजहोय ॥ १५ ॥ इति ठींकविचारसज्झाय ॥

॥ अथ श्रीअइमत्ता मुनिनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ली ॥ वीरजीआव्यारे चंपावनकेउद्यान एदेशी ॥
शासनस्वामिरे निरमलनामि । शिवगतिगामिरे । वीरजिनेसरु
॥ १ ॥ नगरपोल्हासेरे नविकउल्लासे । श्रीवनउद्यानेरे स्वामि-
समोसस्या ॥ २ ॥ राजातिहांराजेरे । चढतदिवाजे ॥ राजस-
माजे रे विजयनरेसरु ॥ ३ ॥ गुण मणिखाणीरे श्रीदेवीराणी ।
अइमत्तोनामेनंदनतेहने ॥ ४ ॥ कुंमरकुमारीरे बहुसुकुमारी ।
तेहसंघाथे रे निज उल्लरंगशुं ॥ ५ ॥ इंद्रध्वजठामेरे कौतुक-
कामे । कुमरअइमत्तोरे । रमतो आवीयो ॥ ६ ॥ प्रनुआण-
पामी रे गौतम स्वामि । गोचरीआव्यारे । तिहांकणेतेसमे॥७॥
कुमर अइमत्तेरे निरमलचित्ते । गौतमपासेरे आवीइमकह्युं
॥ ८ ॥ कुणतुमेनामेरे फरो किणकामे । तवकहेगौतमरे ।
वाणीअतिनली ॥ ए ॥ साधुआचारीरे । अमे ब्रह्मचारी ।
गोचरीनमियेंरे देवाणुप्पिया ॥ १० ॥ मुजघरआवोरे । निक्षा-
पावो । इमकहीआंगुलि रे । झालीगुरुतणी ॥ ११ ॥ निजघर
लावेरे । दिलसुखपावे । श्रीदेवीनिरखीरे । हरखि अतिघणी
॥ १२ ॥ आसनछोमीरे । बेकरजोमी । वांदी पमिलान्नीरे ।
गुरुबोलावीया ॥ १३ ॥ ढाल २ जी ॥ आवीरे पनोतीजरासिं-
धने एदेशी । तवकहे कुंमर गौतमनणी । किहां वसोछोतुमे-
स्वामरे । गौतमकहे पुरपरिसरे । जिहां अम गुरुगुणधामरे ।
वीरजिनवरत्रिनुवनधणी ॥ १४ ॥ ए आंकणी ॥ कुंमरकहेहुं-

पणप्रज्ञुजीने । वांदिशुंआजतुम साथरे । जिमसुखतिमकरोगुरु-
कहे । आवेते जिहां जगनाथरे वीर० ॥ १५ ॥ विनयकरी
कुंमरबेसेतिहां । सेवतो प्रज्ञुतणापायरे । धर्मदेशनाजिनवर-
दिये । सांजली हरखितथायरे ॥ वीर० ॥ १६ ॥ कुमरकहे-
माताजणी । पूछी लेशुं संयमज्ञाररे । प्रज्ञुकहे जिमसुखतिमकरो,
मकरो प्रतिबंधलगाररे ॥ वीर० ॥ १७ ॥ कुमरघरआवीमातजी ।
तातजीकरीकृपासाररे । अनुमतिदीजिये मुजज्ञणी । लेइश हुं
संयमज्ञाररे ॥ वीर० ॥ १८ ॥ मातकहे पुत्रतुं बालछे । शुंस-
मजे व्रतवातरे । कुमरकहे जेहजाणुंअछुं, ते नवि जाणुंहुंमातरे
॥ वीर० ॥ १९ ॥ जेहवलि हुं नविजाणुं अछुं । जाणुंछुं मात-
जीतेहरे । इमसुणी मातापिताज्ञणे । कहेकिम बालकएहरे ॥
वीर० ॥ २० ॥ ढाल ३ ॥ धनना लोज्ञीवाणिया एदेशी ॥
कुंमरकहे जाणुंसही । जायेजीव मरेवोरे । नविजाणुं किणका-
लमें । किणठामे वलीकेवोरे । मातसुणोमुजवातरूी ॥ २१ ॥
ए आंकणी ॥ नविजाणुं किणकर्मथी । जीवज्ञमे संसारोरे ॥
पणजाणुं निजकर्मथी । जीवज्ञमे संसारोरे ॥ मात० ॥ २२ ॥
तिणकारणसंयम ज्ञणी, अनुमतिमुजनेदीजेरे । आतमकारज-
साधतां । मुजने विलंबनकीजेरे ॥ मात० ॥ २३ ॥ विविधव-
चनेकरी ज्ञोलव्यो । पणनिजज्ञाव न छंडेरे । मातपिता तववे-
गशु । ओछवकरवामंडेरे ॥ मात० ॥ २४ ॥ कुंमरअइमत्ते
आदरी । प्रज्ञुपासेजइदीक्षारे । गुणरयणादिक तपकस्यां । अंग
इग्यारेशीख्यारे ॥ मात० ॥ २५ ॥ सिद्धथयाबिपुलाचले ।
अइमत्तो मुनिरायारे । अठमअंगथीउद्धरी । छेशेमुनिगुण

गायारे । मात० ॥ २६ ॥ एहवाश्रीमुनिरायनो । अमृतधर्म उदारोरे । शिष्यक्षमाकल्याणनी वंदनावारंवारोरे । मात सुणो मुजवातमी ॥ २७ ॥ इति एमत्ताजी स० ॥

॥ अथ श्रीउपाध्याय समयसुंदरजी कृत मायानी सझाय लिख्यते ॥

॥ मायाकारमीरे । माया मकरोचतुरसुजाण ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ मायायेंवाह्या जगतविलुब्धा । दुखीयाथाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हानामहोटानरनेमाया । नारीने अधिकेरी । वली विशेषे अतिघणीव्यापे । गरमामेकाकेरी ॥ मा० ॥ २ ॥ योगी जंगम यती संन्यासी । नग्नथइ परवरिया । उंधेमस्तक-अगनीधुखंती, मायाथी नविमरिया ॥ मा० ॥ ३ ॥ मायामेलीकरी बहुभेली । लोभेलक्षणजाय । चोरमरे धरतीमांघाले । ऊपर विसहरथाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ मायाकारदूरदेशांतर । अटवीवनमांजाय । प्रवहण बेसी द्वीपद्वीपांतर । सायरमांजं-पाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूतिसरिखा सत्यवादी । सत्यगोप-कहावे । रतनदेखी मनतेहनुं चलिउं । मरीनेदुर्गतिजावे ॥ मा०॥ ६ ॥ लब्धिदत्तमायायें नमीयो । पमीयोसमुद्रमकाररे । मुख मा खणीउं थइने मरीयो । पमीयो नरकदुवार ॥ मा० ॥ ७ ॥ इंद्रे तो सिंहासनें थापी । संभूयें माया राखी । नेमीसर तो मायामेली । मुगतीमां थयासाखी ॥ ८ ॥ मा० ॥ मनवचनका-यायें माया । महेलीवनमांजाय । धन्य धन्य तेह मुनिसरजे-हना । तीन भवनगुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एवुंजाणीने भवि-प्राणी । मायामूकोअलगी । समयसुंदर कहे सारछे जगमां ।

धर्मरंगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति श्रीसमयसुंदरोपाध्यायकृत मायानी सझाय संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीपंडितजिनहर्षजीविरचितसमकितनी वृद्ध सज्झाय लिख्यते ॥

ढाल पहेली ॥ तेमुजमिछामिदुक्कडं ॥ ऐ देशी ॥ सांजलरे तुं प्राणीया । सद्गुरुउपदेशो । मानवजवदोहिलो लह्यो । उत्तमकुलएसो ॥ १ ॥ सां० ॥ देवतत्त्वनविउंलख्यो । गुरुतत्त्वनजाण्यो । धर्मतत्त्वनविसर्दह्यो । हियरुंज्ञान न आण्यो ॥ २ ॥ सां० ॥ मिथ्यात्वीसुरजिनप्रत्यें । सरखाकरी जाण्या, गुणअवगुणनविउंलख्या । वयणेंकरीवखाण्या ॥ ३ ॥ सां० ॥ देवअयामोहेंग्रह्या । पासेंरहेनारी । कामतणेवशें जेपड्या । अवगुणअधिकारी ॥ ४ ॥ सां० ॥ केइ क्रोधीदेवता । वली क्रोधनावाह्या । केइकोईथीबीहता । हथीयारसंवाह्या ॥ ५ ॥ सां० । क्रूरनजर जेहनीघणी । देखतांरुरीयें । मुद्राजेहनीएहवी तेहथी शुंतरीयें ॥ ६ ॥ सां० ॥ आठकरमसांकलजड्यां । जमे जवहीमकारो । जनममरण जवदेखीयें । पाम्यानहींपारो ॥ ७ ॥ सां० ॥ देवअइ नाटककरे । नाचेजणजणआंगें । वेषकरी राधकृष्णनो । वली जिह्वामांगे ॥ ८ ॥ सां० ॥ मुखेंकरी वाए वांसली । पेहेरे तनवागा । जावताजोजनकरे । एहवाजग लागा ॥ ९ ॥ सां० ॥ देखोदैत्यसंहारवा । थयोउद्यमवंतो हरि हरणांकुशमारीयो । नरसिंहबलवंतो ॥ १० ॥ सां० । मछकछअवतारले । सहु असुरविदार्या । दशअवतारें जूजूआ । दशदैत्यसंहार्या ॥ ११ ॥ सां० ॥ मानेमूढमिथ्यामति ।

एहवापणदेवो । फरीफरी अवतारछे । देखी कर्मनीटेवो॥१२॥ सां० ॥ स्वामीसोहेजेहवो । तेहवो परिवारो । एमजाणीनेपरिहरो । जिनहर्षविचारो ॥ १३ ॥ सां० ॥ इति ॥ ढाल बीजी॥ ऊधवमाधवनेकेहेजो ॥ ए देशी ॥ जगनायकजिनराजने । दाखवियें सहीदेव । मूकाणाजेकर्मथी । सारे सुरपतिसेव ॥ १४ ॥ ज० ॥ क्रोधमानमायानहीं । नहीं लोजअज्ञान । रतिअरति वेदेनहीं । ठांड्या मदआन ॥ १५ ॥ ज० ॥ निद्रा शोक चोरीनहीं । नहीं वयणअलीक । मत्सर जय वधप्राणनो। नकरे तहकीक ॥ १६ ॥ ज० ॥ प्रेम क्रीमा न करेकदी । नहीं नारीप्रसंग । हास्यादिकअढारए । नहींजेहनेअंग ॥ १७ ॥ ज० ॥ पद्मासनपूरीकरी । वेठा अरिहंत । निश्चललोयणतेहना । नासाग्ररहंत ॥ १८ ॥ ज० ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी । दीठापरमजल्लास । समकितथाये निर्मल । तपे ज्ञानजजास । १९ ॥ ज० ॥ गतिआगति सहु जीवनी । देखेलोकालोक । मनःपर्यायसवीतणा । केवल ज्ञानआलोक ॥ २० ॥ ज० ॥ मूर्तिश्रीजिनराजनी । समता जंमार । शीतलनयणसुहामणां । नहींवांकलगार ॥ २१ ॥ ज० ॥ हसतवदन हरखेहैयुं । देखीश्रीजिनराय । सुंदरठवि प्रजुदेहनी । शोजावरणी नजाय । २२ ॥ ज० ॥ अवरतणी एहवीठवि । किहांएनदीसंत । देवतत्त्व एजाणीये । जिनहर्षकहंत ॥ २३ ॥ज० ढाल ३ जी ॥ यतणीनी देशी ॥ श्रीजिनवरप्रवचनजाख्या । जेकुगुरुतणागुण दाख्या । पासत्थादिकपांचेइ । पापश्रमण कह्यासाचेइ ॥ २४ ॥ गृहीनामंदिरथीआणी । आहारकरे जातपाणी । सुए ऊंघेनि-

शदीस । परमादीवीशवावीश ॥ २५ ॥ किरिया न करे किणि-
वार । पडिक्कमणुंसांऊसवार । नकरेपच्चरकाण सकाय । विक-
थाकरंतांदिनजाय ॥ २६ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण । खाए
नकरेपच्चरकाण । ज्ञानदर्शननेंचारित्र । मूकीदीधांसुपवित्र
॥ २७ ॥ सुविहितमुनिसामाचारी । पालेनहिं तेअणगारी ।
आहारनादोषबायाल । टालेनहीं किणहीकाल ॥ २८ ॥ धब-
धबधसमसतो चाले । काचेजलें देहपखाले, अर्चारचनावंदावे।
वस्त्रादिकशोजाबनावे ॥ २९ ॥ परिग्रहवली काफाराखे ।
वलीवली अधिकानेधाखे । माठीकरणी जेकहियें । ते सघली-
जिणमेंलहियें ॥ ३० ॥ एहवाजे कुगुरुआरंजी । मुनि साधुक-
हेवायेदंजी । किड कम्मप्रशंसाकरीये । जवजवगृहमांअवत-
रियें ॥ ३१ ॥ लोहानीनावातोले । जवसायरमां जेबोले, जिन-
हर्षजले अहिकालो । पणकुगुरुनीसंगतिटालो ॥ ३२ ॥ ढाल
चोथी ॥ करजोमीआगलरही ॥ ए देशी ॥ गुणगिरुआ गुरु
उंलखो । हियडे सुमति विचारीरे । गुरु सुपरीक्षादोहिली ।
जूलपडे नरनारीरे ॥ ३३ ॥ गु० ॥ पांचेइंन्द्रियवशकरे । पांच-
महाव्रतपालेरे । चारकषायतजीजेणें । पांचे किरिया टालेरे
॥ ३४ ॥ गु० ॥ पांचसमिति सुमतारहे । तीन गुपति जे धारे
रे । दोषबेंतालीशटालीने । पाणी जात आहारेरे ॥ ३५ ॥
गु० ॥ ममतांछांडीदेहनी । निर्लोजीनिर्मायीरे । नवविध परि-
ग्रहपरिहरे । चित्तमेंचिंत्तें नकाइरे ॥ ३६ ॥ गु० ॥ धर्मतणा-
उपगरणधरे । संजम पालवाकाजेंरे । जूमिजोई पगला जरे ।
लोकविरुधथीलाजें रे ॥ ३७ ॥ गु० ॥ पडिलेहण निरतिविधें।

करे प्रमादनिवारीरे ॥ कालें शुद्धक्रियाकरे । इछाजो निवारीरे ॥ ३८ ॥ गु० ॥ वस्त्रादिकशुद्धएषणी । लेदेखीसुविशेषेंरे । कालप्रमाणें खपकरे । दूषणटलतां देखे रे ॥ ३९ ॥ गु०॥ कुखी संबल जे कह्यां । संनिधिकेमही न राखेरे । दे उपदेशयथा-स्थितें । सत्य वचन मुखजाखेरे ॥ ४० ॥ गु० ॥ तनमेहेलां मनउजला । तपकरी खीणीदेहीरे । बंधन बे छेदीकरी । विचरे जननिःस्नेहीरे ॥ ४१ ॥ गु० ॥ एहवा गुरु जोईकरी । आद-रीयें शुजजावें रे । बीजुंतत्त्व सुगुरुतणुं । ए जिनहर्ष कहावेरे ॥ ४२ ॥ गु० ॥ ढाल ९ मी ॥ कर्म न छूटेरेप्राणीआ ॥ ए देशी ॥ जवसायरतरवाजणी धर्मकरे हो सारंज । पत्थरनावेंरे बेसीने । तरवोसमुद्र छुर्लंज ॥ ४३ ॥ ज० ॥ आपे गोकुलगा-यनां । आपे कन्यारे दान । आपे खेत्रपुएयार्थें । ब्राह्मणने देइमान ॥ ४४ ॥ ज० ॥ लूंटावेघाणीवली । पृथिवीदानसुप्रेम । गोलाकलशारे मोरीया । आपेहलतिलहेम ॥ ४५ ॥ ज० ॥ वलीखणावेरे खांतशुं । कूआ सुंदरवाव । पुष्करिणी करणी-जणी । सरवर सखरतलाव ॥ ४६ ॥ ज० ॥ कंद मूल मूके-नहीं । इग्यारसने हो दीस । आरंजते दिनअतिघणो । धर्म-कीहांजगदीस ॥ ४७ ॥ ज० ॥ यागकरे होमेतिहां । घोमान-रनेरेछाग । होमे जलचरमींफकां । धर्मकिहांवीतराग ॥ ४८ ॥ ज० ॥ करे सदाएरे नोरतां । जीवतणाआरंज । हणे महिषनें-बोकमा । जेहथी नरकसुलंज ॥ ४९ ॥ ज० ॥ सारेसरावेब्रा-ह्मण कने । पूर्वजनांरे सराध । तेमीपोषेरेकागमा । देखोएह-उपाध ॥ ५० ॥ ज० ॥ तीरथजाए गोदावरी । गंगागयाप्र-

याग । नाये अणगलनीरमें । धर्मतणो नहींलाग ॥ ५१ ॥ ज० ॥ इत्यादिक करणीकरे । परजवेंसुखनेंरेकाज । कहेजिन-हर्ष मिलेनहीं । एहथीशिवपुरराज ॥ ५२ ॥ ज० ॥ ढाल ६ ठी ॥ रे जाया तुऊविनघमीरेछमास ॥ एदेशी ॥ धर्मखरो जिनवरतणोजी, शिवसुखनोदातार । श्रीजिनराजेंप्रकाशी-योजी । जेहनाचारप्रकार ॥ ५३ ॥ जविकजन ज्ञानविचारी रेजोय । डुर्गतिपमतां जीवनेजी । धारेते धर्महोय ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमहाव्रतसाधुनांजी । दशविध धर्मविचार । हितकरीनेजिनवरकह्यांजी । श्रावकनाव्रतवार ॥ ५४ ॥ ज० ॥ पंचुंबर चारेविगयजी । विषसहु माटीरेहीम । रात्रिजोजनने कह्यांजी । बहुबीजनोनीम ॥ ५५ ॥ ज० ॥ घोलवमांवली रींगणांजी । अनंतकायवतीश । अणजाएयां फल फूलमांजी । संधाणांनिशदीस ॥ ५६ ॥ चलित अन्नवाशीश्रयुंजी । तुछसहु-फलदह । धर्मीनरखाये नहींजी । एबावीशअजदय ॥ ५७ ॥ ज० ॥ नकरेनिर्द्धंसपणेजी । घरनापणआरंज । जीवतणीजय-णाघणीजी । नपीये अणगलअंज ॥ ५८ ॥ ज० ॥ घृतपरेंपाणी वावरे जी । बीये करतो पाप । सामायिकव्रत पोषधेंजी । टाले जवना पाप ॥ ५९ ॥ ज० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीजी । सेवा-जक्ति सदीव । धर्मशास्त्र सुणतांथकां जी । समजेकोमलजीव ॥ ६० ॥ ज० ॥ मास मासनें आंतरेंजी । कुशअग्रजुंजेबाल । कला न पोहोंचें शोलमीजी । श्रीजिनधर्मविशाल ॥ ६१ ॥ ज० ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरीदीयेजी । चउगतिज्रमणमिथ्यात्व । एम जिनहर्षप्रकाशियेंजी । त्रीजुंतत्त्वविख्यात ॥ ६२ ॥ ज० ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ मधुकरआजरहोरे मतचलो ॥ ए देशी ॥
श्रीजिनधर्मआराधियेंजी । करी निज समकित शुद्ध ज्नवियण ।
तपजपकिरिया कीधलीजी । लेखेपमेविशुद्ध ॥ ६३ ॥ ज्न० ॥
श्री० ॥ कंचनकशीकशी लीजीयेंजी । नाणुंलीजेंपरीख ॥ ज्न०॥
देवधर्मगुरुजोइनेंजी । आदरीयेंसुणीशीख ॥ ६४ ॥ ज्न० ॥
श्री० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनेंजी । परहरियें विषजेम ॥ ज्न० ॥
सुगुरु सुदेव सुधर्मनेंजी । ग्रहियें अमृत तेम ॥ ६५ ॥ ज्न० ॥
श्री० ॥ मूलधर्म तो जिनकह्योजी । समकितसुरतरुएह ॥ ज्न० ॥
ज्नवज्नवसुखसंपतिश्रकीजी । समकितशुं धरींनेह ॥ ६६ ॥ ज्न०
॥ श्री० ॥ सत्तरसेंछत्रीशसमेजी । नज्नशुदि दशमीदीस ॥
ज्न० ॥ समकितसीत्तरी ए रचीजी । पुरपाटणसुजगीश ॥ ६७ ॥
ज्न० ॥ श्री० ॥ ज्नणजो गुणजो ज्नावशुंजी । तो लेशो अवि-
चलश्रेय ॥ ज्न० ॥ शांतिहर्ष वाचकतणोजी । कहे जिनहर्षवि-
नेय ॥ ६८ ॥ ज्न० ॥ श्री० ॥ इति श्रीसमकितसीत्तरी संपूर्णा ॥
सझाय रूप छे ॥

॥ अथ समकितनी सझाय लिख्यते ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ धुरप्रणमुं जिनवरचोवीश । सविगण-
धरने नामुंशीश । तेहनांवयणसुणेंजेकान । मनराखे समकित-
नोध्यान ॥ १ ॥ साचोदेव एकवीतराग । धर्मतणो जेणें दाख्यो
माग । तेजिनवरनि पालुंआंण । जे होये साचा सुगुरुसुजांण
॥ २ ॥ पंचमहाव्रत मनमांधरे । रागद्वेष पेहेलुंपरिहरे । चारि-
त्रपालेटालेदोष । लीयेआहारथोमे संतोष ॥ ३ ॥ दोषमांहे जे
आधाकर्म । टालेते त्रोमेआठ कर्म । आधा कर्म करेनरनार, तेप

घणुं रुलेसंसार ॥ ४ ॥ मूकी देहतणा सुखवास । सहेपरीसह-
बारेमास । तपें करिने जेणेंजसलिध्ध । वंदनीक ते त्रिजुवन-
सिध्ध ॥ ५ ॥ एक संयमने बीजीक्षमा । शत्रुमित्र जेहनेबेहुं-
समा । द्दष्टिरागनें तरीकतरी । ते जाशे जवसायरतरी ॥ ६ ॥
एकआपणुं करीमनठाम । जणे गुणे सिध्धांतप्रमाण । सद्गुरुनो
उपदेश आचार । जोइ समजो हैयेविचार ॥ ७ ॥ एकपहेरे
मुनिवरनोवेश । पण साचो न दीये उपदेश । जेह उत्थापे जि-
नवरवयण । तेहने किहां हियानानयण ॥ ८ ॥ घरमूकीने थया-
महातमा । ममता जइ लागाआतमा । महारुंमहारुं एम कहे-
घणुं । तेह मूरखवचनतापणुं ॥ ए ॥ एकतजी दीसेछे इस्या ।
लोजेशिष्यकरे अणकस्या । पंचमहाव्रतकहे उच्चरे । उपशम-
रस ते कहो किमठरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी वहोरेघणुं । धर्मवि-
गोवे जिनवरतणो । यंत्र तंत्र मूली करी करी । चूरण आपे
घरघरफरी ॥११॥ कुगुरु तणाजाणी अहिनाण । सेवा न करे जे
होयेजाण । जिनवाणी सांजलीयें इसी । सोनुं गुरु बे लीजें-
कसी ॥ १२ ॥ सोनाथीहोय एक जवहांण । कुगुरुकरे जवज
वनीहांण । सोने घाठापणते मले । कुगुरु पसायें जवजवरुले
॥ १३ ॥ सर्पडसेंहुवे जवनोअंत । कुगुरु करे संसारअनंत ।
एमजाणी वली लीजे साप । कुगुरुनमि नवि बोलियें आप
॥ १४ ॥ एकवहे जिनवरनीआण । वैरवहे तिहां एकअजाण ।
एहआपणा नहींगुरुएम । बोलीलीये वदंतुंतेम ॥ १५ ॥ एक-
जणे महारा गुरुदेव । मेंकरवी एहिजनीसेव । पक्षतणास्वामीने
मान । अवरपक्षने देअपमान ॥ १६ ॥ एकसगाजाणी माहा-

तमा । गुणपाखें तारेआतमा । पात्रजणी पूजेतेहनें । कहो समकित केम छे तेहने ॥ १७ ॥ देखीपरखी गुरुगुणवंत । श्रावकनें मनसंयमवंत । एहआपणा नहीं इमजाणे । दानमान-सघलेअवगणे ॥ १८ ॥ एकानेंगछनोअनुराग । पण न लहे साचोजिनमाग । वीरवचन लेइनेंपाधरुं । कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने आगमनुंबहुमान । तेहना जघरूेणें कान । ए साधारण गुरुनीवात । जोइनेलेजो मुक्तिमात ॥२०॥ हृदयनयनतमे जूउंसुजाण । छंमो कुगुरु ए जिनआण । सद्गुरु-तणा चरणआदरो । जेम जवसायरलीलायेंतरो ॥ २१ ॥ जेजिनआणवहेनिशदीश । ते ऊपर जे नाणेरीश । नवेतत्त्व निरतासर्दहै । सूधुं समकितछे तेकन्हे ॥ २२ ॥ एहवुंसमकित-सूधुंजाण । धर्मकाजनुं मकरीशहांण । जिनवरपूजा सद्गुरु-जक्ति । जावें करवी आतमशक्ति ॥ २३ ॥ पमिक्कमणुने फासुं-नीर । कीजें धर्म कह्युजेवीर । धर्में ऋद्धि सिद्धि घरहुंत । धर्में-संकट सवि जाजंत ॥ २४ ॥ धर्मसूर्य निरतोतपे । धर्में पाप-करमसत्रि खपे । धर्मेंहोये रूपनोयोग । धर्मपसायें संपत्तिजोग ॥ २५ ॥ जणे गुणेने बहुतपकरे । पण समकित सूधुंनादरे । समकित विण ते सहुएफोक । समकितआदर करवुंरोक॥२६॥ समकित माय बाप संसार । समकित सुखसंपत्तिसार । सम-कित एह धर्मनुंमूल । समकितथीसहुएअनुकूल ॥ २७ ॥ सम-कित ऋद्धिसिद्धि घरघणी । समकित लगें होयसुरधणी । सम-कित सीझे सघलांकाज । समकित लगेंत्रिजुवननुंराज ॥ २८ ॥ समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनुं जुउंमंमाण । तप-

विण श्रेणिकराजमहधणी । लेशेपदवी अरिहंततणी ॥ २९ ॥ समकितपाले जेनरनार । वली न आवे तेसंसार । एम जाणी समकितआदरो । सिद्धिरमणी जेम लीलावरो ॥ ३० ॥ इति श्रीसमकितनी सज्झाय संपूर्णा ॥

॥ अथ सद्गुरुपरीक्षारूप श्रीसुगुरुपचीशी लिख्यते ॥

॥ सुगुरु पीछाणो एणे आचारें । समकित जेहनुंशुद्धजी ॥ ॥ ए आंकणी ॥ कहेणीकरणी एकजसरखी । अहर्निशधर्म विशुद्धजी ॥ सु० ॥ १ ॥ निरतिचार महाव्रतपाले । टाले सगलादोषजी । चारित्रशुं लयलीनरहेनित्य । चित्तमां सदासंतोषजी ॥ सु० ॥ २ ॥ जीवसहुना जेछेपीयर । पीडे नहीं खटकायजी । आपवेदन परवेदनसरखी । नहणे न करे घायजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोहकर्मनें जेवश नपडे । नीरागीनिरमायजी । जयणाकरतो हलुयेचाले । पूंजी मूके पायजी ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ अरहोपरहो दृष्टि न देखे । न करे चालत वातजी । दूषणरहितसूजतोदेखे । तो लिये पाणी जातजी ॥ सु० ॥ ५॥ जूखतृषापीड्या दुःखपीडे । लूटे जो निजप्राणजी । तोपणअशुद्ध आहार न लेवे । जिनवरआणप्रमाणजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ अरसनिरस आहार गवेषे । सरसतणी नहींचाहजी । इमकरतां जो सरस मले तो । हरखनहीं मनमांहजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ शीतकालेंशीतें तनुसूके । उनाले रवि तापजी । विकटपरिसहघटअहीयासे । नाणे मन संतापजी ॥ सु० ॥ ८ ॥ मारे कूटे करे उपद्रव । कोइ कलंकदे शीशजी । कर्मतणा फलजाणीउदीरे । पण नाणे मन रीशजी० ॥ सु० ॥ ९ ॥ मन वच-

काया जे नविदंडे । डंडे पांचप्रमादजी । पंचप्रमादसंसारवधारे । जाणे तेनिःस्वादजी ॥ सु० ॥ १० ॥ सरलस्वन्नाव न्नावमन-रूडो । नकरे वाद विवादजी । चारकषाय कर्मनाकारण । वर-जेमदजनमादजी ॥ सु० ॥ ११ ॥ पापस्थानअढारे वरजे । न करे तास प्रसंगजी । विकथामुखथी चारनिवारे । समिति गुपति शुं रंगजी ॥ सु० ॥ १२ ॥ अंग उपांग सिद्धांत वखाणे । द्ये सूधो उपदेशजी । सूधेमारगे चालेचलावे । पंचाचार-विशेषजी ॥ सु० ॥ १३ ॥ दशविधयतिधर्म जिन न्नाख्यो । तेहना धारणहारजी । धरमथकी जे किमही न चूके । जो होये कोडिप्रकारजी ॥ सु० ॥ १४ ॥ जीवतणी हिंसा जे न करे । नवदे मिरषावादजी । तृणमात्रअणदीधुं नलीये । सेवे नहीं अब्रह्मजी ॥ सु० ॥ १५ ॥ नवविध परिग्रहमूल नराखे । निशिन्नोजनपरिहारजी । क्रोधमान मायानें ममता, न करे लोन्नलगारजी ॥ सु० ॥ १६ ॥ ज्योतिष आगमनिमित्त न न्नाखें । नकरावे आरंन्नजी । औषध न करे नाडीनजूवे । सदारहे निरारंन्नजी ॥ सु० ॥ १७ ॥ डाकिणी शाकिणी न्नूत न काढे । न करे हलवोहाथजी । मंत्र यंत्रनें राखडीकरी ते । नवी आपे परमार्थजी ॥ सु० ॥ १८ ॥ विचरे गाम नगर पुर सघले । न रहे एकण ठामजी । चोमासाऊपरचौमासुं । नकरे एकणग्रामजी ॥ सु० ॥ १९ ॥ चाकर फरमासेंनविराखे । नकरावे कोइकाजजी । न्हावण धोवण वेसवनावण । न करे-शरीरनीसाजजी ॥ सु० ॥ २० ॥ व्याजवटानुं नाम नजाणे । नकरे वजणव्यापार जी । धर्महाटमांडीनेबेठा । वणिजले परउ-

पगारजी ॥ सु० ॥ २१ ॥ ते गुरु तरे अवरांनेतारे । सायरमां-
जिम जिहाजजी । काष्ट प्रसंगें लोहतरेजिम । तेम सुगुरु संग-
ते जव्य जी ॥ सु० ॥ २२ ॥ सुगुरुप्रकाशक लोचनसरिखा ।
ज्ञानतणादातारजी । सुगुरुदीपक घटअंतरकेरा । दूरकरे
अंधकारजी ॥ सु० ॥ २३ ॥ सुगुरु अमृतसरिखाशीला । दीये
अमरगतिवासजी । सुगुरुतणीसेवा नित्यकरतां । बूटे करम-
नापासजी ॥ सु० ॥ २४ ॥ सुगुरुपचीशी श्रवण सुणीने । कर-
जो सुगुरु प्रसंगजी । कहे जिनहरख सुगुरु सुपसायें । ज्ञानह-
रख उछरंगजी ॥ सु० ॥ २५ ॥ इति श्रीसुगुरुपच्चशी समाप्ता ॥

॥ अथ स्वार्थउपर सज्झाय ॥

॥ स्वारथकीसबहैरेसगाई । कुणमाताकुणबेनरुजाई स्वा०॥१॥
स्वारथजोजनजुक्तसगाई । स्वारथविणकोइ पाणीनपाई स्वा०
॥ २ ॥ स्वारथमावापसेठवमाई । स्वारथविननहुदेत सहाई
स्वा० ॥ ३ ॥ स्वारथनारीदासीकहाई । स्वारथविनलाठिलेधाई
स्वा० ॥ ४ ॥ स्वारथचेलागुरुगुरुजाई । स्वारथविननितहोत-
लमाई स्वा० ॥ ५ ॥ समयसुंदरकहे सुणोलोकलुगाई । स्वारथ
है जाइ परमसगाई स्वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद्मावती राणीनी सज्झाय लिख्यते ॥

हिवरांणीपद्मावती । जीवरासखमावे । जांणपणोजग दोहि-
लो । इणवेलाआवे तेमुज मिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनी-
साख । जेमेंजीवविराधिया । चोरासीलाख ॥ तेमु० ॥ २ ॥
सातलाख पृथवीतणा । सातेअप्पकाय । सातलाख तेऊकायना,
सातेवलिवाय ॥ तेमु० ॥ ३ ॥ दसप्रत्येकवनस्पती । चवदेलाख-

ससाधारण । बि ति चउरिंद्रीजीवना । बे बे लाखविचारण ॥ तेमु० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार च्यार लाख प्रकाशी । चवदे लाख मनुष्यना । ए लाखचोरासी ॥ तेमु० ॥ ॥ ५ ॥ इणजव परजवसेविया । जेपापअढार । त्रिविध त्रिविधकर वोसरूं । डुरगतिदातार ॥ तेमु० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधीजीवनी । बोल्यामृषावाद । दोष अदत्तादांनना । मैथुन उनमाद ॥ तेमु० ॥ ७ ॥ परिग्रहमेल्योकारमो कीधो क्रोध विशेष। मांन माया लोजमेंकीया वलि रागनेद्वेष ॥ तेमु० ॥ ८ ॥ कलहकरी जीवदूहव्या । दीधाकूडाकलंक । निंद्या कीधीपारकी । रति अरतिनिस्संक ॥ तेमु० ॥ ९ ॥ चाडी कीधीचोतरे । कीधो थांपणमोसो । कुगुरु कुदेवकुधर्मनो । जलोआण्योजरोसो ॥ तेमु० ॥ १० ॥ खाटकीनेजव जे कीया, जीवनावधघात । चिडीमारजवचिडूकला । मार्या दिननेरात ॥ तेमु० ॥ ॥ ११ ॥ माछीगरजवमाछला । झाल्या जलवास । धीवर जील कोलीजवे । मृग मार्यापास ॥ तेमु० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लानेजवे । पढीमंत्रकठोर । जीवअनेक जबेकीया । कीधा पापअघोर ॥ तेमु० ॥ १३ ॥ कोटवाल जवमेंकीया । आकराकरदंड । बंदीवानमराविया । कोरडा छडी दंड ॥ तेमु० ॥ १४ ॥ परमाधामीनेजवे । दीधा नारकीडुक्ख । छेदनजेदनवेदना । ताडनाअतितिक्ख ॥ तेमु० ॥ १५ ॥ कुंजारनेजवमेंकिया । निवाहपचाया । तेलीजवतिल पिलिया । पापपेटजराया ॥ तेमु० ॥ १६ ॥ हालीनेजव हलखड्या, फाड्या पृथवीपेट । सूडनिदानकीयाघणा । दीधा बलधचपेट ॥ तेमु० ॥ १७ ॥ माली-

नेजवरोपिया । नाना विधवृक्ष । मूलपत्र फलफूलना । लागा-
पापतेलक्ष ॥ तेमु० ॥ १८ ॥ आधोवाही आगमी । जस्याअ-
धिकाजार । पोठी कंठ कीधा पछ्या । दया नावी लिगार ॥
तेमु० ॥ १९ ॥ डींपानेजवठेतस्यो । कीधारांगणपास । अगनि-
आरंज कीयाघणा । धातुरवादअभ्यास ॥ तेमु० ॥ २० ॥ सूर-
पणे रणझूझतां । मास्यामाणसवृंद । मदिरामांस माखणजख्या
खाधामूलनेकंद ॥ तेमु० ॥ २१ ॥ खाणखिणाईधातुनी । पाणी-
उलंच्या । आरंजकीधा अतिघणा । पोते पापतेसंच्या ॥ तेमु०
॥ २२ ॥ अंगारकर्म कियावली । धर्मे दवदीधा । सूंसलेइ
वीतरागना कूडासुंसजकीधा ॥ तेमु० ॥ २३ ॥ बिल्ली जव
ऊंदर गिह्या । गिलोइ हत्यारी । मूढगिमार तणे जवे, में जूं
लीख मारी ॥ तेमु० ॥ २४ ॥ जडजूंजातणे जवे । एकेंद्रि
जीव । ज्वार चिणा गहुं सेकिया । पाडंतारीव ॥ तेमु०॥ २५॥
खांडणपीसण गारना । आरंज अनेक । रांधण इंधणअगनि-
ना, कीया पाप अपार ॥ तेमु० ॥ २६ ॥ विकथाच्यारकीधी-
वलि । सेव्यापंचप्रमाद । इष्टवियोगपमाड्या । रोदनविखवाद
॥ तेमु० ॥ २७ ॥ साधुअने श्रावकतणा । ब्रतलेइनेजागा ।
मूलअनेउत्तरतणा । मुझदूषण लागा ॥ तेमु० ॥ २८ ॥ साप
विछु सिंहचीतरा । सिकराने समली । हिंसक जीवतणेजवे ।
हिंसाकीधी सबली ॥ तेमु० ॥ २९ ॥ सूवावडे दूषण घणा ।
वलिगरजगलाया । जीवाणीढोल्याघणा । शीलब्रतजंजाया
॥ तेमु० ॥ ३० ॥ जवअनंतजमतांथकां । कीयाकुटुंब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करिवोसरूं । तिणसुं प्रतिबंध ॥ तेमु० ॥ ३१॥

इणनवपरनवइणिपरे । कीधापापअखत्र । त्रिविधपरे करिबो-सरूं । करुंजनमपवित्र ॥ तेमु० ॥ ३२ ॥ रागवेराफीजेसुणे । एतीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी । बूटे ततकाल ॥ तेमु० ॥ ३३ ॥ इति आलोयण पद्मावती सज्झाय ॥

॥ श्रीउपाध्यायक्षमाकल्याणजीकृत श्रीथूलभद्रजीनी सज्झाय लिख्यते ॥

तीरथतेनमूरे ए देशी ॥ श्रीमहावीरजिनेसरु । त्रिजुवनगुरुजी । तसुअठमपटधार। श्रीथूलिनद्रनमो ॥ १ ॥ पाफलीपुर-सोहामणुं । महिमंफणुंजी । तिहांपायोअवतार। श्रीथूलि० ॥२॥ नंदनरिंदमंत्रीश्वरु । गुणआगरुजी । श्रीसकफालसुपुत्र ॥ श्री० ॥ ३ ॥ लाछनदेनंदनजलो ॥ मुनिगुणनिलोजी । नागरद्विज-कुलदीप ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीसंजूतिविजयगुरु । पूरवधरुजी । व्रतलीधातसुपास ॥ श्री० ॥५॥ कोश्यावेश्याप्रतिबोधवे । सद्गु-रुतवेजी । दुक्कर दुक्करकार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चौदपूरवशिष्यो-वली । श्रुतकेवलीजी । श्रीजद्रबाहुसमीप ॥ श्री० ॥ ७ ॥ संयमपाल्यो निर्मलो । त्रिविधेंजलोजी । जंगमयुगप्रधान ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पंचमासपंचदिनसही । ऊपरकहीजी । वरसनवा-णुआय ॥ श्री० ॥ ए ॥ करि अणसणआराधना । शुजवास-नाजी । पहोतास्वर्गमझार ॥ श्री० ॥ १० ॥ चुलसीचोवीशी-लगें । जसझगमगेजी ॥ रहेशेजेनुंनाम ॥ श्री० ॥ ११ ॥ वसु युगवसु चंद्रवत्सरे (१८४८) पाफलीपुरेजी । जसुपदथापना कीध ॥ श्री० ॥ १२ ॥ वाचकअमृतधर्मनो। थुणेशुजमनोजी॥

शिष्यक्षमाकल्याण ॥ श्री० ॥ इतिश्रीथूलिजद्रजीनीसकाय संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीदेवचंद्रजीकृतअष्टप्रवचनमातानी सज्झाय लिख्यते

॥ दोहा ॥ सुकृतकल्पतरुश्रेणिनी । वरउत्तरकुरुजोमि । अध्यातम रस शशिकला । श्रीजिनवाणीनौमि ॥ १ ॥ दीपचंदपाठकसुगुरु । पदवंदीअवदात । सारश्रमणगुणजावना गाशुं प्रवचनमात ॥ २ ॥ जननीपुत्र जिमशुजकारी । तिम ए पवयणमाय । चारित्रगुणगणवर्द्धिनी । निर्मलशिव सुखदाय ॥ ३ ॥ जावअयोगी करणरुचि । मुनिवरगुप्ति धरंत । यदिगुप्तिजो न रहिशके । तो समितिविचरंत ॥ ४ ॥ गुप्तिएक संबरमयी । औठरंगिक परिणाम ॥ संवर निर्जर समितिथी । अपवादे गुणधाम ॥ ५ ॥ ऽव्ये ऽव्यत चरणता, जावे जाव चरित्त ॥ जावदृष्टिऽव्यतक्रिया । करतां शिवसंपत्त ॥ ६ ॥ आतमगुणप्राग्जावथी । जेसाधकपरिणाम । समिति गुप्ति ते जिनकहे । साध्यसिद्धिशिवठाम ॥ ७ ॥ निश्चयकरणरुचिथइ । समिति गुप्तिधरसाधि ॥ परमअहिंसकजावथी । आराधेनिरुपाधि ॥ ८ ॥ परममहोदय साधवा । जेहथया उजमाल ॥ श्रमणजिक्षुमाहण यति । गाउं तस गुणमाल ॥ ए ॥

॥ अथ प्रथमईर्या समिति सज्झाय लिख्यते ॥

प्रथम गोवालतणे जवेंजी ॥ एदेशी ॥ प्रथमअहिंसक व्रततणीजी । उत्तमजावनाएह ॥ संवरकारणउपदिशी जी । समतारसगुणगेह ॥ मुनीश्वर । ईर्यासमितिसंजार ॥ आश्रवकरत-

नुयोगथीजी । दुष्टचपलतावार ॥ मुनी० ॥ ईर्या० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कायगुप्तिउत्सर्गनोजी । प्रथम समितिअपवाद ॥ ईर्या ते जेचालवुंजी । धरिआगम विधिवाद ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ २ ॥ ज्ञानध्यानसज्झायमेजी । स्थिरबेठा मुनिराज ॥ ज्ञाने चपलपणुं करेजी ॥ अनुभव रससुखराज ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ३ ॥ मुनि-ऊठे वसहीथकीजी । पामी कारणचार ॥ जिनवंदन ग्रामींतरे जी । के आहार निहार ॥ मुनि० ॥ ईर्या० ॥ ४ ॥ परमचर-णसंवरधरुंजी । सर्वजाणजिनदिठ ॥ शुचिसमतारुचि ऊपजे जी । तिणे मुनिने एइठ ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ५ ॥ रागवधे स्थिरभावथीजी । ज्ञानविना परमाद ॥ वीतरागता ईहताजी । विचरे मुनिसाल्हाद ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ६ ॥ एशरीरभवमूलछे जी । तसुपोषकआहार ॥ जावअयोगी नवि हुवेजी । तां अनादिआचार ॥ मुनी० ॥ ईर्या० ॥ ७ ॥ कवलाहारे निहार-छेजी ॥ एह अंगव्यवहार ॥ धन्य अतनुपरमातमाजी । जिहां निश्चलतासार ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ८ ॥ परपरिणतिकृत चपल-ताजी । केममूकशेएह ॥ एमविचारीकारणें जी ॥ करे गोचरी-तेह ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ९ ॥ क्षमावंतदयालुआजी । निःस्पृह-तनुनीराग ॥ निरविषे गजगतिपरेंजी । विचरे मुनिमहाभाग ॥ मुनी० ॥ ईर्या० ॥ १० ॥ परमानंद रसअनुभव्याजी । निज-गुणरमताधीर ॥ देवचंद्रमुनि वंदतांजी । लहीयें भवजलतीर ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ११ ॥ इति प्रथमसमितिसझायसंपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय भाषासमितिसज्झाय लिख्यते ॥

॥ भावना मालतीचूशीयें ॥ ए देशी ॥ साधुजी समिति बीजी

आदरो । वचननिर्दोषप्रकाशरे । गुप्तिउत्सर्गनो समिति ते । मार्गअपवादसुविलासरे ॥ सा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जावनाबीजी महाव्रततणी । जिनजणी सत्यता मूलरे ॥ जावअहिंसकतावधे । सर्वसंवरअनुकूलरे ॥ सा० ॥ २ ॥ मौनधारी मुनि नविहुवे । वचनजेआश्रव गेहरे ॥ आचरणज्ञाननें ध्याननो । साधकउपदिशे तेहरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ उदितपर्याप्ति जे वचननी । तेकरिश्रुतअनुसाररे । बोधप्राग्जावसज्कायथी । वलिकरेजगतउपकाररे ॥ सा० ॥ ४ ॥ साधु निजवीर्यथी परतणो । नविकरे ग्रहणनें त्यागरे । तेजणी वचनगुप्तिरहे । एहउत्सर्ग मुनि मार्गरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ योगजे आश्रवपदहतो । ते कह्यो निर्जरारूपरे ॥ लोहथीकंचन मुनिकरे, साधता साध्यचिद्रूप रे ॥ सा० ॥६॥ आत्महितपरहितकारणें । आदरे पांच सज्झायरे ॥ तेजणी अशनवसनादिका । आश्रयसर्वअववायरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ जिनगुणस्तवननिजतत्त्वने । जोइवा करे अविरोधरे ॥ देशना जव्यप्रतिबोधवा । वायणाकरण निजबोधरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ नय गम जंग निक्षेपथी । स्वहित स्याद्वादयुतवाणिरे ॥ शोलदशचार गुणशुंमलि । कहे अनुयोग सुपहाण रे ॥ सा० ॥ ए ॥ सूत्रने अर्थ अनुयोगए । बीयनिर्युक्तिसंजुत्तरे॥ तीयजाष्ये नयें जावियो । मुनिवदे वचन एम तंतरे ॥ सा० ॥ ॥ १० ॥ ज्ञानसमुद्रसमताजस्या । संबरी दयाजंमाररे ॥ तत्त्वआनंदआस्वादता, वंदियें चरण गुणधाररे ॥ सा० ॥ मोहउदयें अमोहीजेहवा । शुद्ध निजसाध्य लयलीनरे ॥ देवचंदेतह

मुनिवंदियें । ज्ञानअमृतरसपीनरे ॥ सा० ॥ १२ ॥ इति नाषा समिति सज्जाय ॥

॥ अथ तृतीय एषणासमिति सज्झाय लिख्यते ॥

झांझरीया मुनिवर धनधन ० ॥ ए देशी ॥ समितितीसरी एषणाजी । पांचमाहाव्रतमूल ॥ अनाहारी उत्सर्गनोजी । एअपवादीअमूल ॥ १ ॥ मनमोहनमुनिवर । समितिसदा चित्तधार ॥ ए आंकणी ॥ चेतनता चेतनतणीजी । नवि पर संगीतेह ॥ तिण परसनमुख नवि करेजी । आतमरतिवती जेह ॥ म० ॥ स० ॥ २ ॥ काययोगपुद्गलग्रहेजी । एह न आतमधर्म ॥ जाणंग करतानोगताजी । हुं माहरोएमर्म ॥ म० ॥ स० ॥ ३ ॥ अनजिसंधिचलवीर्यनोजी । रोधक शक्ति अनाव ॥ पणअजिसंधि जे वीर्यथीजी । केमग्रहे परनाव ॥ म० ॥ स० ॥ ४ ॥ इमपरत्यागीसंवरीजी । न ग्रहे पुद्गलखंध ॥ साधक कारण राखवाजी । अशनादिक संबंध ॥ म० ॥ स० ॥ ५ ॥ आतमतत्त्वअनंतताजी । ज्ञान विना न जणाय ॥ तेहप्रगटकरवानणी जी । श्रुतसझाय उपाय ॥ म० ॥ स० ॥ ६ ॥ तेह देहथी देहरहेजी । आहारें बलवान ॥ साध्यअधूरे हेतुनेंजी । केम तजे गुणवान ॥ म० ॥ स० ॥ ७ ॥ तनुअनुयायी वीर्यनोजी । वर्तनअशनसंजोग ॥ वृद्धयष्टिसमजाणीनेंजी । अशनादिकउपनोग ॥ म० ॥ स० ॥ ८ ॥ ज्यां साधकता नवि अछेजी । तो न ग्रहे आहार ॥ बाधकपरिणतिवारवाजी । अशनादिकउपचार ॥ म० ॥ स० ॥ ए ॥ सुमतालीशे दूष्यनाजी । दोषतजी नीराग ॥ असंभ्रांत मूर्छाविनाजी । भ्रमरपरें वडनाग ॥ म०

॥ स० ॥ १० ॥ तत्त्वरुचि तत्त्वाश्रयीजी । तत्त्वरसी निर्ग्रंथ ॥ कर्मउदयें आहारताजी । मुनिमानेपलिमंथ ॥ म० ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ लाजथकी पण घनलहेजी । अतिनिर्जराकरंत ॥ पाम्ये अणव्यापकपणेजी । निर्मल संतमहंत ॥ म० ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ अणाहारता साधता जी । समताअमृतकंद ॥ जिक्षु श्रमण वाचंयमीजी । तेवंदे देवचंद ॥ म० ॥ स० ॥ १३ ॥ इति तृतीय एषणा समिति सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चतुर्थआदाननिक्षेपणासमिति सज्झाय लिख्यते ॥

॥ जोलिका हंसारे विषय न राचियें एदेशी ॥ समिति चोथी रे । चउगतिवारणी । जाखी श्रीजिनराज ॥ राखी परम अहिंसकमुनिवरे । चाखी ज्ञानसमाज ॥ १ ॥ सहजसंवेगीरे समतिपरिणमे ॥ ए आंकणी ॥ साधनआतमकाज ॥ आराधन-एसंवरजावनो । जवजलतारणजहाज ॥ स० ॥ २ ॥ अजि-लाषी निजआतमतत्त्वना । साखीकरि सिद्धांत ॥ नाखी सर्व-परिग्रहसंगने । ध्यानाकाशीरे संत ॥ स० ॥ ३ ॥ संवरपंचतणी-एजावना । निरुपाधिक अप्रमाद ॥ सर्वपरिग्रहत्याग असंगता । तेहनो ए अपवाद ॥ स० ॥ ४ ॥ शाने मुनिवर उपकरणसं ग्रहे । जेपरजावविरत्त ॥ देहअमोही नवि लोहीकदा । रत्न-त्रयीसंपत्त ॥ स० ॥ ५ ॥ जावअहिंसकता कारणजणी । इव्य अहिंसकसाधि ॥ रजोहरण मुखवस्त्रादिकधरे । वरवा योगस-माधि ॥ स० ॥ ६ ॥ शिव साधननुंरे मूल ते ज्ञानछे, तेहनो हेतुसज्झाय ॥ ते आहारें ते वलि पात्रथी । जयणायें ग्रहेवाय

॥ स० ॥ ७ ॥ बालतरुण नरनारीजंतुनें । नग्न दुगंछाहेतु ॥ तिण चोलपटग्रही मुनि उपदिसे । शुद्धधर्मसंकेत ॥ स० ॥८॥ डंश मशक शीतादि परिसह सहे । न रहे ध्यानसमाधि ॥ कल्पआदिकनिर्मोहिपणे। धारे मुनिनिर्बाध ॥ स० ॥ ए ॥ लेपअलेप नदीना ज्ञाननो । कारणदंरूग्रहंत ॥ दशवैकालिक जगवइ साखथी । तनुस्थिरताने तंत ॥ स० ॥ १० ॥ लघु सजीव सचित्त रजादिनो, वारण दुःखसंघट्ट ॥ देखी पुंजेरे मुनिवरतेहथी । ए पूरव मुनिवट्ट ॥ स० ॥ ११ ॥ पुग्गलखंधग्रहणनिक्षेपणा । इव्यें जयणातास ॥ जावे आत्म परिणतिनवनवी । ग्रहतांसमितिप्रकाश ॥ स० ॥ १२ ॥ बाधकजावअद्वेष पणे तजे। साधक ले गतराग ॥ पूरवगुण रक्षकपोषकपणे, निपजते शिवमार्ग ॥ स० ॥ १३ ॥ संयमश्रेणेंरे संचरता मुनि । हरे कर्मकलंक ॥ धरता समतारसएकत्वता । तत्त्वरमणिनिःशंक ॥ स० ॥ १४ ॥ जगउपगारी रे तारकजव्यना । लायकपूर्णानंद ॥ देवचंद एहवा ते मुनिराजना । वंदेपद अरविंद ॥ स० ॥१५॥ इतिचतुर्थआदाननिक्षेपणा समिति सज्झाय सपूर्ण ॥

॥ अथ पंचम पारिष्ठावणिया समिति सज्झाय लिख्यते ॥

॥ चेतन चेतजो रे ॥ ए देशी ॥ पंचमीसमिति कहिअति सुंदरु रे, पारिठावणीयानाम ॥ परमअहिंसकधर्मवधारणी । मृदुकरुणापरिणाम । मुनिवर सेवजोरे । समिति सदा सुखदाय । थिरताजावे संयमसोहाय । धरे निर्मलसंवरथाय ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ देहनेहथी चंचलतावधे रे । विकसे दुष्टकषाय ॥ तिण तनुरागध्यानेरमेजी । ज्ञानचरण सुपसाय ॥

मु० ॥ २ ॥ जिहांशरीरतिहां मलकफजेरे । तेहतणो परिहार ॥ करेजंतु चरस्थिरअणदूहव्यारे । सकल दुगंछावार ॥ मु० ॥३॥ संयमबाधक आतमविराधनारे । आणाघातकजाणि ॥ उपधि अशन शिष्यादिकपरठवेरे । आयति लाभपिछाणि ॥ मु० ॥४॥ वध्या आहारे तपीया परिठवेरे । निजकोठे अप्रमाद । देह-अरागीभातअव्यापतारे । धीरनोएहअपवाद ॥ मु० ॥ ५ ॥ संलोकादिकदूषण परिहरीरे । वर्जीरागनेद्वेष ॥ आगमरीतेपर-ठवणीकरे । लाघवहेतुविशेष ॥ मु० ॥ ६ ॥ कल्पातीत आहा-लंदीक्षमी रे । जिनकल्पादि मुनीश । तेहने परठवणा एकम-लतणी रे । तेहअल्प वलि दीस ॥ मु० ॥ ७ ॥ रात्रे प्रश्रव-णादिक परठवेरे । विधिकृतमंरूलगाम ॥ थिविरकल्पनो प्रति अपवादछेरे । ग्लानादिकनहिंकाम ॥ मु० ॥ ८ ॥ वलिएह द्रव्यथी भावमांरे । बाधक जे परिणाम ॥ द्वेषनिवारी मादक ताविनारे । सर्व विभावविराम ॥ मु० ॥ ए ॥ अंतःपरिणति तत्त्वमयीकरेरे । परिहारता परभाव ॥ द्रव्यसमिति पणभाव भणीधरेरे । मुनिनो एहस्वभाव ॥ मु० ॥ १० ॥ पंचसमिति समतापरिणामथीरे । क्षमाकोष गतरोष ॥ भावन पावनसं-यम साधतारे । करता गुणगणपोष ॥ मु० ॥ ११ ॥ साध्यरसी निजतत्त्वे तन्मयारे । उछरंगी निर्माय । योगक्रियाफल भाव अवंचतारे । शुचिअनुभवसुखदाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ आणा-जीतजुआ नाणी रसीरे । निश्चयनिग्रहयुत्त ॥ देवचंद्र एहवा निग्रंथजेरे । ते माहरुं गुरुतत्त्व ॥ मु० ॥ १३ ॥ इति पंचम पारिष्ठापनिका समिति सझाय ॥

॥ अथ षष्ठ मनोगुप्ति सज्झाय लिख्यते ॥

॥ वैरागी थयोरे ॥ एदेशी ॥ मुनिमनवशकरोरे ॥ मन ए आश्रवगेहो रे ॥ मन ममता रुचि मन्नथीरे ॥ टालो यतिवर तेहोरे ॥ मु० ॥१॥ पुष्टतुरगचित्ततेकह्युंरे। सो मोहनृपतिप्रधान। आर्त्त रौद्रनुं क्षेत्रएहरे । रोक तुं ज्ञान निधानोरे ॥ मु० ॥ २॥ गुप्तिप्रथम ए साधुनेरे । धर्म शुक्लनोकंद । वस्तुधर्मचिंतनरम्या रे । साधेपूर्णानंदोरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ योगते पुद्गलजोगछेरे । पांच अभिनव कर्म । योगवरगणाने कंपनारे । नवि ए आतमधर्म ॥ मु० ॥ ४ ॥ वीर्यचपलपरसंगमीरे । एह न साधकपक्ष । ज्ञान चरणसहकारनारे । वरतावे मनदक्षरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ सविकल्पकगुण साधुनारे । ध्यानीने न सुहाय । निर्विकल्प अनुभवरसीरे । आत्मानंदीथायोरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ रत्नत्रयनी भेदतारे । एह समलव्यवहार ॥ त्रिगुणवीर्यएकत्वतारे। निर्मलआत्माचारोरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ शुक्लध्यान श्रुतलंबनी रे । एपण साधनदाव । वस्तुधर्म उत्सरंगमेंरे । गुणगुणी एकस्वभावोरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ परसहायगुणवर्त्तनारे । वस्तुधर्म न कहाय ॥ साध्यरसी तो किमग्रहेरे । साधु चित्त सहायो रे ॥ मु० ॥ ९ ॥ आतमरुचि आतमालयीरे । ध्याता तत्त्वअनंत ॥ स्याद्वादज्ञानीमुनिरे । तत्त्वरमण उपशांतो रे ॥ मु० ॥ १० ॥ नवि अपवादरुचिकदारे । शिवरसिया अणगार ॥ शक्तियथागमसेवतारे । निंदे कर्मप्रचारोरे ॥ मु० ॥ ११ ॥ शुद्ध सिद्ध निजतत्त्वतारे । पूर्णानंदसमाज, देवचंद्र पर साधतारे । नमिये ते मुनिराजोरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ इति षष्ठ मनोगुप्तिसज्झाय ॥

॥ अथ सप्तमवचनगुप्ति सज्झाय लिख्यते ॥

समिति सदा ए दीलमेंधरो ॥ एदेशी ॥ अथवा ॥ हमी रियानी देशी ॥ वचनगुप्ति सूधीधरो, वचन ते कर्मसहाय सलूणे ॥ उदयाश्रितजेचेतना, निश्चेतेहअपाय ॥ स० ॥ वचन-गुप्ति सूधीधरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वचनअगोचर आतमा। सिद्धते वचनातीत ॥ स० ॥ सत्ता अस्तिस्वजावमें । जाषक जावअनीत ॥ स० ॥ व० ॥ २ ॥ अनुजव रसआस्वा-दता । करता आतमध्यान ॥ स० ॥ वचन ते बाधकजावछे । न वदे मुनिअज्ञान ॥ स० ॥ व० ॥ ३ ॥ वचनाश्रवपलटायवा। मुनिसाधेस्वाध्याय ॥ स० ॥ तेह सर्वथागोपवो । परममहारस-थाय ॥ स० ॥ व० ॥ ४ ॥ जाषापुद्गलवर्गणा । ग्रहणानिसर्ग-उपाधि ॥ स० ॥ करवा आतमवीर्यने । ज्ञानेप्रेरेसाधि ॥ स० ॥ व० ॥ ५ ॥ यावत् वीरजचेतना । आतमगुणसंपत्त ॥ स० ॥ तावत सरवे निर्जरो । आश्रवपर आयत्त ॥ स० ॥ व० ॥ ६ ॥ इम जाणी स्थिरसंयमी । न करे वचि पलिमंथ ॥ स० ॥ आ-त्मानंद आराधतां । आज्ञार्थीनिर्ग्रंथ ॥ स० ॥ व० ॥ ७ ॥ साध्यशुद्ध परमातमा । तसु साधनउत्सर्ग ॥ स० ॥ बारजेदें तप द्विविधे । सकलश्रेष्ठ व्युत्सर्ग ॥ स० ॥ व० ॥ ८ ॥ सम-कितगुणठाणे कह्यो । साध्यअयोगीजाव० ॥ स० ॥ उपादान-ता तेहनी । गुप्तिरूपस्थिरजाव ॥ स० ॥ व० ॥ ९ ॥ गुप्तिरुचि गुप्ते रम्या । कारणसमितिप्रपंच ॥ स० ॥ करता स्थिरता ईह-ता । ग्रहेतत्व गुणसंच ॥ स० ॥ व० ॥ १० ॥ अपवादे उत्स-र्गनी । दृष्टि न चूकेजेह ॥ स० ॥ प्रणमे नित्यप्रत्येजावशुं ।

देवचंद मुनितेह ॥ स० ॥ व० ॥ ११ ॥ इतिसप्तमवचनगुप्ति सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथाष्टम कायगुप्ति सज्झाय लिख्यते ॥

फूलनाचोसरप्रभुजीने शिरचढे ॥ एदेशी ॥ गुप्तिसंभारोरे त्रीजी मुनिवरु । जेहथी परमआनंदोजी ॥ मोहटले घन घातिपरगले । प्रगटेज्ञानअमंदोजी ॥ गु० ॥ १ ॥ करीय शुभ अशुभभवजे जेछे । तिणतजि तनव्यापारोजी ॥ चंचलभाव ते आश्रवमूलछे । जीव अचल अविकारोजी ॥ गु० ॥ २ ॥ इंद्रियविषयसकलनुं द्वारए । बंधहेतु दृढएहो जी ॥ अभिन-वकर्मग्रहे तनुयोगथी । तिण थिरकरीयें देहो जी ॥ गु० ॥३॥ आतमवीर्यफुरे परसंगजे । ते कहीयें तनुयोगोजी ॥ चेतनास-त्तारे परमअयोगीछे । निर्मल स्थिर उपयोगोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ जावतकंपन तावतबंधछे । भाख्युं भगवइ अंगेजी । तेमाटे ध्रुवतत्वरसेंरमे । माहण ध्यान प्रसंगेजी ॥ गु० ॥ ५ ॥ वीर्य-सहायीरे आतमधर्मनो अचल सहज अप्रयासोजी । ते परभा-वसहाया किम करे । मुनिवर गुणआवासोजी ॥ गु० ॥ ६ ॥ खंति मुक्ति युक्ति अकिंचनी । शौच ब्रह्मधरधीरोजी ॥ विष-यपरिसहसैन्यविदारवा । वीर परमशौंडीरोजी ॥ गु० ॥ ७ ॥ कर्मपरुल दल क्षयकरवारसी । आतमऋद्धि समृद्धोजी ॥ देव-चंद्र जिन आणापालतां । वंदुं गुरु गुणवृद्धोजी ॥ गु० ॥ ८ ॥ इति अष्टमकायगुप्तिसझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नवम साधुस्वरूपवर्णनसज्झाय लिख्यते ॥

रसीयानी देशी ॥ धर्मधुरंधर मुनिवरसुलही । नाण चरण

संपन्न ॥ सुगुणनर ॥ इंद्रियजोगतजी निजसुखजजी । जवचारक उदविन्न ॥ सु० ॥ १ ॥ द्रव्यजावसाचीसरधा धरी । परिहरी शंकादिदोष ॥ सु० ॥ कारणकारज साधन आदरी । धरी ध्यानसंतोष ॥ सु० ॥ ध० ॥२ ॥ गुण पर्यायें वस्तुपरिखतां । शीलजजयजंमार ॥ सु० ॥ परिणतिशक्तिस्वरूपमें परिणमी । करता तसुव्यवहार ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ लोकसन्न वितिगिछा वारता । करता संयमवृद्धि ॥ सु० ॥ मूल उत्तर गुण सर्वसंजारता । धरताआतमशुद्धि ॥ सु० ध० ॥ ४ ॥ श्रुतधारी श्रुतधरनिश्रारसी । वशकर्या त्रिक जोग ॥ सु० ॥ अन्यासी अजिनवश्रुतसारना । अविनाशी उपयोग ॥ सु० ॥ ध० ॥ ५ ॥ द्रव्यजावआश्रवमलटालता । पालता संयमसार ॥ सु० ॥ साची जैनक्रियासंजालता । गालता कर्मविकार ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ सामायिकआदिक गुणश्रेणिमें । रमता चढतेरेजाव ॥ सु० ॥ तीनलोकथी जिन्नत्रिलोकमें । पूजनीयजसुपाव ॥ सु० ॥ ध० ॥ ७ ॥ अधिकगुणी निजतुह्यगुणीथकी । मलता ते मुनिराज ॥ सु० ॥ परमसमाधिनिधि जवजलधिना । तारणतरण जहाज ॥ सु० ॥ ध० ॥ ८ ॥ समकितवंत संयमगुणईहता । ते धरवासमरथ । संवेगपक्षी जावें शोजता । कहेतासाचोरे अर्थ ॥ सु० ॥ ध० ए ॥ आपप्रशंसायें नविमाचता । राचता मुनिगुणरंग ॥ सु० ॥ अप्रमत्तमुनिश्रुततत्त्व पूछवा, सेवे जासुअजंग ॥ सु० ॥ ध० ॥ १० ॥ सर्द्दहणा आगमअनुमोदता । गुणकर संयमचाल ॥ सु० ॥ विवहारें साची ते साचवे ॥ आयतिलाजपिछाण ॥ सु० ॥ ध० ॥ ११ ॥ डुक्करकारीथीअधिकाकह्दे ।

बृहत्कल्प व्यवहार ॥ सु० ॥ उपदेशमाला जगवइअंगमे । गीतारथअधिकार ॥ सु० ॥ ध० ॥ १२ ॥ जाव चरणस्थानक फरस्याविना । न हुवे संयम धर्म ॥ सु० ॥ ते शाने जूठ ते उच्चरे । जे जाणे प्रवचनमर्म ॥ सु० ॥ ध० ॥ १३ ॥ जसलाजें निजसंस्मृतथायवा । परजनरंजनकाज ॥ सु० ॥ ज्ञानक्रिया ङव्यतविधिसाचवे । तेह नहि मुनिराज ॥ सु० ॥ ध० ॥ १४॥ बाह्य दया एकांतें उपदिसे श्रुतआम्नायविहीन ॥ सु० ॥ बगपरेंठगता मूरखलोकने । बहुजमशे तेहदीन । सु० ॥ ध० ॥ १५ ॥ अध्यातमपरिणति साधनग्रही । उचित वदे आचार ॥ सु० ॥ जिन आणा अविराधकपुरुषजे । धन्यतेहनो अवतार ॥ सु० ॥ ध० ॥ १६ ॥ ङव्यक्रियानैमित्तिकहेतुठे । जावधर्म लयलीन ॥ सु० ॥ नैरुपाधिक तो जे निजअंशनी । माने लाजनवीन ॥ सु० ॥ ध० ॥ १७ ॥ परिणतिदोष जणीजेनिंदता, कहेता परिणतिधर्म ॥ सु० ॥ योगग्रंथना जावप्रकाशता । तेह विदारे होकर्म ॥ सु० ॥ ध० ॥ १८ ॥ अल्पक्रिया पण उपकारीपणे । ज्ञानी साधेहो सिद्ध ॥ सु० ॥ देवचंद्र सुविहित मुनि वृंदने। प्रणम्यां सयलसमृद्धि ॥ सु० ॥ ध० १९ इति नवमसाधुस्वरूपवर्णनसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

ते तरिया रे जाइ ते तरिया, जे जिनशासनअनुसरियाजी ॥ जेहकहे सुविहित मुनिकिरिया । ज्ञानामृतरसदरिया जी ॥ ते० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विषयकषायसहूपरहरिया । उत्तम समतावरियाजी ॥ शीलसन्नाहथकीपाखरिया । जवसमुद्रजल-

तरियाजी ॥ ते० ॥ २ ॥ समिति गुप्ति शुं जे परवरिया । आत्मानंदेतरियाजी ॥ आश्रवद्वारसकल आवरिया ॥ वरसंवर-संवरियाजी ॥ ते० ॥ ३ ॥ खरतरमुनिआचरणाचरिया । राजसार गुणगरियाजी ॥ ज्ञानधर्म तपध्याने वसिया । श्रुतरहस्यना रसीयाजी ॥ ते० ॥ ४ ॥ दीपचंदपाठकपदधरिया । विनयरयणसागरियाजी ॥ देवचंद्रमुनिगुणउच्चरिया । कर्मअरिनिर्जरियाजी ॥ ते० ॥५॥ सुरगिरिसुंदर जिनवरमंदिर । शोभित नगरसवाईजी ॥ नवानगर चोमासुंकरीने । मुनिवर गुणथुति गाईजी ॥ ते० ॥ ६ ॥ अरिहंतनो यश जगमेंविचरयो । विस्तरी जससंपदाजी ॥ निर्ग्रंथ वंदन स्तवन करतां । परममंगल सुखसदाजी ॥ ७ ॥ इत्यष्टप्रवचनमाता सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ पंडित श्रीदेवचंद्रजीकृत पंचभावना लिख्यते ॥

॥ स्वस्तिश्रीमंदिरपरम । धर्मधाम सुखठाम । स्यादवाद परिणामधरी । प्रणमुंचेतनराम ॥ १ ॥ महावीरजिनवर नमुं । भद्रबाहु सूरीश । वंदीश्रीजिनभद्रगणी । श्रीहेमेंद्र मुनीश ॥ २ ॥ सदगुरु शासनदेवनमी । बृहत्कल्पअनुसार । शुद्धभावनासाधुनी । भाविसपंचप्रकार ॥ ३ ॥ इंद्रिय योगकषायने । जीपे मुनिनिशंक । इणजीते कुध्यानजय । जाए चित्ततरंग ॥ ४ ॥ प्रथमभावनाश्रुततणी । बीजीतप तीयसत्त्व । तुरियएकत्वभावना । पंचमभाव सुतत्त्व ॥ ५ ॥ श्रुतभावना मनस्थिरकरे । टाले भवनोखेद । तपभावना कायादमे । वमे वेदउमेद ॥ ६ ॥ सत्वभाव निर्भयदशा । निज लघुता एकभाव । तत्त्वभावना आतमगुण । सिद्धि साधनादाव ॥ ७ ॥ ढाल पहली

लोकस्वरूपविचारो आतमारे ए देशी ॥ श्रुतअभ्यास करो मुनिवरसदारे, अतिचार सहुटाल ॥ हीणअधिकअक्षर मतजच्चारोरे । शब्द अर्थ संभाल ॥ श्रु० ॥ १ ॥ सूक्ष्मअर्थ अगोचरदृष्टीथीरे । रूपी रूप विहीण । जेह अतीतअनागत वर्त्ततारे । जाणे ज्ञानीलीन ॥ श्रु० ॥ २ ॥ नित्य अनित्य एक अनेकतारे । सद सद भावस्वरूप ॥ छएभाव एकद्रव्यपरिणम्यारे ॥ एकसमयमांअनूप ॥ ३ ॥ उत्सर्गे अपवाद पदेकरीरे । जाणे बहु श्रुतचाल । वचनविरोध निवारे युक्तिथीरे । थापे दूषणटाल ॥ श्रु० ॥ ४ ॥ द्रव्यार्थिक पर्यार्थिकधरेरे । नय गम भंगअनेक । नय सामान्य विशेषे बहुग्रहेरे । लोकालोकविवेक ॥ श्रु० ॥ ५ ॥ नंदीसूत्रे उपगारीकह्योरे । वली असुच्चाठाम । द्रव्य श्रुतने वांद्योगणधरेरे । भगवइ अंगे नाम ॥ श्रु० ॥ ६ ॥ श्रुत अभ्यासे जिनपदपामियेरे । छठे अंगे साख । श्रुतनाणी केवलनाणीसमोरे । पन्नवणिज्जे भाख ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥ श्रुतधारी आराधकसर्वनोरे । जाणे अर्थस्वभाव । निजआतम परमातमसमग्रहेरे । ध्यावे ते नयदाव ॥ श्रु० ॥ ८ ॥ संयमदरशनते ज्ञानेवधेरे । ध्याने शिवसाधंत । भवस्वरूप चउगतिनो ते लखेरे । तेणे संसार तजंत ॥ श्रु० ॥ ९ ॥ इंद्रियसुखचंचलजाणी तजेरे । नव नव अर्थतरंग । जिम जिमपामे तिम मनउल्लसेरे । वसे न चित्तअनंग ॥ श्रु० ॥ १० ॥ काल असंख्याताना भवलखे रे । उपदेशक पणतेह । परभवसाथीआलंबनखरो रे ॥ चरणविना शिवगेह ॥ श्रु० ॥ ११ ॥ पंचमकाले

श्रुतबलपण घट्यो रे । तोपण एहआधार । देवचंद जिनमतनो तत्त्व एहरे । श्रुतस्युं धरजोप्यार० ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ जी अनुमतिदीधीमाये रोवती ए देशी ॥

॥ रयणावली कनकावली । मुक्तावली गुणरयण । वज्र मध्यने जवमध्यए । तपकरीने हो जीपोरिपुमयण ॥ १ ॥ नवि-यण तपगुणआदरो । तपतेजेरे छीजे सहुकर्म । विषय विकार-सहुटले । मनगंजेरे नंजे नवमर्म ॥ नवि० ॥ २ ॥ जोगजय ईंद्रियजय तदा । तपजाणो कर्म सूरणसार ॥ ववहाणे योगडु-हाकरी । शिवसाधेरे शुधाअणगार ॥ नवि० ॥ ३ ॥ जिम-जिम प्रतिज्ञाद्रढथको । वैरागीउं तपसी मुनिराय । तिमतिम अशुनदलछीजवे । रवितेजेरे जिम शीतविलाय ॥ नवि०॥४॥ जे निक्षुपडिमाआदरे । आसनअकंपसुधीर । अतिलीनसम-तानावमां । तृणनीपेरे हो जाणंतशरीर ॥ नवि० ॥ ५ ॥ जिणसाधु तपतरवारथी । सूज्यो छे हो अरिमोहगयंद । तिण साधुनो हुंदासलुं । नित्यवंदुंरे तसपयअरविंद ॥ नवि० ॥ ६ ॥ आचारसूयगडांगअंगमां । तिमकह्यो नगवईअंग । उत्तराध्य-यनगुणतीसमें । तपसंगे हो सहुकर्मनोनंग ॥ नवि० ॥ ७ ॥ ते डुविध डुक्करतपतपे । नवपासआसविरक्त, धनसाधु मुनिढं-ढणसमा । ऋषिखंधकहो तीसगकुरुदत्त ॥ नवि० ॥ ८ ॥ निज-आतमकंचननणी । तपअग्निकरी सोधंत । नवनविलब्धि बल लते । उपसर्गेहो तेसहंत महंत ॥ नवि० ॥ ए ॥ धन्यतेह जेधनगृहतजी । तनस्नेहनो करीछेह । निसंगवनवासे वसे । तपधारीहो ते अनिग्रहगेह ॥ नवि० ॥ १० ॥ धन्यतेह गछगु-

फातजी । जिनकल्पनावअफंद । परिहारविशुद्धि तपतपे । तेवं-
देहो देवचंदमुनींद ॥ नवि० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ३ जी हिव राणी पदमावती ॥ एदेशी ॥

रेजीव साहसआदरो । मतथाउंदीन । सुखदुःख संपदआ-
पदा । पूरवकर्मआधीन ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ क्रोधादिकवशे रण-
समे । सह्यादुःखअनेक । तेजोसमतामां सहे । तोतुज खरोवि-
वेक ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ सर्वअनित्य अशाश्वतो । जेहदीसे-
एह । धनतनसयणसगासहु । तिणस्युं श्योनेह ॥ रे जीव०
॥ ३ ॥ जिमबालक वेलूतणा । घरकरीयरमंत । तेहछते अथ-
वाढहे । निजनिजग्रह जंत ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ पंथीजेमसरा-
हमां । नदीनावनी रीति । तिमए परियणतोमिल्यो । तिणथी-
शीप्रीति ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥ ज्यांस्वार्थ त्यांसहुसगा । विण-
स्वार्थदूर । परकाजे पापेनले । तुंकेमहोयसूर ॥ रे जीव० ॥ ६ ॥
तजि बाहिरमेलावमो । मिलियोबहुवार । जेपूरवमिलियो
नहि । तिणस्युं धरप्यार ॥ रेजीव० ॥ ७ ॥ चक्रीहरिबल प्रति-
हरी, तसविभवअमान । तेपणकालेसंहस्या । तुज धनश्यो-
मान ॥ रेजीव० ॥ ८ ॥ हाहाहुंतो तुंफिरे । परियणनी चिंत ।
नरकपड्यां कहे ताहरी । कोणकरसे चिंत ॥ रे जीव० ॥ ए ॥
रोगादिकदुःखऊपने । मनअरतिमधरेव । पूरवनिजकृतकर्मनो ।
एअनुभवहेव । रेजीव० ॥ १० ॥ एहशरीरअशाश्वतो । खिण-
मेंसीजंत । प्रीतिकिसितेऊपरे । जेस्वारथवंत । रेजीव० ॥ ११ ॥
ज्यांलगे तुज इणदेहथी । छेपूरवसंग । त्यांलगेकोटीउपायथी ।
नवि थायभंग ॥ रे जीव० ॥ १२ ॥ आगलपाछलचिंतुंदिने,

जे विणसीजाय । रोगादिकथी नविरहे । कीधेकोटीउपाय ॥ रेजीव० ॥ १३ ॥ अंतेपण एनेतज्यां । थायशिवसुख । तेजोछूटे आपथी । तोतुजने स्योडुःखः ॥ रेजीव० ॥ १४ ॥ एतनविणसे ताहरे नविकांइहाण । जोज्ञानादिकगुणतणो । तुजआवेजाण ॥ रेजीव० ॥ १५ ॥ तुंअजरामर आतमा । अविचलगुणराण । क्षणभंगुरआदेहथी । तुज कीहांपिछाण ॥ रे जीव० ॥ १६ ॥ छेदनभेदनताडना । वधबंधनदाह । पुद्गलने पुज्ञलकरे । तुंतो अमरअगाह ॥ रेजीव० ॥ १७ ॥ पूर्वकर्म उदयेसही । जे वेदनाथाय । ध्यावेआतम तिणसमे । तेध्यानीराय ॥ रेजीव० ॥ १८ ॥ ज्ञानध्याननीवातडी । करणीआसान । अंतसमे आपद पड्यां । विरलाकरेध्यान ॥ रेजीव० ॥ १९ ॥ अरतिकरी डुःखभोगवे । परवसजेमकीर । तोतुजजाणपणातणो । गुणकेवोधीर ॥ रेजीव० ॥ २० ॥ शुद्धनिरंजननिरमलो निजआतमभाव । तेविणसे कहे डुःखकिश्यो । जेमिलियो दाव ॥ रेजीव० ॥ २१ ॥ देहगेह भाडातणो । एआपणो नाहिं । तुज गृहआतमज्ञानए । तिणमाहेसमाहि ॥ रेजीव० ॥ २२ ॥ मेतारजसुकोसलो । वलिगजसुकुमाल । सनतकुमारचक्रीपरे । तनममताटाल ॥ रे जीव० ॥ २३ ॥ कष्टपड्यां समतारमे । निजआतमध्याय । देवचंद्र तिण मुनितणा । नितवंडुपाय ॥ रे जीव० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ४ थी प्राणी धरीये संवेग विचार ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानध्यानचारित्रनेरे । जोद्दढकरवाचाहे । तो एकाकी विहरतारे । जिनकल्पादिसाहेरे । प्राणी एकलभावना भाव ।

शिवमारगसाधनदावरे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ साधुजणी गृहवास-
नीरे । बूटीममतातेह । तोपणगच्छवासीपणोरे । गणगुरुपर छे
नेहरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ वनमृगनीपेरे तेहथीरे । छोमीसकल-
प्रतिबंध । तुंएकाकीअनादिनोरे । किणथीतुजसंबंधरे ॥ प्राणी०
॥ ३ ॥ शत्रुमित्रतासर्वथीरे । पांमीवारअनंत । कोणसज्जनदु-
स्मन किस्योरे । काले सहुनोअंतरे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ बांधेक-
रमजीवएकलोरे । जोगवेपण तेएक । किणऊपर किणवातनी-
रे । रागद्वेषनी टेकरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ जोनिजएकपणुंग्रहेरे ।
छोमी सकलपरजाव । शुद्धातमज्ञानादिशुंरे । एकस्वरूपेंजावरे ॥
प्राणी० ॥ ६ ॥ आव्योछेतुं एकलोरे । जाइसपण तुं एक ।
तोए सर्वकुटुंबथीरे । प्रीतिकीसीअविवेकरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥
वनमाहे–गजासिंहादिथीरे । विहरतां न टले जेह । जिणआ-
सनरविआथमेरे । तिणआसननिशिछेहरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥
आहारग्रहे तपपारणेरे । करमां लेप विहीन । एकवार-
पाणीपीवतांरे । वनचारीचित्तअदीनरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥
एहदोषपरग्रहणथीरे । परसंगेगुणहाण, परधनग्राहीचोरतेरे ।
एक पणो सुखठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ परसंयोगथीबंधछेरे ।
परवियोगथीमोक्ष । तेणे तजीपरमेलावमोरे । एकपणो निज-
पोषरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ जन्म न पाम्यो साथकोरे । साथनम-
रसेकोय । दुःख वेंचाउ को नहिरे । क्षणजंगुर सहु लोयरे ॥
प्राणी० ॥ १२ ॥ परिजनमरतो देखीनेरे । शोगकरे जनमूढ ।
अवसरेवारो आपणोरे । सहुजननीए रूढरे ॥ प्राणी० ॥ १३॥
सुरपति चक्री हरिबलीरे । एकला परजवजाय । तन धन परि-

जनसहुमिलिरे । कोईसखाइनथायरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ एक-आतमा माहरोरे । ज्ञानादिकगुणवंत । बाह्ययोगसहुअवरछेरे। पांम्योवारअनंतरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥ करकंडू नमी नहगइरे। डुम्मुह प्रमुखऋषिराय । मृगापुत्रहरिकेषीनारे । वंदुहुं नितपायरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥ साधु चिलातीसुतजलोरे । वली अनाथीतेम । एममुनिगुण अनुमोदतारे । देवचंद्र सुखखेमरे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

॥ ढाल ५ मी एणीपरेचंचलआउखो ॥ एदेशी ॥

॥ चेतनए तनकारिमो । तुमेध्यावोरे । शुद्धनिरंजनदेव । जविक तुमे० ॥ शुद्धस्वरूपअनूप ॥ जविकतुमे० ॥ १ ॥ नरजव श्रावककुललह्यो तुमे० । लाधोसमकितसार जवि० । जिनआगमरुचिशुंसुणो तुमे० । आलसनींदनिवार ॥ जवि० ॥ २ ॥ समयांतरसहजावनो तुमे० ॥ दर्शनज्ञान अनंत जवि० ॥ आतमजावे थिरसदा । तुमे० ॥ अक्षय चरणमहंत ॥ जवि० ॥ ३ ॥ तीनलोक त्रिहुंकालनी तुमे० ॥ परिणतितीनप्रकार जवि० ॥ एकसमये जाणेतिणे । तुमे० ॥ नाणअनंतअपार ॥ जवि० ॥ ४ ॥ सकलदोषहर शाश्वतो तुमे० ॥ वीरजपरमअदीन जविक० ॥ सूक्ष्मतनुबंधन विना तुमे० ॥ अवगाहनास्वाधीन ॥ जवि० ॥ ५ ॥ पुद्गल सकलविवेकथी तुमे० । शुद्धअमूर्त्तिरूप जवि० ॥ इंद्रिय सुखनिस्पृहथइ तुमे० ॥ अकथअबाहस्वरूप ॥ जवि० ॥ ६ ॥ द्रव्यतणापरिणामथी तुमे० ॥ अगुरुलघुत्व अनित्य जवि० ॥ सत्यस्वजावमयीसदा तुमे० ॥ गेमीजावअसत्य ॥ जवि० ॥ ७॥ निजगुणरमतोरामए तुमे०॥

सकलअकलगुणखाण जवि० ॥ परमातम परज्योतिए तुमे० ॥ अलखअलेप वखाण ॥ जवि० ॥ ८ ॥ पंचपूज्यथीपूज्यए तुमे० ॥ सर्वध्येयथी ध्येय जवि० ॥ ध्याताध्यानरु ध्येयए तुमे० ॥ निश्चे एकअजेय ॥ जवि० ॥ ए ॥ अनुजवकरतांए-हनो तुमे० ॥ थाय परमप्रमोद जवि० ॥ एकस्वरूपअज्यासथुं तुमे० ॥ शिवसुखछे तसगोद ॥ जवि० ॥ १० ॥ बंध अबंध ए आतमा तुमे० ॥ करता अकरताएह जवि० ॥ एहजोगता अजोगता तुमे० ॥ स्यादवाद गुणगेह ॥ जवि० ॥ ११ ॥ एक अनेक स्वरूपए तुमे० ॥ नित्यअनित्यअनादि जवि० ॥ सद-सदजावे परिणम्या तुमे० ॥ मुक्तसकलउन्माद ॥ जवि०॥१२॥ तपजपकिरियाखपथकी तुमे० ॥ अष्टकरम न विलाय जवि० । ते सहु आतमध्यानथी तुमे० ॥ खिणमे खेरुथाय ॥ जवि०॥१३॥ शुद्धातमअनुजवविना तुमे० ॥ बंधहेतु शुजचाल जवि० ॥ आत-मपरिणामे रम्या तुमे० ॥ एहज आश्रवपाल ॥ जवि० ॥ १४ ॥ इमजाणी निजआतमा तुमे० ॥ वरजी सकलउपाध जवि० ॥ उपादेयअलंबने तुमे० ॥ परम महोदयसाध ॥ जवि० ॥ १५ ॥ जरत इलासुत तेतली तुमे० ॥ इत्यादिक मुनिवृंद जवि० ॥ आत-मध्यानथी ए तर्या जवि० ॥ प्रणमे ते देवचंद ॥ जवि० ॥१६॥

॥ ढाल ६ ट्ठी शेलग सेत्रुंजे सिद्धथया ॥ एदेशी ॥

जावना मुक्तिनिशाणीजाणी । जावो आशतिआणीजी । योगकषाय कपटनीहाणी । थाये निर्मलजाणीजी ॥ जावना० ॥ १ ॥ पंचजावना ए मुनि मनने ॥ संवरखाणीवखाणीजी । बृहत्कल्पसूत्रनीवाणी दीठीतेमकहाणीजी ॥ जावना० ॥ २ ॥

कर्मकतरणी शिव नीशरणी । जाण ठाणअनुसरणीजी । चेतनराम तणीएघरणी । ज्ञवसमुद्रदुःखहरणीजी ॥ ज्ञव० ॥३॥ जयवंतापाठकगुणधारी । राजसार सुविचारीजी । निर्मल ज्ञानधर्मसंज्ञाली । पाठक सहुहितकारीजी ॥ ज्ञावना० ॥ ४ ॥ राजहंससुगुरु सुपसाये । देवचंद्र गुणगावेजी । ज्ञविक जीव जे ज्ञावनज्ञावे । तेह अमित सुखपावेजी । ज्ञावना० ॥ ५ ॥ जेसलमेर साह सुत्यागी । वर्द्धमान वमज्ञागीजी । पुत्रकलत्रसकलसुज्ञागी । साधु गुणना रागीजी ॥ ज्ञाव० ॥ ६ ॥ तसआग्रहथीज्ञावनाज्ञाइ । ढाल बंधमां गाइजी । ज्ञणसे गुणसे जेएह ज्ञाता । लहेसे ते सुख साताजी ॥ ज्ञाव० ॥ ७ ॥ मनशुद्धे पंचे ज्ञावनाज्ञावो, पावन निजगुणपावोजी । मनमुनिवर गुणसंगवसावो । सुख संपति ग्रहथावोजी ॥ ज्ञावना० ॥ ८ ॥ इति श्रीपंमितदेवचंद्रजीकृतसाधुनी पंच ज्ञावना संपूर्णा ॥

॥ अथ पंडित श्रीदेवचंद्रजीकृत प्रभंजना महासतीनीसझाय लिख्यते ॥

॥ नाटकीयानी देशी ॥ गिरिवैताढ्यनेऊपरे । चक्रांका नयरीरे लो । अहोचक्रा० ॥ चक्रायुधराजातिहां । जीत्या सवीवयरीरे लो ॥ अहो० ॥ १ ॥ मदनलता तससुंदरी । गुणशील अचंज्ञारे लो ॥ अहो० ॥ पुत्रीतासप्रज्ञंजना । रूपे रतिरंज्ञारे लो ॥ अहो० ॥ २ ॥ विद्याधरज्ञूचरसुता, बहुमली एकपंतेरे लो ॥ अहो० ॥ राधा वेधे मंमाविउं । वरवरवा खंतेरे लो ॥ अहो० ॥ ३ ॥ कन्याएकहजारथी । प्रज्ञंजना चालीरे लो ॥ अहो० ॥ आर्यखंममां आवतां, वनखंमविचालीरे लो ॥

अहो० ॥ ४ ॥ निग्रंथी सुप्रतिष्ठिता । बहुगुणणी संगेरे लो ॥ अहो० ॥ साधुविहारेविचरती । वंदे मनरंगेरे लो ॥ अहो० ॥ ५ ॥ आर्या पूछे एवमो । उमाउं स्योछेरे लो ॥ अहो० ॥ विनये कन्यावीनवे । वरवरवाइछेरे लो ॥ अहो० व० ॥ ६ ॥ एइयोहितजाणोतुंमें । एहथी नविसिद्धिरे लो ॥ अहो ए० ॥ विषयहलाहलविषतिहां । सीअमृतबुद्धिरे लो ॥ अहो० ॥ सी० ॥ ७ ॥ जोगसंगकारमाकह्या । जिनराजसदाइरे लो ॥ अहो जि० ॥ रागद्वेष संगेवधे, जवज्रमण सदाइरे लो ॥ अहो ज० ॥ ८ ॥ राजसुताकहेसाचए । जे जाखोवाणीरे लो ॥ अहो जे० ॥ पणएजूलअनादिनी, किम जाएछंमाणीरे लो ॥ अहो कि० ॥ ए ॥ जेहतजे तेहधन्य छे । सेवक जिनजी-नारे लो ॥ अहो से० ॥ अमेतस पुद्गल रसरम्या । मोहे लयलीनारे लो ॥ अहो मो० ॥ १० ॥ अध्यातमरसपानथी । पीनामुनिरायारे लो ॥ अहो पी० ॥ ते परपरिणतिरतीतजी । निजतत्त्वसमायारे लो ॥ अहो नि० ॥ ११ ॥ अमनेपणकरवो घटे । कारणसंयोगेरे लो ॥ अहो का० ॥ पणचेतनतापरिणमे, जरु पुद्गल जोगेरे लो ॥ अहो ज० ॥ १२ ॥ अवरकन्याप-णजच्चरे । चिंतित हवेकीजेरे लो ॥ अहो चि० ॥ पछी परम-पदसाधवा । उद्यमसाधीजेरे लो ॥ अहो उ० ॥ १३ ॥ प्रज्ज-जनाकहे हे सखी । ए कायरप्राणीरे लो ॥ अहो ए० ॥ धर्म-प्रथमकरवोसदा । देवचंद्रनीवाणीरे लो ॥ अहो दे० ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ कहेसाहुणी सुणकन्यकारे । धन्या ए संसारकलेश । एहनेजेहितकरीघणेरे । धन्या ते मिथ्याआदेशरे ।

सुज्ञानीकन्या शांत्तसुहितउपदेश । जगहितकारीजिनेश्वछे रे कहे० ॥ कीजेतसुआदेशरे ॥ सुज्ञा० ॥ १ ॥ सां० ॥ खरडीनें-वली धोयवुंरे क० ॥ तेह न शिष्टाचार । रतनत्रयी साधनक-रोरे ॥ क० ॥ मोहाधीनता वार रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ २ ॥ जेह पुरुषवरवातणीरे क० ॥ इछे छे ते जीव । स्येसंबंधपणेजणोरे क० ॥ धारीकालसदीवरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ३ ॥ तवप्रजंजना-चिंतवेरे अप्पा ॥ तुं छे अनादिअनंत । तेपणमुज सिद्धसत्ता-समोरे अ० ॥ सहज अकृतमहंतरे ॥ सु० सां० ॥ ४ ॥ जव-जमता सवी जीवथीरे अप्पा । पाम्योसर्वसंबंध । मातपिता-भ्रातासुतारे अप्पा । पुत्रवधूप्रतिबंध रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ५ ॥ स्युंसंबंधकहुंइहांरे अप्पा ।शत्रु मित्रपणथाय। मित्रशत्रुता वली-लहेरे अप्पा । एमसंसरणस्वजावरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ६॥ सत्ता-समसविजीवछेरे अप्पा । जोतांवस्तुस्वजाव । एमाहरो एहपा-रको रे अप्पा । सविआरोपितजावरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ७ ॥ गुरुणीआगल एहवुंरे अप्पा । फुवुकिमकहेवाय । स्वपरविवे-चनकीजतांरे अप्पा । माहरोकोइ नथायरे ॥ सु० ॥ सां० ॥८॥ जोग्यपणुं पण जूलथीरे अप्पा । माने पुद्गल खंध । हुंजोगी निजजावनो रे अप्पा । परथीनाहिं प्रतिबंधरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ॥ ९ ॥ सम्यक्ज्ञाने वहेंचतांरे अप्पा । हुं अमूर्त्तचिद्रूप ॥ कर्त्ताजोक्तातत्त्वनोरे अप्पा । अक्षयअक्रिय अरूपरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १० ॥ जुदो सर्व विजावथीरे अप्पा । निश्चय निजअ-नुजूत । पूर्णानंदी परमएहरे अप्पा । नहिं परपरिणतिरीतरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ११ ॥ सिद्धसमो एसंग्रहेरे अप्पा । पररंगेपख-

टाय, संगांगीज्ञावेकरीरे अप्पा । अशुद्धविज्ञावअपायरे ॥ सु
॥ सां० ॥ १२ ॥ शुद्धनिश्चय नयेकरीये अप्पा । आतमज्ञा
अनंत । तेहअशुद्ध नयेकरीरे अप्पा । दुष्टविज्ञावमहंतरे
सु० ॥ सां० ॥ १३ ॥ द्रव्यकर्मकर्त्ताथयोरे अप्पा । नयअशु
व्यवहार । तेह नीवारोस्वपदेरे अप्पा । रमतांशुद्धव्यवहाररे
सु० ॥ सां० ॥ १४ ॥ व्यवहारेसमरेथकीरे अप्पा । स
निश्चयाचार । प्रवृत्तिसमारे विकल्पनेरे अप्पा । तेहस्थिरप
णती सार रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १५ ॥ पुज्ञलने परजीवथ
अप्पा । कीधो जेदविज्ञान, बाधकता दूरेटलीरे अप्पा । ह
कुण रोकेज्ञानरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १६ ॥ आलंबनज्ञावनव
अप्पा । धरमध्यानप्रगटाय । देवचंदपदसाधवारे अप्पा । ए
जशुद्धजपाय रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १७ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग धन्याश्री ॥ आयोआयोरे । अनु
वआतमचोआयो । शुद्धनिमित्तआलंबनज्ञजतां, आतमा लं
नपायोरे ॥ आ० ॥ १ ॥ आतमखेत्रे गुणपर्याय विधि । ति
जपयोगरमायो । परपरिणति पररीतेजाणी । तास विकल्प
मायोरे ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रथकत्ववितर्कसकलआरोही । गु
गुणीएकसमायो । परजयद्रव्य वितर्क एकता । दुरधरमोह
पायोरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अनंतानुबंधीसुज्ञटनेकाढी । दर्शनम
हगमायोरे । तिरिगतिहेतुप्रकृतिक्षयकीधी थयोआतमरसरा
रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ द्वितीयतृतीयचोकमीखपावी । वेदयुगल
आयो । हास्यादिकसत्ताथीध्वंसी । जदयवेदमिटायोरे ॥ आ
॥ ५ ॥ अईअवेदीने अविकारी । हणयोसंजलनोकसायो । मा

मोहचरणक्षायककरी । पूरणसमतासमायोरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ घन घातित्रिकयोधालक्षीया । ध्यानएकत्वनेधायो । ज्ञानावरणादिकजटपक्षिया । जीतनिशाणघूरायोरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ केवलज्ञानदर्शनगुणप्रगट्यो । महाराजपद पायो । शेषअघातिकर्म क्षीण दल, उदयअबाधदिखायोरे ॥ आ० ॥ ८ ॥ सयोगीकेवली-थयाप्रजंजना, लोकालोक जणायो । तीनकालनी त्रिविधवरतना । एकसमय उलखायो रे ॥ आ० ॥ ए ॥ सर्वसाधवीयें बंदनाकीधी । गुणीविनय उपजायो । देव देवीतवस्तवेगुणस्तुति । जगजयपमह वजायोरे ॥ आ० ॥ १० ॥ सहसकन्यकानें दीक्षादीधी । आस्रवसर्वतजायो । जगउपकारी देशविहारी । शुद्ध धर्म दीपायोरे ॥ आ० ॥ ११ ॥ कारणयोगे कारजसाधे । तेह चतुरगाइजे । आतमसाधननिरमलसाधे । परमानंदपाइजेरे ॥ आ० ॥ १२ ॥ एहअधिकारकह्योगुणरागे । वैरागे मन जावी । वसुदेवहिंमतणेअनुसारे, मुनिगुणजावनाजावीरे ॥ आ० ॥ १३ ॥ मुनिगुणथुणतां जावविशुद्धे, जावविच्छेद न थावे । पूर्णानंदइहांथीउलसे । साधनशक्तिजमावेरे ॥ आ० ॥ १४ ॥ मुनिगुणगावो जावनाजावो । ध्यावो सहजसमाधि । रत्नत्रयीएकत्वेखेलो । मेटीउपाधिअनादिरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ राजसारपाठक उपगारी । ज्ञानधर्मदातारी । दीपचंद्र पाठक खरतरवर, देवचंद्रसुखकारीरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ नयरलींबमीमांहेरहीने । वाचंयमस्तुतिगाइ । आतम रसीकश्रोताजनमनने, साधनरुचि उपजाइरे ॥ आ० ॥ १७ ॥ इमउत्तमगुणमालागावो । पावोह-

र्षवधाइ । जैनधर्म मारगरुचिकरतां, मंगललीलसदाइरे ॥ श्रा० ॥ १० ॥ श्रीपंम्रितदेवचंद्रजीकृतप्रन्नंजनामहासतीसज्का-यसंपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद् सज्झाय ॥

कृपानाथमुजविनतिश्रवधार ॥ एदेशी ॥ सिद्धचक्रफलदा-खव्योजी, श्रीगौतमगणधार, नृपश्रीपालश्राराधिनेजी, पामशे-न्नवनोपार, सुज्ञानि नवपदमनमांधार, जिमलहोसुख श्रपार ॥ सुज्ञानिन० ॥ १ ॥ तीनतत्वश्राराधसोजी, देवगुरुनेधर्म, दोयतीनचक्रन्नेदछेजी, जाणो नवपदमर्म ॥ सुज्ञानिन० ॥ २ ॥ श्ररिहंत सिद्ध दोयदेवनाजी, न्नेदलहो सुजाण, श्राचारज पाठकवलिजी, मुनि त्रण गुरुतत्वजाण ॥ सुज्ञा० ॥ ३ ॥ दर्शनज्ञान-चारित्रछेजी, तपचोथोधर्मन्नेद, एत्रणतत्वनाजाणजोजी, नव-पदसेवो उमेद ॥ सु० ॥ ४ ॥ कालश्रतीतजेसिद्धथयाजी, वर्त-मानमांथाय, श्रनागतमांशिवपामसैजी, ते नवपदसुपसाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ नवपदनापरन्नावथीजी, नवनिधिप्रगटेसार, श्रा-धिव्याधिदूरेटलेजी, कहेश्रीजगदाधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ नवश्रां-बिलश्रोलीकरीजी, जपतां नवपदजाप, त्रणटंकदेववंदनकरोजी, काउसग्गथी जायपाप ॥ सु० ॥ ७ ॥ नवश्रोली विधि-युतकरीजी, उजमणो निरधार, गुरु मुखथी विधिजाणिनेजी, संघन्नगतिसुखकार, सु० ॥ ८ ॥ नवपदध्याता श्रातमाजी, ते नवपदकहिवाय, जिनकृपाचंद्रसूरिसेवतांजी, निरुपाधिकसु-खथाय ॥ सु० ॥ ९ ॥ इतिनवपद स० ॥

॥ अथ बीजनीसज्झाय लिख्यते ॥

॥ पणिहारीनी देशी ॥

बीजआराधोजविजना म्हारावालाजी, जिम पामो जवपार। वालाजी ॥ दोयजेदजिनवरकह्या। म्हारावालाजी ॥ धर्मतणा दिलधार ॥ वालाजी ॥ बी० ॥ १ ॥ देसविरतिश्रावकतणो ॥ म्हा० ॥ बारे जेद कहेवाय ॥ वा० ॥ सर्वविरति बीजोसही ॥ म्हा० ॥ महाव्रतपांचमनजाय ॥ वा० ॥ बी० ॥ २ ॥ दोय सिक्षा ग्रहवी सदा ॥ म्हा० ॥ ग्रहणासेवनसार ॥ वा० ॥ ग्रहणा गुरुमुखजाणीये ॥ म्हा० ॥ आसेवनसुखकार ॥ वा० ॥ बी० ॥ ३ ॥ समकित दोयप्रकारनो ॥ म्हा० ॥ रूपीअरूपी-जाण ॥ वा० ॥ क्षयोपशमरूपी कह्यो ॥ म्हा० ॥ जिन्नजिन्न अरूवीआण ॥ वा० ॥ बी० ॥ ४ ॥ डुविह जीवजगजाणीये ॥ म्हा० ॥ संसारीमुक्ति प्रकार ॥ वा० ॥ संसारीबहुजेदना ॥ म्हा० ॥ पुहवीआदिडुगबार ॥ वा० ॥ ५ ॥ निर्वाणना पन्नरे-विध ॥ म्हा० ॥ जिनअजिनादिसार ॥ वा० ॥ सादिअनंत-स्थितिकही ॥ म्हा० ॥ ध्यावोजविकसुखकार ॥ वा० ॥ बी० ॥ ६ ॥ नयडुविधप्रजुजाखिया ॥ म्हा० ॥ द्रव्यपरयायविचार ॥ वा० ॥ द्रव्यजेद षट्सासया ॥ म्हा० ॥ पर्यायअनंतासार ॥ वा० ॥ बी० ॥ ७ ॥ उपयोगद्विविधवखाणीये ॥ म्हा० ॥ साकार ज्ञानसुजाण ॥ वा० ॥ अनाकर दरसणकह्यो ॥ म्हा० ॥ जेद ए मनमां आण वा० ॥ म्हा० ॥ बी० ॥ ८ ॥ उपवासा-दिककीजीये ॥ म्हा० ॥ धर्म सुकल ध्यावो ध्यान ॥ वा० ॥

जिनकृपाचंद्रसूरिजणे ॥ म्हा० ॥ मुक्तितणोनिदान ॥ वा० ॥ वी० ॥ ए ॥ इतिबीजनी सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ पांचमनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ कृपानाथमुजवीनतिअवधार ए देशी ॥

सुगुरुचरणप्रणमीकरीजी । सुयदेवी सुपसाय । ज्ञानप्रगटकरवाजणीजी । कहुं नाणसज्झाय । जविकजननाणबझोसंसार ॥ १ ॥ नाणजवनदीपककह्योजी । सर्वजीव सुखकार । विनानाणनरजवकह्योजी । पशुतणे अनुकार ॥ ज० ॥ ना० ॥ २ ॥ नाणथी शिवसुखसंपजेजी । नाणथीपरमकल्याण । वरदत्तनेगुणमंजरीजी । एहचरित्रमनआण ॥ ज० ॥ ना० ॥ ३ ॥ नाणविराध्योबिहुजणाजी । पुरवजवमां तेह । जणवोगुणवोनिषेधिनेजी । फळपाम्योतिणएह ॥ ज० ॥ ना० ॥ ४ ॥ आसातनाकरेनाणनीजी । मनथी जेह नरनार । सून्यचित्तमनमूढताजी । अविवेकीनिरधार ॥ ज० ॥ ना० ॥ ५ ॥ वचनेजेआशातनाजी । अवरणवादवदेजेह । तोतामुंगा बोबडाजी । खलितवचनहोवे तेह ॥ ज० ॥ ना० ॥ ६ ॥ त्रिकरणकरीविराधनाजी । नाणनीकरे दुःखदाय । संसारसागरमां रुलेजी । पजणेश्रीजिनराय ॥ ज० ॥ ना० ॥ ७ ॥ कायाकरी विराधनाजी । करताजेमतिहीण । कोढी पांडु पांगुलाजी । आंधला होवे दुःखलीन ॥ ज० ॥ ना० ॥ ८ ॥ नाणसेवि सुखियाथयाजी । बहुलाजनसंसार ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदाजी । नाणनमो सुखकार ॥ ज० ॥ ना० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ आठमनीसज्झाय ॥

॥ समकितमूलगुंभारेपेसताजी ए देशी ॥

आठमतपसेवो भवि सुभमनेजी । आणीभाव अपारजी । आठकरमनेजीतवाकारणेजी । ए तपसेविलहोसुखसारजी ॥ आ० ॥ १ ॥ आठप्रमादतजीने पाळिएजी । प्रवचनमाता आठजी ॥ पांचसुमति त्रणगुपतिकहीजी । एहथीहोवेसंजम-ठाठजी ॥ आ० ॥ २ ॥ इरियासमति वरदत्तमुनि करिजी । भाषा संगतमुनिसुविचारजी । एषणानंदिषेणढजवालतोजी । सोमिल चोथीनो अधिकारजी ॥ आ० ॥ ३ ॥ मुनिचंद्रपारि-ठावणसुमतितणोजी । कोंकण मनगुप्तिदृष्टांतजी ॥ गुणदत्तव-चननो ढपयोगी थयोजी । अरणक कायगुप्ति सुखशांतजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ इंद्रियआठने वसकरी साधियेजी । आठमी, गतिगुणखानजी ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवनाजी, वचनामृत मनआणजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ एकादसीनीसज्झाय लिख्यते ॥

॥ वीरा म्हारा गजथकी ऊतरो ॥ ए देशी ॥

इग्यारस आराधिये । विधियुत संजमवंतारे । अंगइग्यारह आराधवा । एतिथी सेवो ढजमंतारे ॥ इग्या० ॥ १ ॥ ए तिथीकर्मक्षय कारणी । भाखीश्रीजिनभाणोरे । कल्याणक बहुलाथया । ते सहु दिलमां आणोरे ॥ इग्या० ॥ २ ॥ अर-नाथदीक्षाआदरी । नमिलह्यो केवलनाणरे । जन्मदीक्षाकेव-लत्रण । मल्लिजिनना कल्याणरे ॥ इग्या० ॥ ३ ॥ मागसर सुदि इग्यारसे । भरत पांचमा जाणोरे । एरवत क्षेत्रमां इमहीज ।

कल्याणकपहि चानोरे ॥ इग्या० ॥ ४ ॥ दसक्षेत्रना पञ्चास छे। तीनकालना गणीयेरे । दोढसोकल्याणकथया । समरण करी दुःखहरियेरे ॥ इग्या० ॥ ५ ॥ एटलाबीजीइग्यारस । त्रणकालनाजाणीरे । त्रणसोकल्याणकनमो । गुणनोकरोगुणखानीरे ॥ इग्या० ॥ ६ ॥ अठपोहरी पोसो करी । मौनव्रत लइजावेरे । चउविहारउपवासथी । अशुभकरम मिटजावैरे ॥ इग्या०॥७॥ सुव्रतशेठपोसो कर्यो । मौनसहितमनरंगेरे । अग्निनो उपद्रव मट्यो । सुजस लह्यो सुखसंगेरे ॥ इग्या० ॥ ८ ॥ चोरथंभाना-तपथकी । अचरजथयोसहु जनमेरे । राजादिके मोटो कीयो । सुव्रत सुकृत करमेरे ॥ इग्या० ॥ ए ॥ खरतरगच्छगुणमणी समो । जिन आणारंगधारिरे । जिनकृपाचंद्रसूरिभणे । आगमसेवोइ-कतारीरे ॥ इग्या० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ पूनमनी सझाय ॥

[मेतारज मुनिवर धन २ तुम अणगार चा०] सुगुरु चरण प्रणमीकरीजी, सुयदेवी सुपसाय ॥ चारित्रतिथि आराधवाजी, कहुं पूनिम सिझाय । गुणवंताभविजननिसुणोजिनवरवाणि ॥ १ ॥ रिषभजिनेसरजगधणिजी विचरंतादेसविदेश, सेत्रुंज-सिखरेसमोसस्याजी, आव्या इंद्रनरेश ॥ गु० ॥ २ ॥ सम-वसरणसुरवररच्योजी, बेठात्रिजगभाण ॥ तीरथमहिमादाखि-नेजी, पुंडरीक मनआण ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रभुभाखे गणधर भणीजी, इणतीरथपरभाव ॥ सिवकमलातुमे पामसोजी, संवरी आतमस्वभाव ॥ गु० ॥ फागुणशुदिपूनिमदिनेजी, अणसणकी-धोसुजाण । पांचक्रोरूपरिवारसुंजी, पुंडरीक सुखखाण ॥ गु०

॥ ५ ॥ चेत्रीदिनकेवललहीजी, पाम्योज्ञवनोपार ॥ पुंमरीकते-हथीथयोजी, नाम एहसुखकार ॥ गु० ॥ ६ ॥ चैत्रीदिनतप-कीजीयेजी । पूजाविविध प्रकार ॥ दशवीशत्रीशचालीसनीजी । पंचासनी करोसार ॥ गु० ॥ ७ ॥ कार्त्तिकीपूनिमदिनेजी, ज्ञाविरू वारिखिल्लजाण । सिद्धिवधुरंगेवस्याजी, दशक्रोमीगुण-खाण ॥ गु० ॥ ८ ॥ पूनिमदिनचारित्रनोजी, आराधनसुवि-चार, ज्ञावज्ञले आराधताजी, पामेज्ञवनोपार ॥ गु० ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचारित्रनीजी, तिथीज्ञाखी जिनराज, सेवंतासिवसं-पजेजी, सारेवंछितकाज ॥ गु० ॥ १० ॥ चंद्रोदयसमजाणि-येजी, पूरणधरमसुजाण ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदाजी ॥ सेवो-गुणमणिखाण ॥ ११ ॥ इति पूनिमसज्झाय संपूर्णा ॥

॥ घुमर देशी ॥ सरसति सामणी समरीने, एतो सद्गुरू-चरण नमीनेहे माय, पर्युषण गुण वरणवुं, एतो शास्त्र मांहि सुणीनेहे माय ॥ १ ॥ पर्व आराधो ज्ञवियणा, एतो सहु पर्वमां सिरदार है, माय तीर्थोमां शेत्रुंजगिरि, एतो मंत्रोमां नवकार है, माय० पर्व आ० ॥ २ ॥ देवमां वीतराग देव छे, एतो गिरिमांहि मेरू कहायो हेमाय, नदीयांमें सिरोमणी, एतो गंगा नाम धरायो है, मा०, पर्व० ॥ ३ ॥ कल्पवृक्ष चिंता-मणि, एतो कामगवी अधिकारी हे माय, इमहीज पजुषण वलि, एतो सेवो ज्ञविक सुखकारी है, मा० पर्व० ॥ ४ ॥ कल्पसूत्र सुणोइकमना, एतो एकवीश वार मनुहारी है, मा० ज्ञवसाग-रतरवातणो, एतो उपायकह्यो गणधारी है, मा० पर्व० ॥ ५ ॥ आश्रवपांचेपरिहरि, एतो कषायचउ निवारीहैमाय, दानादि-

कधर्मसेवीने, एतोजिनपूजादिलधारीहे, मा० पर्व० ॥ ६ ॥ जिनदरशन अधिकारमे, एतो आरद्रकुमर अधिकारी है, मा० दरसनफरसनयोगसें, एतो चरण करणगुणधारी हे मा० प० ॥ ७ ॥ अमारीपम्ह वजमावीयै, एतो आठदिवस मनुहारी है, मा० जिनकृपाचंद्रसूरि जणे, एतो पर्व सेवोइकतारी हे, मा० प० ॥ ८ ॥ इति अठाहि सझायसं० ॥

॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे ए देशी ॥

पर्व पजुषणआवीयारे, सर्वजीवने सुखकार, पूरव पुन्य, पसाउलेरे, लह्यो मानव अवतार, सुज्ञानी सेवज्योरे, सेवज्यो पर्व प्रधान, सुज्ञा० ॥ १ ॥ चैत्यजुहारी जावथीरे, देववंदन दिलधार, द्रव्यजाव पूजा करोरे, यथाशक्ति निरधार, सुज्ञा० ॥ २ ॥ चनत्थ छठ अठम करोरे, पखखमण वलि मास, उपवास करो शुज जावथीरे, लहो अक्षय सुखवास, सुज्ञा० ॥ ३ ॥ दानदेवो सुपात्रनेरे, सीयलपालो, मनरंग, कर्मक्षय कारण कह्योरे, तप उत्तम विधि संग, सुज्ञा० ॥ ४ ॥ ज्ञान जक्ति करवा जणीरे, कल्पसूत्र पधराय, रात्रि जागो रंगथीरे, धवलमंगल, बरताय, सुज्ञा० ॥ ५ ॥ वरघोमेमां संघमलीरे, हय गयरहवर साथ, चजविह वाजित्र वाजतांरे, आपो सुगुरुने हाथ, सुज्ञा० ॥ ६ ॥ सुर्यजशा जिम तप करोरे, जिनआणा दिलधार, कल्पसूत्र सुणो इकमनारे, पूजा प्रजावना सार, सुज्ञा० ॥ ७ ॥ नव इग्यारे तेरे सुणोरे, वाचना श्रुत अनुसार, जिनकृपाचंदसूरि सदारे, जव जव धर्म आधार, सुज्ञा० ॥ ८ ॥ इति पजुषण सझायसं० ॥

॥ आज आपैं चालो सहिया सिद्धाचलगिरिजइये ॥

॥ ए देशी ॥

॥ पर्व पजुषण आव्या सजनी, चालो आपण जइये, देवगुरूना दरसण करीनें, मनवांछितफललइयेरे पर्व० ॥ १ ॥ अठाहि में अमरपमावी, जीव जयणा वर्तावी, सर्वजीव सुखकारी जगमे, जैनधर्म मन लावीरे प० ॥ २ ॥ कल्पसूत्र वरघोमो करीने, सुणो वखाण चितलायी, पमिवारे दिन मंगलकारी, वीरजन्म सुखदायी रे, प० ॥ ३ ॥ सिद्धारथ राजा घर सुखकर, दिगकुमारी मिलआइ, सूतिकर्मकरी प्रभु माताने, स्नानकरावे वरदाइरे प० ॥ ४ ॥ चोसठइंद्र सुमेरुसिखरपर, स्नात्रकरे रंगलाइ, बत्रीसक्रोम सोनइया वरसाके, प्रभुजीने निजघरलाइरे प० ॥ ५ ॥ वालपणे आमलकीक्रीमा करि, महावीर नाम पायो, लेखकशाळा जइने आव्या, जय जयकार वरतायोरे प० ॥ ६ ॥ मिगसरवदि दशमी दिन दीक्षा, लीनी मनमां उमंगे, परिषहरिउबलदूरनिवारी, केवल लह्यो सुखसंगेरे प० ॥ ७ ॥ चउविहसंघने थापीजगतगुरु, विचरया देशविदेश, कातिवदि अमावस राते, सिवपदपाम्यो जिनेशरे प० ॥ ८ ॥ षटकल्याणक वीर प्रभुना, भद्रबाहु स्वामी भाखै, श्रीजिनकृपाचंदसूरिसेवो, कल्पसूत्रनी साखेरे प० ॥ ९ ॥ इति एकमनी साझायसं० ॥

॥ श्री जिनबाणिरे धन्ना ए देशी ॥

॥ पास सोभागीहोजिनजी, तुमथी रढलागी मोराजिनजी, दशभवकैरोरे संबंध सोहामणो ॥ १ ॥ वणारसी नगरीहोजि-

नजी, जनम्याछैसुखरी मोरा जिनजी, पोषदशमी कल्याणक-बीजोथयो ॥ २ ॥ इग्यारस दीक्षाहो जिनजी, कमठने दीधी-सीक्षा मो० जि० केवल पामीरे सिव रमणीलही ॥ ३ ॥ नेमि-जिनेसरहो जि० जगपरमेसर मो० जि० सोरी पुरमांरे प्रभुजी जनमीया ॥ ४ ॥ गिरनार उद्यानमेहो जि० दीक्षा सुखखान मो० जि० राजीमतीतजी संजमआदर्यो ॥ ५ ॥ केवल पायोहो जि० सुजससवायो मो० जि० संघथापीने प्रभुजी विहरीया ॥ ६ ॥ रथनेमी समजावीहो जि० वम्यो आहार वतावी मो० जि० राजीमतियै संयम आदर्यो ॥ ७ ॥ वस्त्र सुकावेहो जि० रहनेमीने ऽढलावे मो० जि० कर्मखपावी विहुं मुगते गया ॥ ८ ॥ नेमी जिनराजहो जि० मुक्ति सिर-ताज मो० जि० सहसवरसनो आयु पालीने ॥ ९ ॥ तेवीश आंतरा जाणो हो० जि० चोथे आरे प्रमाणो मो० जि० श्रीजिनकृपाचंदसूरि पर्व सेवोसदा ॥ १० ॥ इति बीजनी पर्यु-षणानी ॥ स०

॥ धारणी मनावेरे मेघकुमारनेरे ए देशी ॥

आदीसर अलवेसरने नमीरे, सद्गुरु चरण पसाय, सिझाय-कहस्युंरे पर्युषण तणीरे, सुगुणा जनमनलाय ॥ १ ॥ भविजन सेवोरे पर्वसोहामणोरे, वांछितफल दातार, लोकिक लोकोत्त-रमां इणसमोरे, दूजो नहि सुखकार, भवि० ॥ २ ॥ त्रीजे आरे प्रथमजिनेसरुरे, उपन्या भरतमझार, नाभिकुलगरमरु देवाभलीरे, जिण जाया जगदाधार भवि० ॥ ३ ॥ इक्ष्वाक-बंशथाप्यो इन्द्र आवीनेरे, परणाव्या दोय नार, जुगलाधर्म-

निवारण कारणेरे, परावरतन कीधो सार नवि० ॥ ४ ॥ राज्य पामीने प्रभुजी थापिनेरे, लोक तणोव्यवहार, भरतादिक सो पुत्रने सीखवीरे, वहुत्तरकला मनुहार भवि० ॥ ५ ॥ ब्राह्मी सुंदरी बिहुं कन्यांभणीरे, लिखनकला विस्तार, आजीविकाना कारण सीखव्यारे, शिल्प कर्मादिक सार, भयि० ॥ ६ ॥ भरतादिकने राज देइनेरे, प्रभु लीनो संजमभार, वरसीतपपारणो आखातीजनेरे, करावे श्रेयांस कुमार भवि० ॥ ७ ॥

केवलपामी संघथापना करीरे, अष्टापद गिरिईश, दशसहसमुनिवर परिवारसुंरे, शिवरमणीवर्या जगदीश भवि० ॥ ८ ॥ भरतादिक सो पुत्रो पामीयारे, सिव बधुकेरो साथ, स्थविरतणो चरित्र सांभलीरे, पामो सुकृत आथ, भवि० ॥ ९ ॥ शुभ उगणीसे सितोत्तर समेरे, वरुोदे कीधचोमास, कीनीरचनारलियायतथयारे, पजुषणनी भास भवि० ॥ १० ॥ श्रीखरतरगण जगमां दीपतोरे, ज्ञानादिगुणमणिखाण, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो सदारे, पर्वए जिनवरणवाण भवि० ॥ ११ ॥ इति तीजनी सझाय ॥ संपूर्णा ॥

॥ त्रिशलाना जायारे महावीर अमघर आवजो
ए देशी ॥

सद्गुरु म्हारारे मोहन गारारे, वीनती सांभलो, सांभलीने गुरु करो सेवकप्रतिपाल, स० बिरुद घणेरारे निसुण्या तुमतणा, तुमछो प्रभु आतमना रखवाल, स० ॥ १ ॥ जिनसासन जगमां जयो, सर्वजीव सुखकार, जंगम सुंरतरु प्रगटीयो, सद्गुरु तारणहार, तुमछो गुरु सबजनने सुखआल ॥ स०

॥ २ ॥ पंचनदीपर साधीया, पांचपीर परधान, सोजाव्यो जिनधर्मने, साध्यो वंछितकाम, करो प्रज्ञुवांछितपूरण दयाल, स० ॥ ३ ॥ जीती चोसठ जोगिनी, वसकीया बावनवीर, ऊबकाकरती बीजली, स्थंजित करी गुणधीर, करजो प्रज्ञु अमची सार कृपाल, स० ॥ ४ ॥ प्रतिबोध्या नरनारिने, शासन शोजा बधार, चारित्र पाली निरमलो, स्वर्ग लह्यो सुखकार, तुमे प्रज्ञु संपदा पामी रसाल, स० ॥ ५ ॥ युगप्रधान जग परगमो, अंबा अक्षरदीध, जगगुरु चिंतामणिसमो, मनवांछित फल-लीध, सहुना मनवांछित पूरो रसाल, स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक जशगुरुतणो, जाणे सकलजहान, परचा जगमे परगमा, सेवे रावराजान, सेवानो फल तुरत लहे निहाल, स० ॥ ७ ॥ संघ-उदय करो साहिबा, दया करी गुरुराज, अलिय विघन दूरे हरो, पूरो सहुजन काज, पूरीने प्रज्ञु मेटो जव जंजाल, स० ॥ ७॥ गामगाम गुरु शोजता, थुंजघणा महिराण, जावे सेवै जवि-जना, सदा सुरंगे वाण, तुमछो गुरु जक्ततणा रिछवाल, स० ॥ ए॥ सदगुरु समजग को नही, जीवन प्राण आधार, कामित पूरण सुरगवि, सुखकारण दिलधार, गुणनिधि अमचा परम कमाल, स० ॥ १० ॥ श्रीजिनदत्तसूरीशरु, मणियाला जिन-चंद । कुशलकरण कुशलेसरु, प्रणमें जिनकृपाचंद, करजो प्रज्ञु शासननी संजाल, स० ॥ ११ ॥ इतिश्रीदादासाहेबस्तवनं॥

॥ अथ दश अच्छेरानी सज्झाय ॥

॥ नंदीसर बावन जिनालय—ए देशी ॥

अरिहंत देवने नमन करीने, गाऊं गुण गुरुजननारे, सर-

सतिनो समरण करी चित्तमां, अछेरानी कहुं वरणनारे ॥ १ ॥
सुणो सुणो सुगुणा श्रीजिनशासन, जेहथी करणपवित्ररे,
जीवाजीवस्वरूपने ज्ञाने, जाणपणो जगमित्ररे सु० ॥ २ ॥
उत्कृष्ट अवगाहना सीधा, इकसमय एकसो आठरे, ऋषभ
देव नवाणु पुत्रो, भरतना पुत्र वली आठरे सु० ॥ ३ ॥ पहलो
एह अछेरो जाणो, बीजो हरिवंस कुलनोरे, जुगलिया नरक
गया ते कारण, अछेरो थयो एहुनोरे सु० ॥ ४ ॥ सात अंत-
रमांही असंजतीनी, पूजा थई ते त्रीजोरे, सुविधिजिनेसरथी
सांतिलग, अछेरक ए गणजोरे सु० ॥ ५ ॥ कृष्ण गयो धातकी
खंडमां, संखशब्दकरी मलियोरे, चोथो अचरिज ए कहि-
वाणो, तिहांथी पाछो फरियोरे सु० ॥ ६ ॥ मल्लीजिनेसर
स्त्रीतीर्थंकर, पांचमो आश्चर्य कहियेरे, भिन्न भिन्न समय ए
पांच, अचरज शास्त्रथी लहियेरे सु० ॥ ७ ॥ पहली प्रभुनी
देशना निष्फल, चमरनो थयो उत्पातरे, गोशाले तेजो लेश्या
मूकी, समवसरण मुनिघातरे सु० ॥ ८ ॥ चंद्र सूरज मूलगे
रूपे, आया वांदवा काजेरे, ब्राह्मणी कूखे उपना चरमजिन,
दशमो अचरिज छाजेरे सु० ॥ ९ ॥ पांच अछेरा महावीरनी
वखते, हुवा इण विधजाणोरे, प्रथमनां मेल्यां दशनीसंख्या,
इम करी मनमां आणोरे सु० ॥ १० ॥ अनंतकाल गया ए
होवे, तेह आश्चर्य कहेवावेरे, अघटित घटित जो कहे लोको,
तिमअचरिज मन भावेरे सु० ॥ ११ ॥ वीरप्रभुनो शासन
जयवंतो, मोक्षतणो ए कारणरे, श्रीजिनकृपाचंन्द्रसूरि सेवो,
भव भव दुःखनो वारणरे, सु० ॥ १२ ॥ इति अछैरासज्झायस०॥

॥ रोहिणीसज्झाय ॥

॥ धारणी मनावेरेमेघकुमारनेरे ए देशी ॥

चंपानयरीजगमांदीपतीरे, अंगदेशमें जाण। मघवाराजाराज्य करेतिंहारे, दिनदिनवधतेवान ॥ १ ॥ जविजनसुणजोरे रोहिणी तपतणोरे, महिमा अगमअपार, लखमीनामे पटराणीरायनीरे, रूपवती सुकुमार, जवि० ॥ २ ॥ आठ पुत्र जायातिणेंसुंदररूरे, देवकुमरअनुकार तेउनेऊपरे कुमरी अवतरीरे, रोहणीनाम उदार, जवि० ॥ ३ ॥ चित्रसेनपरणयोस्वयंवरेरे, इमजोगवतां जोग, आठ पुत्र च्यार पुत्रीऊपनारे, पुन्यतणे संयोग, जवि० ॥ ४ ॥ क्रीमाकरतांवाखखेलावतांरे रोहणीये दीठी एक नार, पुत्र मरणथी तेह विलपतीरे, आंसुनीवहे धार, जवि० ॥ ५ ॥ रोहिणीहसतिराजानेकहेरे, एनाचेकिमनार, राजा कहे ए पुत्र वियोगथीरे, तुं नही जाणे डुखदार, जवि० ॥ ६ ॥ इम कही राजा सुतने नांखीयोरे, हाहारवथयोतेण, रोहणीकहे पुत्र नीचे किम गयोरे, राजारोवेडुहेण, जवि० ॥ ७ ॥ सासणदेवतसिंघा-सणठव्योरे, नाटककरे बहुजांत, राजा मनमां चिंते ज्ञानिगुरु मलेरे, तो पुछुं सुतवात ॥ जवि० ॥८॥ ज्ञानिपधारयारे राजा वीन-वेरे, सुतपूरवजवस्वाम, पूरवजवमांरोहिणीतपकस्योरे, तेहनो फलसुखकाम, जवि० ॥ ए ॥ राजाराणीतपविधिआदरीरे, उज-मणोकरे खास, पुत्रसहितरायराणीदीक्षालेवेरे, वासुपूज्यजिनेस-रपास, जवि० ॥१०॥ कर्मखपावीसहुसिद्धिलह्यारे, राजादिकसु-खकार, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवोसदारे, तपउत्तमजयकार, जवि०॥११॥इतिरोहिणीसज्झायसं० ॥

अथ श्री जंबुद्वीपनी वा पूनमनि सज्झाय प्रारंभः ॥

जंबुद्वीप सोहामणोरे लाल, लाख जोजन परिमाणरे, सुगुण- नर, पूनिमशसिसम जाणियरे, लाल आकार एह पहिचाणरे, ॥ सु० ॥ १ ॥ वारिजाउं वाणि जिनतणीरे, ॥ ला० ॥ हुं जावुं वार हजाररे, ॥ सु० ॥ गु० ॥ वीरजिणंदै दाखवीरे ॥ ला० ॥ जंबूपन्नती मझाररे सुगुण० ॥ २ ॥ नवखेत्रे करि सोभतोरे, भरतादिकमनुहाररे ॥ सु० ॥ कुलगिरिपरवत अंतरेरे ॥ ला० ॥ रह्या मर्यादा धाररे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ महाविदेह बिचराजतोरे, मेरुसुदर्शन जाणरे ॥ सु० ॥ लाख जोजन ऊचो कह्योरे, गजदंताचार पहिचाणरे ॥ सुगु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ षट् द्रह गिरिवर सहु भलारे, दोयसै गुणहत्तर एहरे ॥ सु० ॥ निवेनदी मोटी कहीरे ॥ ला० ॥ बीजी परि- वारनी तेहरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कर्मभूमीमें मुनिवरारे, कोरू सहस्स नव जाणरे ॥ सु० ॥ नवकोरूी केवली नमुंरे ॥ ला० उत्कृष्टो परिमाणरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ धर्म ध्यायनो जाणियेरे, चोथो भेद अभि रामरे ॥ सु० ॥ कृपाचन्द्र ध्यातां थकांरे ॥ ला० ॥ पामें अविचल धामरे ॥ सुगु० ॥ वारि० ॥ ७ ॥ इति जंबूद्वीपनी वा पूनमनी सज्झाय संपूर्ण ॥

अथ वीशस्थानक स्तुति लिख्यते ॥

आदीसर अलवेसर जगपति भविमनसायर चंदाजी, सेत्रुंज मंरूण दुःख विहंरूण अद्भुतज्योति सोहंदाजी, सुखसंपत्ति का- रण जगतारण सेवै सुरनर इंदाजी, करुणाकर जिनवर उपगारी कामित सुरतरु कंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन आचा-

रजस्थविर पाठक मन आणो जी, साधु नाण दंशण दसमो पद विनय चारित्र वखाणोजी, ब्रह्मक्रिया तप गोयमजिनपद समाधि अपूर्वश्रुतजाणोजी, श्रुतभक्ति तीरथ प्रभावनबीस थानक पहिचानोजी ॥ २ ॥ श्रीमुखवीरजिनेसर भाखे एपद सेवो प्राणीजी, तीर्थंकर पद एहथी लहियै जिनआगमनी वाणीजी, ज्ञाताअंगे गणधरदेवै विवरीने घणी आणीजी, एआराधनथी सिवलहियै निरुपम सुखनिसानीजी ॥ ३ ॥ तीनकालपांचैशक्रस्तव देववंदनविधि कीजैजी, काउसग्ग परदक्षिणागुणनो बिधिसुंजिनपूजीजैजी, खमासमण विहुं टंक पडिक्कमणो स्तवनानित्य सुणीजैजी, कृपाचन्द्र सुयदेविपसाये मनबंछितफल लीजैजी ॥ ४ ॥

इति वीसथानक स्तुति ॥

अथ पंचमीनी थुइ लि० ।

नेमिजिनेसरजगपरमेसर, पंचमि गतिना दाताजी ॥ श्रावणसुदिपंचमिदिन जनम्या,–त्रिभुवनमें विख्याताजी ॥ समुद्रविजयनंदन, जगवंदन, सिवादेवीमाताजी ॥ सहसवरसप्रभु आयुषपाली, पाम्या सिवसुखसाताजी ॥ १ ॥ कातिवदि संभवकेवल पाम्यो, मगसर सुविधिजायाजी ॥ चैत्र चंद्रजन्म अजित संभव अनंत सुदि सिवपायाजी ॥ वैशाखवदि कुंथुजिनदीख्या, पंचमि जगत सुहायाजी ॥ धर्म धवलजेठ पंचमिसीधा सुरनरमिलजसगायाजी ॥ २ ॥ पंचमितपविधिभाखे-जिनवर अर्थ अधिक सुखकारीजी ॥ सूत्रेगणधरगुरुशुभ दाखे, आगम मांहि सारिजी ॥ नंदिविधिकरी देवावांदीने

काउसग्गमनधारीजी ॥ इकावन ज्ञाननाजेदनमीने, श्रुतज्ञान-
सेवो इकतारीजी ॥ ३ ॥ पमिकमणो दोयटंककरीने, ज्ञान
आराधोप्राणीजी॥मगसरादि षट् मासमां उचरो, आगममांहि
गवाणीजी। जिनआणाधारक, सुखकारक, खरतरगण श्रुत खा-
णीजी ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिपजणे, साशन देवी सुहाणीजी॥४॥

॥ इति पंचमीकी थुई संपूर्णा ॥

अथ अष्टमीनी थुई लि० ।

आठ प्रातिहारज जसुसोहे, मोहे जविजन चंदाजी ॥ चंद्र-
प्रजु आठम दिन सेवो अनुजवरसना कंदाजी ॥ आठप्रमाद-
तजीने, धारो परमातमपदसारोजी ॥ दीपनंदिसरयात्रा करतां;
अरिहंतध्यानप्रकारोजी ॥ १ ॥ रिषज अजित सुमति सुव्रत-
नमि, सुपारससंजव आयाजी ॥ आदीश्वर दीक्षा अजिनंदन,
नेमि पाससिवपायाजी ॥ जिन्नमासअष्टमी कल्याणक, तीन-
कालमां जाणोजी ॥ आठजातिना कलशलेइने, स्नात्रकरे
सुरराणोजी ॥२॥ आठे प्रवचनमातापालो दोषसर्वने टालोजी ॥
ज्ञानादिआठआचारसेवीने, आतमतत्वनिहालोजी ॥ वीर-
जिनेसरअर्थप्रकासै, सूत्ररचैगणधारीजी ॥ आठमतपआरा-
धिजविजन, आठवरस अधिकारीजी ॥ ३ ॥ पर्वतिथीमेंपो-
षधजाख्यो, सिद्धांतले जसु साखीजी ॥ पमिकमणोतपजप-
आदरीयै, देववंदनविधिराखीजी ॥ आठमंगल आराधतां
पावै, सुखसंपतिगुणजूरिजी ॥ श्रुतदेवीसुपसायलहीने, श्रीजि-
नकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ इति आठम थुई संपूर्णा ॥

अथ इग्यारसनी थुई लि० ।

एकादसीआखीआदिदेवें, आराधिने जवि सिवशर्मलेवे ॥ धरोध्यान श्रीजिनराजकेरो । टले अनादिकालनो कर्महेरो ॥ १ ॥ मल्लिजन्मदीक्षाकेवलपहाणं । अरनाथ चारित्र नमि परमनाणं ॥ दशखेत्रना कल्याणक एम जाणो । दोमसोने वलि त्रणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारेवरसतिममासकीजै । आराधि अंगइग्यारह सुजस लीजै ॥ मौनमनधारी शुजधर्मकारी । श्रुतज्ञाननी जक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ अठपोहरिपोषहकरि यथाशक्ते । तपजप करीउजमणोसुजक्ते ॥ इकचित्तध्यावै सुयदेवीपसायै । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सदासुखथायै॥४॥

॥ इति इग्यारस थुइ संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपदजीनी थुइ लि० ॥

श्रीसिद्धचक्रसुहंकरजाणो ध्यानएजविजन मनमां आणो आतमतत्व पिछाणो, निरुपम सिवसुखकारणजाणो आतमने निजघरमां आणो अविचलसंपदा खाणो ॥ श्रीपालराजा नवपद साधे सुरसुखपामी सेवि समाधे अरिहंतपद आराधे, मननोहन जिनगुणअगाधे दायक लायकसिद्धिअवाधे जगजशकीरतिवाधे ॥ १ ॥ बारे गुणकरि अरिहंतराजे सिद्ध आठ गुण गणिवर छाजे गुणछत्तीशविराजे । पचीशगुण उवज्झायाराजै सत्तावीसमुनिमहाराजे सेवीगुणसुसमाजै ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप कहिये सिमसठ इकावन सितर लहिये जेद पचाशक्रम कहियै, तेरसहशवलि गुणनो करियैचउवीसजिनपतिध्यानजधरियै इमजवसागर तरियै ॥ २ ॥ आसुमासनी सात-

मसेती नवआंबिलकरो सुखदेती, चेतरमासवहेती, नवओ- लिशुधभावेलेति इक्याशीआंबिल सहुहेति बोधवीजनी- खेति, श्रीश्रीपालने मयणाराणि हरषभरि हियके हुलसाणि नवपद ध्यानधराणि, नवपदनीनित्य स्तवनाजाणि करोभवि- कजन शास्त्रप्रमाणी आगममांहि गवाणि ॥ ३ ॥ त्रणटंकपां- चशक्रस्तवकीजै दोयटंकआवश्यकलीजै काउसग्गनितकीजै, खमासमण शुद्ध चितमां धारो प्रदछिणाकरी गुणसंभारो- जिमछूटेभवखारो, देवीचक्रेसरिसांनिधकारि विमलेसरपूरेआ- सहमारि सिद्धचक्रविधिसारि, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि भाखे जिन- आणा मनमांहिराखे भवि सिवसंपदाचाखे ॥ ४ ॥

॥ इति नवपद थुइ संपूर्णा ॥

अथ नवपद थुइ ॥

"सिरिसिद्धचक्क सेवो भवियां, सुह संपय पावोअविच- लिया ॥ १ ॥ सिरिअरिहाइ नवपयझावो, चउवीसजिणवइ- गुणगावो ॥ २ ॥ नवआंबिल नवओलीकरिये, गुणनो- जैति काउसग्ग धरिये ॥ ३ ॥ तीनटंक देववंदन कीजै, जिन- कृपाचंद्रसूरि जशलीजै ॥ ४ ॥ इति नवपद थुइ ॥

सांतीनाथनी थुइ ॥

सांति जिनराया सर्वजीवसुक्खदाया, अचिरादेमायाजा- सुसोवन्नकाया, विश्वसेनराया, जास गुणगणसोहाया, मृगलंछन पाया मोक्षमंदिर सिधाया ॥ १ ॥ पदम वासु विसाला रक्त वर्णेसुहाला, चंद्रप्रभुधवला सुविधिजिन सुक्खसबला, मुनिसुव्रत सांमला नेमी जिनराज काला, मल्लिपारस नीला सोलजिन

राजपीला ॥ २ ॥ जिनवरनीवाणी मीठीसाकर समाणी, नवि-जनमनजाणी, मोहनीछे निशाणी, नयगममनआणी सर्व अंग प्रमाणी, सेवो श्रुतखाणी जैनशास्त्रै वखाणी ॥ ३ ॥ शासनसुखदाइ गरुमराजा सहाइ,वांछितफलप्रदाइ देविनिर्वाणी-माइ, जिनचरणसहाइ सर्वसंपत्ति कराइ कृपाचंद्रसूरिसदाइ संघमें शांतिवरताइ ॥ ४ ॥ इति शांतिनाथजी थुइ सं० ॥ ७ ॥

॥ वासुपूज्यरोहिणी थुइ ॥

वासुपूज्यजिनेशर वंदुमनधरि नेह, सुखसंपतिकारण आराधो गुणगेह, रोहणीतपकरतां पामेंजवनोपार, सातवरस सत्तावीश जघन्य उत्कृष्टदिलधार ॥ १ ॥ अतीत अनागत वर्तमान त्रिहुंकाल, सहुजिनवरप्रणमो आणीजावविसाल, जिनजन्ममहोत्सव सुरपतिकरे सुविचार, इम चोविशजिनवर पूजो विविध प्रकार ॥ २ ॥ चंद्ररोहिणीदिवसे तप आदरि-येसार, गुणनो प्रदक्षिणा खमासमण सुविचार, यथाशक्ति करिये चोविहार उपवास, चित्रसैन रोहिणीपरे पामेलीलवि-लास ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दोयटंक देववंदनत्रिहुंकाल, आठ पोहरिपोषध काउसग्ग सुविसाल सुयदेवि सांनिध रोग-सोगसहुजाय, जिनकृपाचंद्रसूरितपसेव्या सुखथाय ॥ ४ ॥ इति,

अथ पुनमनी थुइ ॥

श्रीसिद्धाचलतीरथसेवो, तीनजगतमां दूजो न एहवो,एहश्री-शुजफललेवो ॥ श्रीआदीश्वरजिनवरराया, पूर्वनीवाणुं इण-गिरि आया, इंद्रादिकमनजाया ॥ श्रीपुंडरीक प्रथमगण-धारी, पांचक्रोडमुनिवरपरिवारी, अणसणकर्योहितकारी ॥

फागुणपूनिमसंलेखनाजाणो, चैत्रीदिननिरुपम गुणखाणो पाम्यापदनिरवाणो ॥ १ ॥ चैत्रीदिनदेववंदनकीजै, भावसहितप्रभुपूजारचीजै, जिनगुणगाइ जशलीजै ॥ तिलककरो प्रभुने दशवीश, चढता वलि तीश चालीश, पंचाशनी पूजा जगीश ॥ पुष्पअक्षतफल नेवेद्य सार, जिनवर पूजाविविधप्रकार, धूपदीप मनुहार ॥ कलशअष्टोत्तरशतपूजाकरिये, चौवीश जिनवरध्यानज धरियै, जिमभवसागर तरिये ॥ २ ॥ चैत्रीदिनशुभवारमां लीजै, ॥ गुरुमुखथी एतपक्क चरीजै, विधिसहितवहीजै ॥ सोलवरस एतपआराधी, आतमगुणनिज संपदासाधी, पावे सहज समाधी ॥ तपपूरण उजमणोधारो, करिनेसासनसोभा वधारो, जिमहोवे भवनिस्तारो ॥ काउसग्गप्रदक्षिणाकरिये, गुणनोगुणी जिनगुण सांभरिये, आगमविधिअनुसरिये ॥ ३ ॥ दोयटंकपडिक्कमणोकीजे, चैत्रीसेत्रुंजयात्राकरीजै, पुन्यभंडारभरीजै ॥ छहरीपालीजेनरभेटे, संघपतिथइ सहुदुखमेटे, भववनमे नविलेटे, बारहपूनिमपर्वकहीजै, चारित्रतिथी शास्त्रमांहिलहीजै, चक्रेसरीसांनिधकीजै ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिराजै खरतरगछजिनआणाछाजै, सुखसंपदासुसमाजै ॥ ४ ॥ इति चैत्रीपूनिमथुइ सं० ॥

॥ श्रीनेमिनाथजीनी थुइ लि० ॥

॥ नेमिजिनंदा पूनिमचंदा, समसुख सोभता, सिवादे जाया, सहुमनभाया, इंद्रादिकसेवता, सोरिपुरमें, त्रिभुवन सुखमें प्रभुपरमारथी, संघमे साता, जगनात्राता, धर्मनासारथी ॥ १ ॥ रिषभजिनेसर, भुवनदिनेसर, अष्टापदसिववस्या, वीरपावापुरी,

पूज्यचंपापूरी, निजकारजकस्था, गिरनारगिरिपर, नेमिजिनवर, सिववधु करग्रह्यो, वीसजिनेसर, समेतसिखरपर, सिवमंदिर लह्यो ॥ २ ॥ जिनवरवाणि अमियसमाणि, मिठीजिम सेलडी, अधिकसुहाणि, जविमनजाणि, अमृतरसवेलडी, जिनगुणगाति, समरसमाति, सुरवधुगावति, अनुजवसंगे, आतमउमंगे, निजगुणध्यावति, ॥ ३ ॥ अंबिकादेवी सुजसलहेवी, सुतदोयलालती, शासनदेवी सुरनरसेवी, संघरखवालती, गोमेधयक्ष, सांनिधदक्ष संघने कीजियै, जिनकृपाचंद्र सेविसूरिंद, जगमे जशलीजियै, ॥४॥ इति नेमिनाथ थुइ सं० ॥ पासजिनराया वामाजाया, नगरी वणारसी, अश्वसेनराजा, जगमेंताजा, सबजनतारसी, वदिचोथदिवसे, चैत्रजगीसे, प्रजुजी अवतर्या, दशमीपोष, जगसंतोष, सव कारजसर्या, ॥१॥ प्रथमजिनेसर, चारहजारे पास मल्लित्रयशत, वीर इकेला, षट्र सतसाथे, वासुपूज्य ग्रहिव्रत, उगणीस जिनपति सहससंघाते, संजम आदर्यो, कर्मखपावी, केवलपामी, निजकारजकर्यो ॥२॥ जिनपतिवाणी, मीठीजाणी, स्वर्गे सुरवेलडी, साकरखंडे गुलनहि मंडे, पीलेरस सेलडी, डाखवनमांहे, अमृत अमराहै त्रणपसु चावती, एसहुलाजी, जिनगुणगाजी, इंद्राणी गावती ॥ ३ ॥ पारसयक्ष, कारजदक्षकरे सहुसंघनो, च्यारछेबाहु कछव साहु वरण सांमल वनो, देवीपद्मा, सुखनीसद्मा, दियेसुखसंपदा, जिनकृपाचंद्र पजणे सूरिंद, सेवे सुरनर मुदा ॥४॥ इति पार्श्वनाथ थुई ॥

॥ श्रीमहावीर स्वामी थुइ ॥

आषाढ शुदि छठी स्वर्गथी चवियाईश, आश्विनवदि तेरस

त्रिसलाकूखेजगीश, शुदि तेरस जनम्या चैत्रमास सुखकार, श्रीवीरजिनेसर वंदुभावउदार ॥ १ ॥ मिगसरवदि दशमी संजमसुं मनलाय, वैशाखसुदिमें केवल, दशमी भाय, काति अम्मावसि पाम्योपद निर्वाण, चोवीसै जिनवर आपो मुजसुख खाण ॥ २ ॥ अरिहंत प्रकास्यो, उपधान तप श्रीकार, नवकार इरियावहि नमुत्थुणं मनुहार, अरिहंतचेइयाणं लोगस्स द्रव्यस्तवजान, सिद्धाणंबुद्धाणं मालसात उपधान ॥ ३ ॥ विधिसेतिवहियै गुरुमुखसुणि सुविचार, श्रीमहानिशीथे भाख्योए अधिकार सिद्धायिकादेवीवांछितदेंनिरधार, जिनकृपाचंद्रसूरि तपसेव्या जयकार ॥ ४ ॥

॥ इति उपधान थुइ ॥

वीरजिनेंदे भाखीयो, उपधान तप विस्तार, सुत्रे गणधर साखियो, महानिशीथमझार, ॥१॥ पहलो वीसरू नवकारनो, इरिया वीसरूजाण, भावस्तव पेतीशनो, ठवणस्तवचउआण ॥२॥ लोगस अठावीसनो, द्रव्यस्तवछक्करूहोय, माला उपधान सातमो, सिद्धाणं बुद्धाणं जोय ॥ ३ ॥ सातभय निवारवा, सातकरो उपधान, क्रियाशुद्धकरवातणो, एह उपाय सुजान ॥ ४ ॥ विधियोगेआराधियेए, तप उत्तम सुखकार, जिन कृपाचंद्रसूरिसदा, आगमनो आधार ॥ ५ ॥

॥ इति चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ नवपदजी चैत्यवंदन लि० ॥

श्रीअरिहंतनाबारगुण, सिद्धना आठकहाय । छतीशगुणसूरितणा । पचवीश कह्या उवझाय ॥ १ ॥ मुनिवरगुण सत्ता-

वीशछै, दरशण सरुसठ जोय ॥ ज्ञान इकावनजेदछै, चारित्रसित्तर होय ॥ २ ॥ तप पच्चास गुणजाणियै, नवपदना श्रीकार ॥ एकंदर सहुध्याइयै, त्रणसैछयालीशसार ॥ ३ ॥ आंबिलकरि आराधियै, नवओलीसुजगीश ॥ त्रिकरणयोगे ध्यावतां, जिनकृपाचंदसूरीश इति नवपद चैत्यवंदनं ॥

॥ रोहिणीतप चैत्यवंदनं ॥ वासुपूज्यजिनवरनमुं, बारमजिनसिरताज, रोहिणीतप आराधतां, सारे वांछितकाज ॥१॥ चोविहारउपवासकरि, पूजक पूजीदेव, दोयसहसगुणनो करी, त्रिकरणथिरकरोसेव, ॥ २ ॥ सत्तावीशलोगसतणो, काउसग्ग दिलधार, खमासमण देइजावथी, प्रदक्षिणा सुविचार, ॥ ३ ॥ स्वस्तिक करि फलढोइयै, पूजाविविधप्रकार, जिन कृपाचंदसूरि सेवतां, पामे जवनोपार, ॥ ४ ॥ इति रोहणीतपनो चैत्यवंदन सं० ॥

अथ श्रीवीसस्थानक चैत्यवंदनं.

श्रीअरिहंत अनंत कांति सिद्ध निजगुणरामी, प्रवचन आचारिज स्थविर उवझाया हितकामी, साधु नाण दंसण नवम विनय चारित्र वखाणो, ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन वेयावच्च जाणो ॥ १ ॥ समाधि अपूर्वज्ञानग्रहै, श्रुतजक्तिनितसार, तीरथ प्रजावन वीसमो, निरुपम सुखदातार, प्रथम चरम जगदीश सकल सेवी लही संपदा, इक दो त्रण पद जपी वात्रीस जिनवर पदमुदा ॥२॥ ए विंशति थानक कह्या ए, ज्ञाताए जिनचंद, ए सेवनथी जवि लहे, त्रिजुवनपति कृपाचंद ॥ ३ ॥

॥ इति श्री वीसस्थानक चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री वीसविहरमानजीको चैत्यवंदन ॥

सीमंधर युगमंधर, बाहु सुबाहु जाण, सुजात स्वयंप्रभु सातमा, ऋषभानन मनआण ॥१॥ अनंतवीर्यने सूरप्रभु, विमल वज्रधर कहियै, चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग नेम प्रभु लहियै ॥२॥ ईश्वर श्रीवयरसेनजी, महाभद्र जिनदेव, देवजस अजित-वीर्यजी, सुरपति सारे सेव ॥ ३ ॥ पंच विदेहै विचरता ए, बीस जिनेसर जाण, कृपाचंद त्रिहुं कालमें, नमतां क्रोड़ कल्याण ॥४॥

॥ इति वीस विहरमानजी चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन ॥

सिद्धाचल सेवुं सदा, सहुतीरथ सिरदार, सोरठदेश सोहामणो, तिहां ए गिरिवरसार ॥ १ ॥ तीनभुवनविच एहवो, तीरथ कोइ न होय, श्रीमंधर वयणे करी, शेत्रुंज महातम जोय ॥ २ ॥ श्रीयुगादि जिनराजजी, समवसर्या इण ठाम, तेहथी ए तीरथ वड़ो, अविचल सुखनो धाम ॥ ३ ॥ काति पूनिम दशकोड़सुंए, द्राविड़ वारिखिल्ल जाण, सिद्धिवधू रंगे वर्या, कृपाचंद मनआण ॥ ४ ॥

॥ इति सिद्धाचलजी चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥

चोविसम जिनवर नमुं, महावीर जिनदेव, शांति सुधा-मय चंदलो, सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ भद्रेसरमें दीपतो, देरा-सर मनुहार, वीरजिनेसर जगजयो, बावन देहरी सार ॥ २ ॥ त्रिसलानंदन जग धणीए, सुख संपति करतार, त्रिकरण योगे प्रणमतां, कृपाचंद सुखकार ॥ ३ ॥

॥ इति श्री वीरजिन चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री नेमिजिन चैत्यवंदनप्रारंभ ॥

नेमिसर जिन जगधणी, रैवतगिरि सिणगार, यादवकुल नभ दिनमणि, भवियण ने सुखकार ॥ १ ॥ तीनकल्याणक इहां थया, दिक्षानाण निरवाण, भव्य मनोरथ पूरवा, चिंता मणी समजाण ॥ २ ॥ शिवरमणी रंगे वर्या ए, बावीसम जिनचंद, कृपाचंद नितप्रति नमै, शिवसुखतरूनो कंद, ॥३॥

॥ इति नेमिजिनचैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री पुंडरीक गणधर चैत्यवंदन ॥

रिषभ जिनेश्वर रायना, पहिला गणधरदेव, पुंडरीक नामे सदा, सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ चैत्रीदिन शिवपुरलह्या, पांचक्रोड परिवार, पुंडरीक तेहथी थयो, प्रगट नाम सुखकार ॥ २ ॥ आअवसरपणिकालमेए, प्रथमसिद्ध अभिराम, कृपाचंद गिरिराजने, प्रतिदिन करे प्रणाम ॥ ३ ॥

॥ इति पुंडरीक गणधर चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री चतुर्विंशति जिनलांछन चैत्यवंदन ॥

रिषभ वृषभ गज अजितने, संभव घोडो जाण, अभिनंदनने वांदरो, कौंच सुमति मनआण ॥ १ ॥ पद्म पद्म स्वस्तिक सुपार्श्व, शशिचंद्रप्रभ लहिये, मकर सुविधि शीतल श्रीवत्स, श्रेयांस खडगी कहिये ॥ २ ॥ वासुपुज्य महिषतणो, विमल वराह नो जाणो, अनंत श्येन वज्र धर्मने, शांति मृग पहिचानो ॥ ३ ॥ कुंथुनाथने बोकडो, अर नंद्यावर्त होय, मल्लीघट सुव्रत काछवो, नमि निलोत्पल जोय ॥ ४ ॥

नेमि संख फणि पार्श्वने, वीर सिंह कहाय, कृपाचंद्र ध्वज युतनमुं, चउवीसे जिनराय ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्विंशतिजिनलांछन चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ पूनिमनो चैत्यवंदनं ॥

श्रीजिनसासन जगजयो, पर्व सिरोमणिजाण, पूनिमपर्व मोटो कह्यो, त्रिकरणशुचिमन आण ॥ १ ॥ श्रावणसुदि पूनिमचव्या, मुनिसुव्रत जगदीश आसोजीपूनिमचव्या, नमित्रिहुं जगनाईश ॥ २ ॥ मिगसरपूनिम संभव, संयमलीधोसार, पौषी धर्म जिनेसरु, केवल ज्ञानउदार ॥ ३ ॥ चैत्री श्री पद्मप्रभु, केवल ज्ञान प्रधान, इम पूनिममांजाणीये, कल्याणक सुखकार ॥ ४ ॥ दशवीशत्रीश चालीशनी, पंचाश पूजासार, फलअक्षत नैवेद्यनी, पूजा विविध प्रकार ॥ ५ ॥ चैत्रीसेत्रुंजसेविये, जात्रा करी मनरंग, तिमकार्तिकी आराधिने, करो सद्गुरुनोसंग ॥ ६ ॥ बारहपूनिम आराधियेए, श्रीयुगादिजिनदेव, जिनकृपाचंद्रसूरि सदा, सुरनरसारेसेव ॥ ७ ॥

॥ इति पूनिम चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ सोलम जिनवर सेवियें, शांतिनाथ सुखकार, अचिराउदरे ऊपना, भाद्रववदिसातमसार ॥ १ ॥ जेठवदितेरसप्रभु, जनम्या जगतदयाळ, मारिनिवारणथी थयो, शांतिनाम सुरसाल ॥ २ ॥ चक्रिपद पाम्यो प्रभु, चउदशसंजमलीध, पौषसुदि नवमीदिने, केवल सर्व प्रसीध ॥ ३ ॥ जनमदिवस प्रभु पामीयो, सिवसुख परमपवित्र, लाख वरसनो आउखो, सुणोश्री सांतिचरित्र ॥ ४ ॥ मृगलांछन सेवितसदा, गरुरूय-

हृअभिराम, जिनकृपाचंद्रसूरि सेवितां, निर्वाणी पूरेकाम ॥५॥

॥ इति सांतिनाथजी चैत्यवंदन ॥

॥ वामानंदनपासजी, अश्वसेनकुलचंद, नीलवरणशुचि देहभी, सेवे सुरनर इंद ॥ १ ॥ चैत्रवदि चोथ ऊपना, माता कूखे स्याम, पोषदशमी जनम्या प्रभु, त्रिभुवन जन विसराम ॥ २ ॥ इग्यारस दीक्षा ग्रही, कमठ हरावी ईश, चैत्रकृष्णनी चोथने, केवल लह्यो जगीश ॥ ३ ॥ संघथापीने जगगुरु, विचर्या देशविदेश, वाणारसी नगरी थया, चउकल्याण विशेष ॥ ४ ॥ आषाढसित आठमे, सिवबधु झाल्यो हाथ, जिनकृपाचंदसूरिसदा, सेवो जगना नाथ ॥ ५ ॥

॥ इति पारसनाथ चैत्यवंदन ॥

वीर जिनेसर जगधणी, त्रिशलानो जायो आषाढशुदिषष्ठी प्रभु, देवानंदा उदरे आयो ॥ १ ॥ आश्विनवदि त्रयोदशी, हरणेगमेषी ईश, त्रिशला उदरे संक्रम्या, चवदे स्वप्न लहीश ॥ २ ॥ चैत्रशुक्ल त्रयोदशी, जन्म थयो सुखकार, चौसठ इंद्र आव्या तिहां, स्नात्रकरे विधिसार ॥ ३ ॥ वर्धमान नाम थापीयो, बुद्धितणे अनुमान, मिगसरवदि दशमीलीयो, संजम सुखनी खान ॥ ४ ॥ वैशाख सुदि दशमी दिने, केवल पाम्यो सार, पावापुरी मुगते गया, दीवाली सुखकार ॥ ५ ॥ इमकल्याणक प्रभुतणा आराधे नरनार । जिनकृपाचंद्र सूरि कहे, पामे भवनो पार ॥ ६ ॥

॥ इति श्री महावीर स्वामी चैत्यवंदनं ॥

॥ शुद्धाशुद्धिपत्रकम् ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
४	७	षासजिणंद	पासजिनेंद
४ए	१३	परवर्तन	परावर्त्तन
५३	१५	कइ	इक
६३	१२	सकली	सफली
६५	२१	चौमुखवा	चौमुखवावि
७०	१६	श्रीसं	श्रीसंघ
७४	१२	जणातां	जणता
७५	२३	नाप्रवादण	नाणप्रवाद
१०६	२	चित्तमकार	चित्तमकारए
१०७	२	राजा०	०
१२५	११	निराकारा	निराकार
१२७	८	आविवो	आवियो
१३०	१८	उंढण पाटंबर ॥१५॥	॥ १५ ॥ उंढण पाटंबर
१३१	१८	निहाके	निहाले
१३३	२३	जेसलगिरि	जेसलमेरि
१३६	३	नवविधि	नवनिधि
१३ए	१५	निवारय	निवारइ
१४३	२३	अगावेन	अगावन

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१४४	८	श्रीधर	श्रीघर
१४४	२१	अठवन	अठावन्न
१४४	२३	पूजअष्टप्रकार	पूजाअष्टप्रकार
१४४	२३	ज्ञानो पगरण	ज्ञानोपगरण
१४५	२	इङ्गारोधन	इङ्गारोधन
१५३	७	ज्ञानदिवोक०	ज्ञानदिवाक०
१५३	१३	॥७॥ पणपाठेंकहीए	पिणपाठेकहिए ॥ ७ ॥
१५४	२०	किहां	कियां
१५६	२०	नेमिनाथं	नमिनाथं
१६६	२	अबर	अंबर
१६६	ए	मुनतान	मुलतान
१६७	२	बंछितगावे	बंछितपावे
१७४	२८	सुहंकार	सुहंकर
१७७	११	मानमां	मनमां
१८०	२१	उपचरै	उपचारै
१८२	७	अंतरेजामी	अंतरजामी
१८४	७	चैत्री	चैत्र
१ए२	२२	सहसपरण	सहसफण
१एए	ए	सारणा	सारण
२१३	२४	वांछित	बांछित
२१३	२१	नीरयामक	निरयामक

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
२२१	१७	पांचा	पंच
२२४	२२	भरतनो पूत्र	भरतनो पुत्र
२२५	२०	सूजाण	सुजाण
२४९	२२	सुणखाण	सुखखाण
२५२	२१	सुरसाळररे	सुरसाळरे
२५४	१६	भव्यचकोरनैर	भव्यचकोरनैरे
२६४	१८	विनयट	विनय
२६७	१५	सकचंद	सकळचन्द
२८२	३	परहरे	थरहरे
३२७	२२	ष्टिहोय	वृष्टिहोय
३३६	६	सुदेव	कुदेव
३४६	१८	तनुगीराग	तनुनिराग
३४७	२२	देवचंदेतह	देवचंद तेह

